

निश्चयबुद्धि की निशानियाँ – निश्चित विजयी और सदा निश्चिन्त स्थिति का अनुभव

आज सर्व बच्चों के रक्षक और शिक्षक बापदादा अपने सभी ब्राह्मण बच्चों के फाउण्डेशन को देख रहे थे। ये तो सभी जानते हो कि वर्तमान श्रेष्ठ जीवन का फाउण्डेशन निश्चय है। जितना निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है उतना ही आदि से अब तक सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि सदा नेचुरल रूप में अनुभव होती है। हर समय चलन और चेहरे से उनकी झलक अनुभव होती है क्योंकि ब्राह्मण जीवन में सिर्फ जानना नहीं है कि 'मैं ये हूँ और बाप ये है', लेकिन जानने का अर्थ है जो जानते हैं वो मानना और चलना।

बापदादा देख रहे थे कि जो भी बच्चे अपने को ब्राह्मण कहलाते हैं वो सभी ये फलक से कहते हैं कि हम निश्चयबुद्धि हैं। तो बापदादा सभी निश्चयबुद्धि बच्चों से पूछते हैं, जब आप सभी कहते हो कि हम निश्चयबुद्धि विजयी हैं तो कभी विजय, कभी हार क्यों होती है? जब कभी-कभी थोड़ी हलचल होती है तो क्या उस समय निश्चय खत्म हो जाता है? जब निश्चयबुद्धि सदा हो तो विजयी सदा हो? कि बीच-बीच में घुटका और झुटका होता है? निश्चय का फाउण्डेशन चारों ओर से मजबूत है या चारों ओर के बजाय कभी एक ओर कभी दो ओर ढीले हो जाते हैं? कोई भी चीज को मजबूत किया जाता है तो चारों ओर से टाइट किया जाता है ना। अगर एक साइड भी थोड़ा-सा हलचल वाला हो तो हिलेगा ना! तो चारों प्रकार का निश्चय अर्थात् बाप में, आप में, ड्रामा में और ब्राह्मण परिवार में निश्चय। ये चार ही तरफ के निश्चय को जानना नहीं लेकिन मानकर चलना। अगर जानते हैं लेकिन चलते नहीं हैं तो विजय डगमग होती है। जिस समय विजय हलचल में आती है, तो चेक करना कि चारों तरफ से कौन-सा तरफ हलचल

में है? बापदादा देखते हैं कि कई बच्चों को बाप में पूरा निश्चय है, इसमें पास हैं लेकिन अपने आपमें जो निश्चय चाहिए उसमें अन्तर पड़ जाता है। जानते भी हैं, कहते भी हैं कि मैं ये हूँ, मैं ये हूँ, लेकिन जो जानते हैं, मानते हैं वो स्वरूप में, चलन में, कर्म में हो—इसमें ही अन्तर पड़ जाता है। एक तरफ सोचते हैं कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ, दूसरे तरफ छोटी-सी परिस्थिति पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते। हैं तो मास्टर सर्वशक्तिमान् लेकिन ये परिस्थिति बहुत बड़ी है, ये बात ही ऐसी है! तो क्या ये निश्चय है कि सिर्फ जानना है लेकिन मानकर चलना नहीं? कहते वा सोचते हैं कि मैं विश्व कल्याणकारी हूँ लेकिन विश्व को तो छोड़ो, स्व कल्याण में भी कमजोर होते हैं। अगर उस समय उन्हें कहो कि क्या स्वयं को परिवर्तन कर स्व कल्याणकारी नहीं बन सकते? तो जवाब देते हैं कि हैं तो विश्व कल्याणकारी लेकिन स्व कल्याण बहुत मुश्किल है! ये बात बदलना मुश्किल है! तो विश्व कल्याणकारी कहेंगे या कमजोर? तो स्व में भी परिस्थिति प्रमाण, समय प्रमाण, सम्बन्ध-सम्पर्क प्रमाण निश्चय स्वरूप में आये, ऐसे निश्चय बुद्धि की विजय हुई ही पड़ी है। जैसे सभी को ये पक्का निश्चय है कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, इसके लिए कोई दुनिया के वैज्ञानिक भी आपको हिलाने की कोशिश करें कि आत्मा नहीं शरीर हो, तो मानेंगे नहीं और ही उसको मनायेंगे। तो जैसे ये पक्का है कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ और कौन-सी आत्मा हूँ, ये भी पक्का है, ऐसे निश्चयबुद्धि की विजय भी इतनी निश्चित है। हार असम्भव है और विजय निश्चित है। और ये भी निश्चित है कि बातें भी अन्त तक आनी हैं। लेकिन उसमें विजयी बनने के लिए एक ही समय पर चारों ही तरफ का निश्चय पक्का चाहिये। तीन में निश्चय है और एक में नहीं है तो विजय निश्चित नहीं है लेकिन मेहनत से विजय होगी। निश्चित विजय वाले को मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। कई बार कई कहते हैं बापदादा तो बहुत अच्छा, वो तो पक्का है कि बाप है और हम बच्चे हैं, हमारा बाप से ही सम्बन्ध है लेकिन दैवी परिवार में खिटखिट होती है, उसमें निश्चय डगमग हो जाता है इसीलिए परिवार को छोड़ देते हैं, हल्का कर देते हैं। तो एक साइड ढीला हो गया ना। बिना परिवार के माला में कैसे आयेंगे? माला कब बनती है? जब दाना दाने से मिलता है और एक ही धागे में पिरोये हुए होते हैं। अगर अलग-अलग धागे में अलग-अलग दाना हो तो उसको माला नहीं कहेंगे। तो परिवार है माला। अगर परिवार को छोड़कर तीन निश्चय पक्के हैं तो भी विजय निश्चित नहीं है। चलो परिवार की खिटखिट से किनारा कर लो, बाप का सहारा हो, परिवार का किनारा हो, तो चलेगा? काम तो बाप से है या भाइयों से है? बाप से काम है, वर्सा बाप से मिलना है, भाई-बहनों से क्या मिलेगा? लेकिन ब्राह्मण जीवन में यही न्यारापन है कि धर्म और राज्य दोनों की स्थापना होती है, सिर्फ धर्म की नहीं। और धर्म पितायें सिर्फ धर्म की स्थापना करते हैं, बाप की विशेषता है धर्म और राज्य की स्थापना करना। तो राज्य में एक राजा क्या करेगा? बहुत अच्छा तख्त भी हो, ताज भी हो, क्या करेगा? राजधानी भी चाहिये ना? तो राजधानी अर्थात् ब्राह्मण परिवार सो राज परिवार। इसलिए ब्राह्मण परिवार में हर परिस्थिति में निश्चयबुद्धि, तब राज्य-भाग्य में भी सदा राज्य अधिकारी होंगे। तो ऐसे नहीं समझना—कोई बात नहीं, परिवार से नहीं बनती है, बाप से तो बनती है! ड्रामा अगर भूल जाता है तो बाप तो याद रहता ही है! लेकिन कोई भी कमजोरी एक ही समय पर होती है, स्व स्थिति अर्थात् स्व-निश्चय भी अगर कमजोर होता है तो विजय निश्चित के बजाय हलचल में आ जाती है। तो बापदादा निश्चय के फाउण्डेशन को चेक कर रहे थे। क्या देखा?

सदा चार ही प्रकार का निश्चय एक समय पर साथ नहीं रहता, कभी रहता कभी हिलता इसलिये सदा विजयी का अनुभव नहीं कर पाते हैं। फिर सोचते हैं—होना तो ये चाहिये लेकिन पता नहीं क्यों नहीं हुआ? किया तो बहुत मेहनत, सोचा तो बहुत अच्छा.... लेकिन सोचना और होना इसमें अन्तर पड़ जाता है। इसका अर्थ ही है कि निश्चय के चारों तरफ मजबूत नहीं हैं। और हंसी की बात तो ये है कि ड्रामा भी कह रहे हैं, है तो ड्रामा, है तो ड्रामा.... लेकिन अच्छी तरह से हिल भी रहे हैं। कभी संकल्प में हिलते, कभी बोल तक भी हिल जाते, कभी कर्म तक भी आ जाते। उस समय क्या लगता होगा, दृश्य सामने लाओ, ड्रामा-ड्रामा भी कह रहे हैं और हिलडुल भी रहे हैं! लेकिन निश्चयबुद्धि की निशानी है निश्चित विजयी। अगर विधि ठीक है तो सिद्धि प्राप्त न हो, ये हो नहीं सकता। तो जब भी कोई भी कार्य में विजय प्राप्त नहीं होती है तो समझ लो कि निश्चय की कमी है। चारों ओर चेक करो, एक ओर नहीं।

और बात, निश्चयबुद्धि की निशानी जैसे निश्चित विजय है वैसे निश्चिन्त होंगे। कोई भी व्यर्थ चिन्तन आ ही नहीं सकता। सिवाए शुभ चिन्तन के व्यर्थ का नाम-निशान नहीं होगा। ऐसे नहीं, व्यर्थ आया, भगाया। निश्चयबुद्धि के आगे व्यर्थ आ नहीं सकता। क्योंकि क्यों, क्या, और कैसे—ये व्यर्थ होता है। जब ड्रामा के राज को जानते हैं, आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हैं तो जो ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हैं वो छोटी-सी बात के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जान सकते! न जानने के कारण क्यों, क्या, कैसे, ऐसे—ये व्यर्थ संकल्प चलते हैं। अगर ड्रामा में अटल निश्चय है, नॉलेजफुल भी हैं, पॉवरफुल भी हैं तो व्यर्थ संकल्प हिलाने की हिम्मत भी नहीं रख सकते। परन्तु जब हिलते हैं तो सोचते हैं पता नहीं क्या हो गया! तो बापदादा हंसते हैं कि ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जान लिया, अपने 84 जन्म को जान लिया और एक बात को नहीं जानते! बड़े होशियार हो! होशियारी दिखाते हो ना समय प्रति समय! कल्प वृक्ष के सभी पत्तों को जानते हो कि नहीं? सभी वृक्ष के फाउण्डेशन में बैठे हो? या 7-8 बैठे हैं? तो जड़ में बैठे हुए वृक्ष को जानते हो? पत्ते-पत्ते को जानते हो और ये पता नहीं कैसे? तो निश्चय की निशानियाँ निश्चिन्त

स्थिति, इसका अनुभव करो। होगा, नहीं होगा, क्या होगा, कर तो रहे हैं, देखें क्या होता है—इसको निश्चिन्त नहीं कहेंगे। और फिर बाप के आगे ही फरियाद करते हैं—आप मददगार हो ना, आप रक्षक हो ना, आप ये हो ना, आप ये हो ना....। फरियाद करना अर्थात् अधिकार गँवाना। अधिकारी फरियाद नहीं करेंगे—ये कर लो ना, ये हो जाये ना। तो निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चिन्त। तो ये प्रैक्टिकल निशानियाँ अपने आपमें चेक करो। ऐसे अलबेले नहीं रह जाना—हम तो हैं ही निश्चयबुद्धि। कौन-सा निश्चय कम-जोर है वो चेक करो और चेंज करो। सिर्फ चेक नहीं करना। बापदादा ने कहा था ना चेकर के साथ मेकर भी हो। सिर्फ चेकर नहीं। चेक करने का अर्थ ही है सेकण्ड में चेंज होना। लेकिन चेक करो और चेंज नहीं करो तो बहुत काल से स्वयं में दिलशि-कस्त के संस्कार पक्के होते जायेंगे और जो बहुतकाल के संस्कार हैं वही अन्त में अवश्य सामना करते रहेंगे। कोई सोचे अन्त में तो मैं सिवाए बाप के और कुछ नहीं सोचूँगा। लेकिन हो नहीं सकता। बहुतकाल का अभ्यास चाहिये। नहीं तो एक सेकण्ड सोचेंगे—शिवबाबा शिवबाबा शिवबाबा.... और दूसरे सेकण्ड माया कहेगी—नहीं, तुम्हारे में शक्ति नहीं है, तुम हो ही कमजोर, तो युद्ध चलती रहेगी। यदि निश्चिन्त नहीं होंगे तो ब्राह्मण जीवन के अन्तकाल का जो लक्ष्य वर्णन करते हो वो सहज कैसे होगा! और अगर अन्त तक ये व्यर्थ संकल्प होंगे तो वही भूतों के, यमदूतों के रूप में आयेंगे। और कोई यमदूत नहीं आते हैं, ये व्यर्थ संकल्प अपनी कमजोरियाँ, यही यमदूत के रूप में आते हैं। यमदूत क्या करते हैं? डराते हैं। और दूसरों के लिये कहेंगे विमान में जायेंगे अर्थात् उड़ती कला से पार हो जायेंगे। कोई विमान आदि नहीं हैं लेकिन उड़ती कला का अनुभव है। इसलिये पहले से ही चेक करके चेंज करो। कब तक करेंगे? बापदादा को खुश तो कर देते हैं—करेंगे, प्रतिज्ञा भी लिख देते हैं लेकिन वो कागज़ तक रहती हैं या जीवन तक?

अच्छा – आज मधुबन निवासियों का भी टर्न है। मधुबन वालों से तो विशेष बापदादा का स्नेह है। सबसे है लेकिन फिर भी थोड़ा-सा विशेष मधुबन निवासियों से है क्योंकि निमित्त हैं। फिर भी देखो आप आते हैं, खातिरी तो ठीक करते हैं ना। मधुबन वाले खातिरी करने में पास है ना। मेहमान-निवाजी करना ही महानता है। जिसको मेहमान-निवाजी करना आता है, वो महान् हो ही जाता है। सिर्फ खाने-पीने से नहीं लेकिन दिल के स्नेह की मेहमान-निवाजी, वो सबसे श्रेष्ठ है। चाहे पिकनिक कितनी भी करा लो लेकिन दिल का स्नेह नहीं मिला तो कहेंगे कुछ नहीं मिला। तो मधुबन वाले दिल के स्नेह सहित मेहमान-निवाजी करते हैं। करते हो ना कि कोई नीचे-ऊपर करेंगे तो कहेंगे बापदादा ने ऐसे ही कहा? ऐसे नहीं करना। स्नेह के सागर के बच्चे हो ना, कब तक स्नेह देंगे? नहीं। गागर के बच्चे नहीं, सागर के बच्चे, बेहद।

सबके पास स्नेह का स्टॉक है ना? माताओं के पास भी है, कुमारियों के पास भी है, पाण्डवों के पास भी है। सागर है या थोड़ा है? तो कभी क्रोध तो नहीं करते होंगे ना? जब स्नेह के सागर हैं तो क्रोध कहाँ से आया? किसके संस्कारों को जानकर सेटिस्फाय करते हो ना। चाहे वो रांग है लेकिन आप तो नॉलेजफुल हो ना, आप तो जानते हो ना कि ये क्या है लेकिन उस समय क्या कहते हैं—इसने ऐसे किया ना, इसीलिये हमने भी किया। रांग से रांग हो गया तो क्या कमाल की? उसने रांग किया और आपने उसका रेसपॉन्ड भी रांग ही दिया! कई कहते हैं ना क्रोध एक बारी करते हैं तो कुछ नहीं होता, बार-बार करता रहता है! तो जानते हो कि जिसका स्वभाव ही क्रोध का है तो वो क्रोध नहीं करेगा तो क्या करेगा! उसका काम है क्रोध करना और आपका काम है स्नेह देना या क्रोध करना? वो 10 बारी करे तो आप एक बारी तो जवाब देंगे ना? नहीं देंगे तो वो 20 बारी करेगा! फिर क्या करेंगे? तो इतनी सहनशक्ति है? या उसने 10 किया, आपने आधा किया कोई हर्जा नहीं? उसने झूठ बोला, आपने क्रोध किया, तो क्या ठीक हुआ? फिर बड़े बहादुरी से कहते हैं—झूठ बोला ना, इसीलिये क्रोध आ गया। लेकिन झूठ बोलना तो अच्छा नहीं लगा और क्रोध करना अच्छा है! तो स्नेह के सागर के मास्टर स्नेह के सागर। मास्टर स्नेह के सागर के नयन, चैन, वृत्ति, दृष्टि में ज़रा भी और कोई भाव नहीं आ सकता। यदि थोड़ा-थोड़ा जोश आ गया तो क्या उसको स्नेह का सागर कहेंगे? कि लोटा है? चाहे कुछ भी हो जाये, सारी दुनिया क्यों नहीं आप पर क्रोध करे लेकिन मास्टर स्नेह के सागर दुनिया की परवाह नहीं करेंगे। बेपरवाह बादशाह हो। जो परवाह थी वो पा लिया। अभी इन व्यर्थ बातों से बेपरवाह बादशाह। चेकिंग की परवाह करो, चेंज होने की परवाह करो, लेकिन व्यर्थ में बेपरवाह। कर सकते हो कि बच्चा, पोत्रा, धोत्रा, धोत्री.... थोड़ा-सा क्रोध करेगा, थोड़ा-सा नीचे-ऊपर करेगा, तो स्नेह के बजाय और भावना भी आ जायेगी? दफतर में जायेंगे, बिजनेस में जायेंगे, नौकर ऐसा मिल जायेगा, वायुमण्डल ऐसा मिल जायेगा.... लेकिन व्यर्थ से बेपरवाह बादशाह। समर्थ में बेपरवाह नहीं होना। कई उल्टा भी उठा लेते हैं, जहाँ मर्यादा होगी वहाँ कहेंगे बापदादा ने कहा ना कि बेपरवाह बादशाह बन जाओ। लेकिन मर्यादाओं में बेपरवाह नहीं। आपका टाइटल है मर्यादा पुरुषो-त्तम। ये मर्यादायें ही ब्राह्मण जीवन के कदम हैं। अगर कदम पर कदम नहीं रखा तो मंजिल कैसे मिलेगी? ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो। तो ये मर्यादायें ही कदम हैं। अगर इस कदम में थोड़ा भी नीचे-ऊपर होते हो तो मंजिल से दूर हो जाते हो और फिर मेहनत करनी पड़ती है। और बापदादा को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती, कहते हैं सहज योगी और करते हैं मेहनत। तो अच्छा लगता है क्या? अच्छा।

(बापदादा ने ड्रिल कराई) एवररेडी हो? अभी-अभी बापदादा कहें सब इकट्ठे चलो तो चल पड़ेंगे? कि सोचेंगे कि फोन करें, टेली-

ग्राम करें कि हम जा रहे हैं? टेलीफोन के ऊपर लाइन नहीं लगेगी? आपके घर वाले सोचेंगे कहाँ गये फिर? सेकण्ड में आत्मा चल पड़ी—है तो अच्छा ना कि याद आयेगा कि अभी तो एक सब्जेक्ट में कमजोर हूँ? अच्छा, यह याद आयेगा कि चीजों को सिर्फ ठिकाने लगाकर आऊँ? सिर्फ इतल्ला करके आऊँ कि हम जा रहे हैं? यह सोच थोड़ा-थोड़ा चलेगा? नहीं। सभी बंधनमुक्त बनेंगे। अभी से चेक करो कि कोई सोने का, चांदी का धागा तो नहीं है? लोहा मोटा होता है तो दिखाई देता है लेकिन ये सोना और चांदी आकर्षित कर लेता है। एवररेडी का अर्थ ही है ऑर्डर हुआ और चल पड़ा। इतना मेरेपन से मुक्त हो? सबसे बड़ा मेरापन सुनाया ना कि देहभान के साथ देह-अभिमान के सोने-चांदी के धागे बहुत हैं। इसलिये सूक्ष्म बुद्धि से, महीन बुद्धि से चेक करो कि कोई भी अल्पकाल का नशा ये धागा बन करके रोकने के निमित्त तो नहीं बनेगा? मोटी बुद्धि से नहीं सोचना कि मेरा कुछ नहीं है, कुछ नहीं है। फालो करने में सदा ब्रह्मा बाप को फालो करो। सर्व प्रति गुणग्राहक बनना अलग चीज है लेकिन फालो फादर। कई हैं जो भाई-बहनों को फालो करने लगते हैं लेकिन वो फालो किसको करते हैं? वो फालो ब्रह्मा बाप को करते हैं और आप फिर उनको करते! डायरेक्ट क्यों नहीं करते? सभी ब्रह्मा कुमार हो ना? कि फलाने भाई कुमार, फलानी बहन कुमार? यह तो नहीं? फालो फादर गाया हुआ है या फालो ब्रदस-सिस्टर? विशेषता देखो, लेकिन फालो फादर। रिगार्ड रखो लेकिन गाइड एक बाप है। कोई भाई-बहन गाइड नहीं बन सकता। गाइड एक है। गॉड गाइड है और साकार एगज़ाम्पल ब्रह्मा बाप है। बस। तो फालो फादर करते हो कि सोचते हो कि ब्रह्मा को तो देखा ही नहीं, जाना ही नहीं, तो कैसे फालो करें? जानते नहीं हो, देखा नहीं है? टीचर्स को देखा, भाई-बहनों को देखा, बाप को देखा ही नहीं—ऐसे तो नहीं सोचते? कोई भी निमित्त हैं लेकिन निमित्त बनाया किसने? अपने आप ही तो निमित्त नहीं बने ना? बाप ने बनाया। तो फिर बाप याद आयेगा ना?

अच्छा। सभी अच्छी तरह से सेट हो गये हैं। सोना-खाना ठीक है? कि बहुत दूर कोने में भेज दिया है? भक्ति मार्ग में तो यात्राओं में कितना पैदल करते हो और आप अगर दूर भी रहते हो तो लेने के लिए बस आती है। आराम से आते हो ना? और ब्रह्मा बाप के आगे तो यह कोच-कुर्सियाँ भी नहीं थी। अभी तो देखो, कोच और कुर्सियों वाले हो गये। कितने आराम से बैठे हो। बापदादा भी जानते हैं कि पुराने शरीर हैं तो पुराने शरीरों को साधन चाहिये। लेकिन ऐसा अभ्यास जरूर करो कि कोई भी समय साधन नहीं हो तो साधना में विघ्न नहीं पड़ना चाहिये। जो मिला वो अच्छा। अगर कुर्सी मिली तो भी अच्छा, धरनी मिली तो भी अच्छा। सब आराम से रहे हुए हो कि खटिया चाहिये? घरों में तो खटिया पर सोते हो ना, यहाँ भी खटिया मिली तो क्या बात हुई! चेंज चाहिये ना। चेंज के लिये कितना खर्चा करके जाते हैं। वहाँ खटिया पर सोते हो, यहाँ पट पर सोते हो, चेंज हो गई ना। ये तो सुना दिया कि जितना साधन बढ़ायेंगे उतनी संख्या डबल, ट्रिबल बढ़ेगी। तो ये तो चलना ही है। अभी ज्ञान सरोवर बना रहे हैं फिर दूसरे वर्ष कहेंगे ज्ञान सरोवर छोटा हो गया। ये तो होना ही है। क्योंकि सेवा को समाप्त भी करना है या चलते रहना है? सम्पन्न करके समाप्त करना है। तो सम्पन्न तब होगी जब कम से कम 9 लाख की माला बनाओ। अच्छा।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल - अच्छा, ये कितनी माला लायेंगे? लाख, दो, तीन, कितनी? (4 लाख) 4 लाख लायेंगे! फिर तो अच्छा है, और ज़ोन मौज मनाये और पंजाब माला बनाये। अच्छा, ऐसा कौन-सा ज़ोन है जो अभी 50 हज़ार तक पहुँचा हो? कोई भी ज़ोन में 50 हज़ार नहीं हैं। तो कम से कम हर ज़ोन 50 हज़ार तो बनाये। पंजाब की संख्या कितनी है? (12 हज़ार) अच्छी बात है, 4 लाख का लक्ष्य रखा है। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और जम्मू कश्मीर 4 तो हैं, तो चार एक-एक लाख बनाये तो क्या बड़ी बात है। लेकिन कब तक बनायेंगे? सतयुग के आदि तक या अभी? पंजाब वाले समीपता को समीप लाने वाले हैं। सम्पूर्णता समीपता का आधार है। तो पंजाब की विशेषता है स्वयं को सम्पूर्ण बनाये अन्तिम समय को समीप लाने वाले। हिम्मत है? जितना-जितना स्वयं को सम्पन्न बनाते जायेंगे उतना सम्पूर्णता और समीपता नजदीक आ जायेगी। तो सदा समीप रहने वाले और सदा समय को समीप लाने वाले। देखो, पंजाब वालों ने एक विजय तो प्राप्त कर ली, वायुमण्डल को परिवर्तन कर लिया। आतंकवादियों का वायुमण्डल तो बदला अभी अंत लाने में भी इतने बहादुर बनो। पंजाब माना बहादुर। शरीर में भी, आत्मा में भी। तो सदा यह याद रखना कि—सम्पूर्णता द्वारा समाप्ति के समय को समीप लाने वाले हैं, समीप रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं। जो बाप समान होंगे वो ही समीप रहेंगे। तो ऐसे समीप रहने वाली आत्मायें हो। इसी स्मृति के समर्थी से सदा आगे बढ़ते चलो। समझा? अच्छा!

बाम्बे, नागपुर, पूना, जलगांव (महाराष्ट्र) – महाराष्ट्र वाले कितनी माला तैयार करेंगे? (5 लाख) महाराष्ट्र में बाम्बे भी है और बाम्बे को नरदेसावर का टाइटल है तो सिर्फ़ पैसे में थोड़ेही नरदेसावर होंगे, माला के मणके बनाने में भी नरदेसावर। तो महाराष्ट्र पांच लाख बनायेंगे! कोई ख्याल नहीं करना कि 9 लाख तो पूरे हो गये! पंजाब वाले चार लाख लायेंगे और महाराष्ट्र पांच लाख लायेगा। फिर छॉट छूट भी तो होगी ना? कोई त्रेता की प्रजा होगी, कोई सतयुग की होगी, इसलिये इतने भले बनाओ। महाराष्ट्र की महानता अर्थात् सदा विजयी। महानता है ही विजय में। तो सदा निर्विघ्न स्थिति द्वारा सदा विजयी आत्मायें। विजय निश्चित है ऐसे निश्चय बुद्धि विजयी। क्योंकि आप विजयी नहीं बनेंगे तो और कौन बनेगा? बनना ही है। तो महाराष्ट्र प्रजा भी महान् बनायेंगे। छोटी-मोटी नहीं बनाना। और पंजाब बहादुर बनाना, कमजोर नहीं।

कर्नाटक – अच्छा कर्नाटक वाले कितनी माला बनायेंगे? (दो लाख) अच्छा है, कर्नाटक वालों को स्नेह का जादू बहुत जल्दी

लगता है। ज्ञान समझे, नहीं समझे, लेकिन स्नेह में नम्बरवन। भाषा के कारण ज्ञान समझेंगे आधा, लेकिन स्नेह में नम्बरवन। देखो, स्नेह की निशानी है कि सेन्टर बहुत खोलते जाते हैं, सिर्फ एडीशन ये करना कि निर्विघ्न प्रजा बनानी है और निर्विघ्न राजधानी बनानी है। तो कर्नाटक वालों को क्या याद रखना है—निर्विघ्न राज्य अधिकारी और निर्विघ्न साथी बनाना। वृद्धि में बहुत अच्छे हैं लेकिन सिर्फ बैलेन्स रखना—जितना स्नेह उतना ही निर्विघ्न स्थिति। दोनों के बैलेन्स से सदा स्वतः ही कर्नाटक वालों को ब्लैसिंग मिलती रहेगी। तो कर्नाटक वाले अण्डरलाइन करना—निर्विघ्न वृद्धि। अच्छा।

गुजरात – गुजरात के ऊपर बापदादा का, दादियों का अधिकार बहुत है। कोई भी काम पड़ता है तो गुजरात पर अधिकार रखते हैं। तो गुजरात की विशेषता क्या हुई? सेवा में भी अधिकारी। जो सेवा में अधिकारी हैं वो राज्य में तो अधिकारी बनेंगे ही। देखो, सेवा में हॉ जी, हॉ जी करते हैं तो राज्य में क्या होगा? जी हज़ूर, जी हज़ूर। तो सहयोग देने में नम्बरवन हैं क्योंकि ड्रामानुसार नजदीक का भाग्य मिला हुआ है। अभी अगर गुजरात को कहें कि सभी भले एक-एक बस तैयार करके पहुँच जायें तो कितनी बसें आयेंगी? बहुत आ जायेंगी ना! तो एवररेडी संख्या तो है ना! महाराष्ट्र को, दूर वालों को बुलाओ तो दूर के कारण मुश्किल होता है। लेकिन गुजरात को तो भाग्य है। और सेवा में जिम्मेदारी उठाने वाले भी अच्छे-अच्छे हैं। पूछ-पूछ करने वाले नहीं हैं। जिम्मेदारी उठाने में अच्छे हैं। तो ये भी ड्रामा में भाग्य स्वतः ही प्राप्त है, जो रेडी हो जाते हैं, जितनों को ऑर्डर करते हैं आ जाते हैं। (दादी से) अभी देखो मेले के लिए आप निश्चिन्त हो ना। क्योंकि गुजरात ने जिम्मेदारी उठाई। तो बापदादा भी जिम्मेदारी का ताज पहनने वाले बच्चों को देखकर खुश होते हैं।

भोपाल – भोपाल की संख्या कितनी है? (5 हज़ार) बहुत थोड़ी है। तो क्या करेंगे? पांच हजार के आगे एक बिन्दी लगायेंगे। अच्छी प्रजा लायेंगे ना! अच्छा है, सदा विधि द्वारा सहज वृद्धि को प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ आत्मायें। जल्दी वृद्धि को प्राप्त करेंगे ना? फिर भी सेवा के साधन अच्छे हैं। अगर दो-चार माइक तैयार कर लो तो बिन्दी लगना कोई मुश्किल नहीं होगी और चांस है। देखो सेन्ट्रल वाले समय मुश्किल देते हैं और स्टेट वाले समय सहज देते हैं, सम्बन्ध-सम्पर्क में सहज आ सकते हैं इसलिये माइक तैयार करो। तो माइक तैयार करने से उनके पीछे अनेक आत्मायें सहज आ जाती हैं। एक के आवाज़ से अनेकों का कल्याण हो सकता है। उन्हों को सिर्फ स्नेही, सम्पर्क वाले नहीं बनाओ लेकिन नजदीक सम्बन्धी बनाओ। तो भोपाल वाले माइक तैयार करके लायेंगे? कि हुए ही पड़े हैं? ला सकते हो, मार्जिन अच्छी है। सम्बन्ध है लेकिन थोड़ा और सम्बन्ध नजदीक का हो। तो सदा श्रेष्ठ विधि द्वारा वृद्धि को प्राप्त करने वाले। समझा, क्या विशेषता है? सहज वृद्धि करने वाले। अच्छा।

राजस्थान – राजस्थान में आबू वाले भी हैं कि अलग हैं? ये सेन्ट्रल है, वो सेन्टर है। मुख्य केन्द्र राजस्थान में है, ये तो कमाल है राजस्थान की। लाइट हाउस तो राजस्थान में ही हुआ ना। अभी सेन्ट्रल में हो गया लाइट हाउस और सेन्टर्स पर क्या है? लाइट है या लाइट हाउस है? जयपुर लाइट है या लाइट हाउस है? कितनी जगह लाइट दिया है? लाइट हाउस का काम क्या होता है? चारों ओर लाइट देना या सिर्फ आस-पास लाइट देना? चारों ओर लाइट देते हैं ना। तो राजस्थान को चारों ओर राजस्थान में लाइट देना है। जगाया तो है, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर.... आदि में जगाया तो है लेकिन अभी लाइट से लाइट हाउस बनाओ। राजस्थान में एक भी एरिया खुशक नहीं रह जाये। राजस्थान को वैसे कहते हैं बड़ा खुशक है लेकिन ब्राह्मण जीवन में सबसे हरा-भरा राजस्थान। जो कहते हैं ना राजस्थान में रेत है तो रेत के बजाए सोने के महल हो जायेंगे। होना तो है ना! तो रेती को सोना बनाओ। राजस्थान क्या करेगा? सोने जैसी आत्मायें तैयार करेंगे और सोने के महल तैयार करेंगे। देखो, देहली में राजधानी बनेगी तो राजस्थान कितना नजदीक है। तो वहाँ भी बनेंगे ना। तो राजस्थान मिट्टी को सोना बनायेगा। इतना उमंग है ना? राजस्थान को परिस्तान बनाने वाले। चारों ओर परिस्तान की खुशबू दिखाई दे। संख्या भी बढ़ाओ और संख्या के साथ-साथ माइक भी तैयार करो। हर एक स्टेट के सहज माइक निकाल सकते हैं। चाहे छोटा माइक हो, चाहे बड़ा हो, चलो बड़ा नहीं तो छोटा ही सही। देखो राजस्थान के माइक ने कमाल तो किया ना। आज ज्ञान सरोवर में माइक ने ही काम किया ना। तो हर स्टेट को महाराष्ट्र, कर्नाटक.... जो भी हैं, सभी स्टेट को माइक तैयार करने चाहिये। और एक-एक स्टेट के माइक अगर सभी मिल जायेंगे तो संगठन बन जायेगा और संगठन का आवाज़ सहज फैलेगा। तो राजस्थान वाले माला भी तैयार करना और माइक भी। अच्छा।

आगरा – आगरा वाले क्या करेंगे? जैसे आगरा में मिट्टी का, इंटों का ताजमहल आकर्षित करता है वैसे आगरा में ये प्रसिद्ध हो जाये कि यहाँ ताजमहल तो है लेकिन ताजधारी भी गुप्त वेश में हैं। सिर्फ ताजमहल देखने नहीं आये लेकिन यहाँ ताजधारी कौन हैं—वो भी देखने आये। आपको दूँढे कि कहाँ हैं? इतनी ताजधारी आत्माओं की आकर्षण हो। उन्हों को वायब्रेशन आये कि यहाँ कोई श्रेष्ठ आत्मायें गुप्त हुए वेश में है। जैसे द्वापर में जो ऋषि-मुनि सतोप्रधान स्थिति में थे तो दूर से ही प्रभाव पड़ता था ना, दूँढ करके उन्हों के पास पहुँचते थे। वो खुद तो नहीं बुलाते थे। तो जब ऋषि-मुनि आत्मिक ज्ञान वाले आकर्षित कर सकते हैं तो परमात्म ज्ञानी क्या नहीं कर सकते! तो हर एक अपने को ऐसा ताजधारी अर्थात् जिम्मेदार समझे, कि मेरी जिम्मेदारी है—लोगों को आकर्षित कर बाप का बनाना। अपना नहीं बनाना, बाप का बनाना। तो आगरा वाले यह नवीनता दिखाओ, जो सबकी नज़र जाये। समझा? हीरे तैयार करो। ताज में झूठे हीरे हैं ना। आप सच्चे हीरे तैयार करो। अच्छा!

नेपाल – नेपाल को देश भी कहते हैं तो विदेश भी कहते हैं। डबल फायदा उठाते हैं। जब फारेनर्स का टर्न होता तो कहते हैं हम फारेनर्स हैं, जब इण्डिया का टर्न होता है तो कहते हैं हम इण्डियन हैं। डबल चांस लेते हैं। अच्छा है। नेपाल के भी कई लोग भावना वाले बहुत हैं। प्यार से सुनने वाले अच्छे हैं। नेपाल की धरनी में भी भावना अच्छी है। और दूसरी विशेषता देखी है कि ज्यादा बातों में कम जाते हैं, अपने में मस्त रहते हैं। खिटखिट कम करते हैं। इसीलिये वृद्धि भी अच्छी हो रही है और क्वालिटी भी अच्छी है। बहुत अच्छी नहीं कहेंगे लेकिन अच्छी है। नेपाल वालों ने भी माइक नहीं तैयार किया है। सहयोगी हैं, समय पर सहयोग दे देते हैं लेकिन समीप-सम्बन्ध में लाने से बुलन्द आवाज़ होगा। अभी छोटा-सा आवाज़ होता है तो सिर्फ नेपाल में ही फैलता है, बस। बुलन्द आवाज़ करने वाले तैयार करो। अगर हर स्टेट के माइक दो-तीन, दो-तीन भी तैयार हो जायें तो क्या रौनक नहीं होगी? फिर आप लोगों को सेवा करने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आप लाइट हो जायेंगे, वो माइक हो जायेंगे। आप सिर्फ लाइट देते रहेंगे। अभी लाइट भी देते हो तो माइक भी बनते हो। फिर माइक वो बनेंगे और आप लाइट देते रहेंगे। तो सेवा में नया मोड़ लाओ। नवीनता लाओ। इसके लिये ये प्रोग्राम रखा है ना कि विदेश से भी हर देश से आवें, यहाँ के भी हर स्टेट से आवें। लेकिन माइक तैयार करो तो माइक की दरबार हो जायेगी। और इतने माइक इकट्ठे हो जायेंगे तो आवाज़ भी बुलन्द होगा। तो ऐसे नवीनता का प्रोग्राम करो। अभी माइक तैयार करके फिर डेट फिक्स करो। लेकिन कोई भी कोना, कोई भी स्टेट रहनी नहीं चाहिये। अगर कहाँ भी आवाज़ बुलन्द करना होता है तो चारों ओर माइक लगाते हो ना, चारों ओर माइक लगाने से आवाज़ बड़ा हो जाता है। सभी माइक एक ही आवाज़ बोलें तो चारों ओर से एक ही आवाज़ निकलेगा—यही प्रत्यक्षता का झण्डा है। तो अभी तैयारी करो। तो सभी ज़ोन वाले सिर्फ इसमें खुश नहीं होना कि हमको भी वरदान मिला लेकिन जाकर सेवा करना। देहली वालों को पहले करना है। देहली, बाम्बे दोनों ही नाम बाला करने वाले हैं। तो ऐसी कमाल करो जो सबके मुख से यही निकले कि सच-मुच परिवर्तक आप ही हो। ये भी हैं, नहीं, ये ही हैं। अभी कहते हैं ये भी हैं, वो भी हैं, ये भी अच्छे हैं। ये ही अच्छे हैं—जब ये आवाज़ निकले तब झण्डा लहरायेगा। अनेक हैं, नहीं। एक हैं। तो सभी ज़ोन वाले ऐसा करने के लिए तैयार हो ना? कोई मन्सा सेवा करो, कोई वाचा करो। मन्सा सेवा तो सभी कर सकते हो ना? तो वायब्रेशन फैलाओ। वाणी से नहीं तो मन्सा से योगदान दो। सबकी अंगुली चाहिये। समझा? अच्छा।

डबल विदेशी – डबल विदेशी अर्थात् दूरदेशी और दूरादेशी। भारत में जो मैसेज देने वाले होते हैं उनको दरवेश भी कहते हैं। तो डबल विदेशी दूरादेश बुद्धि वाले अच्छे हैं। दूरादेश बुद्धि अर्थात् हर परिस्थिति, हर बात को आदि-मध्य-अन्त तीनों कालों से जानने और देखने वाले। जिसको दूसरे शब्दों में कहेंगे त्रिकालदर्शी। तो जो भी कार्य करें त्रिकालदर्शी होकर करें। एक काल नहीं देखें। तीनों ही कालों को जानने, समझने और समझकर चलने वाले। इसको कहते हैं दूरादेश बुद्धि, दूरादेशी दृष्टि। तो जो तीनों काल को जानकर करते हैं वो कभी भी भटकेंगे नहीं। तीनों कालों को जानकर करने वाले सदा ही विजयी होंगे। सहज विजयी। मेहनत के बाद विजयी नहीं। मेहनत करके विजय प्राप्त होती है तो मेहनत में आधा मौज तो खत्म हो जाती है। और जो सहज विजय होती है उसमें नशा, खुशी, मौज—सब होती है। तो डबल विदेशी त्रिकालदर्शी हो? कि एकदर्शी हो? जल्दी-जल्दी में एक काल देखकर तो नहीं कर लेते? त्रिकालदर्शी अर्थात् सोच-समझ कर कार्य करने वाले। जल्दी-जल्दी में सिर्फ वर्तमान देखकर कर लिया तो धोखा खा लेते हैं। लेकिन त्रिकालदर्शी बनकर कार्य करते तो सदा सफलता सहज मिलती है। तो सहज सफलता प्राप्त करने वाले त्रिकालदर्शी अर्थात् दूरादेशी बुद्धि वाले। समझा।

मधुवन निवासी – (बापदादा ने आबू के भिन्न-भिन्न स्थानों पर सेवा में उपस्थित भाई-बहिनों से हाथ उठवाया) देखो, पीस पार्क भी कम नहीं है। लण्डन अमेरिका सबको भूल जाता है। जो पीस पार्क देखते हैं तो कॉपी करने की कोशिश करते हैं। लेकिन कितनी भी कॉपी करें, रुहानियत की झलक तो आ नहीं सकती, प्यार की झलक तो आ नहीं सकती। तो मेहनत का फल मिल रहा है। मेहनत तो अच्छी की है। प्यार से मेहनत की है ना। सिर्फ पानी नहीं दिया है लेकिन प्यार का पानी दिया है इसीलिये वायुमण्डल न्यारा और प्यारा है। और ज्ञान सरोवर वाले भी बहुत प्यार से मेहनत कर रहे हैं। अच्छी रिजल्ट है। और निश्चयबुद्धि सबसे नम्बरवन हैं। कितना भी कोई जाकर हिलाता है—नहीं तैयार होगा, नहीं तैयार होगा, जितना वो ना करते हैं उतना ये हाँ करते हैं। इसलिये निश्चय की विजय होती है। तैयार होना ही है, बाप को आना ही है। इसलिये मुबारक हो निश्चय की। अच्छा। तलहटी वाले भी मौज में आ गये हैं, मेला मनाने की तैयारी कर रहे हैं। अच्छा है, रौनक तो चाहिये ना। कोई नवीनता चाहिये ना। ओम् शान्ति भवन के हाल में तो सदा बैठते ही हो। लेकिन नवीनता भी चाहिये ना। और कितनी आत्माओं का संकल्प पूरा हो जायेगा। उल्हने कम हो जायेंगे। तो तलहटी में ठीक तैयारी हो रही है? बड़ी बात तो नहीं लगती? खुशी में मुश्किल भी सहज हो जाती है। अच्छा। आबू निवासी क्या कर रहे हैं? सहयोग का साथ दे रहे हैं। कभी भी कोई कार्य होता है तो आबू निवासी कार्य कर लेते हैं। अच्छा है, म्युजियम भी अच्छी सेवा कर रहा है, म्युजियम वाले बच्चे भी मेहनत अच्छी करते हैं। म्युजियम तो चलता-फिरता एक सेवा का स्थान है। इस म्युजियम ने भी कितने सेवाकेन्द्र खोले होंगे। कितनी आत्माओं की धरनी परिवर्तन कर दी है। यहाँ का प्रभाव वहाँ स्थानों पर भी काम में आता है। क्योंकि यहाँ आने वाले फ्री होते हैं तो बुद्धि फ्री होने के कारण प्रभाव अच्छा पड़ता है

फिर वही वहाँ काम में आता है। तो म्युजियम की सेवा भी कम नहीं है। सभी स्थानों की सेवा अच्छी है। यहाँ (ओम् शान्ति भवन में) भी जो ग्रुप समझाते हैं, वो भी अच्छी सेवा है। तो सब जगह सेवा सहज होती जाती है, प्रभाव पड़ता जाता है। अच्छा है।

अच्छा, मधुबन वाले क्या करेंगे? मधुबन वाले सदा ही अपने को आधारमूर्त और उदाहरणमूर्त समझो। साकार कर्म में मधुबन निवासी उदाहरण हैं और आधारमूर्त भी हैं। क्योंकि जो भी रूहानी साधन चाहिये वो सब तो मधुबन से ही जाते हैं। इसलिये मधुबन वाले ये नहीं समझें कि हम मधुबन के कमरे में हैं या पाण्डव भवन के अन्दर रहते हैं लेकिन हर कर्म में, हर संकल्प में, हर बोल में आधारमूर्त हो। हर एक जो विशेषता देखते हैं कर्म में, वाणी में, वो प्रैक्टिकल मधुबन में ही देखते हैं। तो सदा हर समय आधारमूर्त भी हो और उदाहरणमूर्त भी हो। चाहे अच्छा करते हो तो भी उदाहरण बनते हो और मिक्स करते हो तो भी उदाहरण। उदाहरण सभी मधुबन का ही देते हैं। इसीलिये इतना जिम्मेदारी का बड़ा ताज मधुबन निवासियों को पड़ा हुआ है। अच्छा-संगम भवन के थोड़े हैं लेकिन सेवा बहुत अथक करते हैं। संगम निवासी भागदौड़ का काम अच्छा करते हैं।

अच्छा – हॉस्पिटल का क्या हालचाल है? हॉस्पिटल बहुत अच्छा है कि अच्छा है? देखो हॉस्पिटल की विशेषता क्या है? वैसे सोचते हैं कि पेशेन्ट कोई नहीं हो, और हॉस्पिटल सोचती है कि पेशेन्ट आवें। अगर पेशेन्ट नहीं आते तो उदास हो जाते हैं। पेशेन्ट को पेशेन्स में लाते हैं। तो हॉस्पिटल में सिर्फ पेशेन्ट नहीं लेकिन पेशेन्स धारण करने वाले पेशेन्ट भी आते हैं। अच्छा है, सबसे ज्यादा हॉस्पिटल का फायदा ब्राह्मणों को है। एम्बुलेन्स में बैठे और पहुँच गये। अच्छी मदद है। एक तो ब्राह्मणों को मदद है और दूसरा जो लोग समझते हैं कि ये कुछ नहीं करते हैं वो समझते हैं कि हाँ ये करते हैं, बहुत करते हैं। हॉस्पिटल ने सेवा बढ़ाई ना। 'कुछ नहीं' को 'करते हैं' में परिवर्तन कर लिया। ऐसे है ना। अच्छा है, हॉस्पिटल वाले अगर फुर्सत मिलती है तो मंसा सेवा बहुत करो। उससे फुर्सत नहीं मिलेगी। अच्छा।

चारों ओर के सर्व निश्चयबुद्धि श्रेष्ठ आत्मायें, सदा निश्चित विजयी आत्मायें, सदा निश्चिन्त आत्मायें, सदा श्रेष्ठ विधि द्वारा वृद्धि करने के निमित्त बनने वाली विशेष आत्मायें, सदा एक बाप एक बल एक भरोसे में अचल-अडोल रहने वाले समीप आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादियों से:- (दादी जी बाम्बे अहमदाबाद तथा जानकी दादी पूना सेवा पर गई थी) चक्कर लगाकर आई। सन्तुष्टता दिलाने वाली सन्तुष्ट मणियाँ हो। तो सन्तुष्ट मणियाँ जहाँ भी जायेंगी तो सन्तुष्ट करेंगी ना! चाहे तन वालों को, चाहे मन वालों को, दोनों प्रकार से सन्तुष्ट करते हैं। इसीलिये बापदादा सदा सन्तुष्ट मणियाँ कहते हैं। (सभी की याद दी) अच्छा है। याद का टोकरा भरकर आये हैं। कदम में पदम भरे हुए हैं। इसलिये आपके चक्कर लगाने से अनेकों के चक्कर समाप्त हो जाते हैं। जिनको जो चाहिये वो मिल जाता है। इसलिये अनेकों के व्यर्थ चक्कर खत्म हो जाते हैं। ऐसे ही अनुभव होता है ना? दादियों में सबका प्यार है ना। जो भी निमित्त हैं उन्हीं में प्यार है। (दादी जानकी) अच्छा है, दृढ़ निश्चय से सब ठीक हो जाता है। कितने भी कड़े संस्कार हो लेकिन जहाँ दृढ़ता है वहाँ सब एकदम मोम के समान खत्म हो जाते हैं।

जगदीश भाई से – अब क्या करेंगे नवीनता? (विशाल प्रोग्राम माइक बनाने का) एक बारी इकट्ठा सभी कोने से आवाज़ आये तो बुलन्द हो। हाँ जी, हाँ जी करते चलो और सबका हाँ जी हो ही जाना है। विदेश वाले देश वालों को कहे हाँ जी और देश वाले विदेश वालों को कहे हाँ जी। तो जहाँ हाँ जी होगा वहाँ हुआ ही पड़ा है।

साधन बहुत अच्छा है सिर्फ बालक और मालिक बनना आ जाये। समय पर बालक, समय पर मालिक। सभी को बनना आता है? कि जिस समय बालक बनना है उस समय मालिकपन आ जाता है? तो बापदादा देखेंगे कि हाँ जी का पाठ किसने पक्का किया है? सभी करते हैं, ऐसी कोई बात नहीं है लेकिन कार्य के टाइम देखेंगे। अच्छा!

(दादी चन्द्रमणी इलाहाबाद कुम्भ मेले में जा रही है) आपको सीट बहुत अच्छी मिली है, चक्कर लगाते रहो, मौज मनाते रहो। और दूसरों को भी मौज में लाते रहो।

अच्छा, पाण्डव और शक्तियाँ दोनों का संगठन अच्छा है। शक्ति के बिना पाण्डव नहीं चलते, पाण्डवों के बिना शक्तियाँ नहीं चल सकतीं। दोनों की आवश्यकता आदि से अन्त तक रही है और रहेगी।

अच्छा-जो भी जहाँ से भी आये हो, सब अच्छे ते अच्छे भाग्यवान हो, श्रेष्ठ हो, बाप के प्यारे हो। चाहे विदेश से आये हो, चाहे देश से आये हो, हर एक बाप का प्यारा है। सभी बाप का श्रृंगार हो। बिना आपके बाप कुछ नहीं कर सकता। इसलिये बापदादा भी कहते हैं पहले बच्चे। तो हरेक समझता है कि मैं प्यारा हूँ? एक ही बेहद का बाप सबको प्यार दे सकता है। आत्मायें नहीं दे सकती, बाप दे सकता है। क्योंकि बेहद है। तो हर एक समझता है मैं बाप का प्यारा हूँ। नाम लेवें, नहीं लेवें लेकिन प्यारे सब हैं। अच्छा! ओम् शान्ति।

ज्ञान सरोवर – उद्घाटन के शुभ मुहूर्त पर – अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य प्रातः 11.00 बजे

आज स्नेह सम्पन्न दिवस पर स्नेह के सागर बापदादा अपने अति स्नेही, स्नेह में समाए हुए लवलीन बच्चों से मिलने आए हैं। सबके स्नेह के गीत बापदादा सुनते रहे हैं और सुनते रहेंगे। हर एक बच्चे का स्नेह बापदादा देख, बाप भी गीत गाते हैं वाह मेरे स्नेही बच्चे वाह! बच्चों ने भी आज के समर्थ दिवस को सेवा में साकार किया है और करते रहेंगे। ब्रह्मा बाप भी बच्चों के गुणगान करते हैं। लेकिन साकार रूप से अव्यक्त रूप में और समीप वा साथ का विशेष अनुभव करा रहे हैं। क्या बच्चों को ऐसे लगता है कि बाप साथ नहीं है? लगता है? साथ जन्म लिया है, साथ सेवाधारी साथी रहे हैं और आगे भी साथ-साथ हैं और साथ चलेंगे। ब्रह्मा बाप को भी अकेला अच्छा नहीं लगता। आप लोगों को लगता है अकेले हैं? साथ हैं, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ-साथ राज्य करेंगे। शिव बाप को आराम देंगे और आपके साथ ब्रह्मा बाप भी राज्य करेंगे। अपना राज्य याद है ना? आज सेवाधारी हैं और कल राज्य अधिकारी हैं। अपना राज्य सामने दिखाई दे रहा है ना? अपने राज्य का वो स्वर्ग का स्थान, स्वर्ग का दिव्य शरीर रूपी चोला सबके सामने स्पष्ट है ना। बस धारण किया कि किया। ऐसे अनुभव होता है ना? अपना भविष्य स्पष्ट है ना? आज वर्तमान है और कल भविष्य वर्तमान हो जायेगा—निश्चय है ना? पक्का निश्चय है?

सब पुराने-पुराने पक्के आए हैं ना। बापदादा को भी, विशेष ब्रह्मा बाप को भी खुशी है कि स्थापना के एक हैं आदि साथी रत्न, जो सामने बैठे हैं और दूसरे हैं स्थापना की वृद्धि के श्रेष्ठ रत्न। तो इस संगठन में ब्रह्मा बाप दोनों प्रकार के रत्नों को देख हर्षित हो रहे हैं। और बच्चे भी कितने उमंग-उत्साह से, शरीर का भी, सैलवेशन का भी ख्याल न करते हुए ठण्डी-ठण्डी हवाओं में पहुँच गए। ये ठण्डी हवाएं आप बच्चों से सलाम करने आती हैं। वैसे भी देखो जब राज्य तख्त पर बैठते हैं तो पीछे से क्या होता है? चंवर झुलते हैं ना, तो उससे ठण्डी-ठण्डी हवाएं तो होती है। तो ये ठण्डी हवाएं भी चंवर झुलाने आती हैं। क्योंकि आप सब भी ऊंचे ते ऊंची विशेष आत्माएं हो। नशा है ना? तो आज ब्रह्मा बाप विशेष अपने जन्म के साथी और सेवा के साथी (सेवा के निमित्त पहले रत्न और जन्म के समय के पहले रत्न) दोनों को देख-देख हर्षित होते हैं।

अच्छा, यह हाल भी राज दरबार माफिक बनाया है। (ज्ञान सरोवर का ऑडोटोरियम हाल) राज दरबार लगती है तो गैलरी में बैठते हैं, तो गैलरी वाले भी अच्छे लग रहे हैं। (हाल में सभी भाई बैठे हैं, मातायें सब बाहर बैठी हैं) अच्छा आज तो माताओं के त्याग का भाग्य उन्हीं को अभी मिल ही जाएगा। अच्छी तरह से तपस्या कर ही रही हैं। तपस्या का फल मिल जाएगा। ठण्डी-ठण्डी हवा आ रही है तो धूप भी आ रही है। अच्छा।

ज्ञान सरोवर कहेंगे या स्नेह का सरोवर कहेंगे? ज्ञान सरोवर में स्नेह का सरोवर अच्छा है। ये ज्ञान सरोवर सेवा का विशेष लाइट हाउस और माइट हाउस है। इस धरनी से अनेक आत्माओं के भाग्य का सितारा चमकेगा। अनेक आत्माएं अपने बिछुड़े हुए बाप से मिलन मनायेंगी। अनेक आत्माओं के दुःख दूर करने वाली धरनी है। सरोवर में आते ही सुख की लहरों में लहराने का अनुभव करते रहेंगे। इस ज्ञान सरोवर द्वारा तीन प्रकार के लोग, तीन प्रकार की प्राप्ति के अधिकारी बनेंगे—कोई वर्से के अधिकारी, कोई वरदानों के अधिकारी और कोई सिर्फ दुआओं के अधिकारी। तो तीन प्रकार के प्राप्ति सम्पन्न। ये श्रेष्ठ सरोवर है। साधारण आत्माएं आयेंगी और फ़रिश्ता जीवन का अनुभव कर जायेंगी। साथ-साथ अनेक ब्राह्मण आत्माएं तपस्या के सूक्ष्म अनुभूतियों द्वारा अव्यक्त पालना और सूक्ष्म योग के सहज अनुभव और प्राप्तियों का लाभ लेंगी। कई ब्राह्मण आत्माओं की श्रेष्ठ आशायें स्व उन्नति की पूर्ण होने का साधन बहुत श्रेष्ठ है। स्थान तो कॉमन है लेकिन स्थिति श्रेष्ठ अनुभव कराने वाला है। विधिपूर्वक ज्ञान के नॉलेज को विश्व में प्रत्यक्ष करने का स्थान है। और सबसे पहला फायदा तो बाप और बच्चों के मिलने का है। देखो, डबल संख्या में मिल तो रहे हैं ना! चाहे बाहर बैठे हैं या कहाँ भी रहे हैं, डबल संख्या तो है ना। तो सबसे प्रत्यक्षफल बच्चों की संख्या डबल मिलन मना रही है। समझा? ऐसे सरोवर में, सरोवर बनाने वालों को, सहयोग देने वालों को, संकल्प से हिम्मत दिलाने वालों को, स्नेह के हाथों से सरोवर को सम्पन्न करने वाले देश विदेश के बच्चों को पद्मगुणा मुबारक हो, मुबारक हो।

यह पहला ही स्थान है जिसमें छोटे बच्चों से लेकर जो भी ब्राह्मण हैं उनके सहयोग का तन-मन-धन लगा है। तन से इंट नहीं भी उठाई है लेकिन तन से अपने-अपने साथियों को साथी बनाया है, उमंग दिलाया है तो ऐसे स्नेह, सहयोग, शक्ति की बूँद-बूँद से सजा हुआ सरोवर श्रेष्ठ सफलता का अनुभव कराता रहेगा। तो सभी सहयोगियों को, कोने-कोने के विदेश, देश वालों को और विशेष जिन्होंने ठण्डी-ठण्डी हवाओं में, बारिश में भी हिम्मत नहीं हारी है, उन्हीं को विशेष मुबारक है, मुबारक है। बापदादा जानते हैं बच्चों ने थोड़ी तकलीफ तो उठाई लेकिन प्यार से उठाई है। मोहब्बत में मेहनत का अनुभव नहीं किया है और जहाँ हिम्मत है वहाँ बापदादा की पद्मगुणा मदद भी है ही। इसलिये बापदादा मसाज़ करते रहे हैं, करते रहेंगे। अच्छा, यहाँ के इंजीनियर्स हाथ उठाओ। समय पर सम्पन्न करने की बहुत-बहुत मुबारक हो। आपको बैठने योग्य तो बना कर दे दिया ना! बाप तो आ गए ना! वायदा ही ये था। आप सब भी इन्हीं को मुबारक दे रहे हो ना! जिन्होंने हाल को सजाया वो कहाँ है? ये मुन्नी पार्टी है। देखो, स्नेह का सरोवर है ना तो कलकत्ता से यहाँ फूल आ गए। (कलकत्ता से बहुत सुन्दर रंग-बिरंगे फूल आये हैं जिससे सारी स्टेज सजी हुई

है) अच्छा! आप सबको भी पहुँचने की मुबारक है और माताओं को पद्मगुणा मुबारक है।

(जाल मिस्त्री, जिन्होंने हाल में साउण्ड का प्रबन्ध किया है) देखो अगर इनकी हिम्मत नहीं होती तो आप मुरली नहीं सुन सकते थे। सभी मुरली के पीछे तो दीवाने हैं ना। मुरली का साधन सबसे श्रेष्ठ है। कितना अच्छा प्रबन्ध किया है। आराम से सुनने आ रहा है। बाहर भी सुनाई दे रहा है। ये तो बहुत अच्छा प्रबन्ध किया है। जो भी सेवा के निमित्त हैं एक-एक डिपार्टमेंट का नाम नहीं लेते हैं लेकिन हर एक समझे मुझे स्नेह और सहयोग की मुबारक। अच्छा, सबसे पहली मुबारक किसको दें? दादी को। (बापदादा को) बापदादा तो देने वाला है ना। बापदादा सदा कहते हैं कि बच्चों का नम्बरवन सर्वेन्ट है तो बाप है। बाप तो सदा सेवाधारी है लेकिन बच्चे भी सेवा में बाप से भी आगे सहयोगी हैं। क्या एक-एक का नाम लें लेकिन दिल में एक-एक बच्चे का नाम ले रहे हैं और याद-प्यार दे रहे हैं। सभी डिपार्टमेंट को मुबारक है। लाइट के बिना भी काम नहीं, माइक के बिना भी काम नहीं। लाइट, माइक, माइक सभी को मुबारक।

(टीचर्स से) आप लोग नहीं होते तो सेन्टर्स नहीं खुलते। एक-एक ने देखो कितने सेन्टर्स खोले हैं। यहाँ सेवा की राजधानी और वहाँ राज्य की राजधानी होगी। अच्छा। पाण्डव भी देख रहे हैं। अच्छे-अच्छे पाण्डव भी पहुँच गये हैं। पाण्डव के बिना भी गति नहीं लेकिन पाण्डवों ने शक्तियों को आगे रखा है। आप लोगों ने रखा है कि बाप ने रखा है? फालो फादर किया है। वैसे आप सभी भी बाप के समीप बैठे हो। ऐसे नहीं समझना ये ही हैं समीप। लेकिन जो सामने हैं वो अति समीप हैं।

डबल फारेनर्स भी आए हैं। यह भी कमाल कर रहे हैं। देश-विदेश में प्रत्यक्ष करने की सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं और करते रहेंगे। अच्छा! (फिर बापदादा ने ज्ञान सरोवर की विशाल स्टेज पर खड़े होकर इंजीनियर्स के साथ मोमबत्ती जलाई तथा मुख्य टीचर्स एवं दादियों के साथ केक काटी, फिर मुख्य दादियां बापदादा के साथ हाल के बाहर प्लाज़ा में आईं, जहाँ पर बापदादा ने 2 हज़ार से भी अधिक संख्या में बैठी हुई माताओं से हाथ हिलाते हुए मुलाकात की तथा ध्वज़ फहराया, तत्पश्चात् जो महावाक्य उच्चारण किये वह इस प्रकार हैं):-

बापदादा, आप सभी बच्चों के दिल में जो बाप के स्नेह का झण्डा लहरा रहा है, उसको देख हर्षित हो रहे हैं। यह सेवा के लिए है और बाप बच्चों के बीच में दिल में स्नेह का झण्डा है। तो जैसे यह फ्लैग सेरीमनी करते हो तो ऊंचा लहराते हो ना, ऐसे ही सदा स्नेह में ऊंचे ते ऊंचा लहराते रहो। यह झण्डा भी बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा है। यह कपड़े का झण्डा है लेकिन इस कपड़े के झण्डे में आप सबका आवाज़ समाया हुआ है कि “बाप आ गये हैं।” यही प्रत्यक्षता का झण्डा अभी कोने-कोने में लहरायेगा। और आप सभी वह लहराया हुआ प्रत्यक्षता का झण्डा देखेंगे, सुनेंगे, हर्षित होंगे। तो आज ज्ञान सरोवर में है, कल विश्व में यह झण्डा लहरायेगा। आप सभी को तपस्या करनी पड़ी उसकी मुबारक लेकिन बहुत आराम से अच्छे बैठे हो और जितना आपको देखने में आ रहा है उतना अन्दर पीछे वालों को नहीं। आप बाहर नहीं थे लेकिन दिल के अन्दर थे। सब बहुत-बहुत खुशानसीब हो इसलिये सदा खुशी बांटते रहना। खुश रहना और खुशी बांटते रहना। (फिर बापदादा ने चारों ओर बने भवनों पर अपनी दृष्टि डाली तथा पुनः हाल में आकर सभी इंजीनियर्स को अपने हस्तों से टोली खिलाई तथा विदाई ली)

ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रख आज़ाकारी और सर्वश त्यागी बने

आज बेहद का बापदादा अपने बेहद के सेवा साथियों को देख रहे हैं। दो प्रकार के साथी हैं—एक हैं स्नेह सम्बन्ध का साथ निभाने वाले और दूसरे हैं स्नेह, सम्बन्ध और सेवा का साथ निभाने वाले। दोनों प्रकार के साथियों को देख रहे हैं। चाहे विश्व के लास्ट कोने में भी हैं लेकिन बापदादा के सामने हैं। बापदादा और बच्चों का वायदा है कि कहाँ भी रहेंगे, जहाँ भी हैं लेकिन सदा साथ हैं। ये ब्राह्मण जीवन आदि से अन्त तक बाप और बच्चों का अविनाशी साथ है। चाहे बच्चे साकार में हैं और बापदादा आकार निराकार हैं लेकिन अलग हैं क्या? नहीं है ना! तो दूर हो या समीप हो? ये दिल की समीपता साकार में भी समीपता अनुभव कराती है। चाहे किसी भी देश में हैं लेकिन दिल की समीपता साथ का अनुभव कराती है। अलग हो नहीं सकते, असम्भव है। परमात्म वायदा कभी टल नहीं सकता। परमात्म वायदा भावी बन जाता है तो भावी टाली नहीं टले। इसलिये सदा समीप हैं, सदा साथी हैं और साथी बन हाथ में हाथ, साथ लेते हुए कितने मौज से चल रहे हैं। मौज है कि मेहनत है? थोड़ी-थोड़ी मेहनत है? जब कोई बात आ जाती है तो बाप किनारे हो जाता है। कोई बात को नहीं लाओ तो बाप नहीं जायेगा। बात बाप को किनारे करती है। जैसे बीच में कोई पर्दा आ जाये, तो पर्दा आने से किनारा हो जाता है ना! तो ये बात रूपी पर्दा बीच-बीच में आ जाता है। लेकिन लाने वाला कौन? पर्दे का काम है आना और आपका काम क्या है? हटाना या थोड़ा-थोड़ा मजा लेना? बापदादा देखते हैं, बच्चे कभी-कभी बातों में बड़े मजे लेते हैं।

जिससे प्यार होता है, प्यार की निशानी है साथ रहना। साथ रहने का मतलब यह नहीं है कि आबू में रहना। आबू में तो देखो अभी थोड़ी भी संख्या ज्यादा है तो पानी की मुश्किल हो गई है ना! तो साकार में साथ रहना नहीं लेकिन दिल से साथ निभाना। अगर दिल से साथ नहीं निभाते तो मधुबन में होते भी दूर हैं और लास्ट देश में रहते भी दिल से समीप हैं तो वो साथ हैं। इसीलिये बापदादा को दिलाराम कहते हैं, शरीर राम नहीं कहते। तो दिल बाप में है ना? बाप के दिल में आपका दिल है और आपके दिल में बाप का दिल है। तो दिल जाने इस रुहानी साथ को। अनुभवी हो ना? कि यहाँ से जायेंगे तो कहेंगे दूर हो गये? नहीं। सदा साथ निभाना—यह कोई भी आत्मा, आत्मा से नहीं निभा सकती। एक ही परम आत्मा आत्माओं से साथ निभा सकता है। और ये परमात्म साथ निभाने का भाग्य आप सभी बच्चों को ही है ना?

(आज पूरे हाल में सभी भाई-बहिनें पट पर बैठे हुए हैं) बहुत अच्छी सीन है। बापदादा को आज की सभा का दृश्य देख करके यादगार याद आ रहा है। यादगार में रुद्र माला दिखाते हैं, उसमें सिर्फ फेस दिखाई देते हैं, शरीर नहीं दिखाई देते। तो यहाँ से भी सिर्फ फेस ही दिखाई दे रहे हैं, बाकी कुछ नहीं दिखाई देता। तो रुद्र माला का यादगार दिखाई दे रहा है। एक के पीछे एक बैठे हैं ना तो शरीर छिप गये हैं, फेस दिखाई दे रहे हैं।

ये है स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप – ब्रह्मा बाप से सभी का स्नेह है तब तो आये हो ना! और कहलाते भी सभी ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी हो, शिव कुमार, शिव कुमारी नहीं कहते। तो ब्रह्मा बाप से ज्यादा प्यार है ना! और ब्रह्मा बाप का भी सदा बच्चों से प्यार है। तभी तो अव्यक्त होते भी अव्यक्त पालना कर रहे हैं। अव्यक्त पालना मिल रही है ना? या आप कहेंगे कि हमने ब्रह्मा बाबा का अनुभव नहीं किया है? ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हो तो क्या बिना बाप की पालना के पैदा हो गये! अगर ब्रह्मा बाप की पालना नहीं होती तो आज सिर्फ निराकार बाप की पालना से यज्ञ की रचना और यज्ञ की वृद्धि नहीं होती। डबल फॉरेनर्स को ब्रह्मा बाप की पालना मिलती है ना? (हाँ जी) देखो, फॉरेन में बाप जाता है, तो इण्डिया में नहीं करता है क्या! तो उल्हना तो नहीं देते कि बाबा हमने देखा ही नहीं! सदा मिलते, सदा देखते, सदा साथ रहते हैं। साकार शरीर में, साकार रूप में तो सदा साथ नहीं दे सकते लेकिन अव्यक्त रूप में सभी को साथ दे सकते हैं। जब चाहो मिलन के दरवाजे खुले हुए हैं। अव्यक्त वतन में नहीं कहेंगे कि अभी जगह नहीं है, अभी टाइम नहीं है, नहीं। देह में देह के बंधन हैं और अव्यक्त में न देह का बंधन है, न देह की दुनिया के कायदों का बंधन है। यहाँ तो कायदे रखने पड़ते हैं ना—आगे बैठो, पीछे बैठो। अभी भी समय प्रमाण बहुत-बहुत-बहुत भाग्यवान हो! फिर भी बैठने की जगह तो मिली है ना! फिर तो खड़े रहने की भी जगह मुश्किल होगी। क्योंकि आप सभी को औरों को चांस देना पड़ेगा। अभी तो आप लोगों को चांस मिला है। जैसे अभी देखो मधुबन वालों को चांस देना पड़ा ना! (सभी मधुबन निवासी तथा आबू निवासी सभी पाण्डव भवन में मुरली सुन रहे हैं) ये भी परिवार का प्यार है।

ब्रह्मा बाप से प्यार अर्थात् बाप समान बनना। निराकार के समान बनना, वो थोड़े समय का अनुभव करते हो। लेकिन ब्राह्मण अर्थात् सदा ब्रह्मा समान ब्रह्माचारी। जो ब्रह्मा बाप का आचरण वो ही सर्व ब्राह्मणों का आचरण अर्थात् कर्म। उच्चारण भी ब्रह्मा बाप समान है, आचरण भी ब्रह्मा बाप समान है, जिसको कहते हो फालो फादर। तो ब्रह्मा बाप के हर कदम पर कदम रखना इसको कहा जाता है फालो फादर। तो ब्रह्मा बाप ने बाप के श्रीमत पर पहला कदम क्या उठाया?

पहला कदम आज़ाकारी बने। जो आज़ा मिली उसी आज़ा को प्रत्यक्ष स्वरूप में लाया। तो चेक करो कि आज़ाकारी के पहले कदम में फालो फादर हैं? अमृतवेले से लेकर रात तक मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध, सम्पर्क में जो आज़ा मिली हुई है उसी आज़ा प्रमाण

चलते हैं? कि कोई आज्ञा पालन होती है और कोई नहीं होती है? संकल्प भी आज्ञा प्रमाण है, कि मिक्स है? अगर मिक्स है तो फुल आज्ञाकारी हैं या अधूरे आज्ञाकारी? हर समय के संकल्प की आज्ञा स्पष्ट मिली हुई है। अमृतवेले क्या संकल्प करना है ये भी स्पष्ट है ना! तो फालो करते हो कि कभी परमधाम में चले जाते हो और कभी निद्रालोक में चले जाते हो? हर कर्म में, हर समय कदम पर कदम है? बाप का कदम एक और बच्चे का कदम दूसरा हो तो उसे आज्ञाकारी नहीं कहेंगे ना! चाहे परमार्थ में, चाहे व्यवहार में, दोनों में जो जैसी आज्ञा है वैसे आज्ञा को पालन करना—इसकी परसेन्टेज चेक करो। चेक करना आता है? तो पहला कदम आज्ञाकारी बने, इसलिये आज्ञाकारी को सदा बाप की दुआएं स्वतः मिलती हैं और साथ-साथ ब्राह्मण परिवार की भी दुआएं हैं। तो चेक करो कि जो भी संकल्प किया, चाहे स्व प्रति, चाहे सेवा के प्रति, चाहे स्थूल कर्म के प्रति या अन्य आत्माओं के प्रति उसमें सबकी दुआयें मिली? क्योंकि आज्ञाकारी बनने से सर्व की दुआयें मिलती हैं और यदि दुआयें मिल रही हैं तो उसकी निशानी है कि दुआओं के प्रभाव से दिल सदा सन्तुष्ट रहेगी, मन सन्तुष्ट रहेगा। बाहर की सन्तुष्टता नहीं लेकिन मन की सन्तुष्टता। और मन की सन्तुष्टता यथार्थ है वा मियाँ मिट्टू हैं—इसकी निशानी, अगर यथार्थ रीति से यथार्थ आज्ञाकारी हैं, दुआएं हैं तो सदा स्वयं और सर्व डबल लाइट रहेंगे। अगर डबल लाइट नहीं रहते तो समझो मन की सन्तुष्टता नहीं। बाप की वा परिवार की दुआएं भी नहीं मिल रही हैं। परिवार की भी दुआएं आवश्यक हैं। ऐसे नहीं समझो कि बाप से हमारा कनेक्शन है, बाप की तो दुआएं हैं, परिवार से नहीं बनता कोई हर्जा नहीं। पहले भी सुनाया कि माला में सिर्फ युगल दाना नहीं है, उससे माला नहीं बनती। तो माला में आना है इसलिए पूरा लक्ष्य रखो कि हरेक आत्मा मुझे देखकर खुश रहे, देख करके हल्के हो जायें, बोझ खत्म हो जाए। तो दिल की सन्तुष्टता वा आज्ञाकारी की दुआएं स्वयं को भी लाइट और दूसरे को भी लाइट बनायेंगी। इससे समझो कि आज्ञाकारी कहाँ तक हैं? जैसे ब्रह्मा बाप को देखा हर एक छोटा-बड़ा सन्तुष्ट होकर खुशी में नाचता। नाचने के टाइम तो हल्के होंगे ना तभी तो नाचेंगे ना। चाहे कोई मोटा है लेकिन मन से हल्का है तो भी नाचता है और पतला है लेकिन भारी है तो नहीं नाचेंगे। तो बोल ऐसे हों जो स्वयं भी अपने आपसे सन्तुष्ट हो और दूसरे भी सन्तुष्ट रहें। ऐसे नहीं, हमारा तो भाव नहीं था, हमारी तो भावना नहीं थी, लेकिन भाव और भावना पहुँचती क्यों नहीं? अगर सही है तो दूसरे तक वायब्रेशन्स क्यों नहीं जाता है? कोई तो कारण होगा ना? तो चेक करो दुआओं के पात्र कहाँ तक बने हैं? जितना अभी बाप और ब्राह्मण आत्माओं की दुआओं के पात्र बनेंगे उतना ही राज्य के पात्र बनेंगे। अगर अभी ब्राह्मण परिवार को सन्तुष्ट नहीं कर सकते, तो राज्य क्या चलायेंगे! राज्य को क्या सन्तुष्ट करेंगे! क्योंकि ब्राह्मण आत्मायें आपकी रॉयल फैमिली बनेंगे तो जो फैमिली को सन्तुष्ट नहीं कर सकते वो प्रजा को क्या करेंगे? संस्कार तो यहाँ भरना है ना! कि वहाँ योग करके भरेंगे! यहाँ ही भरना है। अगर वर्तमान ब्राह्मण परिवार में कारण का निवारण नहीं कर सकते, कारण-कारण ही कहते रहते हैं, तो जहाँ कारण है वहाँ निवारण शक्ति नहीं है। अगर परिवार में निवारण शक्ति नहीं तो विश्व के राज्य को क्या निवारण करेंगे! क्योंकि आपके राज्य में हर आत्मा सदा निवारण स्वरूप है। वहाँ कारण होंगे क्या? जैसे अभी राज्य सभा में कारण बताते हैं—ये कारण है, ये कारण है, ये कारण है..... वहाँ ऐसे राज्य दरबार होगी क्या? वहाँ तो सिर्फ खुश खैराफत पूछेंगे। सिर्फ दरबार नहीं है लेकिन बहुत अच्छा मिलन है। तो कारण कहकर अपने को दुआओं से वंचित नहीं करो। ब्रह्मा बाप ने कारण को निवारण किया इसीलिये नम्बरवन हुआ। बापदादा के पास सभी के कारणों के फाइल ही इकट्ठे होते हैं। सभी के फाइल हैं—किसका छोटा, किसका बड़ा फाइल है। तो अभी भी फाइलें रखनी है, फाइल बढ़ाते रहना है या रिफाइन होना है? तो आज से फाइल सब खत्म कर दें? फिर दूसरा नया फाइल तो नहीं रखना पड़ेगा। अगर नया फाइल रखा तो फाइन पड़ेगा। सोच लो! बोलो—खत्म करें कि थोड़ा दिन रखें? शिव रात्रि तक रखें! जो समझते हैं शिवरात्रि तक थोड़ी मार्जिन मिलनी चाहिये, तब तक पुरुषार्थ करके रिफाइन हो जायेंगे, वो हाथ उठाओ। अच्छा है, हिम्मत रखना भी अच्छी बात है। लेकिन सिर्फ अभी हिम्मत नहीं रखना। ऐसे तो नहीं बापदादा के सामने थे तो हिम्मत थी, नीचे उतरे तो थोड़ी हिम्मत कम हो गई और अपने देशों में गये तो और कम हो गई। कोई बात आई तो और कम हो गई। ऐसे तो नहीं करेंगे? देखो जब कोई भी कारण सामने आता है और कारण के कारण हिम्मत कम होती है, कमजोरी आती है और जब वो बात समाप्त हो जाती है तो अपने ऊपर शर्म आती है ना! अपने ऊपर ही संकोच होता है कि ये अच्छा नहीं किया, ये अच्छा नहीं हुआ। करके और फिर पश्चाताप करे..... ये तो आपकी प्रजा का काम है या आपका है? पश्चाताप वाले क्या राजा बनेंगे? तो सोचो साक्षी स्थिति के सिंहासन पर बैठ जाओ और अपने आपको ही जज करो। अपना जज बनना, दूसरे का जज नहीं बनना। दूसरे का जज बनना सभी को आता है, दूसरे का जज बहुत जल्दी बन जाते हैं और अपना वकील बन जाते हैं। तो साक्षीपन के सिंहासन पर अपने आपका निर्णय बहुत अच्छा होगा। सिंहासन के नीचे रहकर जज करते हो तो निर्णय अच्छा नहीं होता। सेकण्ड में तख्तनशीन बन जाओ। ये स्थिति आपका तख्त है। यथार्थ सहज निर्णय का तख्त ये साक्षीपन की स्थिति है। साक्षी नहीं होते हैं तो दूसरे की बात, दूसरे की चलन वो ज्यादा सामने आती है, अपनी नहीं आती। अगर साक्षी होकर देखेंगे तो अपनी भी नज़र आयेगी, दूसरे की भी नज़र आयेगी। फिर जजमेन्ट जो होगी वो यथार्थ होगी, नहीं तो यथार्थ नहीं होती।

बापदादा ने पहले भी सुनाया था कि ड्रामा में जो भी बातें आती हैं उन बातों में बहुत अच्छा अक्ल है लेकिन कभी-कभी ब्राह्मण

बच्चों में अक्ल थोड़ा कम हो जाता है। बात आती है और चली जाती है, लेकिन ब्राह्मण बच्चे बात को पकड़कर बैठते हैं। बात रूकती नहीं, चली जाती है लेकिन स्वयं बात को नहीं छोड़ते। तो बातों में अक्ल ज्यादा हुआ या ब्राह्मणों में? बातें अक्ल वाली हुई ना! कई बच्चे कहते हैं दो दिन से ये बात चल रही है, दो घण्टे ये बात चली और दो घण्टे में गँवाया कितना? दो दिन में गँवाया कितना? तो अक्ल वाले बनो।

तो पहला कदम आज्ञाकारी, दूसरा कदम है सर्वश त्यागी। पहले आज्ञाकारी की दुआएं मिली और दुआओं के बल से सर्वश त्यागी। तो त्याग में भी नम्बरवन एगज़ाम्पल ब्रह्मा बना। देह के सम्बन्धों का त्याग बड़ी बात नहीं है। लेकिन देह के पुराने स्वभाव-संस्कार का त्याग जरूरी है। सम्बन्ध का त्याग तो और धर्म में भी करते हैं लेकिन स्वभाव-संस्कार का सर्व वंश सहित त्याग करना—इसको कहा जाता है सर्वश त्यागी। अगर अंश मात्र भी देह का स्वभाव-संस्कार रह जाता है तो समय प्रति समय वो वंश बढ़ता रहता है और वो वंश इतना तेज होता है जैसे लौकिक परिवार में देखा है ना बड़े बूढ़े बड़े शीतल होंगे लेकिन पौत्रे-धौत्रे बहुत तेज होंगे। तो अगर कोई वंश भी पुराना रहा हुआ है वो भी उल्टी कमाल करके दिखाता है। उस समय की हालत बापदादा देखते हैं बिल्कुल ऐसे लगता है जैसे कोई दुनिया में दिवाला निकालते हैं—तो सेकण्ड में लखपति से कखपति बन जाते हैं। सारे खजाने सेकण्ड में खत्म। फिर मेहनत करनी पड़े ना। इसलिये सर्वश त्यागी अर्थात् देह के सम्बन्ध और देह के पुराने स्वभाव-संस्कार से त्यागी। कभी भी अपनी अवस्था को चेक करो अगर धोखा देता है तो कौन देता है? स्वभाव-संस्कार ना! तो त्याग का भाग्य समाप्त करने वाला ये स्वभाव-संस्कार है। और बापदादा तो ब्राह्मणों के लिये और अण्डर लाइन करते हैं कि त्याग का भी त्याग करो। “मैं त्यागी हूँ”—इस अभिमान का भी त्याग। इसको कहा जाता है त्याग का भी त्याग। मैंने किया, सहन किया, ये किया, ये किया—ये कथायें नहीं करो। अगर किसने सहन भी किया तो सहन के पीछे शक्ति है। सिर्फ सहन नहीं है, सहन करना अर्थात् शक्ति धारण करना, इसलिये सहन शक्ति कहते हैं। सहन करना अर्थात् शक्ति रूप को प्रत्यक्ष रूप दिखाना। तो अच्छा ही हुआ ना। क्या सहन किया? और ही लाभ ले लिया ना! और किसके प्रति सहन किया? बाप के आज्ञाकारी बनने के लिये सहन किया, दूसरे के लिये नहीं सहन किया। बाप की आज्ञा मानी। तो आज्ञा की दुआएं मिलेगी ना! तो सहन क्या किया? दुआएं ली ना! बात को सामने रखते हो तो सोचते हो बहुत सहन किया, कब तक सहन करेंगे, सहन करने की भी कोई हद होनी चाहिये। लेकिन जितना बेहद सहन, उतनी बेहद की दुआएं। क्योंकि बाप के आज्ञाकारी बन रहे हैं। बाप ने कहा है सहन करो। तो आज्ञा को मानना खुशी की बात है या मजबूरी की बात है? मजबूरी से सहन नहीं करो। कई सहन करते भी हैं और कहते भी हैं कि मेरे जैसा कोई सहन नहीं करता। फिर दादियों को आकर बताते हैं—आपको नहीं पता हमने कितना सहन किया! लेकिन नुकसान क्या किया! फायदा ही इकट्टा हुआ। तो त्याग की परिभाषा समझी? देखो भक्ति मार्ग में भी ये निशानी है कि जब बलि चढ़ाते हैं तो अगर बलि का बकरा चिल्लाता है तो वो प्रसाद नहीं माना जाता। एक धक से बिना चिल्लाये स्वाहा हो जाता है तो प्रसाद हो जाता है। तो बलि के बकरे को भी कहते हैं चिल्लाये नहीं। और आप कहते हैं सहन किया, सहन किया तो क्या ये चिल्लाना नहीं हुआ? चाहे मन में, चाहे मुख से अगर थोड़ा भी चिल्लाते हैं तो प्रसाद नहीं हुआ। बाप को स्वीकार नहीं होता है तो दुआएं कैसे देगा? तो क्या करेंगे, थोड़ा-थोड़ा अन्दर चिल्लायेगे? थोड़ा कोने में, बाथरूम में, छिपकर एक-दो आंसू बहायेंगे? थोड़ी तो छुट्टी मिलनी चाहिये! माताओं को बच्चे तंग करें तो क्या करेंगी? थोड़ा मन में तो रोयेंगी? मातायें मन में रोती हो? थोड़ा-थोड़ा रोती हो! और भाई क्या करते हैं? वो आंखों से नहीं रोते हैं लेकिन क्रोध करके अन्दर से रो लेते हैं। जोश आना भी रोना है। तो पाण्डव सेना क्या समझती है? थोड़ा रोने की छुट्टी चाहिये? जिसको थोड़ी-थोड़ी छुट्टी चाहिये वो हाथ उठाओ। नहीं चाहिये? तो आज से रोने का फाइल भी खत्म, कि सिर्फ ताली बजाकर खुश कर दिया? फिर तो आज से पोस्ट भी कम हो जायेगी। पोस्ट का फालतु खर्चा ज्ञान सरोवर के लिए बच जायेगा, जब कोई ऐसी बात आये तो पोस्ट के पैसे भण्डारी में डाल देना। ज्ञान सरोवर में तो अभी भी लगना है ना।

ज्ञान सरोवर से प्यार सभी का बहुत अच्छा है। ज्ञान सरोवर से प्यार अर्थात् सेवा से प्यार। स्थान से प्यार नहीं है लेकिन सेवा के निमित्त स्थान है तो सेवा से प्यार। जो भी सभी यहाँ बैठे हैं कोई ऐसा है जिसने ज्ञान सरोवर में अपना कणादाना नहीं डाला है? जिन्होंने डाला है वो हाथ उठाओ। सभी ने किया है। मधुबन वाले, हॉस्पिटल वाले, सेवाधारी सभी डालते हैं? तो सबके सहयोग से देखो कितना अच्छा सेवा का स्थान बन गया। सभी को अच्छा लगा ना, पसन्द आया? हाँ, रहने में थोड़ी तकलीफ हुई है लेकिन ठीक हो जायेगा। फिर दूसरे बारी आयेंगे तो मौज मनायेंगे। अभी तो कभी गरम पानी नहीं, कभी ठण्डा पानी नहीं। नये मकान में होता है। लेकिन ज्ञान सरोवर में रहने वाले सभी खुश हैं? सुनाया ना आप तो फिर भी बहुत-बहुत-बहुत भाग्यवान हो। भक्ति मार्ग के मेले में तो मिट्टी पर सोते हैं, यहाँ गदेल्ला, रजाई तो मिली है ना! तो सब अच्छे सोये हुए हैं? नया बिस्तरा है, नया मकान है। फिर भी देखो इतनों को आने का चांस तो मिला है ना! अच्छा, दादियों को ज्ञान सरोवर पसन्द है ना!

ज्ञान सरोवर में दो लक्ष्य हैं – एक तो विशेष सेवा, दूसरा ब्राह्मणों का एशलम। तो दोनों लक्ष्य के कारण इसी विधि से बनाया है। यहाँ पाण्डव भवन में सिवाए ब्राह्मणों के एलाउ नहीं करते लेकिन वहाँ अनेक सम्पर्क वाले नजदीक सम्बन्ध में आयेंगे। जो नाम है

ईश्वरीय विश्वविद्यालय, तो जो नाम है विद्यालय उस नाम को भी प्रत्यक्ष करेंगे। तो डबल सेवा है ना? यहाँ ब्राह्मणों के हिसाब से बना हुआ है और वहाँ विश्व की सर्व आत्माओं के हिसाब से। इसलिये अन्तर हो गया ना, लक्ष्य में अन्तर हो गया। अच्छा! और कदम फिर पीछे बतायेंगे। लेकिन ये दोनों कदम अच्छी तरह से चेक करना और याद रखना फाइल सारे खत्म। भूल नहीं जाना। कौन से फाइल? कारण के और रोने के। जोश भी रोना है। आवेशता में आना ये भी मन का रोना है। वो समझते हैं हमने रोया थोड़ेही। लेकिन मन में तो बहुत रोया। तो दोनों फाइल खत्म! फाइल नहीं डालना अपने ऊपर, रिफाइन बनना। ब्रह्मा बाप अपने आदि साथियों को देख करके खुश हो रहे हैं। साथी हो ना? टीचर्स सब साथी हो ना? पाण्डव भी आदि साथी हैं तो शक्तियाँ भी साथी हैं। राइट हैण्ड हैं इसलिये ब्रह्मा की अनेक भुजायें दिखाई हैं। भुजा अर्थात् सहयोगी-साथी। सभी राइट हैण्ड हो ना? यहाँ लेफ्ट भी राइट हो जाता है। लेफ्ट को लेफ्ट नहीं कहेंगे, सर्व साथी कहेंगे। अच्छा! चारों ओर से आये हैं। एक हैं भारत की सेवा के निमित्त सभी ज़ोन। तो भारत के सेवाधारी बच्चों को बापदादा सेवा की मुबारक भी देते हैं और साथ-साथ सदा सपूत और सबूत देने वाले बच्चों को विशेष दिव्य गुणों की ज्वेलरी गिफ्ट में दे रहे हैं। सपूत की निशानी है सबूत देना अर्थात् प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाना। तो सपूत बच्चे अपना-अपना सबूत अर्थात् सेवा के फल का प्रमाण दिखा रहे हैं और आगे भी दिखाते रहेंगे। इसके लिये जो सपूत बच्चे होते हैं उन्हीं को बापदादा, माँ सदा बढ़िया ते बढ़िया श्रृंगार करते हैं, सजाते हैं। जो अच्छा बच्चा लगता है उसको सदा बढ़िया चीज देते हैं। तो यहाँ तो सभी एक-दो से बढ़िया हो। इसलिए बापदादा ऐसे सपूत और सबूत देने वाले बच्चों को विशेष दिव्य गुणों की ज्वेलरी गिफ्ट में दे रहे हैं। तो ये गिफ्ट सम्भाल के रखना। कानों में भी पहनना और मस्तक पर भी पहनना, सिर पर ताज पहनना, उतारना नहीं। माया को चोरी करने नहीं देना। माया को भी पता पड़ रहा है कि इन्हीं को गिफ्ट मिल रही है। तो डबल लॉक है ना? याद और सेवा दोनों के बैलेन्स में सदा रहना अर्थात् डबल लॉक लगाना। तो सभी के पास डबल लॉक है या एक लॉक है एक ढीला है? देखना चाबी तो नहीं खो गई है। आप समझो चाबी बहुत सम्भाल के रखी है लेकिन जब आवश्यकता हो तो दिखाई न दे, ऐसे तो नहीं? अच्छे हैं!

(बापदादा ने सभी ज़ोन्स के भाई-बहिनो से से हाथ उठवाये)

दिल्ली – चाबी सम्भाल के रखना। माया बिल्ली नहीं आ जाये दिल्ली में! दिल्ली वाले क्या करेंगे? बड़े-बड़े माइक लाना, छोटे नहीं। क्योंकि दिल्ली का आवाज़ सहज चारों ओर फैलता है। दिल्ली की न्यूज़ इन्टरनेशनल न्यूज़ होती है। इसलिये दिल्ली वालों को एक माइक नहीं, माइक का गुप लाना है। झण्डा लहराना है। दिल्ली में राज्य का झण्डा लहरायेंगे तो राज्य के फ्लैग के पहले सेवा का फ्लैग। तो एक माइक नहीं लाना, झुण्ड लाना। एक का आवाज़ चारों ओर नहीं फैलता फैलता। संगठन में आते हैं तो सबकी नज़र जाती है।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू – पंजाब तो है ही शेर, शेर के आगे बिल्ली क्या आयेगी! पंजाब शेर है ना!

बंगाल, बिहार, उड़ीसा, नेपाल, आसाम – ये पांच नदियाँ इकट्ठी हैं। अच्छा है, पांचों का मिलन है। सबसे पहले बंगाल में सूर्योदय होता है तो माया का अंधकार तो आ नहीं सकता। अच्छा है अभी थोड़ी और संख्या को बढ़ाओ। कोई वारिस निकालो, पांच प्रदेश हैं, तो पांचों प्रदेशों से अच्छे से अच्छे वारिसों को स्टेज़ पर लाओ। अगर गुप्त हैं तो स्टेज़ पर लाओ। अगर नहीं हैं तो निकालो। दूसरे सीज़न में सबसे ज्यादा संख्या इन पांच नदियों की होनी चाहिये। समझा?

यू.पी., बनारस – यू.पी. बनारस क्या करेंगे? भक्त तो ज्यादा यू.पी. में हैं। तो भक्तों का जल्दी-जल्दी कल्याण करो, बिचारे भटकते रहते हैं। कभी कुम्भ के मेले में, कभी किसी मेले में, कभी मन्दिरों में तो कभी कहाँ, भटकने वाले भक्तों को बाप का परिचय देकर मधुबन तक पहुँचाओ। समझा?

राजस्थान – राजस्थान क्या करेगा? राजाओं को फिर से राज्य-भाग्य के अधिकारी बनाओ। जब नाम ही राजस्थान है तो कितने राजायें होंगे। अब राजायें नहीं हैं, लेकिन राजायें बना तो सकते हो ना। कितनी दुआयें देंगे कि हमको फिर से राज्य अधिकारी बनाया! तो हिम्मत है ना? राजस्थान, ऐसा गुप तैयार करो जो सारे राजायें, राज्य अधिकार की खुशी में मधुबन की स्टेज पर डांस करे।

बाम्बे, महाराष्ट्र – महाराष्ट्र की धरनी तो बहुत अच्छी है, उसकी मुबारक है। लेकिन अभी बाम्बे वा महाराष्ट्र एक वारिस क्वालिटी का गुप तैयार करो। जैसे वो राजाओं का गुप लायेंगे तो महाराष्ट्र वा बाम्बे वारिसों का गुप लाये। ला सकते हैं? देखेंगे दूसरे सीज़न में वारिसों का गुलदस्ता आयेगा। अच्छा।

गुजरात – वो तो चुल पर और दिल पर है। चुल पर है तभी देखो रोटी अच्छी बनाते हैं ना! तो दिल के चुल पर हैं और साथ-साथ हिम्मत की मुबारक तो बापदादा सदा ही गुजरात को देते हैं। गुजरात वारिस बना सकता है। गुजरात में वारिस क्वालिटी निकल सकती है। जैसे बाम्बे वारिस क्वालिटी का गुप बनायेंगे आप महावारिस का गुप बनाओ। धरनी अच्छी है। अभी क्वान्टिटी में ज्यादा लग गये हैं, पहले-पहले कुछ वारिस निकले, अभी क्वान्टिटी में क्वालिटी छिप गई है। नाम लेते हैं तो दिखाई देते हैं, इसलिये अभी फिर से वारिस क्वालिटी निकालो। एक वारिस हज़ारों क्वान्टिटी के बरोबर है। समझा गुजरात क्या करेगा? महावारिस

लायेंगे, वन नम्बर लेंगे ना! सभी नम्बरवन लेना, टू कोई नहीं लेना।

तामिलनाडु – तामिल वाले कौन-सा ग्रुप लायेंगे? तामिल में स्थूल नॉलेजफुल क्वालिटी बहुत अच्छी है। तो जो नॉलेज की अथॉरिटी कहलाई जाती है ऐसे अथॉरिटी वालों का ग्रुप तैयार करके लाना। हिम्मत है ना? सारा ग्रुप नॉलेज के अथॉरिटी वाले हो। ये भी छोटे-छोटे माइक हो जाते हैं।

कर्नाटक – कर्नाटक वाले कौन-सा ग्रुप लायेंगे? ज्ञान का नाटक करने वाले। वहाँ जो भी धर्म के निमित्त, धर्म आत्मायें सम्बन्ध-सम्पर्क में हैं उन्हें बच्चों के रूप में ग्रुप बनाकर लेकर आयें। धर्म नेता बनकर नहीं आवे, चांदी की कुर्सी चाहिये, वो चाहिये... नहीं। लेकिन धर्म नेताएं बच्चे बनकर आयें। तो जैसे राज्य अधिकारियों द्वारा नाम बाला होता है वैसे धर्म नेताओं द्वारा भी, ये भी बड़े माइक हैं, तो ऐसा ग्रुप लाओ। एक धर्म आत्मा नहीं लाना, संगठन में लाना। धर्म नेताओं को सम्भाल सकेंगे कि वो आपस में ही लड़ेंगे? नहीं, भावना वाले हैं, चाहे धर्म नेतायें भी हैं फिर भी माताओं में भावना अच्छी है। इसलिये कर्नाटक वाले धर्म नेताओं का नाटक दिखाना। अच्छा!

आन्ध्र प्रदेश – आन्ध्रा वाले क्या करेंगे? आन्ध्रा में भी अच्छे-अच्छे पोजीशन वाले हैं और भावना वाले भी हैं इसलिये आन्ध्रा वालों को जो आजकल के नामीग्रामी गाये हुए हैं उन सभी को बाप के घर में पहुँचाओ। समझा? देखेंगे कौन अपना अच्छा ग्रुप लाता है? अगले सीज़न में सब ग्रुप-ग्रुप आयेंगे ना! देखेंगे नम्बरवन, टू, थ्री कौन हैं? तब तो प्रत्यक्षता होगी ना! नहीं तो कैसे होगी?

इन्दौर – संख्या तो अच्छी है इन्दौर की। इन्दौर वाले क्या करेंगे? इन्दौर में भी नामीग्रामी अच्छे हैं, जिसको सेठ लोग कहते हैं ना, तो सेठ लोग बहुत हैं। तो सेठों का ग्रुप लाना। जब सभी सेठों का ग्रुप आयेगा तो कितना अच्छा लगेगा। कोई टोपी वाले, कोई पगड़ी वाले। इन्दौर वाले क्या समझते हैं? बापदादा ने इन्दौर में भेजा ही है सेठों की सेवा के लिये। लेकिन अभी तक कोई सेठ नहीं आया है। आप लोगों को पहले सेठ के पास भेजा ना। लेकिन वो कहाँ आया है? कितने सेठ आये हैं? छोटे-छोटे बिजनेस वाले नहीं, सेठ लोग। तो एक सेठ आयेगा तो उसके सेवाधारी कितने होते हैं! तो कितने आ जायेंगे? लेकिन अभी साहूकार साहूकार नहीं है, चिन्ता के घर हैं। इसलिये अभी समय बदल रहा है। अभी वह साहूकारी का नशा नहीं है। अपने बचने का नशा है। साहूकारी का नहीं।

भोपाल, आगरा – आगरा ने तो अभी काम पूरा नहीं किया है। ताजमहल के साथ ज्ञान के ताज का साक्षात्कार हो, अभी वो सोच रहे हैं। अभी पहले आगरा वालों को वो ही करना है। समझा! पीछे ग्रुप लायेंगे। जब स्थान बन जायेगा तो इन्टरनेशनल ग्रुप लायेंगे।

अच्छा, भोपाल वाले क्या करेंगे? वहाँ छोटे-छोटे माइक बहुत हैं। एडमिनिस्ट्री के लोग बहुत हैं। तो छोटे-छोटे माइक के ग्रुप भी आवाज़ फैला सकते हैं। वहाँ भी ऑफिसर क्वालिटी अच्छी है। तो अच्छे-अच्छे सेवा में सहयोगी ऑफिसर्स ग्रुप समीप आने वाले और लायेंगे, लाते हैं लेकिन और समीप लायेंगे। तो कितने ग्रुप आयेंगे? बहुत ग्रुप आयेंगे ना। और सब वेराइटी ग्रुप देखकरके आप क्या करेंगे? ताली बजायेंगे। प्रत्यक्षता की ताली बजाना, ये ताली नहीं। तो सभी खुश हो ना? अच्छा।

इस ग्रुप में बीमार आये हुए हैं? बीमार जो आये हैं वह हाथ उठायें। कोई नहीं है। इस समय सब तन्दुरुस्त हैं, बीमारी भूल गई। हॉस्पिटल में पेशेन्ट आये हैं? नहीं आये हैं। तो ये ग्रुप अच्छा हुआ ना पेशेन्ट कोई नहीं है। पेशेन्स में रहने वाले हैं इसलिये पेशेन्ट नहीं हैं। अच्छा।

डबल विदेशी – डबल विदेशियों को बापदादा दिल से याद-प्यार के साथ-साथ दुआओं की गिफ्ट दे रहे हैं। क्योंकि इन्हों की हिम्मत भारतवासियों से भी ज्यादा है। कई दीवारें पार कर बाप के बने हैं। इसलिये बापदादा सदा उमंग-उत्साह के पंख देकर उड़ाते रहते हैं, इस हिम्मत की दुआओं के साथ सभी देशों के बच्चों को विशेष गिफ्ट दे रहे हैं और यही गिफ्ट लिफ्ट का काम करेगी। मेहनत नहीं करनी पड़े। समझा? अभी पंखों की गिफ्ट को सदा साथ रखना। दुआएं सदा साथ रखना। अच्छा है, सब देशों से थोड़े-थोड़े पहुँच जाते हैं यही बापदादा को देख-देख खुशी होती है। कैसे भी सरकमस्टांश हो लेकिन दिल की दुआएं सैलवेशन बन जाती हैं इसलिये पहुँच जाते हैं। एक भी ग्रुप विदेशियों के बिना नहीं गया है। हर ग्रुप में हैं, तो हाजिर-नाजिर हो गये ना!

मधुबन निवासी, हॉस्पिटल परिवार – (मधुबन निवासी, हॉस्पिटल वाले सब पाण्डव भवन में बैठ मुरली सुन रहे हैं) उन्हों का ख्याल आ रहा है। मधुबन वाले तो हर रोज की लॉटरी लेने वाले हैं। कितनी लॉटरी मिलती है। मेहनत नहीं करनी पड़ती है, लॉटरी आ जाती है। चाहे मधुबन में या हॉस्पिटल में या ज्ञान सरोवर में, नीचे-ऊपर जो भी हैं, रोज की लॉटरी निकलती है। और लॉटरी से ही चल रहे हैं। आराम से खा पी रहे हैं। सेन्टर वालों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है भण्डारी भरने की और मधुबन वालों की भण्डारी और भण्डारा सदा भरपूर है। मधुबन है खर्च करने वाले और मधुबन में इकट्ठा करने वाले सेन्टर वाले हैं। तो सेन्टर वाले कमाउ बच्चे हो। तो कमाने का नशा अपना, लॉटरी का नशा अपना। तो सबको अपना-अपना भाग्य मिला हुआ है। किसी का भाग्य किसी से कम नहीं। क्योंकि भाग्य विधाता के भाग्य का भण्डारा भरपूर है। इसीलिये सबका एक-दो से ज्यादा भाग्य है। सिर्फ अपना-अपना है लेकिन है एक-एक का एक-दो से बढ़िया। अच्छा!

टीचर्स – टीचर्स कौन हैं? राइट हैण्ड हैं ना! राइट हैण्ड के बिना कोई काम नहीं होता। बाप के कार्य को सफल करने वाले राइट हैण्ड। अच्छा।

चारों ओर के सर्व बापदादा के स्नेह को प्रत्यक्ष करने वाले, फालो फादर करने वाले श्रेष्ठ आत्मायें, सदा बापदादा के कदम पर कदम रखने वाले आज्ञाकारी श्रेष्ठ आत्मायें, सदा दृढ़ संकल्प द्वारा ब्रह्मा बाप समान सर्वश त्यागी विशेष आत्मायें, सदा सपूत बन हर समय सबूत देने वाले सुपात्र आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादियों से – सब सहज सम्पन्न हो रहा है ना? खुशी सब भुला देती है। खुशी के आगे और कुछ लगता नहीं। तो मधुबन है खुशियों की खान। खुशी के कारण सब सहज हो जाता है। चाहे खाना मिले, नहीं मिले लेकिन खुशी की खुराक मिलती रहती है। (सभा को देखते हुए) सभी बहुत खुश हो ना? कि थोड़ी-बहुत कमी रह गई? नहीं। खुशियों की खान पर आ गये हो ना! कुछ भी हो लेकिन सन्तुष्टता का वरदान मिला हुआ है। तो सन्तुष्टता का फल है प्रसन्नता। सब प्रसन्न रहते हैं। नीचे-ऊपर भी होगा फिर प्रसन्न हो जाते हैं। अगर प्रसन्न चित्त आत्मायें देखनी हो तो कहाँ देखें? मधुबन में या सेक्टर पर भी? प्रसन्नचित्त देखना हो तो ब्राह्मणों को देखो। सदा सन्तुष्ट, सदा प्रसन्न चित्त। चित्त में और कुछ है क्या? प्रसन्नता ही प्रसन्नता। ऐसे है ना! सभी प्रसन्नचित्त हैं कि प्रश्नचित्त हैं? ऐसी कोई सभा होगी जो सब मुस्कराते रहें? और सतसंग में जाओ तो कोई का चेहरा कैसा होगा, कोई का कैसा होगा? और यहाँ सबके चेहरे देखो तो क्या हैं? मुस्कराते हुए। ब्राह्मणों के मुस्कान की निशानी देवताओं के चित्र में भी दिखाते हैं। वो किसके चित्र हैं? आपके हैं ना? कि बड़ी दादियों के हैं? आपके मन्दिर हैं? कौन-सी देवी या देवता हो? मालूम है? गणेश हो, हनुमान हो, देवियाँ हो, क्या हो? कोई भी देवी-देवता हो लेकिन दिव्यगुणधारी आत्मा देवता है। फिर कोई हनुमान कहे या गणेश कहे या देवी कहे, लेकिन दिव्यगुणधारी देव आत्मा हो।

अच्छा – (दादियों से) आप लोगों को मालूम पड़ता है कि आपके भक्त किस समय प्रार्थना करते हैं? जिस समय भक्त पुकारते हैं तो आप लोगों को मालूम पड़ता है? कि अपनी मस्ती में मस्त रहते हैं? बिचारे भक्त ऐसे ही चिल्लाते हैं! फील होता है ना! भक्तों के पुकार की फीलिंग जरूर आती है। तब तो शुभ भावना, शुभ कामनायें देते हो ना! वायुमण्डल में शान्ति क्यों फैलाते हो, लाइट हाउस, माइट हाउस क्यों बनते हो? सर्व भक्त आत्मायें या अन्य आत्मायें सन्तुष्ट, खुश रहे, शान्त रहे। (दादी जानकी से) विश्व के गोले पर खड़ी हो ना! कि लण्डन के गोले पर खड़ी हो? विश्व के गोले पर हैं ना! मधुबन के गोले पर नहीं, विश्व के गोले पर। आना और जाना तो प्रैक्टिस है। अभी आना-जाना क्या लगता है? विदेश लगता है या घर लगता है? घर से हाल में आये या हाल से घर में आये! अच्छा-लण्डन वालों को भी विशेष सेवा की मुबारक। मुश्किल को सहज करना ये एक अच्छा एग्जाम्पल है। अच्छा है कोई ने तन से, कोई ने मन से, कोई ने धन से, सर्व के सहयोग से ही सफलता मिली है और मिलती ही रहेगी। लण्डन भी विदेश का लाइट हाउस है। जैसे भारत के लिये मधुबन लाइट हाउस है तो लण्डन भी लाइट हाउस है। इसलिये दोनों दादियों से बहुत प्यार है ना। दोनों का बाप से प्यार और बाप का इन्हों से प्यार और सबका भी दादियों से प्यार। बहुत प्यार है ना! अच्छा है प्यार ही किला है। अगर प्यार का किला नहीं होता तो यज्ञ की स्थापना का कार्य हिलता लेकिन प्यार का किला अविनाशी अखण्ड बनाकर चला रहा है। जोड़ी अच्छी है। प्यार रखो तो ऐसे प्यार रखो, प्यारे भी और न्यारे भी। अच्छा!

(ज्वेल ऑफ लाइट पुस्तक का हिन्दी अनुवाद (रत्न प्रभा – दादी प्रकाशमणि) छपवाया गया है जिसका बापदादा ने अपने हस्तों से अनावरण किया) जो भी हो रहा है वो सेवा को और उड़ती कला में ले जाने का साधन है। ये भी सेवा का साधन है, ऐसे ही सेवाओं की प्रत्यक्षता होते सेवा कराने वाला बाप प्रत्यक्ष हो जायेगा। साधन अच्छे हैं – प्रत्यक्षता के लिये। अच्छा – ओम् शान्ति।

ब्रह्मा बाप के और दो कदम – फ़रमानबरदार-वफ़ादार

आज बापदादा चारों ओर के स्नेही और सहयोगी बच्चों को और शक्तिशाली समान बच्चों को देख रहे हैं। स्नेही सभी बच्चे हैं लेकिन शक्तिशाली यथाशक्ति हैं। स्नेही बच्चों को स्नेह का रिटर्न पद्म गुणा स्नेह और सहयोग प्राप्त होता है। शक्तिशाली समान बच्चों को सदा सहज विजयी भव का रिटर्न मिलता है। मिलता सभी को है। स्नेही बच्चे यथा शक्तिशाली होने के कारण सदा सहज विजय का अनुभव नहीं कर पाते। कभी सहज, कभी मेहनत। बापदादा स्नेही बच्चों को भी मेहनत को सहज करने का सहयोग देते हैं क्योंकि स्नेही आत्मायें सहयोगी भी रहती ही हैं। तो सहयोग के रिटर्न में बापदादा सहयोग जरूर देते हैं लेकिन योग यथार्थ न होने कारण सहयोग मिलते भी प्राप्ति का अनुभव नहीं कर पाते। योग द्वारा ही सहयोग का अनुभव होता है और शक्तिशाली समान बच्चे सदा योगयुक्त हैं इसलिये सहयोग का अनुभव करते सहज विजयी बन जाते हैं। लेकिन बाप को दोनों ही बच्चे प्यारे हैं। प्यार और सदा विजयी रहने की शुभ चाहना सभी बच्चों में रहती है लेकिन शक्ति कम होने के कारण समय पर और सर्व शक्तियाँ कार्य में नहीं लगा सकते। बाप वरसे के अधिकार में सर्व शक्तियों का अधिकार सभी बच्चों को देते हैं। अधिकार देने में बापदादा अन्तर नहीं रखते, सभी को सम्पूर्ण अधिकारी बनाते हैं लेकिन लेने में नम्बरवार बन जाते हैं। बापदादा किसको स्पेशल,

किसको अलग ट्युशन देते हैं क्या? नहीं देते। पढ़ाई सबकी एक है, पालना सबकी एक है। पाण्डवों को अलग पालना हो, शक्तियों को अलग हो—ऐसे है क्या? सबको एक जैसी पालना और पढ़ाई है। लेकिन लेने में, रिज़ल्ट में कितना अन्तर हो जाता है! कहाँ अष्ट रत्न और कहाँ 16108 रत्न—कितना अन्तर है! यह अन्तर क्यों हुआ? पढ़ाई और पालना को, वरदानों को धारण करना और कार्य में लगाना—इसमें अन्तर हो जाता है। कई बच्चे धारण भी कर लेते हैं लेकिन समय प्रमाण कार्य में लगाना नहीं आता है। बुद्धि तक बहुत भरपूर होंगे लेकिन कर्म में आने में फर्क पड़ जाता है।

ब्रह्मा बाप नम्बरवन क्यों बना? दो कदम पहले सुनाये ना! तीसरा—सदा बाप, शिक्षक और सदगुरु के फ़रमानबरदार बनें। हर फ़रमान को जी हाज़िर किया। बाप का फ़रमान है सदा सर्व खजानों के वर्से में सम्पन्न बनना और बनाना। तो प्रत्यक्ष देखा कि सर्व खजाने—ज्ञान, शक्तियाँ, गुण, श्रेष्ठ समय, श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना पहले दिन से लेकर लास्ट दिन तक कार्य में लगाया। लास्ट दिन भी समय, संकल्प बच्चों प्रति लगाया। ज्ञान का खजाना, याद की शक्ति और सहनशीलता के गुण का स्वरूप—यह सब खजाने लास्ट समय तक, शरीर को भी भूल सेवा में प्रैक्टिकल में लगाकर दिखाया। तो इसको कहा जाता है फ़रमानबरदार नम्बरवन बच्चा। क्योंकि बाप का विशेष फ़रमान यही है कि याद और सेवा में सदा बाप समान रहो। तो आदि से लेकर अन्त घड़ी तक दोनों ही फ़रमान प्रैक्टिकल में देखा ना? स्नेह की निशानी है फालो करना। तो चेक करो—आदि से अब तक सर्व खजानों को स्व के साथ-साथ सेवा में लगाया है? बाप का फ़रमान एक श्वास वा संकल्प, सेकण्ड व्यर्थ नहीं गंवाना है। तो सारे दिन में ये फ़रमान प्रैक्टिकल में लाया? वा कभी लाया, कभी नहीं लाया? अगर कभी-कभी फ़रमानबरदार बने और कभी नहीं बने तो किस लिस्ट में जायेंगे? अगर बापदादा फ़रमानबरदार की लिस्ट निकाले तो आप किस लिस्ट में होंगे? अपने को तो जानते हो ना? क्योंकि आप सभी सर्व खजानों के ट्रस्टी, मालिक हो। तो एक संकल्प भी बिना बाप के फ़रमान के यूज नहीं कर सकते हो। या सोचते हो कि हम बालक सो मालिक हैं, इसलिए व्यर्थ गंवायें या क्या भी करें, इसमें बाप का क्या जाता है! बाप ने दे दिया, अभी हिसाब क्यों लेते हैं? नहीं। आप रोज़ बाप के आगे कहते हो कि सब तेरा है, मेरा नहीं है। कहते हो ना! कि टाइम पर मेरा और टाइम पर तेरा! जब हमारा मतलब हो तो मेरा, वैसे तेरा..... ऐसी चतुराई तो नहीं करते हो? ब्रह्मा बाप को देखा—अपना आराम का समय भी विचार सागर मंथन कर बच्चों के प्रति लगाया। रात्रि भी जागकर बच्चों को योग की शक्ति देते रहे। ये चरित्र तो सुने हैं ना? ब्रह्मा की कहानी सुनी है ना? फालो फादर किया कि सिर्फ सुन लिया? सुनना अर्थात् करना।

तो तीसरा कदम सदा जी हाज़िर, सदा हज़ूर हाज़िर और नाज़िर। कभी ब्रह्मा बाप से शिव बाप अलग नहीं हुए, हाज़िर-नाज़िर रहे ना! बच्चे ने कहा बाबा और बाप ने कहा मीठे बच्चे। तो मन की स्थिति में सदा हाज़िर और नाज़िर अनुभव किया। सेवा में सदा जी हाज़िर किया। चाहे रात हो, चाहे दिन हो, सेवा का डायरेक्शन मिला और प्रैक्टिकल किया और कर्म में सदा हाँ जी किया। हाँ जी का पाठ पढ़ाया ना? तो आप क्या फालो करते हो? कभी हाँ जी, कभी ना जी तो नहीं करते? तो प्यार का सबूत दिखाओ। ऐसे नहीं सोचो कि जितना बाबा से मेरा प्यार है उतना और किसका नहीं। मेरे दिल में देख लो, क्या दिखाऊं, क्या सुनाऊं..... बच्चे ऐसे गीत गाते हैं। लेकिन सबूत दिखाओ। सबूत है फालो फादर। तो चेक करो—स्थिति में, सेवा में, कर्म अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में, (सम्बन्ध और सम्पर्क में आना ही कर्म है) तीनों में सदा फालो फादर है? हर फ़रमान सिर्फ बुद्धि तक रहता है या कर्म में भी आता है? रिज़ल्ट में देखा जाता है कि अगर बुद्धि और वाणी में 100 बातें रहती है तो कर्म में 50 हैं। तो उन्हीं को फालो फादर कहें? अधूरी रिज़ल्ट वालों को फालो फादर की लिस्ट में रखें? आप क्या समझते हैं? वे फ़रमानबरदार हैं? कि आप आधे में राजी हैं? थोड़ा-थोड़ा अन्तर पसन्द है! शुरु-शुरु में माला भी बनाते थे, गोल्डन-सिल्वर भी लिस्ट निकालते थे। तो अभी फिर से लिस्ट निकालें? कि सिल्वर में नाम देखकर कॉपर बन जायेंगे?

समय की सूचना बाप तो दे ही रहे हैं लेकिन प्रकृति भी दे रही है। प्रकृति भी चैलेन्ज कर रही है तो समय के प्रमाण आप लोग औरों को भी सूचना देते रहते हो। भाषणों में सबको कहते हो कि समय आ गया है, समय आ गया है। तो अपने को भी कहते हो या सिर्फ दूसरों को कहते हो? दूसरों को कहना तो सहज होता है ना? तो स्वयं भी ये चैलेन्ज स्मृति में लाओ। समय के प्रमाण अपने पुरुषार्थ की गति क्या है? बापदादा एक बात पर अन्दर ही अन्दर मुस्कराते रहते हैं। किस बात पर मुस्कराते हैं, जानते हो? एक तरफ मैजारिटी बच्चे कभी-कभी एक सेकण्ड ये सोचते हैं कि समय प्रमाण पुरुषार्थ में तीव्रता होनी चाहिये और दूसरे तरफ जब माया अपना प्रभाव डाल देती है तो दूसरे सेकण्ड ये सोचते हैं कि यह तो सब चलता ही है, ये तो महारथियों से भी परम्परा चला आता है। तो बापदादा क्या करेंगे? गुस्सा तो नहीं करेंगे ना! मुस्करायेंगे। और इसका विशेष कारण है कि समय प्रति समय पुरुषार्थ को बहुत सहज कर दिया है, इज़ी कर लिया है। स्वभाव को इज़ी नहीं करते, स्वभाव में टाइट होते हैं और पुरुषार्थ में इज़ी हो जाते हैं। फिर सोचते हैं सहज योग है ना! लेकिन जीवन में, पुरुषार्थ में इज़ी रहना—इसको सहज योग नहीं कहा जाता। क्योंकि इज़ी रहने से शक्तियाँ मर्ज हो जाती हैं, इमर्ज नहीं होती। आप सभी अपने ब्राह्मण जीवन के आदि का समय याद करो। उस समय कैसा पुरुषार्थ रहा? इज़ी पुरुषार्थ रहा या अटेन्शन वाला पुरुषार्थ रहा? अटेन्शन वाला रहा, उमंग-उत्साह वाला रहा और अभी अलबेलेपन के डनलप के तकिये और बिस्तरे मिल गये हैं। साधनों ने आराम पसन्द ज्यादा बना दिया है। तो अपने आदि के पुरुषार्थ, आदि की

सेवा और आदि के उमंग-उत्साह को चेक करो—क्या था? आराम पसन्द थे? (नहीं) और अभी थोड़ा-थोड़ा हैं? साधन सेवा के प्रति हैं, साधन स्वयं को आराम पसन्द बनाने के लिये नहीं हैं। तो अभी डनलप का तकिया और बिस्तरा निकालो। पटरानियाँ बनीं, पटराने बनीं। भले पलंग पर सोओ लेकिन स्थिति पटरानी-पटराने की हो। देखो, आदि सेवा के समय में साधन नहीं थे, लेकिन साधना कितनी श्रेष्ठ रही। जिस आदि की साधना ने ये सारी वृद्धि की है। तो साधना के बीज को विस्तार में छिपा नहीं दो। जब विस्तार होता है तो बीज छिप जाता है। तो साधना है बीज, साधन है विस्तार। तो साधना का बीज छिपाने नहीं दो, अभी फिर से बीज को प्रत्यक्ष करो।

बापदादा ने इस सीज़न में काम दिया था लेकिन किया नहीं। याद है क्या दिया था? कि कापियों में है! काम दिया था कि बेहद के वैराग्य वृत्ति पर स्वयं से भी चर्चा करो और आपस में भी चर्चा करो और प्रैक्टिकल में इस साधना के बीज को प्रत्यक्ष करो। तो किया? कि एक दिन सिर्फ डिबेट कर ली, वर्कशॉप तो हो गई लेकिन वर्क में नहीं आई। तो वर्तमान समय के प्रमाण अभी अपनी सेवा वा सेवा-स्थानों की दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की बनाओ। अभी आराम की दिनचर्या मिक्स हो गई है। ये अलबेलापन शरीर की छोटी-छोटी बीमारियों के भी बहाने बनाता है। पहले भी तो बीमारी होती थी ना, लेकिन सेवा का उमंग बीमारी को मर्ज कर देता है। जब कोई आपके दिल पसन्द सेवा होती है तो बीमारी याद आती है? अगर आपको इन्चार्ज बहन कहे—नहीं, आपकी तबियत ठीक नहीं है, दूसरे को करने दो, तो करने देंगे? उस समय बुखार वा सिर दर्द कहाँ चला जाता है? और जब सेवा कोई पसन्द नहीं होगी तो क्या होगा? सिर दर्द भी आ जायेगा तो पेट दर्द भी आ जायेगा। सुनाया है ना कि अगर बहानेबाजी में बुखार कहेंगी तो टीचर कहेंगी कि थर्मा मीटर लगाओ लेकिन पेट दर्द और सिर दर्द का थर्मा मीटर तो है ही नहीं। मूड ठीक नहीं होगा और कहेंगे कि पेट दर्द है! तो ये अलबेलापन के बहाने हैं। बेहद की वैराग्य वृत्ति मर्ज हो गई है और बहानेबाजी इमर्ज हो गई है।

बापदादा देख रहे थे कि सभी बच्चे बहुत स्नेह से मधुबन में पहुँच गये हैं। तो स्नेह तो दिखाया, उसकी मुबारक हो। बापदादा को भी बच्चों की खुशी देखकर खुशी होती है लेकिन आगे क्या करना है? सिर्फ मधुबन तक पहुँचना है या स्नेह का सबूत दिखाने के लिये फरिश्ते रूप में वतन में पहुँचना है? क्या करना है? मधुबन में पहुँचे उसकी मुबारक है लेकिन फरिश्ता बन वतन में कब पहुँचेंगे? चलते-फिरते आप सभी को फरिश्ता ही देखें। बोल-चाल, रहन-सहन सब फरिश्तों का बन जाये। और फरिश्ते का अर्थ ही है डबल लाइट। तो दिनचर्या में लाइट नहीं बनना है लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में, स्थिति में लाइट। तो लाइट बनना आता है कि बोझ खींचता है? बापदादा स्नेह का सबूत देखना चाहते हैं और जब स्नेह का सबूत देंगे तो आपको तालियाँ बजाने की जरूरत नहीं पड़ेगी लेकिन माया भी ताली बजायेगी—वाह विजयी वाह, प्रकृति भी ताली बजायेगी। तो अभी कुछ परिवर्तन करो।

आज इस सीज़न का लास्ट मेला है। फॉरेनर्स की सीज़न अलग है लेकिन इण्डियन प्रोग्राम के प्रमाण तो आज लास्ट है, मेले की बात भी अलग है। वो तो चूंगी में रख दिया है। लेकिन बापदादा देख रहे थे कि सारे सीज़न में मिलना, बहलना, खुशी मनाना—ये तो बहुत अच्छा, लेकिन सबूत क्या है! तो सेन्टर्स पर वा प्रवृत्ति में रहते हुए भी अपने टाइम टेबल, दिनचर्या को परिवर्तन करो। और परिवर्तन क्या करो? बस, सिर्फ फालो फादर। ब्रह्मा बाप ने क्या किया? ब्रह्मा बाप अलबेले रहे? सबूत है ना—लास्ट दिन तक आराम किया क्या? तो स्नेह है ना? कितना स्नेह है? (टू मच) और सबूत कितना है? इसमें टू मच नहीं कहा! तो अभी स्वयं को स्नेह के साथ शक्तिशाली बनाओ। स्वयं के परिवर्तन में शक्तिरूप बनीं। सहज योगी, सहज योगी करके अलबेलापन नहीं लाओ। बापदादा देखते हैं कि स्व प्रति, चाहे सेवा प्रति, चाहे औरों के सम्बन्ध-सम्पर्क प्रति अलबेलापन ज्यादा आ गया है। ऐसे नहीं सोचो कि सब चलता है। एक-दो को कॉपी नहीं करो, बाप को कॉपी करो। दूसरों को देखने की आदत थोड़ी ज्यादा हो गई है। अपने को देखने में अलबेलापन आ गया है। बापदादा ने सुनाया था ना कि नज़दीक की नज़र कमजोर हो गई है और दूर की नज़र तेज हो गई है। तो अभी क्या करेंगे? सीज़न का फल क्या देंगे? कि सिर्फ बाप आया, मिला, मनाया, मुरली सुनी—ये फल है? हर सीज़न का फल होता है ना? तो इस सीज़न का फल बापदादा को क्या भोग लगायेंगे? भोग लगाते हो तो फल भी रखते हो ना? वो तो बाजार में मिल जाता है, कोई बड़ी बात नहीं। अब इस सीज़न का फल क्या भेंट करेंगे या भोग लगायेंगे? लगाना है या मुश्किल है? तो देखेंगे कि नम्बरवन भोग कहाँ से आता है। वायदा तो बहुत अच्छा करके जाते हो, कभी भी ना नहीं करते हो, हाँ ही करते हो! खुश कर देते हो। लेकिन अभी क्या करेंगे? टीचर्स नम्बरवन भोग लगायेंगी ना? सभी सेन्टर्स का भोग देखेंगे। प्रवृत्ति वाले भी भोग तो लगाते हो ना कि खुद ही खा जाते हो? तो ये नहीं सोचना कि सिर्फ सेन्टर्स वालों का काम है। सभी का काम है। तो फर-मानवरदार का कदम प्रैक्टिकल में लाना है।

चौथा कदम है — वफ़ादार। कभी भी मन से, बुद्धि से, संकल्प से बाप के बेवफ़ा नहीं बनना। वफ़ादार का अर्थ ही है सदा एक बाप, दूसरा न कोई। संकल्प में भी देह, देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ वा देहधारी व्यक्ति आकर्षित नहीं करें। जैसे जब पति-पत्नि एक-दो के वफ़ादार बनते हैं तो स्वप्न में भी अगर पर (दूसरे) की याद आ गई तो वफ़ादार नहीं कहा जाता। तो ब्रह्मा बाप को देखा, संकल्प भी दूसरे के तरफ नहीं। एक बाप सब कुछ है, इसको कहा जाता है वफ़ादार। अगर पदार्थ की भी आकर्षण है, साधनों की भी आकर्षण है तो साधना खण्डित हो जाती है, वफ़ादारी खण्डित हो जाती है। और खण्डित कभी भी सम्पन्न, पूज्य नहीं गाया

जाता है। तो चेक करो कि संकल्प में भी कोई आकर्षण बेवफा तो नहीं बना देती? अगर ज़रा भी किसी के प्रति विशेष झुकाव है, थोड़ा भी पर्सनल झुकाव है, चाहे गुण के ऊपर, चाहे सेवा के ऊपर, चाहे अच्छे संस्कारों के ऊपर भी अगर एक्स्ट्रा प्रभावित हैं तो वफ़ादार नहीं कहा जायेगा। सबकी विशेषता, बेहद की विशेषता पर आकर्षित है, वो दूसरी बात है लेकिन किसी विशेष व्यक्ति या वैभव के ऊपर आकर्षित है तो वफ़ादार की लिस्ट में खण्डित गाया जायेगा। तो चेक करो कि खण्डित मूर्ति तो नहीं है? पूज्य है? कहाँ एक्स्ट्रा लगाव व झुकाव तो नहीं है? संकल्प मात्र भी झुकाव नहीं। वाचा-कर्मणा की तो बात ही छोड़ो। लेकिन संकल्प मात्र भी है तो खण्डित के लिस्ट में आ जायेंगे। तो चेक करना आता है ना? अच्छा।

अब कोई नवीनता दिखाओ। नया वर्ष तो शुरु हो गया। बापदादा को आदि का बेहद वैराग्य सदा याद आता है। उसी समय का फल आप लोग हो। अगर बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं होती तो स्थापना की वृद्धि इतनी नहीं हो सकती। ब्रह्मा बाप ने अन्त तक बड़ी आयु होते हुए भी, तन का हिसाब चुकतू करते हुए भी बेहद के वैराग्य की स्थिति प्रत्यक्ष दिखाई। साधनों को स्व प्रति स्वीकार नहीं किया। सेवा के प्रति अलग चीज़ है। स्व प्रति स्वीकार करना और सेवा प्रति कार्य में लगाना—अन्तर तो जानते हो ना? स्व प्रति बेहद का वैराग्य हो, सेवा प्रति साधन को कार्य में लगाओ। लेकिन साधन अलबेलापन नहीं लाये। तो ये फालो फादर करना ही है ना कि जो और आने हैं उनको करना है? आप लोगों को करना है। अच्छा!

बच्चों को सदा क्या कहा जाता है? कुल दीपक। तो ब्राह्मण कुल का सदा जगमगाता हुआ दीपक हो ना? बाप की श्रेष्ठ आशाओं का दीपक जगाने वाले कुल दीपक। ऐसे हो ना?

अच्छा, आज टीचर्स ने आगे बैठने का चांस लिया है – तो सिर्फ बैठने के चांस में खुश नहीं हो जाना। इसमें भी नम्बरवन चांस लेना। अभी आपस में ऐसी दिनचर्या बनाओ तो सब परिवर्तन हो जायेगा। जो आया वो किया, जैसे आया वो किया, नहीं, दिनचर्या को टाइट करो। यह अच्छा है ना कि सहज योगी के बजाय मुश्किल योगी हो जायेंगे?

अच्छा, आज सभी ज़ोन को बापदादा यही विशेष वरदान वा सेवा देते हैं कि सदा बाप को फालो करने में नम्बरवन बनो और बाप-दादा देखेंगे कि कौन-सा सेन्टर कौन-से ज़ोन में फालो फादर में नम्बरवन हैं। ऐसे नहीं सोचना कि मैं तो नम्बरवन रहा लेकिन दूसरे नहीं रहे, तो नम्बरवन की प्राइज़ नहीं मिलेगी। अभी जिस ज़ोन में जो नम्बरवन सेवाकेन्द्र होगा उसको बहुत बढ़िया प्राइज़ देंगे। तो सेन्टर्स को रिज़ल्ट दिखानी है। सेन्टर में आने वाले स्टूडेंट भी आ जाते हैं। एक सेन्टर साथी और दूसरे आने वाले स्टूडेंट दोनों ही नम्बरवन हों। तो कितने टाइम में इनाम लेंगे? जितना कहेंगे उतना देंगे। अगर दो साल कहेंगे तो दो साल भी देंगे। बोलो, दो साल चाहिये? एक साल चाहिये? कितना चाहिये? (6 मास) अच्छा चलो 6 मास ही सही। क्योंकि दूसरी सीज़न 6 मास के बाद ही होनी है। तो पहली बारी में बापदादा रिज़ल्ट वालों को विशेष बहुत अच्छा रहने का प्रबन्ध देंगे। कुंज भवन अच्छा है ना! एक कमरे में दो-दो सोना।

मधुबन वाले तो ओटे सो अर्जुन हैं ही। मधुबन का वायब्रेशन सब तरफ फैलता है। तो मधुबन वाले तो सदा ही जी हाज़िर हैं। हां जी करने वाले हैं ना या थोड़ा-थोड़ा बीच में ना जी भी अच्छा लगता है? बहुत अच्छी प्राइज़ देंगे। बिल्कुल बेहद की वैरागी आत्मा अनुभव हो, मिया मिट्टू नहीं बनना। दूसरे सर्टीफिकेट दें कि हाँ ये नम्बरवन है। तीन सर्टीफिकेट हैं ना, एक मन पसन्द, दूसरा बाप पसन्द और तीसरा लोक पसन्द। तो तीनों सर्टीफिकेट जो लेंगे उनको एक्स्ट्रा रहने का भी प्रबन्ध देंगे, ब्रह्मा भोजन भी एक्स्ट्रा करा-येंगे। सबसे पहले तो विजयी एनाउन्स होंगे, ये कितना बढ़िया होगा। विजयी रत्नों की माला बन जायेगी। सभी नम्बर ले सकते हैं। ऐसे नहीं सिर्फ टीचर्स। प्रवृत्ति वालों को भी टीचर्स सर्टीफिकेट देंगी तो नम्बर मिलेंगे या ये सोचते हो कि मेरी टीचर्स तो देंगी नहीं! अगर ऐसी कोई बात हो तो दादियों से वेरीफाय कराना।

सभी ज़ोन ने क्या सोचा? सभी नम्बरवन बनेंगे! अच्छा, इन्दौर नम्बरवन बनेगा! भोपाल भी नम्बरवन, 100 ₹ ! और इन्दौर 100 ₹ से भी 10-20 नम्बर ज्यादा! और पंजाब 1000₹ ! पंजाब को तो चार लाख की माला लानी थी! पक्का है ना! भूल तो नहीं गये! देखेंगे चार लाख में से अगले सीज़न तक एक लाख तो लाओ। पंजाब वाले क्या करेंगे? अभी पंजाब के निमित्त (दादी चन्द्रमणी) में ज्ञान सरोवर का बीज पड़ गया है, डबल जिम्मेदारी हो गई है। तो पंजाब की टीचर्स करेंगी ना? हाँ जी तो बोलो। करेंगी? अच्छा। दिल्ली कितना नम्बर लेगी? सभी नम्बरवन लेंगे! दिल्ली वालों को कहना चाहिये ए-वन। दिल्ली को तो निमित्त बनना चाहिये ना? अगली बार सभी ज़ोन को ड्यूटी दी थी, याद है क्या करना है? छोटे माइक नहीं लाना, बड़े-बड़े माइक संगठन रूप में लाना है। इन्दौर को सेठों का झुण्ड लाना है। भोपाल को, संगठित रूप में लाना है। पंजाब ऐसा संगठन लाये जो विश्व में नाम हो जाये। किससे नाम होगा? जो बड़े ते बड़े आतंकवादी हैं वो अन्तर्मुखी हो जायें। तो गवर्नमेन्ट ब्रह्माकुमारीज़ को इनाम देंगी। नामीग्रामी आतंकवादी जो प्रसिद्ध हो, जिसके लिये इनाम मुकरर हो। कमाल तो ऐसी करो ना। मिनिस्टर तो आते ही रहते हैं। पंजाब वाले कर सकते हैं? कि आतंकवादियों से डरते हैं! देखेंगे, कौन-सा सेन्टर किसको लाता है? कोई नई बात करके दिखाओ, देखो एक डाकू आया तो भी कितनी सर्विस हो गई। लेकिन उन्हीं को डाकू से ब्राह्मण बनाकर लाओ, ऐसे नहीं लाना। यहाँ आये और बाहर जाकर ऐसी कोई हिंसा का काम करे तो ब्रह्माकुमारियों का नाम भी खराब। इसलिये परिवर्तन करके लाओ। अच्छा।

इस्टर्न क्या करेंगे? नम्बरवन लेंगे? नेपाल बोलो। नम्बरवन लेंगे, पक्का? सारा इस्टर्न लेगा या नेपाल लेगा? बिहार वाले क्या करेंगे, नम्बर लेंगे? (बापदादा ने अलग-अलग स्टेट के भाई-बहिनों से हाथ उठवाया) तो सभी कौन-सा नम्बर लेंगे? फर्स्ट या सेकण्ड? अच्छा!

महाराष्ट्र क्या करेंगे? लाख परसेन्ट इनाम लेंगे या सौ परसेन्ट! जितना करो उतना अपना ही वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ बनाते हो। अच्छा। गुजरात सबसे आगे जायेगा ना। कर्नाटक कमाल करके दिखायेगा। धमाल नहीं करना। जब संख्या ज्यादा हो जाती है ना तो थोड़ी-थोड़ी धमाल भी शुरू होती है। तो सदा कमाल करके दिखाना। आन्ध्रा विश्व का सेकण्ड में अंधकार दूर कर देगा। पहले अपना करेंगे तभी विश्व का होगा। अच्छा है आन्ध्रा वाले भी उमंग-उत्साह में हैं। तो सदा उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते रहना। और तामिल क्या करेगा? तामिल तमोगुण को खत्म कर दो। सब सतोप्रधान हो जायें। केरला और तामिल है छोटा लेकिन कमाल करने वाले हैं। राजस्थान वाले क्या कमाल करेंगे? रिजल्ट में भी सबसे राजा बन जाना। समझा! राजा बनना अर्थात् नम्बर आगे लेना। राजस्थान है ही राज्य का स्थान। तो रिजल्ट में भी राजा का इनाम लेना।

यू.पी. वाले क्या कमाल करेंगे? सभी भक्ति मार्ग के तीर्थों को आबू तीर्थ में समा लेंगे। कमाल करेंगे ना, कोई भी तीर्थ करने जाये तो कहाँ जाये? आबू तीर्थ में आये, महान तीर्थ में आये। तो सब तीर्थ महान तीर्थ में समा जायें। आगरा है छोटा, लेकिन बापदादा हमेशा कहते हैं छोटा सो शुभान अल्ला तो आगरा वाले ऐसी कोई कमाल करके दिखाओ।

डबल विदेशी – डबल विदेशी क्या करेंगे? इण्डिया से भी डबल काम करेंगे। डबल कमाल दिखायेंगे – कौन-सी? जो सभी आकर्षित हो भारत में बाप से मिलने के लिये। ऐसी जिज्ञासा उन्होंने में उत्पन्न करो जो सभी भारत में आकर्षित होकरके आये। पहले माइक लायेंगे ना। विदेश के माइक भी बुलन्द आवाज़ करने वाले हैं। इसलिये विदेश के माइक अनेकों को बुलन्द आवाज़ से जगाते रहे हैं, जगाते रहेंगे। विदेश में ही ब्रह्माकुमारीज़ को पीस प्राइज़ मिली ना! तो ये सेवा का सबूत दिखाया और विदेश ने बाप की विशेष आशा पूर्ण की, जो मुख्य स्थान पर (लण्डन में कल 27 तारीख को वहाँ के मुख्य स्थान पर म्युजियम का उद्घाटन है) अनेक आत्माओं को सन्देश मिलना है। आज के दिन सभी ब्राह्मण विशेष सेवा के निमित्त बन रहे हैं। भारत में ऐसे मेन स्थान पर अभी तक नहीं किया है। ये तो गली-गली में म्युजियम खोल दिया है लेकिन मेन स्थान पर म्युजियम हो, इसमें नम्बरवन फॉरेन गया। तो नम्बरवन वालों को मुबारक भी नम्बरवन। अच्छा!

चारों ओर के स्नेह का सबूत देने वाले, हर फ़रमान को संकल्प, बोल और कर्म में लाने वाले, सदा स्वयं को बाप समान सिम्पल और सेम्पल बनाने वाले, ब्रह्मा बाप के हर कदम पर कदम रखने वाले ऐसे शक्तिशाली बाप समान बनने के दृढ़ संकल्पधारी सर्व बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादी जी से – बेफिक्र बादशाह है इसलिये कार्य सहज होता है। जो स्वयं समर्पित स्थिति में रहते हैं उनको सर्व का सहयोग स्वतः ही मिलता है। सहयोग भी उनके आगे समर्पित होता है। और दिल से जो समर्पित हैं तो सहयोग भी दिल से सामने आता है। जहाँ दिल का स्नेह है तो सहयोग मिलता है। स्नेह नहीं तो सहयोग नहीं। तो सबका सहयोग दिल से है ना? हरेक क्या समझता है? हमारा काम है या दादियों का काम है? हमारा मधुबन है या मधुबन वालों का मधुबन है? तो बाप भी कहते हैं पहले आप। अच्छा, सभी ठीक हैं? ऐसे नहीं समझना सिर्फ दादियाँ आगे जाती हैं। दादियों में आप सब समाये हुए हैं। दूर लगता है या समीप लगता है? समीप हैं ना। चाहे पीछे वाले भी हैं ना, लास्ट कुर्सी पर जो बैठे हैं, वो भी समीप हैं। सभी सदा कहाँ रहते हो? दिल में रहते हो ना? कि फॉरेन में रहते हो? पंजाब में रहते हैं, बाम्बे में रहते हैं, नैरोबी में रहते हैं, कहाँ रहते हैं? सभी दिल में हैं तो दिल कहाँ है, दूर है, नजदीक है? तो सभी दिल में हैं इसीलिये दूर नहीं है। अगर दूर होते हो तो बाप को फिर दूँढकर लाना पड़ता है। अगर बच्चे घर के दरवाजे से बाहर चले जायें तो क्या करेंगे? उनको लेने जायेंगे ना? कि छोड़ देंगे? तो बाप भी देखते हैं कि ये दिल के दरवाजे से बाहर चले गये हैं। और कामों में बिज़ी हो जाते हो ना, तो थोड़ा दरवाजे से बाहर निकल जाते हो। फिर बाप को बुलाना पड़ता है या पकड़कर लाना पड़ता है।

अच्छा, सभी खुश है ना? कोई कम्प्लेन्ट नहीं कि वहाँ जाकर कहेंगे कि थोड़ा-थोड़ा ये हुआ था। आप स्वयं भी सोचो कि बड़े संगठन में थोड़ा-बहुत तो होता ही है। फिर भी कुम्भ के मेले से तो हज़ार गुणा अच्छा है। बढ़िया ब्रह्मा भोजन तो मिलता है ना! भोजन में तो कोई मुश्किलत नहीं हुई? नाश्ता नहीं मिला तो किसको भूख तो नहीं लगी? अच्छा।

26.2.95

संगमयुग उत्सव का युग है – उत्सव मनाना अर्थात् अविनाशी उमंग-उत्साह में रहना

आज त्रिदेव रचता त्रिमूर्ति शिव बाप अपने रुहानी डायमण्ड्स के साथ डायमण्ड जुबली वा डायमण्ड जयन्ती मनाने आये हैं। इसी विचित्र जयन्ती को डायमण्ड जयन्ती कहते हो। क्योंकि बाप अवतरित होते ही हैं कौड़ी समान आत्माओं को हीरे तुल्य बनाने। यही एक वण्डरफुल जयन्ती है जो सारे कल्प में, सारे विश्व में सबसे न्यारी और प्यारी है। कोई भी जयन्ती मनाते हैं तो आत्माओं की,

देहधारियों की जयन्ती मनाते हैं। लेकिन यह शिव जयन्ती शरीरधारी आत्मा की नहीं है, निराकार बिन्दु रूप की जयन्ती है। शिव जयन्ती कहने से ज्योतिबिन्दु रूप ही सामने आता है। तो सारे कल्प में अशरीरी परम आत्मा की जयन्ती नहीं मनाई जाती। एक ही त्रिमूर्ति शिव बाप की विचित्र जयन्ती है, जो अशरीरी है। और यही एक शिव जयन्ती है जो बाप और बच्चों की साथ-साथ जयन्ती है। आज सिर्फ बाप की जयन्ती मनाने आये हो वा ब्राह्मण आत्माओं की भी जयन्ती मनाने आये हो? सभी को बताते हो ना कि शिव जयन्ती सो त्रिमूर्ति जयन्ती, ब्राह्मण जयन्ती, तो इतनी आत्माओं की परमात्मा बाप के साथ-साथ की जयन्ती—यह विचित्र है ना। लौकिक रीति से बाप का जन्म दिन और बच्चे का जन्म दिन एक नहीं होगा। दिन चाहे एक हो लेकिन वर्ष में अन्तर पड़ जायेगा। तो ऐसी विचित्र जयन्ती, न्यारी और प्यारी जयन्ती मनाने कहाँ-कहाँ से पहुँच गये हो! विश्व के कोने-कोने से किसलिए आये हो? अपनी जयन्ती मनाने या बाप की? या दोनों की? तो आप बाप को मुबारक देंगे या बाप आपको देंगे? आप बाप को कहते हो मुबारक हो और बाप आपको कहते हैं पद्म-पद्म गुणा मुबारक हो। एक-एक ब्राह्मण आत्मा हीरे से भी मूल्यवान हो। यह स्थूल हीरा तो आपके आगे कुछ भी नहीं है। इस दुनिया में हीरे का मूल्य है इसलिये हीरे-जैसा कहा जाता है। लेकिन आपके मूल्य के आगे हीरा क्या है! कुछ भी नहीं। यही हीरे तो आपके महलों में, दीवारों में होंगे। हीरे से भी ज्यादा एक-एक ब्राह्मण आत्मा हो। बापदादा चारों ओर के बच्चों को जो हीरे से भी अमूल्य हैं, सबको सामने देख रहे हैं। बापदादा के आगे सिर्फ मधुबन की सभा नहीं है लेकिन विश्व के चारों ओर के ब्राह्मण बच्चों की सभा है। सबके दिल की मुबारक के स्नेह भरे गीत कहो, बोल कहो बाप समीप से सुन रहे हैं। दिल का आवाज़ दिलाराम के पास पहले पहुँचता है। तो बापदादा देख रहे हैं कि बच्चों के सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण चारों ओर से मधुबन, बाप के स्वीट होम तक पहुँच रहा है। वैसे भी शिव जयन्ती को उत्सव कहते हैं। यथार्थ रीति से उत्सव आप ब्राह्मण ही मनाते हो। क्योंकि उत्सव का अर्थ ही है—सर्व उत्साह-उमंग में रहें। तो आप जो भी बैठे हो, सभी के दिल में उत्साह और उमंग कितना है? अविनाशी है या आज के लिये है? अविनाशी है ना? इसलिये बापदादा इस श्रेष्ठ संगमयुग को उत्सव का युग कहते हैं। हर दिन आपके लिये उत्साह सम्पन्न है। हर दिन उत्सव है।

जो गायन है, आप लोग टॉपिक रखते हो 'अनेकता में एकता' तो प्रैक्टिकल में अनेक देश, अनेक भाषायें, अनेक रूप-रंग लेकिन अनेकता में भी सबके दिल में एकता है ना! क्योंकि एक बाप है। चाहे अमेरिका से आये हो, चाहे अफ्रीका से आये हो लेकिन दिल में एक बाप है। एक श्रीमत पर चलने वाले हो। तो बापदादा को अच्छा लगता है कि अनेक भाषाओं में होते हुए भी मन का गीत, मन की भाषा एक है। चाहे किसी भी भाषा वाले हो, काला ताज तो मिला है (सभी हेडफोन से अपनी-अपनी भाषा में सुन रहे हैं), अभी यही काला ताज बदलकर गोल्डन हो जायेगा। लेकिन सबके मन की भाषा एक है और एक ही शब्द है, 'मेरा बाबा'। सभी भाषा वाले बोलो 'मेरा बाबा'। हाँ, यह एक ही है। तो अनेकता में एकता है ना!

तो उत्साह में रहने वाले अर्थात् सदा उत्सव मनाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। कभी भी उत्साह कम नहीं होना चाहिये। पहले भी सुनाया था—ब्राह्मण जीवन का सांस है उमंग-उत्साह। अगर सांस चला जाये तो जीवन सेकेण्ड में खत्म हो जायेगी ना! तो ब्राह्मण जीवन में यदि उमंग-उत्साह का सांस नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। जो सदा उमंग-उत्साह में होगा, वो फ़लक से कहेगा कि ब्राह्मण हैं ही उत्साह-उमंग के लिये। और जिसका उमंग-उत्साह कम हो जाता है उसके बोल ही बदल जाते हैं। वो कहेगा—हैं तो सही...., होना तो चाहिये...., हो जायेगा.... तो ये भाषा और उस भाषा में कितना अन्तर है! उसके हर बोल में 'तो' जरूर होगा—होना तो चाहिये.... तो ये जो 'तो-तो' होता है ना, ये उमंग-उत्साह का प्रेशर कम होने से ही ऐसे बोल, कमजोरी के बोल निकलते हैं। तो उमंग-उत्साह कभी कम नहीं होना चाहिये। उमंग-उत्साह कम क्यों होता है? बापदादा कहते हैं सदा वाह-वाह कहो और कहते हैं व्हाई-व्हाई (व्हाई)। अगर कोई भी परिस्थिति में व्हाई शब्द आ जाता है तो उमंग-उत्साह का प्रेशर कम हो जाता है। बापदादा ने अगले साल भी विशेष डबल फारेनर्स को कहा था कि व्हाई शब्द को ब्राह्मण डिक्शनरी में चेंज करो, जब व्हाई शब्द आये तो फ्लाय शब्द याद रखो तो व्हाई खत्म हो जायेगा। कोई भी परिस्थिति छोटी भी जब बड़ी लगती है तो व्हाई शब्द आता है—ये क्यों, ये क्या.... और फ्लाय कर लो तो परिस्थिति क्या होगी? छोटा-सा खिलौना। तो जब भी व्हाई शब्द मन में आवे तो कहो ब्राह्मण डिक्शनरी में व्हाई शब्द नहीं है, फ्लाय है। क्योंकि व्हाई-व्हाई, हाय-हाय करा देता है। बापदादा को हंसी भी आती है, एक तरफ कहेंगे—नहीं, हमारे जैसा श्रेष्ठ भाग्य किसका नहीं है। अभी-अभी यह कहेंगे और अभी-अभी उत्साह कम हुआ तो कहेंगे—पता नहीं मेरा भाग्य ही ऐसा है! मेरे भाग्य में इतना ही है! तो हाय-हाय हो गया ना! तो जब भी हाय-हाय का नज़ारा आवे तो वाह-वाह कर लो तो नज़ारा भी बदल जायेगा और आप भी बदल जायेंगे।

डबल विदेशी आजकल 'पॉजिटिव थिंकिंग' का कोर्स कराते हो ना। सभी विदेश में विशेष कोर्स यह कराते हो? तो अपने को भी कराते हो या दूसरों को कराते हो? जिस समय कोई ऐसी परिस्थिति आ जाये तो अपने को ही स्टूडेंट बनाकर, खुद ही टीचर बन करके अपने को यह कोर्स कराओ। अपने को करा सकते हो या सिर्फ दूसरे को करा सकते हो? दूसरे को कराना सहज है। जब यह नेचुरल स्थिति हो जाये कि हर व्यक्ति को, बात को पॉजिटिव वृत्ति से देखो, सुनो या सोचो तो कैसी स्थिति रहेगी? आजकल के साइन्स द्वारा भी ऐसे साधन निकले हैं जो रफ़ माल को भी बहुत सुन्दर रूप में बदल देते हैं। देखा है ना—क्या से क्या बना देते

हैं! तो आपकी वृत्ति क्या ऐसा परिवर्तन नहीं कर सकती? आवे निगेटिव रूप में लेकिन आप निगेटिव को पॉजिटिव वृत्ति से बदल दो। अगर हलचल में आते हैं तो उसका कारण है—निगेटिव सुनना, सोचना वा बोलना या करना। ये मॉडल बनाते हो ना—न सोचो, न देखो, न बोलो, न करो। साइलेन्स की पॉवर क्या निगेटिव को पॉजिटिव में नहीं बदल सकती! आपका मन और बुद्धि ऐसा बन जाये जो निगेटिव टच नहीं करे, सेकण्ड में परिवर्तन हो जाये। ऐसे तीव्र गति की अनुभूति कर सकते हो? मन और बुद्धि ऐसा तीव्र गति का यन्त्र बन जाये। बन सकता है कि टाइम लगेगा? कि निगेटिव बात आयेगी तो कहेंगे कि थोड़ा सोचने तो दो, देखें तो सही क्या है! क्विक स्पीड से परिवर्तन हो जाये—इसको कहा जाता है ब्राह्मण जीवन का मज़ा, मौज़। अगर जीना है तो मौज़ से जीयें। सोच-सोचकर जीना वो जीना नहीं है। आप लोग औरों को कहते हो कि राजयोग जीने की कला है। तो आप लोग राजयोगी जीवन वाले हो ना! कि कहने वाले हो? जब राजयोग जीने की कला है तो राजयोगियों की कला क्या है? यही है ना? तो उत्सव मनाना अर्थात् मौज़ में रहना। मन भी मौज़ में, तन भी मौज़ में, सम्बन्ध-सम्पर्क भी मौज़ में।

कई बच्चे कहते हैं अपने रीति से तो ठीक रहते हैं, अपने मौज़ में रहते हैं लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में मौज़ में रहें, यह कभी-कभी होता है। लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क ही आपके स्थिति का पेपर है। यदि स्टूडेंट कहे वैसे तो मैं पास विद् ऑनर हूँ लेकिन पेपर के टाइम मार्क्स कम हो जाती है तो ऐसे को क्या कहेंगे? तो ऐसे तो नहीं हो ना! फुल पास होने वाले हो ना? बापदादा ने सुनाया है कि जो सदा बाप के पास रहते हैं वो पास हैं। पास नहीं रहते तो पास नहीं हैं। तो सदा कहाँ रहते हो? दूर रहते हो, पास नहीं रहते हो! डबल विदेशियों को तो डबल पास होना चाहिये ना! अच्छा।

तो डबल विदेशियों ने इस बारी हाइ जम्प लगा दी है। मधुबन में हाई जम्प लगाकर पहुँच गये हैं। (इस बार हर वर्ष से ज्यादा संख्या में डबल विदेशी मधुबन पहुँचे हुए हैं) अच्छा, डबल विदेशियों को भी कइयों को पटरानी बनने का चांस तो अच्छा मिला है। पटरानी बनने में मज़ा है कि नहीं? आप लोगों की तो अटैची इतनी है जो उस पर ही सो सकते हैं। क्योंकि एक बड़ी लाते हैं, एक छोटी लाते हैं, तो छोटी को तकिया बनाओ। जगह बच जायेगी ना! अच्छा लगता है बापदादा सीन देखते हैं कैसे भारी-भारी अटैचियाँ घसीट कर ला रहे हैं! अच्छी सीन लगती है ना! संगम पर ये मेहनत भी थोड़े समय की है फिर तो प्रकृति भी आपकी दासी होगी तो दासियाँ भी बहुत होंगी। फिर आपको सामान उठाने की जरूरत नहीं। अभी अपना राज्य स्थापन हो रहा है, इस समय गुप्त वेश में हो, सेवाधारी हो फिर राज्य अधिकारी बनेंगे। तो सेवाधारियों को तो सब प्रकार की सेवा करनी पड़ती है। जितनी अभी तन, मन, धन और सम्पर्क से सेवा करते हो उतना ही वहाँ सेवाधारी मिलेंगे। सबसे पहले तो ये प्रकृति के पांच ही तत्व आपके सेवाधारी बनेंगे। अपना राज्य-भाग्य स्मृति में है ना! कितने बारी राज्य अधिकारी बने हैं! अनगिनत बार बने हैं और बनते ही रहेंगे। लेकिन राज्य अधिकारी से भी अब का सेवाधारी जीवन श्रेष्ठ है। क्योंकि अभी बाप और बच्चों का साथ है। चाहे किसी भी प्रकार की सेवा है लेकिन सेवा का प्रत्यक्षफल अभी मिलता है। बाप का स्नेह, सहयोग और बाप द्वारा मिले हुए खजाने प्रत्यक्षफल के रूप में मिलते हैं। जब भी कोई विशेष सेवा करते हो और युक्तियुक्त सेवा करते हो तो कितनी खुशी होती है! उस समय के चेहरे का फ़ोटो निकालो तो कैसा होता है! तो एक तरफ सेवा करते हो, दूसरे तरफ प्रत्यक्षफल आपके लिये सदा तैयार है ही है। एक हाथ से सेवा करो, दूसरे हाथ से फल खाओ—ऐसे अनुभव होता है? कि सेवा में बड़ी मेहनत है? सेवा में हलचल होती है या नहीं? कभी-कभी होती है। ये हलचल ही परिपक्व बनाती है, अनुभवी बनाती है। हलचल में इसीलिये आते हो जो सिर्फ वर्तमान को देखते हो। लेकिन वर्तमान में छिपा हुआ भविष्य जो है वो स्पष्ट नहीं दिखाई देता है, इसलिये हलचल में आ जाते हैं। कोई भी बड़े ते बड़ी नाज़ुक परिस्थिति वास्तव में आगे के लिये बहुत बड़ा पाठ पढ़ाती है, परिस्थिति नहीं है लेकिन वह आपकी टीचर है। उस नज़र से देखो कि इस परिस्थिति ने क्या पाठ पढ़ाया? इसको कहा जाता है निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन करना। सिर्फ परिस्थिति को देखते हो तो घबरा जाते हो। और परिस्थिति माया द्वारा सदा नये-नये रूप से आयेगी। वैसे ही नहीं आयेगी, जिस रूप में आ चुकी है, उस रूप में नहीं आयेगी। नये रूप में आयेगी। तो उसमें घबरा जाते हैं—ये तो नई बात है, ये तो होता नहीं है, ये तो होना नहीं चाहिये....। लेकिन समझ लो कि माया अन्त तक बहुरूपी बन बहुरूप दिखायेगी। माया को बहुरूपी बनना बहुत जल्दी और अच्छा आता है। जैसे आपकी स्थिति होगी ना वैसी परिस्थिति बनाकर आयेगी। आज मानो आप थोड़ा-सा अलबेले जीवन में हो तो माया भी उसी अलबेले परिस्थिति के रूप में आयेगी। आज मूड थोड़ी ऑफ है, जैसे होनी चाहिये वैसे नहीं है, तो मूड ऑफ की परिस्थिति के रूप में ही आयेगी। फिर सोचते हैं कि पहले ही मैं सोच रही थी फिर ये क्या हुआ? इसलिये माया को देखने के लिये, जानने के लिये त्रिकालदर्शी और त्रिनेत्री बनो। आगे, पीछे, सामने त्रिनेत्री बनो।

आप सभी त्रिनेत्री और त्रिकालदर्शी हो ना? डबल फॉरेनर्स त्रिकालदर्शी हैं—यस या नो? सब बोलो—हाँ जी या ना जी। (हाँ जी) अपनी भाषा से तो ये अच्छा बोलते हो। सब खुश हो? (हाँ जी) इतने बड़े संगठन में मज़ा आ रहा है? (हाँ जी) कोई-कोई यह तो नहीं सोच रहे हैं कि अगले वर्ष रश में नहीं आयेगे, थोड़ा पीछे आयेगे? संगठन का मज़ा भी प्यारा है। वैसे आना तो प्रोग्राम प्रमाण ही, ज्यादा नहीं आना लेकिन आदत ऐसी होनी चाहिये जो सबमें एडजस्ट कर सके। एडजस्ट करने की पॉवर सदा विजयी बना देती है। ब्रह्मा बाप को देखा तो बच्चों से बच्चा बनकर एडजस्ट हो जाता, बड़ों से बड़ा बनकर एडजस्ट हो जाता। चाहे बेगरी लाइफ,

चाहे साधनों की लाइफ, दोनों में एडजस्ट होना और खुशी-खुशी से होना, सोचकर नहीं। यहाँ दुःखी तो नहीं होते हो लेकिन खुशी के बजाय थोड़ा सोच में पड़ जाते हो—ये क्या हुआ, कैसे हुआ....। तो सोचने वाले को एडजस्ट होने के मजे में कुछ समय लग जाता है। अपने को चेक करो कि कैसी भी परिस्थिति हो, चाहे अच्छी हो, चाहे हिलाने वाली हो लेकिन हर समय, हर सरकम-स्टांस के अन्दर अपने को एडजस्ट कर सकते हैं? डबल फॉरेनर्स को अकेलापन भी अच्छा लगता है और कम्पैनिन भी बहुत अच्छे लगते हैं। लेकिन कम्पनी में हो या अकेले हो, दोनों में एडजस्ट होना—ये है ब्राह्मण जीवन। ऐसे नहीं, संगठन हो और माथा भारी हो जाये—नहीं, मुझे एकान्त चाहिये, ये घमसान में नहीं, मुझे अकेला चाहिये....। मन अकेला अर्थात् बाहरमुखता से अन्तर्मुख में चले जाओ तो अकेलापन है। कोई-कोई कहते हैं ना—अकेला कमरा चाहिये, दो भी नहीं चाहिये। अकेला मिले तो भी मौज़ से सोओ और दस के बीच में भी सोना हो तो मौज़ से सोओ। फॉरेनर्स दस के बीच में सो सकते हैं कि मुश्किल है? सो सकते हैं? (हाँ जी) अच्छा, अभी अगले वर्ष 20-20 को सुलायेंगे। देखो समय बदलता रहता है और बदलता रहेगा। दुनिया की हालतें नाजुक हो रही हैं और भी होंगी। होनी ही है। अभी सिर्फ एक स्थान पर अलग-अलग होती हैं, आखिर में सब तरफ इकट्ठी होगी। तो नाजुक समय तो आना ही है। समय नाजुक हो लेकिन आपकी नेचर नाजुक नहीं हो। कड़ियों की नेचर बहुत नाजुक होती है ना, थोड़ा-सा आवाज़ हुआ, थोड़ा-सा कुछ हुआ तो डिस्टर्ब हो गये। इसको कहते हैं नाजुक स्थिति, नाजुक नेचर। तो नाजुक नेचर नहीं हो। जैसा समय वैसा अपने को एडजस्ट कर सको। ये अभ्यास आगे चलकर आपको बहुत काम में आयेगा। क्योंकि हालतें सदा एक जैसी नहीं रहनी है। और फाइनल पेपर आपका नाजुक समय पर होना है। आराम के समय पर नहीं होना है। नाजुक समय पर होना है। तो जितना अभी से अपने को एडजस्ट करने की शक्ति होगी तो नाजुक समय पर पास विद् ऑनर हो सकेंगे। पेपर बहुत टाइम का नहीं है, पेपर तो बहुत थोड़े समय का है लेकिन चारों ओर की नाजुक परिस्थितियाँ, उनके बीच में पेपर देना है। इसलिये अपने को नेचर में भी शक्तिशाली बनाओ। क्या करें, मेरी नेचर ये है, मेरी आदत ही ऐसी है, ये नहीं। इसको नाजुक नेचर कहा जाता है। देखो, बापदादा ने स्थापना के आदि में सब अनुभव करा लिया। जब आदि हुई तो राजकुमार और राजकुमारियों से भी ज्यादा पालना, साधन, सब अनुभव कराया और आगे चलकर बेगरी लाइफ का भी पूरा अनुभव कराया। तो जिन्होंने दोनों अनुभव किया उनकी आदत बन गई। तो आप लोगों के आगे तो ऐसा समय आया नहीं है लेकिन आना है। जहाँ भी रहते हो, सभी हिलने हैं, सब आधार टूटने हैं। तो ऐसे टाइम पर क्या चाहिये? एक ही बाप का आधार। आप लोग तो बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो, जो आने का समय आपका सहज साधनों का है। सहज साधनों के साथ-साथ आपका ब्राह्मण जन्म है। लेकिन साधन और साधना—साधनों को देखते साधना को नहीं भूल जाना। क्योंकि आखिर में साधना ही काम में आनी है। समझा?

बापदादा खुश होते हैं कि डबल फॉरेनर्स सन्देश देने में बहुत अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। सेन्टर्स भी अच्छे उमंग-उत्साह से खोल रहे हैं। तो बापदादा आज आप सबको उत्सव मनाने की मुबारक भी दे रहे हैं और साथ-साथ सेवा की भी मुबारक दे रहे हैं। सिर्फ और अण्डरलाइन करा रहे हैं कि सेवा और स्व-स्थिति दोनों में तीव्र गति हो। स्व-स्थिति और सेवा दोनों का बैलेन्स सदा स्मृति में रहे। कभी-कभी बापदादा सुनते हैं, देखते भी हैं, जब कोई सेवा का बहुत बड़ा भागदौड़ का कार्य करते हैं ना, तो कार्य के उमंग में कार्य तो कर लेते हैं लेकिन कभी-कभी कोई कहते हैं—सेवा में गये ना तो अपनी स्थिति थोड़ी ढीली हो गई। वो नहीं होना चाहिये। बस, अभी योग में बैठे, सेवा नहीं करेंगे, योग में ही बैठेंगे! योग और सेवा इकट्ठा-इकट्ठा होना चाहिये।

बापदादा आप सबके पत्र समाचार पढ़ते हैं! कई बच्चे कहते हैं 6-6 पेज़ लिखा, उत्तर तो आया ही नहीं। इतने कार्ड भेजे, उत्तर तो आया नहीं। लेकिन बापदादा सभी को रिसपाण्ड जरूर करते हैं। आपको लिखने का संकल्प चलता है और बाप के पास वहाँ पहुँच जाता है। लेकिन अच्छा करते हो, सिर्फ लम्बा नहीं लिखो, शॉर्ट में लिखो। क्योंकि लिखने से जो मन में चलता रहता है वो खत्म हो जाता है, हल्का हो जाता है। इसलिये लिखो जरूर लेकिन शॉर्ट में लिखो। आप सबके कार्ड वगैरह की सब एक्जीबिशन वतन में भी लगती है। (सभी के कार्ड स्टेज पर बहुत सुन्दर ढंग से सजाकर रखे गये हैं) यहाँ भी एक्जीबिशन लगाई है ना। तो पहुँचा या नहीं पहुँचा, ऐसे नहीं सोचो। पहुँचता ही है। और बापदादा एक-एक के समाचार को, चाहे सेवा का, चाहे स्थिति का, देखते हैं और देखकर शक्तियों का वायब्रेशन देते हैं। अच्छा!

(बापदादा ने सभी देशों के भाई-बहिनो से अलग-अलग ग्रुप में हाथ उठवाये)

साउथ और नार्थ अमेरिका हाथ उठाओ। अमेरिका क्या जलवा दिखायेगी? कोई नई बात करेंगे ना! क्या करेंगे? आज शिवरात्रि का झण्डा लहरायेंगे ना तो प्रत्यक्षता का झण्डा पहले देखें अमेरिका में लहराते हैं या आफ्रिका में, या भारत में? पहले कहाँ लहरायेगा? अमेरिका में? यू.एन. की बिल्डिंग पर शिव बाबा का झण्डा लहराना। जैसे भारत वाले समझते हैं ना लाल किले पर झण्डा लहरायेंगे तो सबकी नज़र होगी ना, तो यू.एन. की बिल्डिंग पर झण्डा लहरायेंगे तो सब क्या बोलेंगे? वन्स मोर, वन्स मोर। वह भी दिन आना ही है। और यूरोप कहाँ झण्डा लहरायेगा? लण्डन के महल में। जैसे वहाँ की परेड देखने आते हैं ना तो ऐसे इस झण्डे को देखने आवे। होना है ना! और ही आपको अर्जियाँ करके ले जायेंगे—आओ। थोड़ा-सा हलचल होने दो, उन्हों की हलचल होगी, अपना झण्डा लहरायेंगे और अफ्रिका कहाँ झण्डा लहरायेगा? अफ्रिका में जो नामीग्रामी स्थान हो वहाँ झण्डा लहराना। अभी

उस मिलेट्री की परेड निकालते हैं और फिर ब्रह्माकुमारियों की यात्रा निकले। ऑस्ट्रेलिया वाले क्या करेंगे? अच्छा! इस बारी ऑस्ट्रेलिया कम आया है। नहीं तो सबसे नम्बर तो ऑस्ट्रेलिया लेते हैं। इस बारी किसको ज्यादा चांस दिया है? यू.के. को। यू.के. वाले बहुत आये हैं। यू.के. तो लक्की हुआ। शिवरात्रि का चांस यू.के. को मिला है। यू.के. वालों ने मेहनत भी अच्छी की है। मलेशिया की सेवा भी अच्छी वृद्धि को प्राप्त कर रही है। अच्छे हैं। यू.के. तो है ही फाउण्डेशन और अमेरिका है सर्विस के वृद्धि की आवाज़ फैलाने का बड़ा माइक। अमेरिका की यह विशेषता है। और अफ्रिका की विशेषता क्या है? अफ्रिका वालों की कमाल है जो दुनिया भय में है और ये निर्भय हैं। रीयल में श्याम से सुन्दर बनाने वाला तो अफ्रिका है ना! निर्भयता की कमाल इन्हों की है। देखो, दो-दो बहनें रहती हैं लेकिन निर्भय होकर रहती हैं। हिम्मत रखते हैं ना तो बाप की मदद है। अफ्रिका की भी सेवा अच्छी वृद्धि को पा रही है। वैसे विदेश में भी इस समय सब तरफ सेवा का उमंग-उत्साह और वृद्धि अच्छी है। अभी तरीका, विधि आ गई है। धरनी भी बदली है और विधि भी आ गई है। देखो सबसे पीछे रशिया खुला है, वहाँ की भी सेवा देखो कितनी है! रशिया वाले भी आये हैं ना! ये तो एक ही तरफ बैठते हैं। इन्हों की युनिटी बहुत अच्छी है, जहाँ एक जायेगा ना वहाँ सब जायेंगे। अच्छा है, लास्ट सो फर्स्ट हो रहे हैं। अच्छी रिजल्ट है। देखो, अभी तो स्थान भी मिल रहे हैं। अभी गवर्नमेंट को और अपना बनाते जाओ। अच्छा उमंग-उत्साह है। और ऑस्ट्रेलिया में बापदादा की बहुत-बहुत-बहुत श्रेष्ठ आशाओं के दीपक जग रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया ऐसी कमाल करेंगे जो कोई ने नहीं की। क्यों कमाल करेंगे? कारण बताओ? क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में सब प्रकार की बुद्धि वाले हैं। इन्वेन्टर भी हैं, कार्य को, प्लैन को प्रैक्टिकल में लाने वाली बुद्धि भी है, इसलिये आदि में भी ऑस्ट्रेलिया ने बहुत अपनी कमाल दिखाई। अभी बीच में थोड़ा प्लैन बना रहे थे। और आगे चलकर प्रैक्टिकल में आना ही है। तो ऑस्ट्रेलिया की तरफ बापदादा की विशेष श्रेष्ठ सेवा के आशाओं की नज़र है। समझा? इस बारी कम आये हैं लेकिन सभी सुनेंगे। अच्छा, जो डायलाग में आये थे वो हाथ उठाओ। (आबू डायलाग में आये हुए कुछ मेहमान भी बापदादा की मुरली सुन रहे हैं) ये थोड़ी-सी आत्मायें महान् भाग्यवान हैं। तो डायलाग में आये और बहुत अच्छे श्रेष्ठ माइक बनकर जा रहे हैं। मैसेन्जर बनकर जा रहे हैं। सभी के मन में, सारे ग्रुप के मन में ये उमंग है कि ज्यादा से ज्यादा मैसेज देकर अनेक आत्माओं को परिचय दें और स्वीट होम में पहुँचाये। ऐसा उमंग है? जिन्होंने हाथ उठाया उन्हों को उमंग है? अच्छा, सभी ने देखा है कौन-सी भाग्यवान आत्मायें हैं? रीयल में तो इन्हों का बर्थ डे हो गया। तो मैसेन्जर बनने के बर्थ डे की मुबारक।

अच्छा, यूरोप क्या करेगा? यूरोप अपनी अंचली यू.के. में डालता है, ऐसे! लेकिन अच्छा है, कोई भी ऐसा विशेष देश रहना नहीं चाहिये जो उलहना दे कि हमारे देश में तो आपका मैसेज पहुँचा ही नहीं। तो जो भी विशेष देश है, पहुँचना तो कोने-कोने में है, लेकिन कोने-कोने में मैसेज जरूर देना। उलहना नहीं सुनना पड़े। अच्छा! मॉरीशियस देश के हिसाब से जितना ही छोटा है उतना ही सेवा में बड़ा है। मॉरीशियस की ये विशेषता है कि आई.पी. भी होमली हैं। चाहे प्राइम मिनिस्टर है या मिनिस्टर हैं लेकिन होमली रूप से मिलते भी हैं और सहयोगी भी बनते हैं। श्रीलंका वाले हाथ उठाओ। ये भाषा के कारण इकट्ठे बैठे हैं। श्रीलंका तो नाम ही श्री है। श्री का अर्थ ही महान् है। तो श्रीलंका में जहाँ अशान्ति है वहाँ शान्ति स्थापन करना और शान्ति का सन्देश देना ये कितना श्रेष्ठ कार्य है तो श्रीलंका सन्देश देने का श्री-कार्य कर रहे हैं। मिडिल ईस्ट भी आया है। दुबई के भी आये हैं। हैं थोड़े लेकिन महावीर हैं। अच्छा है श्रीलंका तो कल्प पहले भी लंकाजीत ब्राह्मण कहलाते हैं। तो श्रीलंका पर तो विजय होनी ही है। मिडिल ईस्ट भी धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। क्योंकि गुप्त में भी गुप्त वेश धारण करके सेवा करनी पड़ती है ना तो डबल सेवा करने की मुबारक। फिर भी बापदादा मुबारक देते हैं जो वायुमण्डल कैसा भी हो अचल-अडोल-अविनाशी रत्न हैं। एक-एक रत्न अमूल्य हैं। और जगह सेवा करना सहज है लेकिन यहाँ सेवा डबल गुप्त रूप में करना पड़ता है। फिर भी हिम्मत वाले हैं। हिम्मत छोड़ने वाले नहीं। अचल-अडोल आत्मायें हैं। इसलिये बापदादा हिम्मतवान बच्चों को पद्मगुणा मदद की मुबारक देते हैं। अच्छा। करेबियन में फाउण्डेशन तो अच्छा पड़ा। अभी कितने सेन्टर हो गये करेबियन में। (10-12) फिर भी हिम्मत अच्छी रखी है। भक्ति के विस्तार में ज्ञानी तू आत्मा बनाना इसमें हिम्मत अच्छी रखी है और ब्राह्मण भी अच्छे वृद्धि को पा रहे हैं। शुरु से जो आदि से आये हैं वो बहुत अच्छे चल रहे हैं। ज्यादा हलचल में नहीं आये हैं। यह भी अच्छा रिकॉर्ड है। करेबियन भी कम नहीं है, कमाल करने वाला है। अच्छा! जहाँ के भी हो, सभी बाप के समीप और सिकीलधे हो। बापदादा अमृतवेले चारों ओर के अमूल्य रत्नों को देख-देख हर्षित होते हैं। जिसको देखते हैं सब एक-दो से आगे हैं। क्यों? हर एक की अपनी-अपनी विशेषता है।

चारों ओर के अमूल्य विशेष रत्नों को, सदा हर दिन उत्साह से उत्सव मनाने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा स्व-स्थिति और सेवा के उन्नति में बैलैन्स रखने वाली ब्लैसिंग के अधिकारी आत्माओं को, सदा परिस्थिति को सहज पार करने वाली ऐसे अचल, अडोल, महावीर आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

टीचर्स से – टीचर्स को विशेष बापदादा मुबारक दे रहे हैं। क्योंकि हर वर्ष सेवा की रिजल्ट में टीचर्स ने मेहनत अच्छी की है। इसलिये प्रत्यक्षफल बाप की दुआएं हैं। समझा! टीचर्स से पूछने की आवश्यकता नहीं है कि खुश हैं? खुश हैं और खुश बनाने के निमित्त हैं। तो जो औरों को खुश बनाते हैं वो स्वयं तो जरूर होंगे। टीचर का अर्थ ही अचल-अमर। तो अमर भी हैं और अचल

भी हैं। ऐसे है! कि कभी-कभी खुशी थोड़ी कम होती है? नहीं, हो ही नहीं सकती। इतना निश्चय है।

दादी जानकी से – प्रकृतिजीत है ना! प्रकृति का काम है हिलाना और आपका काम है प्रकृति को हिलाना। अच्छा है, प्यार से रेस्ट नहीं करते तो मजबूरी से कराते हैं। क्या है, इनकी सेवा से बहुत मोहब्बत है। उमंग है, कोई रह नहीं जाये, कोई रह नहीं जाये। ऐसे है ना! (बाबा ने अपने पास बिठाया) साथ रहती है ना तो साथ ही बिठायेगे। अच्छा है, नई-नई इन्वेन्शन निकलेगी। कोई बात नहीं। रेस्ट भी मिलती है तो कोई नया प्लैन बनाने के लिये। इसलिये आपको कोई नया माल मिलेगा। दादियों को देख करके सभी को बहुत खुशी होती है ना। सभी का स्नेह भी सेवा का प्रत्यक्षफल है। तो सारे दिन में कितने फल मिलते हैं! जो भी देखते हैं वो किस नज़र से देखते हैं? सबके दिल से वाह दादी वाह, वाह दादी वाह निकलता है। ये भी सेवा का फल है। जितना जो स्नेह से, निस्वार्थ सेवा करते हैं उनको प्रत्यक्षफल सदा ही मिलता है और सर्व से मिलता है। सबके दिल से निकलता है—हमारी दादी, या कहेंगे कि ये लन्दन की दादी है, ये मधुबन की दादी है? सबकी दादियाँ हैं। जो विश्व अधिकारी बनते हैं उसको अभी से सर्व, उसमें भी विशेष ब्राह्मण अपना मानेंगे। अच्छा, ठीक है? सब बहुत अच्छा! खराब तो होना ही नहीं है। अभी सिर्फ बीच-बीच में थोड़ी रेस्ट ले लो, बाकी अच्छा है। उमंग-उत्साह रखने से औरों का भी उमंग-उत्साह बढ़ता रहता है। सिर्फ उड़ने वाले नहीं हो लेकिन उड़ाने वाले हो। सप्ताह में आधा दिन या एक दिन रेस्ट का रखो फिर आपका शरीर बहुत मदद देगा। कुछ समय अभी रेस्ट चाहिये। इतने राइट हैण्ड तैयार हुए हैं, सभी देशों में राइट हैण्ड हैं। तो राइट हैण्ड को करने दो। सिर्फ बैक बोन रहो। पुराने-पुराने आदि रत्न भी बहुत आये हैं। 20 साल वाले हाथ उठाओ। जो पहली बार आये हैं वो हाथ उठाओ। फर्स्ट टाइम वालों को विशेष मुबारक है। अच्छे-अच्छे आये हैं। अभी अमर भव के वरदान को सदा साथ रखना। ओम् शान्ति।

(बच्चों ने बापदादा के साथ शिव जयन्ती मनाई, गीत गाये, मोमबत्तियां जलाई, केक काटी। बापदादा ने स्टेज पर खड़े होकर अपने हस्तों से झण्डा लहराया और सबको बधाइयाँ दी)

इस झण्डे को लहराने के पहले सबके दिलों में जो स्नेह का झण्डा लहरा रहे हैं वह देख-देख हर्षित हो रहे हैं। पहले सबके दिलों में स्नेह का, सेवा का झण्डा है फिर यह निशानी है आप सबकी। सबके खुशनुमः चेहरे सारे विश्व में खुशियाँ लहरा रहे हैं। खुशियों के वायब्रेशन चारों ओर विश्व में जा रहे हैं। ऐसे ही सदा खुशियों के वायब्रेशन देते रहना और बाप का प्रैक्टिकल प्रत्यक्षता का झण्डा लहराते रहना। अच्छा।

ब्राह्मण अर्थात् धर्म सत्ता और स्वराज्य सत्ता की अधिकारी आत्मा

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों में दो विशेष सत्ता को देख रहे हैं। वो दो सत्तायें हैं एक धर्म सत्ता और दूसरी स्वराज्य सत्ता। ब्राह्मण जीवन की विशेषता—ये दोनों सत्तायें हर एक को प्राप्त होती हैं। धर्म सत्ता अर्थात् सत्यता, पवित्रता के धारणा स्वरूप और स्वराज्य सत्ता अर्थात् अधिकारी बन सर्व कर्मन्द्रियों को अपने अधिकार से ऑर्डर में चलाना। स्वराज्य अधिकारी वा स्वराज्य के सत्ताधारी किसी भी परिस्थिति, प्रकृति और माया के सर्व स्वरूपों में अधीन नहीं बनेंगे, अधिकारी रहेंगे। हर ब्राह्मण आत्मा को बापदादा ने ये दोनों ही सत्तायें प्राप्त कराई है ना? सभी में ये दोनों सत्तायें हैं कि अभी पूरी नहीं आई हैं? अभी की दोनों सत्तायें प्राप्त करने वाले ही भविष्य में धर्म और राज्य सत्ता के अधिकारी बनते हैं। दोनों ही सत्तायें धारण की हैं? अपना चित्र देखा है? डबल विदेशियों का चित्र है या औरों का चित्र है? तो उस चित्र में दोनों सत्ताओं की निशानी देखी है? धर्म सत्ता की निशानी है—लाइट का ताज और राज्य सत्ता की निशानी है रत्न जड़ित ताज। तो ऐसा अपना चित्र देखा है? तो दोनों सत्ता धारण इस समय करते हो। जो आधाकल्प दोनों ही सत्तायें आप सबके, एक के हाथ में हैं। द्वापर से देखो तो धर्म सत्ता अलग हो गई और राज्य सत्ता अलग हो गई। इसीलिये धर्म पिताओं को आना पड़ा। तो धर्म पिता और राजा दोनों अलग-अलग रहे। लेकिन आपके राज्य में अलग होंगे क्या? हर एक के पास दोनों सत्तायें इकट्ठी होती हैं इसलिये अखण्ड निर्विघ्न राज्य चलता है। तो हर एक में ये दोनों ही सत्तायें देख रहे थे कि हर एक ने कितनी अपने में धारण की है? कहाँ तक अधिकारी बने हैं? क्या सदा अधिकारी रहते हैं या कभी अधीन, कभी अधिकारी? अभी-अभी अधिकारी हैं और अभी-अभी अधीन हो जाये तो अच्छा लगेगा? कि सदा अधिकारी अच्छा है? सदा अधिकार चाहिये या थोड़े टाइम के लिये चलेगा? जब स्वयं बाप अधिकार दे रहा है, देने वाला दे रहा है और लेने वाले जो हैं उनको क्या करना चाहिये? लेना सहज है या देना सहज है? लेने में तो कोई मुश्किल नहीं है ना? देने में सोचा जाता है—दें, नहीं दें, थोड़ा दें, ज्यादा दें. . . . लेकिन लेने में तो सब कहेंगे—जितना मिले उतना ले लें। तो लेने में नम्बरवन हो या नम्बर टू हो? इसमें तो नम्बर दो कोई नहीं बनता और जब देना पड़ता है तो. . . . देने में भी नम्बरवन हो कि सोचना पड़ता है, हिम्मत रखनी पड़ती है! वास्तव में देखो कि देते क्या हो? ब्राह्मण जीवन में देना है या लेना है? अगर देने वाली चीज से लेने वाली चीज श्रेष्ठ है तो लेना हुआ या देना हुआ? देना पड़ेगा, देना है—ये सोचते हो तो भारी होते हो। लेना है, तो सदा खुश रहेंगे, हिम्मत में रहेंगे। देने में सोचते हो देना मुश्किल है लेकिन पहले लेते हो फिर देते तो कुछ भी नहीं हो। आपके पास कुछ है जो बाप को देंगे? दी तो अच्छी चीज

जाती है या खराब चीज? तो क्या अच्छा है आपके पास—तन अच्छा है? मन अच्छा है? धन अच्छा है? बेकार है। दवाइयों के धक्के से शरीर चला रहे हो। तो धक्के वाली गाड़ी अच्छी होती है क्या! तो ब्राह्मण जीवन में लेना ही लेना है। और बाप तो मुस्क-राते हैं कि बच्चे बाप से भी चतुर हैं। पहले लेते हैं फिर देने का सोचते हैं। होशियार हो ना! अच्छा है, बच्चे होशियार होते हैं तो बाप को अच्छा लगता है लेकिन चलते-चलते यदि डल हो जाते हैं तो अच्छा नहीं लगता है। कभी-कभी बच्चों की शक्ल (फेस) ऐसे लगती है कि पता नहीं क्या हो गया! जैसे शरीर में चलते-चलते खून कम हो जाता है तो कमजोर हो जाते हैं ना, फेस से भी कमजोरी नज़र आती है। तो यहाँ भी खुशी की, शक्तियों की कमी हो जाती है ना तो चेहरा ऐसा हो जाता है जैसे. . . . , सब जानते हैं, सभी अनुभवी हैं। एक तरफ कहते हो कि खुशियों की खान मिली है और वो भी अविनाशी फिर कम कैसे हो जाती है? तो बाप के पास आपके सारे दिन के मन के मूड और मूड प्रमाण जो फेस बदलता है वो सारे दिन के चित्र वहाँ होते हैं। आप तो चित्रों का म्युज़ियम बनाते हो ना, बाप के पास आपके चित्रों का म्युज़ियम होता है। तो सदा यह याद रखो कि मैं ब्राह्मण आत्मा राज्य सत्ता और धर्म सत्ता की अधिकारी आत्मा हूँ। यह स्मृति का निश्चय है तो नशा है, निश्चय कम तो नशा भी कम। तो चेक करो—ये सत्तायें सदा साथ रहती हैं वा कभी खो जाती हैं, कभी आ जाती हैं?

अच्छा—आज डबल विदेशी मैजारिटी हैं। बापदादा विशेष डबल विदेशियों से पूछते हैं कि सारे दिन में अपने अधिकार के सीट पर सेट रहते हो या अपसेट बहुत जल्दी होते हो? कि अपसेट होना—ये पास्ट की बात है, अभी नहीं होते। पास्ट हो गया ना! अभी तो नहीं होते हो ना! अभी नॉलेजफुल, पॉवरफुल बन गये। ऐसे तो नहीं कि छोटी-सी बात में अपसेट हो जाओ, चेहरा बदल जाये, मूड बदल जाये! ऐसा कभी-कभी होता है? कभी-कभी अपसेट होते हो? अच्छा! जो समझते हैं कि अपसेट होना क्या होता है वह भी भूल गया है, ऐसे शक्तिशाली आत्मायें जो कभी अपसेट नहीं होते हैं वो हाथ उठाओ। सच तो बोल रहे हो उसकी मुबारक। अभी इस सीजन में कुछ तो मधुबन में छोड़कर जायेंगे या कुछ लेकर जायेंगे? मैजारिटी ने मधुबन में शिवरात्रि मनाई है ना! तो जिसका बर्थ डे होता है उसको गिफ्ट देते हो ना। तो बाप को क्या गिफ्ट दी? ये अपसेट होना यही गिफ्ट दे दो—नहीं होंगे। हिम्मत है? अच्छा, हाथ उठाओ और टी.वी. में सबके हाथ निकालो। सोच-समझकर पक्के हाथ उठाना। देखो सभी के हाथ का फोटो निकाला। देखना अभी फोटो निकल गया है। बापदादा को वो चेहरा अच्छा नहीं लगता। बापदादा हर एक बच्चे को सदा खिला हुआ रुहानी गुलाब देखना चाहते हैं। मुरझाया हुआ नहीं, खिला हुआ। जिससे प्यार होता है ना तो उसको जो अच्छा लगता है वही किया जाता है! डबल फारेनर्स तो बाप से बहुत प्यार करते हैं। तो जो बाप को अच्छा लगता है वही आपको अच्छा लगता है ना! अभी किसी का भी ऐसा समाचार नहीं आये कि क्या करें, बात ही ऐसी थी, इसीलिये अपसेट हो गये! अगर बात अपसेट की आती भी है तो आप अपसेट स्थिति में नहीं आओ। जैसे झूला झूलते हो ना, तो वो बहुत नीचे-ऊपर होता है, बहुत नीचे हो, बहुत ऊपर हो और बहुत फास्ट हो तो शरीर को अपसेट करेगा ना। लेकिन आप अपसेट होते हो क्या? क्यों नहीं होते हो? खेल समझते हो तो अपसेट होने के बजाय मनोरंजन समझते हो। कारण क्या हुआ? खेल है। ऐसे अगर कोई अपसेट करने की बातें आये भी, आयेंगी जरूर, जिन्होंने हाथ उठाया उन्हीं के पास और बड़ी अपसेट करने वाली बातें आयेंगी। क्योंकि माया भी मुरली सुन रही है। लेकिन उसको एक खेल समझो। घबराओ नहीं। अच्छा, झुलाती है, झूलने दो। लेकिन मन घबराये नहीं। नॉलेजफुल, पॉवरफुल बन जाओ। उस सीट को छोड़ो नहीं। अगर एक-दो बार भी माया ने देखा कि ये अपसेट होने वाले नहीं हैं तो खुद अपसेट हो जायेगी, आपको नहीं करेगी। बात की लेन देन भले करो, कोई भी बात आती है तो नॉलेजफुल होने के कारण समझते तो हो ना—ये ठीक है, ये नहीं ठीक है, ये होनी चाहिये, ये नहीं होनी चाहिये.... लेकिन बात की लेन-देन बात के रीति से करो, अपसेट रूप से नहीं करो। एक तरफ बोलते जायेंगे, दूसरे तरफ गंगा-जमुना बहाते रहेंगे। चाहे मन में बहाओ, चाहे आंख से बहाओ, दोनों ही ठीक नहीं है। तो गिफ्ट देने के लिये तैयार हो? सोच लिया कि ऐसे ही हाँ कर लिया?

बापदादा बहुत सहज शब्दों में युक्ति बता रहे हैं कि जब भी कोई परिस्थिति या प्रकृति हलचल के रूप में आये तो दो शब्द याद रखो, विधि है—या नॉट (न्यू) करो या डॉट (अडू) लगाओ। नॉट या डॉट। अगर कोई बात रांग है तो यही सोचो नॉट माना नहीं करना है। न सोचना है, न करना है, न बोलना है। और डॉट लगा दो तो नॉट हो ही जायेगा। सोचो नॉट, लगाओ डॉट। फिनिश। डॉट (बिन्दी) लगाने में कितना टाइम लगता है? सेकण्ड से भी कम। लेकिन होता क्या है? समझते हो कि यह नहीं करना है, ठीक नहीं है लेकिन डॉट लगाना नहीं आता है। नॉलेजफुल तो बन गये लेकिन सिर्फ नॉलेजफुल नहीं चाहिये, नॉलेज के साथ पॉवरफुल भी चाहिये। तो पॉवरफुल स्थिति की कमजोरी है इसीलिये डॉट नहीं लगा सकते हो। और जिसे डॉट लगाना आयेगा वो बाप को भी नहीं भूलेगा, बाप भी डॉट (बिन्दी) है। आप भी तो डॉट हो। तो सभी याद आ जायेगा। फुल स्टॉप। क्वेचन मार्क (?), आश्चर्य की मात्रा (!) या कॉमा (,) ये नहीं दो, फुल स्टॉप (.)। फुल स्टॉप की मात्रा इज़ी है ना। और सब तो मुश्किल है। और सबसे मुश्किल है क्वेश्चन मार्क। वो लगाने बहुत जल्दी आता है। सुनाया है ना कि व्हाई (७) शब्द आये तो क्या करो? फ्लाय। ऊपर उड़ जाओ। व्हाई नहीं फ्लाय। फ्लाय करना आता है?

वैसे डबल फारेनर्स में अच्छे-अच्छे रत्न निकले हैं। बापदादा ऐसे रत्नों को देख हर्षित होते हैं। साथ-साथ ऐसे रत्न जो बहुत अमूल्य

हैं, ऐसे अमूल्य रत्नों में अगर बहुत ज़रा-सा भी कहाँ दाग़ दिखाई देता है तो अमूल्य रत्न के आगे वो दाग़ अच्छा नहीं लगता। होता छोटा-सा दाग़ है लेकिन कहेंगे तो दाग़ ना! तो जब अमूल्य रत्न बन गये हो तो बाकी छोटा-सा दाग़ क्यों रखा है? अच्छा लगता है क्या? ये तो नहीं सोचते हो कि चन्द्रमा में भी काला दिखाई देता है इसीलिये अच्छा है! डबल विदेशी सेम्पल बनकर दिखाओ। ज़रा भी कोई कमी नहीं। वैसे दाग़ का कारण क्या होता है? चाहते नहीं हो कि दाग़ लगे लेकिन लग जाता है। क्यों लग जाता है? मूल कारण जानते हो? जानने में तो होशियार हो। जानते भी हो और जब आपस में वर्कशॉप करते हो तो बापदादा वर्कशॉप के भी फोटो देखते हैं, कारण बहुत निकालते हो—ये कारण है, ये कारण है.... और अच्छी-अच्छी बातें वर्कशॉप में निकालते हो लेकिन वर्क में नहीं लाते हो। बॉडी कॉन्सेप्स के बहुत सूक्ष्म रूप बनते जाते हैं। अभी मोटे-मोटे रूप में बॉडी कान्सेस नहीं आता लेकिन सूक्ष्म और रॉयल रूप में आता है। बुद्धि बहुत अच्छी चलाते हो, जब अच्छी-अच्छी बातें सोचते हो तो बापदादा खुश होते हैं लेकिन अच्छी बातें सोचते-करते फिर थोड़ा भी अगर कोई एडीशन-करेक्शन करते हैं तो मैं-पन आ जाता है। जैसे खुशी से अपने विचार देते हो ऐसे दूसरे के विचार भी खुशी से लो। घबराओ नहीं—ये कैसे होगा, ये क्या किया, ये तो हो नहीं सकता, ये तो चल नहीं सकता....। दूसरे की राय, दूसरे की बात को भी इतना ही रिगार्ड दो जितना अपनी बात को रिगार्ड देते हो। विचार देना अलग चीज है, आपको उनके विचार अगर ठीक नहीं भी लगते हैं तो उसके इफेक्ट में आना, अवस्था नीचे-ऊपर हो जाये तो ये सेवा, सेवा नहीं होती। एडजस्ट करना, दूसरों के विचार को भी अपने विचारों के माफिक सोचना-समझना—यह है दूसरे के विचारों को रिगार्ड देना। जैसे समझते हो ना कि मैंने यह सोचा या विचार निकाला, विचार किया, काम किया, तो मेरे विचारों का महत्व होना चाहिये, दूसरों को रिगार्ड देना चाहिये, ऐसे दूसरे का विचार भी अपने विचारों से मिलाना, वो मिलाना नहीं आता है, दूसरे के विचार को दूसरों के विचार समझते हो। क्योंकि अभी आप डबल विदेशी भी सेवा के क्षेत्र में प्लैन बनाने में अच्छी प्रोग्रेस कर रहे हो और आगे भी होनी है। लेकिन एडजस्टमेंट की विशेषता को यूज करो। अगर कोई भी बच्चा आगे बढ़ता है तो बापदादा को खुशी होती है। ऐसे नहीं समझते कि ये क्यों आगे बढ़े! जो बढ़ता है वो बहुत अच्छा। तो डबल विदेशियों के लिये बापदादा को स्नेह तो है ही लेकिन सेवा के प्लैन वा प्रैक्टिकल सेवा के लिये जो करते हो, कर रहे हो, उसके लिये बहुत-बहुत रिगार्ड है।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि अगर आप डबल विदेशी नहीं होते तो बाप का एक टाइटल प्रैक्टिकल में सिद्ध नहीं होता। कौन-सा? विश्व कल्याणकारी। तो अभी देखो विश्व के चारों ओर बाप का मैसेज दे रहे हो ना! इस सीज़न में चारों ओर के आये हैं ना! टोटल कितने देशों के आये हैं? (58) बाकी कितने मुख्य देश रहे हैं? (125) छोटे-छोटे देश तो बहुत होंगे, लेकिन मुख्य देश 125 रहे हुए हैं! तो अभी डबल विदेशियों को तो बहुत काम करना पड़ेगा! भारत में भी करना है तो विदेश में भी करना है, दोनों जगह करना है। बापदादा ने पहले भी कहा है कि सेवा की सम्पूर्ण सफलता की निशानी ये है कि कोई भी तरफ की आत्मा उलहना नहीं दे कि हमारे तरफ तो मैसेज पहुँचा ही नहीं। मैसेज पहुँचाया और सुनते हुए कोई ने अपना भाग्य नहीं बनाया तो आपके प्रति उलहना नहीं हुआ, वह उन आत्मा के प्रति हुआ। लेकिन आपके प्रति कोई उलहना नहीं रह जाये। जब कहते ही हैं कि मास्टर विश्व कल्याणकारी हैं तो विश्व के चारों ओर मैसेज तो पहुँचना चाहिये। भारत में भी पहुँचना चाहिये तो विदेश में भी पहुँचना चाहिए। जिस समय आपका विजय का झण्डा लहराता हो उस समय यदि कोई आत्मा आकर यह उलहना दे तो अच्छा लगेगा? एक तरफ आप झण्डा लहरा रहे हैं और दूसरे तरफ लोग उलहना दे रहे हैं तो अच्छा लगेगा? नहीं लगेगा ना! डबल विदेशियों की हिम्मत अच्छी है, बाप से प्यार तो है ही लेकिन सेवा से भी प्यार अच्छा है। दोनों से प्यार का सर्टीफिकेट अच्छा है। अभी कौन-सा सर्टीफिकेट लेना है? जितने सेवाधारी, उतने ही शक्तिधारी। तो शक्तिस्वरूप बन गये—यह सर्टीफिकेट लेना है। बापदादा देखते हैं—मैजारिटी बाप से और सेवा से प्यार में पास हैं।

अभी जो इस सीज़न में पहली बार आये हैं वो हाथ उठाओ। टोटल कितने हैं? 600 पहली बार आये हैं। आप बहुत लक्की हो। क्योंकि आपको सेवा के लिये मार्जिन बहुत अच्छी मिली है। अभी सवा सौ स्थान रहे हुए हैं और आप 600 हो तो 2-2, 3-3 मिलकर भी करो तो पूरा हो जायेगा। आपके लिये सेवा का निमन्त्रण पहले से ही तैयार है। बहुत अच्छी प्रोग्रेस की है। 600 इस सीज़न में नये आ गये तो सेवा की है तब तो आये हैं ना! तो कितनी मुबारक है! पद्मापद्म मुबारक।

(बापदादा ने ड्रिल कराई)

एक सेकण्ड में डॉट लगा सकते हो? अभी-अभी कर्म में और अभी-अभी कर्म से न्यारे, कर्म के सम्बन्ध से न्यारे हो सकते हो? यह एक्सरसाइज़ आती है? किसी भी कर्म में बहुत बिज़ी हो, मन-बुद्धि कर्म के सम्बन्ध में लगी हुई है, बन्धन में नहीं, सम्बन्ध में, लेकिन डायरेक्शन मिले—फुल स्टॉप। तो फुल स्टॉप लगा सकते हो कि कर्म के संकल्प चलते रहेंगे? यह करना है, यह नहीं करना है, यह ऐसे है, यह वैसे है....। तो यह प्रैक्टिस एक सेकण्ड के लिये भी करो लेकिन अभ्यास करते जाओ, क्योंकि अन्तिम सर्टीफिकेट एक सेकण्ड के फुल स्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समा ले, सार स्वरूप बन जाये। तो यह प्रैक्टिस जब भी चांस मिले, कर सकते हो तो करते रहो। ऐसे नहीं, योग में बैठेंगे तो फुल स्टॉप लगेगा। हलचल में फुल स्टॉप। इतनी पॉवरफुल ब्रेक है? कि ब्रेक लगायेंगे यहाँ और ठहरेगी वहाँ! और समय पर फुल स्टॉप लगे, समय बीत जाने के बाद फुल स्टॉप लगाया

तो उससे फायदा नहीं है। सोचा और हुआ। सोचते ही नहीं रहो कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ, मेरे को फुल स्टॉप लगाना है और कुछ नहीं सोचना है, यह सोचते भी टाइम लग जायेगा। ये सेकण्ड का फुल स्टॉप नहीं हुआ। ये अभ्यास स्वयं ही करो। कोई को कराने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि नये चाहे पुराने, सभी यह विधि तो जानते हैं ना! तो अभ्यास बहुत काल का चाहिये। उस समय समझो-नहीं, मैं फुल स्टॉप लगा दूँगी! नहीं लगेगा, यह पहले से ही समझना। उस समय, समय अनुसार कर लेगे! नहीं, होगा ही नहीं। बहुत काल का अभ्यास काम में आयेगा। क्योंकि कनेक्शन है। यहाँ बहुतकाल का अभ्यास बहुतकाल का राज्य-भाग्य प्राप्त करायेगा। अगर अल्पकाल का अभ्यास है तो प्राप्ति भी अल्पकाल की होगी। तो ये अभ्यास सारे दिन में जब भी चांस मिले करते रहो। एक सेकण्ड में कुछ बिगड़ता नहीं है। फिर काम करना शुरू कर दो। लेकिन हलचल में फुल स्टॉप लगता है या नहीं-ये चेक करो। कर्म के सम्बन्ध में आना और कर्म के बन्धन में आना इसमें भी फर्क है। अगर कर्म के बन्धन में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुल स्टॉप नहीं लगाने देगा। और न्यारे-प्यारे होकर किसी भी कर्म के सम्बन्ध में हो तो सेकण्ड में फुल स्टॉप लगेगा। क्योंकि बन्धन नहीं है। बन्धन भी खींचता है और सम्बन्ध भी खींचता है लेकिन न्यारे होकर सम्बन्ध में आना-यह अण्डर-लाइन करना। इसी अभ्यास वाले ही पास विद् ऑनर होंगे। ये लास्ट कर्मातीत अवस्था है। बिल्कुल न्यारे होकर, अधिकारी होकर कर्म में आयें, बन्धन के वश नहीं।

तो चेक करो कर्म करते-करते कर्म के बन्धन में तो नहीं आ जाते? बहुत न्यारा और प्यारा चाहिये। समझा क्या अभ्यास चाहिये? मुश्किल तो नहीं लगता है ना? कि थोड़ा-थोड़ा मुश्किल लगता है? कर्मन्द्रियों के मालिक हो ना? राजयोगी अपने को कहलाते हो, किसके राजा हो? अमेरिका के, आफ्रिका के! कर्मन्द्रियों के राजा हो ना! और राजा बन्धन में आ गया तो राजा रहा? सभी का टाइटल तो बहुत अच्छा है। सब राजयोगी हैं। तो राजयोगी हो या प्रजायोगी हो? कभी प्रजायोगी, कभी राजयोगी? तो डबल विदेशी सभी पास विद् ऑनर होंगे? बापदादा को तो बहुत खुशी होगी-यदि सब विदेशी पास विद् ऑनर हो जायें। थोड़ा-सा मुश्किल है कि सहज है? अच्छा। मुश्किल शब्द आपके डिक्शनरी से निकल गया है। ये ब्राह्मण जीवन भी एक डिक्शनरी है। तो ब्राह्मण जीवन के डिक्शनरी में मुश्किल शब्द है ही नहीं कि कभी कभी उड़कर आ जाता है?

कितने वरदान मिलते हैं! अभी तक लिस्ट भी निकालो तो कितने वरदान मिले हैं! बहुत मिले हैं ना! रोज़ वरदान मिलता है। भक्ति मार्ग में भक्त को यदि एक वरदान भी मिल जाता है तो वो क्या से क्या बन जाता है! और आप कितने लक्की हो जो भगवान रोज़ वरदान देते हैं। पालना ही वरदानों से हो रही है। तो वरदान याद रहता है? या सुनने के टाइम याद रहता है? एक है याद रहना और दूसरा है वरदान को काम में लगाना। वरदान ऐसी चीज़ है जो कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन वरदान की शक्ति परिस्थिति को आग से पानी बना देती है। इतना शीतल बना देती है। सिर्फ यून करने की विधि आनी चाहिये। और दूसरी बात, समय पर काम में लगाओ। आधा समय बीत जाये, पीछे होश में आये! नहीं। तो वरदान को यून करना आता है? करते हो या सुन-सुनकर खुश होते हो? डायरी में तो बहुत वरदान भर गये हैं, बुक भी बन गया है। अलमारी में बुक तो रखा ही है लेकिन समय पर कार्य में लगाओ। और जितना कार्य में लगाते जायेंगे उतना वरदान और बढ़ता जायेगा। वरदान का विशाल रूप और अनुभव में आता जायेगा। अच्छा!

पहले सभी को अलग-अलग डायरेक्शन दिये हैं। इस सीज़न के बाद विशेष सभी को भिन्न-भिन्न शक्तियाँ अपने में 100% भरनी हैं। जो भी शक्ति अपना सकते हो उस एक शक्ति को लक्ष्य बनाओ कि इस वर्ष हमें विशेष इस शक्ति को स्वरूप में लाना ही है। अमेरिका कौन-सी शक्ति अपनायेगा? शक्तियों का तो पता है ना? कौन-सी शक्ति पसन्द है? (श्वन) स्नेह की शक्ति सामने रखेंगे, लक्ष्य रखेंगे! अच्छा, स्नेह की शक्ति से अमेरिका वाले क्या करेंगे? स्नेह ऐसी शक्ति है जो अज्ञान में गाया हुआ है कि स्नेह पत्थर को भी पानी कर देता है। तो आप क्या करेंगे? माया कितने भी 100 हिमालय जितना पहाड़ बनकर आये लेकिन उस पहाड़ को भी पानी बना दे। बना सकते हो कि माया बड़ी पॉवरफुल है? अमेरिका वाले बोलो-आप पॉवरफुल हो या माया? तो एक माया के पहाड़ को पानी बना देना और दूसरा कोई कुछ भी दे लेकिन आप रूहानी स्नेह देना। बाँडी का स्नेह नहीं देना, रूहानी स्नेह देना। कोई आपकी ग्लानि करे लेकिन आप स्नेह देना। और स्नेह की शक्ति एक चुम्बक है, जैसे चुम्बक दूर को नज़दीक करता है ना! तो स्नेह की शक्ति से, जो बाप से दूर हैं उन्हों को समीप लाना और आपस में स्नेह की लेन-देन करना। ऐसा कोई बोल नहीं निकले जो स्नेह का नहीं है। कोई कैसा भी हो लेकिन आपके बोल में स्नेह की शक्ति हो। अच्छा!

अफ्रिका वाले कौन-सी शक्ति अपनायेंगे? (ईम) इन्हों को शान्ति की शक्ति पसन्द है क्योंकि अफ्रिका में घमसान बहुत होता है ना तो शान्ति की शक्ति पसन्द है। तो शान्ति की शक्ति की निशानी है-जहाँ शान्ति होगी, वहाँ सदा सन्तुष्ट होंगे। क्योंकि अशान्त करती है असन्तुष्टता। जहाँ सन्तुष्टता होगी वहाँ शान्ति होगी और जहाँ शान्ति होगी वहाँ सन्तुष्टता होगी। और शान्ति की शक्ति वाला सदा ही खुश मिज़ाज़ होगा। जितनी शान्ति उतनी खुशी उसके चेहरे से, चलन से अनुभव होगी। तो शान्ति की शक्ति की निशानी दिखाना। सदैव सबका चेहरा हर्षित हो। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन खुशी को नहीं छोड़े। अपनी प्रापर्टी है ना। तो प्रापर्टी को कोई छोड़ता है क्या? तो शान्ति की शक्ति की निशानी है-सदा खुश रहना और खुशी बाँटना। शान्ति की शक्ति से सहज

मंसा सेवा कर सकते हैं। जितना शान्त रहते हैं उतनी मंसा सेवा बड़ी शक्तिशाली होगी। तो अफ्रिका वाले ऐसे शान्ति के शक्ति का स्वरूप बन इस वर्ष का इनाम लेना। सभी इनाम लेंगे ना! अच्छा! रिज़ल्ट आती रहेगी। हरेक सेन्टर के हर स्टूडेंट की रिज़ल्ट आती रहेगी। फिर जो नम्बर आगे लेगा, तीन नम्बर को इनाम देंगे। बाकी सेकण्ड नम्बर देंगे। तो शान्त रहना है, हलचल में नहीं आना। कुछ भी हो जाये, शान्त। तो आपकी शान्ति हलचल वालों को भी शान्त कर सकती है। ऐसे पॉवरफुल वायब्रेशन फैलाना। यह सेवा वाणी से नहीं हो सकती लेकिन मंसा से हो सकती है। अच्छा!

ऑस्ट्रेलिया वाले कौन-सी शक्ति अपनायेंगे? (सहयोग) ये तो बहुत अच्छी बात सुनाई। ऑस्ट्रेलिया को सेवा में सहयोगी बनना ही चाहिये। क्योंकि सहयोग से असम्भव बात भी सम्भव हो जाती है। कठिन बात सहज हो जाती है। और सहयोग की शक्ति से एक-दो में हिम्मत, उमंग, उल्लास बहुत बढ़ा सकते हो। सहयोग की शक्ति ऑस्ट्रेलिया के कोई भी सेन्टर की ब्राह्मण आत्मा को कम-जोर करने नहीं देगी। सहयोग की शक्ति एक सेफ्टी का किला है। किला कैसे बनता है? ईंटों के सहयोग से किला बनता है, सेफ्टी का साधन बनता है। तो सहयोग की शक्ति से मजबूत किला भी बनायेंगे और असम्भव बात सम्भव करके दिखायेंगे। जो सहयोगी होते हैं, सहयोग देते हैं उसको सहयोग मिलता भी बहुत है। इच्छा न होते हुए भी चारों ओर से सहयोग देने वाले को सहयोग मिलता है। करके देखना। अच्छा।

एशिया वाले क्या करेंगे? कौन-सी शक्ति अपनायेंगे? (एडजस्टमेन्ट) बहुत बढ़िया बात बताई। एडजस्टमेन्ट की शक्ति को अपनाया तो बहुत सहज सम्पूर्ण बन जायेंगे। क्योंकि माया का दरवाजा ही है—चाहे अपने में एडजस्ट नहीं होते, चाहे सेवा में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में। एडजस्ट होने की कला को लक्ष्य बना दिया तो सबसे पहला नम्बर सम्पूर्ण एशिया वाले बनेंगे। यह शक्ति इतनी पावरफुल है। क्योंकि जिसमें एडजस्ट होने की शक्ति होगी उसमें सहनशक्ति, अन्तर्मुखता सब उसके बाल बच्चे बन जायेंगे। तो एशिया वालों ने मदर को चुन लिया है। सब आ जायेंगे। लेकिन इस लक्ष्य को प्रैक्टिकल में लाने के लिये एक बात सदा याद रखना कि पहले अपनी एडजस्टमेन्ट देखना, दूसरे की नहीं। मुझे पहले एडजस्ट होना है। सेवा में पहले आप होना चाहिये, दूसरों को साथी बनाओ, सहयोगी बनाओ, आगे बढ़ाओ, हिम्मत बढ़ाओ। लेकिन एडजस्ट पहले मेरे को होना है, दूसरे आप ही हो जायेंगे। अगर दूसरे को देखा तो स्वयं भी नहीं होंगे, दूसरा भी नहीं होगा। जो ओटे सो अर्जुन, मैं अर्जुन हूँ। दूसरा अर्जुन बने तो मैं भी अर्जुन बनूँ! नहीं, जो ओटे सो अर्जुन। वैसे भी एशिया में भिन्न-भिन्न वैरायटी होने के कारण सेवा में भी प्लैन एडजस्ट करने पड़ते हैं। वैरायटी धर्म वाले भी एशिया में आते हैं। चाइना, जापान सब आता है ना। तो बौद्ध धर्म वाले, चाइनीज़ सबको एडजस्ट करना पड़ता है ना। उन्हीं की मत न्यारी। क्रिश्चियन्स फिर भी उन्हीं से नज़दीक हैं, गॉड फादर को तो मानते हैं। तो बहुत अच्छा लक्ष्य रखा है इससे स्वयं में भी एडजस्ट हो जायेंगे, सेवा में भी एडजस्ट हो जायेंगे और दूसरों से भी हो जायेंगे। तो इनएडवांस मुबारक हो। अच्छा।

यूरोप क्या करेगा? यूरोप में यू.के. भी आ गया। यूरोप कौन-सी शक्ति को अपनायेगा? (युनिटी) तो यूरोप सभी खण्डों को मिलाकर एक खण्ड बना देगा, ऐसे करेगा! क्योंकि भविष्य में तो ये अलग-अलग खण्ड होने ही नहीं हैं। एक ही होगा। तो यूरोप वाले युनिटी से भिन्नता को खत्म करके विश्व में भी एक धर्म, एक राज्य, एक खण्ड बनाने का इतना बड़ा कार्य करेंगे!

वैसे तो यूरोप में युनिटी का स्तम्भ तो है ही। पहले से ही स्तम्भ है। कौन है स्तम्भ? (दादी) आप नहीं। (दादी तो सबकी है) लेकिन फाउण्डेशन यू.के. में डाला है। जो स्तम्भ होता है वो चारों ओर के लिये होता है, उसी स्थान के लिये नहीं होता। तो चारों तरफ चाहे अमेरिका है, चाहे अफ्रिका है लेकिन एक है—यही विशेषता है। ऐसे नहीं कि अफ्रिका को क्या करना, वो जाने, नहीं। इसको कहा जाता है युनिटी का स्तम्भ। तो एक दादी नहीं, सारा यूरोप युनिटी का स्तम्भ है। ये तो एक-एक एकजैम्पुल हैं। लेकिन एकजैम्पुल को देखकर सिर्फ खुश होना होता है या बनना होता है? दादी को देखकर बहुत अच्छी, बहुत अच्छी कहकर खुश होते हो या स्वयं भी बनते हो? क्या करते हो? लण्डन की टीचर्स बताओ। सिर्फ देखकर खुश होते हो या बनते भी हो। युनिटी का अर्थ ही है बेहद की वृत्ति, बेहद की दृष्टि, तभी युनिटी होती है। अगर बेहद की दृष्टि और वृत्ति नहीं तो युनिटी नहीं हो सकती। तो यू.के. और यूरोप बेहद की दृष्टि वाले हैं ना! बहुत आये हैं। इतने सब बेहद की वृत्ति, दृष्टि वाले बन जायेंगे तो अपना राज्य आया कि आया। क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल बनेगा तो प्रैक्टिकल में भी होगा। यूरोप वालों ने युनिटी को पसन्द किया है, बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। तो यह जिम्मेदारी उठाने के लिये तैयार हो? है? हाँ या ना बोलो। हाँ जी ठीक बोला। बाप इंग्लिश बोले तो भी आप हाँ जी बोलो। हाँ जी अच्छा लगता है। बहुत अच्छी बात उठाई। फिर तो फरिन में पहले स्वर्ग आयेगा या भारत में आयेगा? कहाँ आयेगा? अच्छी हिम्मत रखी है। हिम्मत बच्चों की और मदद बाप की है ही है। ये वरदान है। समझा? करते भी हैं, लक्षण हैं भी, लक्ष्य है भी, सिर्फ उसको अण्डरलाइन करना।

अच्छा, रशिया वाले हाथ उठाओ। देखो रशिया वालों को देखकर सब खुश होते हैं क्यों खुश होते हैं? क्योंकि बहुत प्यासे थे। प्यासे को अगर अमृत मिल जाये तो कितने खुश हो जाते हैं। तो उनकी खुशी आपको भी खुश करती है। जब भी रशिया का नाम आता है तो तालियाँ जरूर बजाते हैं। तो रशिया वाले इतने सिकीलधे हो—समझा! सबका प्यार है कि ये पूरा ही एक था अब अनेकता में आ गया लेकिन अब फिर से एक राज्य में, सतयुगी राज्य के अधिकारी बनेंगे।

तो रशिया वाले कौन-सा लक्ष्य बनायेंगे, कौन सी शक्ति लायेंगे? (सहनशक्ति) आपकी टीचर कह रही है सहनशक्ति। पसन्द है? वैसे तो सहनशक्ति में ये पास हैं। सहन करना तो इन्हों को बहुत आता है। कोई भी परिस्थिति आती है तो सहनशक्ति में पास हो जाते हैं। फिर भी अण्डरलाइन लगाना। सहनशक्ति के संस्कार हैं। अभी तक बन्धन में रहने में सहनशक्ति का पार्ट अच्छा बजाया है। अभी अपने को श्रेष्ठ बनाने के बीच में जो भी कोई विघ्न आये उसमें सहनशीलता की शक्ति से नम्बर आगे लेना। यह शक्ति अपना आपको मुश्किल नहीं होगा, सहज होगा। इसीलिये नम्बर ले लेना। कौन-सा नम्बर लेंगे? पहला नम्बर लेंगे या पांचवा? सभी को खुशी होगी पहला नम्बर लेना। आप नम्बरवन लेना तो जैसे अभी तालियाँ बजाई ना ऐसे बहुत बहुत तालियाँ बजेगी, बाप-दादा भी तालियाँ बजायेंगे। अच्छा है, लास्ट को फास्ट जाना ही है। जो छोटा बच्चा होता है ना वो सबका लाडला होता है, प्यारा होता है। और क्वालिटी भी अच्छी निकली है। एकजैम्मुल बनने वाले हैं। मैजारिटी खुश रहते हैं, कभी-कभी कोई टेन्शन में आते होंगे बाकी मैजारिटी खुश रहते हैं। रशिया में ब्राह्मणों के पास टेन्शन है? कभी टेन्शन में आते हो? कभी-कभी आते हो? अभी नहीं आना। अभी टेन्शन फ्री। गीत भी प्यार से गाते हैं। सब चीजों का उमंग है। स्वतन्त्र हो गये हैं ना। तो उमंग-उत्साह में नाचते रहते हैं। अच्छा!

अभी जब थोड़ी-सी प्रत्यक्षता होगी ना कि एक ही बाप है, वही अल्लाह है, वही ईश्वर है। थोड़ा-सा प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा तो कैसे भी देश हो, कैसे भी धर्म हो, चाहे मुस्लिम देश हो फिर भी अल्लाह को तो मानते हैं ना। तो वो दिन भी आयेगा जो सब कहेंगे कि एक हैं, एक हैं, यही हैं, यही हैं, इस झण्डे के नीचे सभी आयेंगे। अभी थोड़ी-सी प्रत्यक्षता होने दो। अभी कहते हैं ये भी हैं। यही हैं, नहीं कहते हैं। ये भी हैं। अभी 'भी' निकल जाये, 'ये ही हैं'। इसको कहा जाता है प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना। जब ये झण्डा लहरायेगा तो सब एक झण्डे के नीचे आयेंगे। सब एक झण्डे के नीचे एक ही शब्द बोलेंगे—ओम् शान्ति। (बाबा बोलेंगे) बाबा तो बोलेंगे ही। अच्छा इनको 'मेरा बाबा' शब्द अच्छा लगता है।

(हॉस्टल की कुमारियों से) अच्छा है, हॉस्टल की रिजल्ट तब कहेंगे जब जितने हॉस्टल में हैं इतने टीचर्स बनकर निकले। तब कहेंगे हॉस्टल नम्बरवन है। ऐसे नहीं, दो तो निकली हैं, चार चली गई। जितने हॉस्टल में आये, कुमारी बनकर आये और टीचर बनकर निकले तब कहेंगे हॉस्टल की रिजल्ट सबसे आगे। तो इतनी हिम्मत है कि माया आयेगी तो कहेंगे क्या करें! बापदादा तो खुश होते हैं क्योंकि देखो स्थापना का फाउण्डेशन ही ओम् निवास में छोटी-छोटी कुमारियों से शुरू हुआ। तो बापदादा को भी पहले स्थापना में क्या पसन्द आया? छोटे बच्चे ही पसन्द आये ना। आज वो छोटे ही विश्व कल्याणकारी बन गये। तो आप भी ऐसे ही बनना। ये अच्छा है, सेफ तो रहे हुए हैं ना। माया के प्रभाव से बचे हुए हैं।

अच्छा, पोलेण्ड वाले क्या करेंगे? पोलेण्ड वालों ने भी हिम्मत अच्छी रखी है। सरकमस्टांश देश के कैसे भी हैं लेकिन हिम्मत रख ब्राह्मण परिवार को आगे बढ़ाने में सफल है और होते रहेंगे। पोलेण्ड की टीचर कहाँ है? (ट्रांसलेशन कर रही है) अच्छी है। जितनी भी टीचर हैं लेकिन यह फाउण्डेशन है। चाहे जितनी भी हलचल हुई खुद अचल रही तो सेवा भी हुई। सेवा की मुबारक है। हिम्मत जो भी रखते हैं उनको मदद जरूर मिलती है। हिम्मत में हिलना नहीं चाहिये। पता नहीं क्या होगा! पता नहीं—आया, और गया, खत्म! अच्छा होना है, और अच्छे ते अच्छा होना है। अच्छा-अच्छा सोचने से अच्छा हो ही जाता है। क्योंकि आपकी अच्छी वृत्ति वायुमण्डल को परिवर्तन कर देगी। अगर क्यों-क्या में जायेंगे—ऐसा है, ऐसा है तो कभी परिवर्तन नहीं होगा। अच्छा-अच्छा कहते जाओ तो अच्छे बन जायेंगे। अपनी मंसा वृत्ति सदा अच्छे की, पावरफुल बनाओ तो खराब भी अच्छा हो जायेगा। बाप ने आप सब बच्चों में खराब है, खराब है—ये वृत्ति रखी? जैसे भी हो, जो भी हो बाप ने अच्छा समझा ना! तो सभी अच्छे बन गये ना! कोई खराब है? सब अच्छे हैं। तो अच्छा, अच्छा, अच्छा.... कोई बात भी करता है तो कहो अच्छा जी, बहुत अच्छा, तो अच्छा हो जायेगा। नहीं, तुम क्यों बोलते हो, क्या बोलते हो.... लड़ाई नहीं करो। यह बोलने में भी अच्छा नहीं लगा और अच्छा जी, यह कहना अच्छा लगा ना। तो अच्छा जी बोलते रहो, अच्छा बनाते चलो। आपको ही तो अच्छा बनना है ना और कोई आने हैं क्या? इसमें सभी पहले मैं, अभिमान वाली मैं नहीं, शुद्ध मैं। अच्छा!

चारों ओर के धर्म सत्ता के अधिकारी आत्मायें, सदा स्वराज्य सत्ता के अधिकारी आत्मायें, सदा डबल सत्ताधारी डबल ताजधारी श्रेष्ठ आत्मायें, सदा सर्व शक्तियों द्वारा शक्ति स्वरूप का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाने वाले शक्तिशाली आत्मायें, सदा लक्ष्य को लक्षण के रूप में दिखाने वाले, अनुभव कराने वाले शक्तिशाली महावीर, अचल-अडोल आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादियों से—(दादी जी एवं दादी जानकी ने बाबा को भाकी पहनी) सभी को मिल गया ना! सन्तुष्ट हो गये ना! बहुत सयाने हो, समझदार हो। सभी अपने को स्टेज पर देख रहे हो कि नीचे देख रहे हो? कहाँ हो? स्टेज पर हो ना। यह सारा हाल ही स्टेज है। सब समीप हो, साथ हो। स्टेज पर आना माना साथ में आना, पास में आना। आप तो सदा ही पास हो। अलग हो ही नहीं सकते। कोई अलग करे तो अलग होंगे? कि उसको अलग कर देंगे? उसको भगा देंगे? लेकिन स्वयं सदा साथ रहेंगे। साथ हैं, साथ रहेंगे और

साथ चलेंगे। (साथ में चक्कर लगायेंगे) चक्कर तो लगाते ही हैं साथ में। चक्कर लगाने का सोच रही है। 84 का चक्कर तो पूरा हो गया। अभी तो घर चलना है। घर जायेंगे या सीधे ही राज्य में जायेंगे? घर जाना है कि राज्य करना है? घर जाना है ना! तो साथ हैं ही। बापदादा को अकेलापन अच्छा नहीं लगता। आप लोगों को कभी-कभी अकेलापन अच्छा लगता है! अकेले नहीं बैठते, सेवा करते रहते हैं। (दादी जी गुजरात तथा गुल्जारा दादी बाम्बे चक्कर पर जा रही हैं) चक्कर लगाना है तो चक्कर पर तो जायेंगे। बिना चक्कर के चक्रवर्ती राजा नहीं बनेंगे। आप लोगों को भी चक्कर लगाना अच्छा लगता है ना। जब कोई निमन्त्रण मिलता है तो कितनी खुशी होती है। अच्छा है, चक्कर लगाना अर्थात् अपने अनुभवी मूर्त में और मार्क्स बढ़ाना। जमा होता जाता है। लेकिन ऐसे नहीं सोचना कि हमको चक्कर का निमन्त्रण नहीं मिला तो शायद मैं अच्छी नहीं हूँ। ये नहीं सोचना। कोई मुख से भाषण करते, कोई मन से करते। सिर्फ भाषण करना सेवा नहीं है। ये भी एक विधि है। लेकिन चाहे मन्सा करो, चाहे वाचा करो, चाहे कर्मणा करो, सम्बन्ध-सम्पर्क से करो, चारों ही के मार्क्स 100 हैं। 100 सभी की मार्क्स है। कर्मणा वाले को 50 मिलेगा, भाषण वाले को 100 मिलेगा, ऐसा नहीं है। कोई भी सेवा करो लेकिन सेवाधारी बन सेवा करो, निस्वार्थ सेवा करो तो सेवा का मेवा मिला हुआ ही है। ऐसे समझते हो ना? या बड़ी-बड़ी कान्फ्रेंस में भाषण करना ही सेवा है? वो तो एक-दो ही जायेंगे ना, इतने लाखों के लाख चले जाये तो भाषण कैसे होगा। सुनाने वाले 3 लाख और सुनने वाले 100 वो कैसे होगा! तो ऐसे कभी भी नहीं समझना कि मेरे को सेवा का चांस नहीं मिला तो मैं सेवा के योग्य नहीं हूँ। कभी भी दिलशिकस्त नहीं होना। बापदादा के पास सब रिकॉर्ड होते हैं। चांस मिला, नहीं मिला, लेकिन मंसा का चांस ले लिया तो वो चक्कर लगाकर भाषण करके आई, आपने मंसा सेवा किया तो मार्क्स आपको वैसे ही मिलेंगे। इसीलिये कभी यह फिक्र नहीं करना कि मेरा तो भाग्य ही ऐसा है। नहीं, बहुत बड़ा भाग्य है। सन्तुष्ट रहना, चाहे कर्मणा हो, चाहे वाचा हो, चाहे मंसा हो, सन्तुष्ट रहना इसमें मार्क्स मिलनी है। भाषण में गये असन्तुष्ट हो गये, खिटखिट हो गई, खत्म, मार्क्स एक भी नहीं। आप घर बैठे बहुत अच्छी स्थिति में रहे तो आपको 100 मार्क्स मिलेगी। तो हिसाब पूरा है। हिसाब में ऊपर-नीचे नहीं होगा, आपको फुल मार्क्स मिलेंगी। कोई भी सेवा करो लेकिन सच्चे दिल से। मैं और मेरापन नहीं। सेवा भाव। मै-पन का भाव नहीं। अगर सेवाभाव है तो आपको फल पहले मिलेगा। चाहे सदा रोटी पकाते हो, कोई हर्जा नहीं। तो भी 100 मार्क्स मिलेगी। सच्ची दिल से करते हैं ना, तो रोटी बनाते हुए आप जो बल भरते हैं वही भाषण वालों को काम में आता है। समझा! इसीलिये दिलशिकस्त नहीं होना, मेरा नाम कभी भी कोई कान्फ्रेंस में नहीं आया, मेरा नाम ही कोई नहीं लेता, शायद मैं पीछे हूँ.... नहीं, सन्तुष्ट रहो, सन्तुष्टता ही सफलता का साधन है। कहाँ भी रहो, सन्तुष्ट रहो। ठीक है ना कि कभी-कभी सोचते हो कि महारथी तो यही बनेंगे। हम तो महारथी के लिस्ट में आ नहीं सकते। नहीं, पहले महारथी नम्बरवन आप हो। बाप की लिस्ट में महारथी आप हो। समझा! तो कभी ऐसा-ऐसा फेस नहीं करना। बापदादा बहुत फेस देखते हैं, कभी ऐसा, कभी ऐसा! नहीं, सदा मुस्कराते रहो। अच्छा, सभी ठीक है?

(मुन्नी बहन ने बापदादा के सामने फल की थाली सजाकर रखी) आपके मूर्ति की भी विधि पूर्वक पूजा होगी। अच्छा है विधि पूर्वक बनाना, रखना—यह भी एक विशेषता है। यह भी आना चाहिये। ऐसे नहीं, जैसा आया वैसे भोग लगा दिया। आधा कच्चा, आधा पक्का लगा दिया! कभी बनाने की सुस्ती हुई तो एक फल ही रख दिया। (डबल विदेशियों को देखते हुए) यह थक जाते हैं ना, डबल काम करते हैं, लौकिक काम भी करते हैं, सेन्टर भी सम्भालते हैं, अपना पुरुषार्थ भी करते हैं इसलिये थक जाते हैं। ऐसे चलाना नहीं। एक चीज ही प्यार से बनाओ। तीन नहीं बनाओ लेकिन एक भी प्यार से बनाओ। ऐसे नहीं कि ब्रेड तो बना हुआ है ब्रेड का ही भोग लगा दो—चलाना नहीं। जितनी विधि उतनी सिद्धि। अगर विधिपूर्वक करते हैं तो सिद्धि भी मिलती है। ब्राह्मण का अर्थ ही है—हर कार्य में एक्युरेट, शुद्धि पूर्वक। शुद्धि भी हो, विधि भी हो—दोनों चाहिये। अच्छा। ओम् शान्ति।

सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्मा की निशानी – सन्तुष्टता और प्रसन्नता

आज सर्व प्राप्तियाँ कराने वाले बापदादा अपने चारों ओर के प्राप्ति सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। सर्व प्राप्तियों के दाता सम्पन्न और सम्पूर्ण बाप के बच्चे हैं तो हर एक बच्चे को बाप ने सर्व प्राप्तियों का वर्सा दिया है। ऐसे नहीं—किसको 10 दिया हो, किसको 20 दिया हो। सभी बच्चों को सर्व प्राप्तियों का अधिकार दिया है। सभी बच्चे फुल वर्से के अधिकारी हैं। तो बापदादा देख रहे हैं कि हर एक अधिकारी बच्चों ने अपने में प्राप्तियों का अधिकार कितना प्राप्त किया है? बाप ने सर्व दिया है। बाप को सर्व शक्तिमान् वा सम्पन्न सागर कहते हैं। लेकिन बच्चों ने उन प्राप्तियों को कहाँ तक अपना बनाया है? बाप का दिया हुआ वर्सा जब अपना बना लेते हैं तो जितना अपना बनाते हैं उतना नशा और खुशी रहती है—मेरा खज़ाना है। दिया बाप ने लेकिन अपने में धारण कर अपना बना लिया। तो क्या देखा? कि अपना बनाने में नम्बरवार हो गये हैं। बाप ने नम्बर नहीं बनाये हैं लेकिन अपने-अपने धारणा की यथा-शक्ति ने नम्बरवार बना दिया है। सम्पूर्ण अधिकार वा सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा जो सदा अमृतवेले से रात तक प्राप्तियों के नशे वा अनुभव में रहती है, उनकी निशानी क्या होगी? प्राप्तियों की निशानी है सन्तुष्टता। वो सदा सन्तुष्टमणि बन दूसरों को भी

सन्तुष्टता की झलक का वायब्रेशन फैलाते रहते हैं। उनका चेहरा सदा प्रसन्नचित्त दिखाई देगा। प्रसन्नचित्त अर्थात् सर्व प्रश्नचित्त से न्यारा। कोई प्रश्न नहीं होगा, प्रसन्न होगा। क्यों, क्या, कैसे—यह सब समाप्त। तो ऐसे प्रसन्नचित्त बने हो? कि अभी भी कभी-कभी कोई प्रश्न उठता है कि ये क्या है, ये क्यों है, ये कैसे होगा, कब होगा? ये प्रश्न चाहे मन में, चाहे दूसरों से उठता है? प्रश्नचित्त हो या प्रसन्नचित्त हो? या कभी प्रश्नचित्त, कभी प्रसन्नचित्त? क्या है? वैसे गायन है—अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में। ये किसका, किन ब्राह्मणों का गायन है? आपका है या दूसरे आने वाले हैं? आप ही हो! तो जब कोई अप्राप्ति होती है ना, अप्राप्ति असन्तुष्टता का कारण है। अपना अनुभव देखो—कभी भी मन असन्तुष्ट होता है तो कारण क्या होता है? कोई न कोई अप्राप्ति का अनुभव करते हो तब असन्तुष्टता होती है। गायन तो है अप्राप्त नहीं कोई वस्तु। ये अब का गायन है या विनाश के समय का? विनाश के समय सम्पन्न हो जायेंगे कि अभी होना है? जो समझते हैं कि हम सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं, कभी भी किसी भी बात में, चाहे अपने सम्बन्ध में, चाहे दूसरों के सम्बन्ध में भी प्रश्न नहीं उठता, सदा सन्तुष्ट रहते हैं—ऐसी सन्तुष्ट आत्मायें कितनी होंगी? बहुत हैं! अच्छा, जो समझते हैं सदा प्रसन्न रहते हैं, चाहे माया कितना भी हिलाये, लेकिन हम नहीं हिलते, माया को हिला देते हैं, माया नमस्कार करती है, हम अंगद हैं, माया हार जाती लेकिन हम विजयी हैं, जो ऐसे हैं वो हाथ उठाओ, सदा शब्द याद रखना, कभी-कभी वाले नहीं। बहुत थोड़े हैं, कोटो में कोई हैं! क्वेश्चनमार्क उठता तो है ना। क्वेश्चनमार्क डिक्शनरी से निकल जाये। हलचल भी न हो। कम्प्यूटर चलाते हो तो उसमें आता है ना? आपके बुद्धि रूपी कम्प्यूटर में सदा फुलस्टॉप की मात्रा आये। क्वेश्चन मार्क, आश्चर्य की मात्रा खत्म। इसको कहा जाता है सदा प्रसन्नचित्त। ऐसा प्रसन्नचित्त औरों का भी क्वेश्चन मार्क खत्म कर देता है। नहीं तो स्वयं में अगर क्वेश्चन मार्क है तो कोई भी बात सुनें, देखेंगे, कहेंगे—हाँ, ये तो होना नहीं चाहिये, लेकिन होता है, मैं भी समझती हूँ, होना नहीं चाहिये, मिक्स हो जायेंगे। उसके प्रश्न को और अण्डरलाइन कर देंगे। टेका तो दे दिया ना—कि हाँ, ये ठीक नहीं है लेकिन होता है...। तो प्रसन्नचित्त उसको नहीं किया लेकिन और ही प्रश्न को बढ़ा लिया। एडीशन हो गई। वैसे एक का क्वेश्चन था, अभी दो का हो गया, दो से चार का हो जायेगा। तो प्रसन्नचित्त वायब्रेशन के बजाय प्रश्नचित्त का वायब्रेशन जल्दी फैलता है। हाँ! ऐसा है... साथ दे दिया। आश्चर्य की मात्रा आ गई ना—हाँ! तो फुलस्टॉप तो नहीं हुआ ना। चाहे अपने प्रति भी—ये मेरे से होना नहीं चाहिये, ये मेरे को मिलना चाहिये, ये दूसरे को नहीं होना चाहिये, तो ये चाहिये-चाहिये प्रश्नचित्त बना देती है, प्रसन्नचित्त नहीं। तो सभी का लक्ष्य क्या है? सन्तुष्ट, प्रसन्नचित्त।

जिसका प्रसन्नचित्त होता है उसके मन-बुद्धि के व्यर्थ की गति फास्ट नहीं होगी। सदा निर्मल, निर्मान। निर्मान होने के कारण सभी को अपने प्रसन्नचित्त की छाया में शीतलता देंगे। कैसा भी आग समान जला हुआ, बहुत गरम दिमाग का हो लेकिन प्रसन्नचित्त के वायब्रेशन की छाया में शीतल हो जायेगा। कमजोरी क्या आती है? वैसे ठीक चलते हो, अपने रीति से अच्छे चलते हो लेकिन जब सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो तो दूसरे की कमजोरी देखते-सुनते, वर्णन करते प्रभाव में आ जाते हो। फिर कहते हो कि इसने किया ना, इसीलिये मेरे से भी हो गया। इसने कहा, तभी मैंने कहा। उसने 50 बारी कहा, मैंने एक बारी कहा। फिर बाप के आगे भी बहुत मीठी-मीठी बातें रखते हैं, कहते हैं—बाबा आप समझो ना इतना सहन कहाँ तक करेंगे! फिर भी पुरुषार्थी हैं ना, तो थोड़ा तो आयेगा ना! बाप को भी समझाने लगते हैं। यहाँ जो निमित्त हैं उन्हीं को बहुत कथायें सुनाते हैं। ऐसा था ना, ऐसा था ना, ऐसा था ना... ऐसे-ऐसे की माला जपते हैं। बापदादा सदा ही इशारा देते हैं कि ऐसी बातें दो अक्षर में वर्णन करो। लम्बा वर्णन नहीं करो। क्योंकि ये व्यर्थ बातें बहुत चटपटी होती हैं। मजेदार लगती हैं, जैसे खाने में भी खट्टी-मीठी चीज हो तो अच्छी लगेगी ना, और फीकी, सादी हो तो कहेंगे ये तो खाते ही रहते हैं। तो व्यर्थ बातें, व्यर्थ चिन्तन सुनना, बोलना और करना इसमें चलते-चलते इन्ट्रेस्ट बढ़ जाता है। फिर सोचते हैं—मैं तो नहीं चाहती थी लेकिन उसने सुनाया ना तो मैंने कहा कि अच्छा उसका सुन लें, दिल खाली कर दें। उसकी तो दिल खाली हुई और आपने दिल भर ली। वो थोड़ा-थोड़ा दिल में भरते-भरते फिर संस्कार बन जाता है और जब संस्कार बन जाता है तो महसूस ही नहीं होता कि ये राँग है। ये व्यर्थ संस्कार बुद्धि के निर्णय को खत्म कर देता है। इसलिये सबसे सहज सदा सन्तुष्ट रहने की विधि है—सदा अपने सामने कोई न कोई विशेष प्राप्ति को रखो। क्योंकि प्राप्ति भूलती नहीं है। ज्ञान की पॉइन्ट्स भूल सकती हैं लेकिन कोई भी प्राप्ति भूलती नहीं है। बाप से क्या-क्या मिला, कितना मिला है, वेरायटी पसन्द आती है ना! एक जैसा पसन्द नहीं होता। तो आप अपने प्राप्तियों को देखो—ज्ञान के खजाने की प्राप्ति कितनी है, योग से शक्तियों की प्राप्ति कितनी है, दिव्यगुणों की प्राप्ति कितनी है, प्रैक्टिकल नशे में, खुशी में रहने की प्राप्ति कितनी है? बहुत लिस्ट है ना! पहले भी सुनाया था कि कभी कोई, कभी कोई गुण की प्राप्ति को सामने रखते हुए सन्तुष्ट रहो। क्योंकि एक गुण भी अपनाया तो जैसे विकारों का आपस में बहुत गहरा सम्बन्ध है, अगर बाहर के रूप में इमर्ज रीति से क्रोध है लेकिन आन्तरिक चेक करो तो क्रोध के साथ लोभ, अहंकार होता ही है। ये सब आपस में साथी हैं। कोई इमर्ज रूप में होते हैं, कोई मर्ज रूप में होते हैं। तो गुण भी जो हैं उन्हीं का भी आपस में सम्बन्ध है। इमर्ज एक गुण को रखो लेकिन दूसरे गुण भी उनके साथ ही मर्ज रूप में होते हैं। तो रोज कोई न कोई प्राप्ति स्वरूप का अनुभव अवश्य करो। अगर प्राप्ति इमर्ज रूप में होगी तो प्राप्ति के आगे अप्राप्ति खत्म हो जायेगी और सदा सन्तुष्ट रहेंगे। वैसे भी देखो, दुनिया में भी मुख्य प्राप्ति सभी क्या चाहते हैं?

हर एक चाहता है कि अपना नाम अच्छा हो, दूसरा मान और तीसरा शान। नाम-मान-शान—ये प्राप्त करना चाहते हैं। आप भी क्या चाहते हो? आप भी तो यही चाहते हो ना! हद का नहीं, बेहद का। तो दुनिया वाले तो हद के नाम के पिछाड़ी दौड़ते हैं और आपका नाम विश्व में जितना ऊंचा है उतना और किसका है? तो आप अपने नाम को देखो। सबसे नाम की विशेषता ये है कि आपका नाम कौन जपता है? स्वयं भगवान आपका नाम जपता है! तो इससे बड़ा नाम क्या होगा! आपके नाम से अभी लास्ट जन्म में भी अनेक आत्मायें अपना शरीर निर्वाह चला रही हैं। आप ब्राह्मण हो ना, तो ब्राह्मणों के नाम से आज भी नामधारी ब्राह्मण कितना कमा रहे हैं! अभी तक नामधारी ब्राह्मण भी कितना ऊंचे गाये जाते हैं! तो आपके नाम की कितनी महिमा है! इतना श्रेष्ठ नाम आपका हो गया, इसीलिये हद के नाम के पीछे नहीं जाओ। मेरा नाम तो कभी किसी में लेते ही नहीं हैं, मेरा नाम सदा पीछे ही रहता है, सेवा मैं करती हूँ नाम दूसरे का हो जाता है...., तो हद के नाम के पीछे नहीं जाओ। बाप के दिल में आपका नाम सदा ही श्रेष्ठ है। जब बाप के दिल में नाम हो गया तो कोई सेवा में या कोई प्रोग्राम में या कोई भी बातों में आपका नाम नहीं भी आया तो क्या हर्जा, बाप के पास तो है ना! जैसे भक्ति मार्ग में हनूमान का चित्र दिखाते हैं ना तो उसके दिल में क्या था? राम था। और बाप के दिल में क्या है? (बच्चे) तो बच्चों में आप हो या नहीं हो? तो सभी का नाम है! देखा है? पक्का? कभी मिस हो गया हो तो! आप सभी का नाम है! तो और नाम के पीछे क्यों पड़ते हो? क्योंकि मैजारिटी यही नाम-मान-शान गिराता भी है और यही नाम-मान-शान नशा भी चढ़ाता है। तो प्राप्ति के रूप में देखो। अगर मानों कोई कारण से आपका नाम गुप्त है और आप समझते हो कि मेरा नाम होना चाहिये, यथार्थ है फिर भी अगर किसी आत्मा से हिसाब-किताब के कारण या उसके संस्कार के कारण आपका नाम नहीं होता है, आप राइट हो, वो रांग है फिर भी उसका नाम होता है, आपका नहीं, तो विजय माला में आपका नाम निश्चित है। इसीलिये इसकी भी परवाह नहीं करो। इस रूप में माया ज्यादा आती है। इसलिये अभी गलती से नाम मिस हो भी गया, कोई हर्जा नहीं लेकिन विजय माला में आपका नाम मिस नहीं हो सकता। पहले आपका नाम होगा। तो अपने नाम की महिमा याद रखो कि मेरा नाम बाप के दिल पर है, विजय माला में है, अन्त तक मेरा नाम सेवा कर रहा है।

और आपका मान कितना है? भगवान ने भी आपको अपने से आगे रखा है! पहले बच्चे। तो स्वयं बाप ने मान दे दिया। कितना आपका मान है, उसका पुफ देखो कि आपके जड़ चित्रों का भी लास्ट जन्म तक कितना मान है! चाहे जाने, नहीं जाने लेकिन कोई भी देवी-देवता का चित्र होगा तो कितने मान से उसको देखते हैं! सबसे श्रेष्ठ मान अब तक आपके चित्रों का भी है। ये पुफ है। जब आपके चित्र ही इतने माननीय, पूजनीय हैं तो जिसका मान रखा जाता है उसको पूजनीय माना जाता है। हमेशा कहते हैं ना—यह हमारे पूजनीय हैं, पूज्य हैं। तो प्रैक्टिकल पुफ है कि आपके चित्रों का भी मान है तो चैतन्य में हैं तब भी चित्रों का मान है। अगर चैतन्य में मान नहीं होता तो चित्रों को कैसे मिलता? बाप तो सदा कहते हैं—पहले बच्चे। बच्चे डबल पूजे जाते हैं, बाप सिंगल। तो आपका मान बाप से ज्यादा हुआ ना! इतना श्रेष्ठ मान मिल गया! तो जब भी कोई हद के मान की बात आये तो सोचना कि आत्माओं का मान क्या करेगा जब परम आत्मा का मान मिल गया। ऐसे नहीं सोचो—कि हम इतना कुछ करते हैं फिर भी मान नहीं देते, पूछते ही नहीं हैं! ये सोचना व्यर्थ है। क्योंकि जितना आप हद के मान के पीछे दौड़ लगायेंगे ना तो ये हद की कोई भी चीज़ परछाई के समान है। परछाई के पीछे पड़ने से कभी परछाई मिलती है कि और आगे बढ़ती जाती है? तो ये हद का मान, हद का नाम—ये परछाई है। ये माया के धूप में दिखाई देती है लेकिन है कुछ भी नहीं। तो नाम भी आपको मिल गया, मान भी आपको मिला हुआ है और शान कितना है! अपने एक-एक शान को याद करो और किसने शान में बिठाया? बाप ने बिठाया। बाप के दिलतख्तनशीन हैं। सबसे बड़े ते बड़ी शान राज्य पद है ना! तो आपको तख्त-ताज मिल गया है ना! जो परम आत्मा के तख्तनशीन हैं इससे बड़ी शान क्या है!

कभी-कभी निर्णय करने में एक छोटी-सी गलती कर देते हो। जो रीयल शान है, रुहानी शान है वो कभी भी अभिमान की फीलिंग नहीं देगा। तो कभी-कभी क्या करते हो? होता अभिमान है लेकिन समझते हो कि ये शान तो अपना रखना चाहिये, इतना शान तो रखना चाहिये ना, शान में रहना अच्छा होता है, लेकिन शान है या अभिमान है, उसको अच्छी तरह से चेक करो। कभी-कभी अभिमान को शान समझ लेते हैं और फिर निर्माण नहीं होते हैं। आप अपने शान को रीयल समझते हो लेकिन दूसरे समझते हैं कि ये अभिमान है तो थोड़ा भी कुछ कह देंगे तो आपको अपमान लगेगा। अभिमान वाले को अपमान बहुत जल्दी फील होगा। थोड़ा भी किसने हंसी में भी कुछ कह दिया तो अपमान लगेगा। ये अभिमान की निशानी है। सोचेंगे—नहीं, मैं तो ऐसा हूँ नहीं, ऐसे थोड़ेही कहना चाहिये। तो निर्णय ठीक करो। उस समय निर्णय में कमी कर लेते हो। यथार्थ के बजाय मिक्स होता है और आप उसको यथार्थ समझ लेते हो। तो कहने में आता है कि ये हैं बहुत अच्छे लेकिन बोलचाल, उठना, बैठना जो है ना वो अभिमान का लगता है। ये भी किसी ने कहा तो अपमान की फीलिंग आ जायेगी। तो स्वमान और अभिमान के अन्तर को भी चेक करो। स्वमान कितना बड़ा है, शान कितनी बड़ी है, उस बेहद के नाम, मान और शान को सदा इमर्ज रखो। मर्ज नहीं, इमर्ज करो। जैसे याद में कभी-कभी अलबेलापन आ जाता है तो कहते हैं हम हैं ही बाप के, याद क्या करें....। लेकिन इमर्ज संकल्प से प्राप्ति का अनुभव होता है। ऐसे ही हर धारणा में अलर्ट रहो, अलबेले नहीं बनो। क्योंकि समय समीप आ रहा है और समय समीप क्या सूचना दे रहा

है? समान बनो, सम्पन्न बनो। तो समय की चैलेन्ज को देखो। आपको कोई भी अप्राप्ति नहीं है। और क्या प्राप्ति होती है? अगर स्थूल रीति से देखो तो तन्दुरुस्ती चाहिये, सम्पत्ति चाहिये, सम्बन्ध चाहिये—यही प्राप्ति में चाहिये ना। तो आपकी आत्मा कितनी तन्दुरुस्त है? आत्मा में लो ब्लड प्रेशर, हाई ब्लड प्रेशर होता है क्या? नहीं, सदा तन्दुरुस्त। क्योंकि अमृतवेले हर रोज बापदादा सदा तन्दुरुस्त भव का वरदान देता है। शरीर का तो हिसाब-किताब है लेकिन आत्मा सदा तन्दुरुस्त। आत्मा को कोई बीमारी नहीं है। तो आत्मा की तन्दुरुस्ती है ना? कि कभी-कभी बीमार पड़ जाते हो?

डबल विदेशी बीमार पड़ते हैं? कि थोड़ा-थोड़ा रेस्ट कर लेते हैं? डबल विदेशी अर्थात् डबल हेल्दी। और ऐसे डबल हेल्दी को देख करके बीमार भी हेल्दी हो जायेगा। तो तन्दुरुस्ती की प्राप्ति आपको कितनी बड़ी है। और सम्बन्ध में देखो, दुनिया वालों को तो कोई सम्बन्ध होगा, कोई नहीं होगा। होगा तो कभी वो सम्बन्ध खत्म भी हो जायेगा, लेकिन आपके सर्व सम्बन्ध एक बाप से हैं। कोई सम्बन्ध की कमी है क्या? कि सिर्फ बाप है, फ्रैण्ड नहीं है—ऐसे तो नहीं समझते ना! सर्व सम्बन्ध बाप से हैं। किसी भी सम्बन्ध से बाप को याद करो तो बाप सदा वह सम्बन्ध निभाने के लिये हाज़िर है। बाप को क्या देरी लगती है! एक ही समय पर सबसे सम्बन्ध निभा सकते हैं। ऐसे नहीं, मैं तो फ्रैण्ड का सम्बन्ध चाहती थी लेकिन बाबा दूसरे में बिज़ी था! ऐसे तो नहीं समझते ना? जिस सेकण्ड जिस सम्बन्ध से याद करो—उस सम्बन्ध में बाप कहते हैं हे बालक सो मालिक, जी हाज़िर। मालिक बुलावे और पहुँचे नहीं, ये कैसे हो सकता है! तो सम्बन्ध में भी देखो—सर्व सम्बन्ध की प्राप्ति है? यह अनुभव है कि सिर्फ सुना है?

जब भी अपनी अवस्था अनुसार बिन्दी नहीं याद आवे, बिन्दी सूक्ष्म है ना, आपकी स्थिति या अवस्था कमजोर है, स्थूल में है तो सूक्ष्म बिन्दी याद करते भी याद नहीं आयेगी, तो ऐसे टाइम पर युद्ध नहीं करो—नहीं, बिन्दी होनी चाहिये, बिन्दी आवे, बिन्दी आवे....। प्राप्ति याद करो, सम्बन्ध याद करो, साकार मिलन याद करो, अपना भिन्न-भिन्न विचित्र अनुभव याद करो। वो तो सहज है ना। किसी को भी भाषण करने नहीं आये और समझे कि मैं तो भाषण करने वाली बनी नहीं। सबसे अच्छे ते अच्छा भाषण है—अनुभव सुनाना। ये सभी को आता है या नहीं? इसके लिये तैयारी चाहिये क्या? कौन-सी पॉइन्ट बोलूँ, कौन-सी नहीं? अनुभव के रूप से बोलो तो देखो नम्बरवन हो जायेंगे। अपने भिन्न-भिन्न अनुभव जो किये हैं वो बांटते जाओ तो बढ़ता जायेगा। सभी को भाषण करना आता है, पांच वर्ष के बच्चे को भी आता है। तो युद्ध में समय नहीं गँवाओ। नहीं, यही होना चाहिये, नहीं। किसी भी विधि से व्यर्थ को समाप्त करो और समर्थ को इमर्ज करो। युद्ध करते-करते क्या होता है? कमजोरी के संस्कार पड़ जाते हैं। फिर सोचते कि मेरे से तो होता ही नहीं है, बाबा कहते हैं विकर्म विनाश करो, मेरे से तो होता नहीं है। विकर्म विनाश नहीं होता तो सुकर्म तो बनाओ ना, व्यर्थ में टाइम नहीं गँवाओ। तो जितना-जितना श्रेष्ठ कर्मों का खाता बढ़ता जायेगा तो भी विकर्मों का खाता खत्म होता जायेगा। इसीलिये समय को नहीं गँवाओ। सबसे बड़े ते बड़ा मूल्य है समय का। क्योंकि इस समय का गायन है—अब नहीं तो कब नहीं। एक-एक सेकण्ड—अब नहीं तो कब नहीं। चलते-फिरते, रास्ते चलते दो बातें सुन ली, दो बातें कर ली—ये भी समय जाता है। और जितना समय गँवाते हैं ना तो व्यर्थ के संस्कार पक्के होते जाते हैं। कोई लम्बी बात करे तो उसको शॉर्ट करो। सुनाया ना—व्यर्थ बात का वर्णन बहुत लम्बा होता है। तो व्यर्थ को बचाओ। समझने में ऐसे होता है—मैंने तो कुछ नहीं किया, न सुना, न बोला लेकिन चलते-चलते दो शब्द उसने बोला, दो शब्द उससे बोला और व्यर्थ का खाता जमा हो जाता है। सुनने से भी व्यर्थ जमा होता है। अगर कोई व्यर्थ सुनाते भी हैं तो उसको भी शॉर्ट करो, उसको सिखाओ। यह है शुद्ध सेवा, रहम करना। रह-मदिल हो ना!

अच्छा, आज होली मनाने आये हो। तो होली तो आप बन गये हो, अभी क्या होली मनायेंगे? होली बन गये हैं, होली हंस हो ना! ये होली आत्माओं की सभा कितनी न्यारी और प्यारी लगती है। होली की विशेषता है ही रंग लगाने की। आप सभी को तो रुहानी रंग लग गया। पक्का लग गया ना कि थोड़ी माया की धूप में रंग उड़ जायेगा। नहीं उड़ेगा! दुनिया वाले तो एक दिन के लिये मनोरंजन करते हैं और आपका सदा ही मनोरंजन है। मन नाचता-खेलता रहता है। वास्तव में सब उत्सव आपके जीवन का यादगार हैं। होली की विशेषता रंग लगाना, होली जलाना और फिर मंगल मिलन मनाना। जब बाप के संग के रंग में रंग गये, सबसे बड़े ते बड़ा, अच्छे ते अच्छा रंग है सदा बाप का संग। तो सदा संग है ना। तो सदा ही होली है। क्योंकि संग का रंग सदा ही है। और जब बाप के साथ रहते हो, संग रहते हो तो बुराइयाँ तो स्वतः ही जल जाती हैं। अपवित्रता को जलाना ये होली जलाना है। और जब रंग में रंग जाते हैं, बुराइयाँ जल जाती हैं तो क्या होता है? मंगल मिलन। सदा एक-दो से मिलते हो तो शुभ भावना सबके प्रति रखते हो, तो ये शुभ भावना से मिलना—ये है मंगल मिलन। सदा ही शुभ है। तो मंगल मिलन शुभ मिलन है। चाहे कैसी भी आत्मा हो लेकिन आप शुभ भावना से उनको भी परिवर्तन कर देते हो। तो सदा मंगल मिलन बाप से भी और अपने में भी मनाते ही रहते हो। वो होली है नुकसान की और आपकी होली है फायदे की। वहाँ कितना नुकसान होता है! रंग का नुकसान, समय का नुकसान, कपड़ों का भी नुकसान। और आपका है जमा करने का। होली मनाना अच्छा लगता है, रंग डालना अच्छा लगता है? देवताओं के समान थोड़ा-बहुत सुहेज करना वो है दिन को महत्व देना। बाकी ज्यादा रंग लगाना तो दुनिया जैसे हो जाते हैं। सदा होलीएस्ट बनने की होली की मुबारक। वो तो विशेष उत्सव पर मीठा मुख करते हैं और आप तो हर गुरुवार को मीठा मुख करते हो। भोग

मीठा बनाते हो ना? या मीठा नहीं बनाते, नमकीन रख देते हो! डबल फॉरेनर्स बनाते हैं? कि ब्रेड का भोग लगा देते हो? सुनाया था ना कि ये भी विधि है। तो विधि को अपनाने से खुशी होती है। जैसे कोई अपना प्यारा आ जाता है तो क्या करते हो? प्यार से उसके लिये बनाते हो ना। बाप से प्यार है तो दो चीज़ भल नहीं बनाओ, एक ही चीज़ बनाओ लेकिन बनाओ प्यार से और विधिपूर्वक। ऐसे नहीं, ऑफिस का टाइम हो गया और गैस पर हलुआ बन रहा है, टाइम नहीं है तो यही लगा दो। (सभी हँस रहे हैं) अच्छा नहीं लगता है ना इसीलिये हँसी आती है। बापदादा तो आपके प्यार का फल भी प्यार से ही स्वीकार करते हैं लेकिन जो स्टूडेंट आते हैं वो अपने-अपने स्थान पर इतनी चीज़ें तो नहीं बना सकते इसीलिये बाप बच्चों के प्रति भी ये नियम रखते हैं। कम से कम हर गुरुवार उन्हें को वेरायटी मिलनी चाहिये। तो बाप भी खा लेंगे, बच्चे भी खा लेंगे।

मेहनत तो बहुत करते हो लेकिन मुहब्बत से मेहनत करते हो तो मेहनत मुहब्बत में बदल जाती है। वैसे तो डबल विदेशी स्वयं भी खाना बनाने के लिये टाइम नहीं होने के कारण जैसे आता है वैसे चलते रहते हैं। डबल विदेशियों का ब्रह्मा भोजन भी बहुत इजी है। इण्डिया का ब्रह्मा भोजन और डबल विदेश में ब्रह्मा भोजन—कितना फर्क होता है! जो इण्डियन बहनें हैं वो तो करते होंगे। लेकिन जहाँ सिर्फ डबल विदेशी हैं उन्होंने का ब्रह्मा भोजन तो रोज़ हो सकता है। अच्छा है। तबियत के लिये भी ठीक है और सहज भी है। लेकिन गुरुवार को कुछ न कुछ बनाना।

अच्छा, सब तरफ से आये हैं। डबल विदेशियों ने भी रेस अच्छी की है। सब ठीक रहे हुए हो? पलंग मिला है या पटरानी, पटराणे बने हैं? सबको खटिया मिली है कि कोई पट में भी सोते हैं? सबको खटिया मिलती है। यह आपकी विशेष खातिरी है। पट में सो तो सकते हो ना या नहीं? कि कमर में दर्द पड़ेगा? जो मिले उसमें सन्तुष्ट रहो। अगर खटिया मिलती है तो भी ठीक, अगर धरनी मिलती है तो भी ठीक। आदत सब पड़नी चाहिये। अच्छा!

ब्राज़ील:- ज्यादा गुप आया है इसीलिये खुशी है। बहुत अच्छा। (फर्स्ट टाइम वाले ज्यादा हैं) अच्छा है वृद्धि होना ये तो ड्रामा की नूंध है। ये तो बढ़ेगा। संख्या बढ़ना ये सेवा की वृद्धि की निशानी है। तो अच्छा है बापदादा खुश हैं कि सभी तरफ से मैजारिटी देखा गया कि चारों ओर के गुप्स बढ़ करके ही आये हैं। जो अगले साल की संख्या है और इस साल की संख्या में काफी फर्क है। जब मधुबन तक इतने ज्यादा पहुँच गये हैं तो वहाँ भी तो होंगे ना। तो अच्छा है, सेवा के वृद्धि की सभी को मुबारक। अच्छा, ब्राजील वाले क्या करेंगे? कौन-सा नशा रखेंगे? (उमंग-उत्साह) बहुत ज्यादा उमंग है। तो सदा उमंग-उत्साह में रहना अर्थात् अपने श्रेष्ठ शान वा स्वमान में रहना। तो सबसे बड़ी शान है कि सदा खुश रहने वाले और दूसरों को खुशी बांटने वाले दादा के बच्चे हैं। सदा देने वाले हैं, लेने वाले नहीं। बाप से तो बिना मांगे भी मिलता ही रहता है। बाप से मिलता है और बच्चों को बांटना है तो सदा खुशी के खजाने को बांटने वाले महादानी। ये है ब्राजील वालों के लिये विशेष वरदान।

साउथ अमेरिका:- उसमें कौन है हाथ उठाओ। (पांच देश हैं) तो पांच ही देश किस टाइल को याद करेंगे? टाइल तो बहुत है ना। हर रोज़ कोई न कोई विशेष शान का टाइल मिलता है। तो ये पांच ही मिल करके क्या टाइल याद रखेंगे? (सन्तुष्टमणि) अच्छा—मणि कहाँ होती है? ताज में होती है ना। तो सबसे ऊँचे स्थान पर मणि चमकती है। तो ये पांच ही सदा ऊँची स्थिति में स्थित रहने वाले सन्तुष्टमणि बन अपनी सन्तुष्टता की लाइट चारों ओर फैलायेंगे। तो सदा सन्तुष्ट मणि भव। ये अच्छा है। दूर होते भी समीप हैं। देश दूर है लेकिन दिल से नजदीक हैं। समझा? अच्छा!

जर्मनी:- जर्मनी वालों को अभी कोई नई कमाल करके दिखानी है। जो सभी ने किया है वो तो किया लेकिन जर्मनी वाले नवीनता क्या करेंगे? हाथ उठाओ जो समझते हैं नवीनता करके दिखायेंगे। ये तो बहुत हैं। एक-एक की अंगुली से नवीनता का पहाड़ तो उठा हुआ ही है। उठेगा नहीं, उठा हुआ ही है। सभी अच्छे हैं, उमंग-उत्साह है, अभी सिर्फ प्रैक्टिकल में लाना है। दिल में है लेकिन दिल के उमंग-उत्साह को बाहर में लाना है। ऐसी कमाल करके दिखाओ, जो किसी ने ऐसी आत्मायें तैयार नहीं की हो लेकिन जर्मनी ऐसी आत्मायें तैयार करें जो सब ताली बजायें—वाह जर्मनी, वाह! वैसे तो जर्मनी की मदद अभी भी अच्छी मिल रही है। अच्छी मेहनत कर रहे हैं। यहाँ हॉस्पिटल में कितनी मदद कर रहे हैं। हॉस्पिटल में तो मदद की है उसकी मुबारक हो। अभी ऐसा अच्छा सेवाकेन्द्र खोलो, जो उस सेवा स्थान के ऐसे वायब्रेशन हों जिससे हर एक को नवीनता का अनुभव हो। जैसे चुम्बक दूर से ही खींचता है ऐसे सेवास्थान की आत्माओं के वायब्रेशन सभी को आकर्षित करें। हिम्मत है ना! सेवाकेन्द्र खोलने की राय पसन्द है? जर्मनी वाले फिर से हाथ उठाओ। हिम्मत है? ये हिम्मत का हाथ है या वैसे! बापदादा देख रहे हैं कि आत्मायें अच्छी हैं। जो करना चाहें वो कर सकती हैं लेकिन अभी तक गुप्त रहे, अभी प्रत्यक्ष हो जायेंगे। तो सभी ब्राह्मणों की बापदादा सहित जर्मनी वालों को दुआएं हैं। कितनी दुआएं मिल गईं! ठीक है ना! जब सब ब्राह्मणों की, बापदादा की विशेष नज़र जर्मनी पर पड़ी तो क्या होगा? कमाल होगी। तो सदा सर्व को दुआएं देते हुए स्वयं को भी बाप की दुवाओं से भरपूर आत्मा अनुभव करते रहना। समझा? जर्मनी का सुन करके आप सभी को भी खुशी हो रही है ना। देखो कितनी खुशी है, सबके चेहरे मुस्करा रहे हैं। अच्छा!

कैनेडा:- कैनेडा वाले क्या करेंगे? कैनेडा का स्थान तो बहुत बड़ा है, उसमें नवीनता क्या बनाई है? सेवाकेन्द्र तो सभी हैं लेकिन नवीनता क्या बनाई है? कैनेडा वालों को जैसे स्थान है उसी अनुसार कोई न कोई नवीनता करो, म्युजियम कॉमन नहीं, जो अभी

तक हो चुका है वह कॉमन हो गया, अभी और इन्वेन्शन कर ऐसा बनाओ जैसे लौकिक हिस्ट्री में वण्डर्स गाये जाते हैं ना ऐसे कैनेडा का स्थान वण्डर्स में गाया जाये। हो सकता है? अगर हाँ है तो हाथ उठाओ। थोड़े हैं लेकिन साथ में और भी तो हैं ना। तो ऐसी कोई कमाल करके दिखाओ और सदा स्वयं को बाप के इन्स्ट्रूमेन्ट समझकर करो। बाप करावनहार है, करावनहार की स्मृति से निमित्त बन कार्य करने वाली आत्मायें हैं। तो करावनहार के द्वारा हर कार्य सहज हो जाता है। समझा? बहुत अच्छे इन्स्ट्रूमेन्ट हैं। अच्छा!

मैक्सिको:- मैक्सिकों वालों की भी कमाल है। वहाँ के मनी की हालत तो खराब है लेकिन मैक्सिको के ब्राह्मणों की हालत सबसे अच्छी है। बेफिक्र बादशाह हैं। देश की हालत तो होनी ही है लेकिन वो कलियुग की हालत है और आप सभी संगमयुग पर बैठे हो। इसीलिये मैक्सिको वाले साक्षी दृष्टा बन हर दृश्य को देखने वाले हैं। हलचल में आने वाले नहीं, लेकिन साक्षीपन की सीट पर दृष्टा बन खेल देख रहे हैं और खेल में हर्षित हो रहे हैं। नीचे-ऊपर होने के प्रभाव से न्यारे और प्यारे। अच्छा है, देश की हालत लोगों को हिलाती है तो जब हिलते हैं ना तो और ही स्पिचुअलिटी की तरफ अटेन्शन जाता है। वैराग्य की धरनी तैयार होती है और जितनी वैराग्य की धरनी तैयार होती है उतना बीज फल जल्दी देता है। तो मैक्सिको को अभी और सेवा का चांस है। बढ़ो और बढ़ाओ। बाकी निश्चयबुद्धि अच्छे-अच्छे बच्चे सदा बाप के सामने हैं और सदा रहेंगे। समझा?

करेबियन:- गयाना, ट्रिनीडाड, सुरिनाम, बारबेडोज़. . . सभी तरफ सेवा का अच्छा चांस है और चांस रहेगा। तो करेबियन जो हैं वो चांस लेने वाले विशेष चांसलर हैं। चांस अच्छा लेते रहते हैं। और जितना चांस लेते हैं उतना अपने को भी खुशी होती है और दूसरों को भी खुशी होती है। धरनी को अच्छा परिवर्तन किया है। पहले भक्ति की कठोर धरनी थी, अभी परिवर्तन होकर ज्ञान सुनने की जिज्ञासा वाले बने। तो भक्ति के ऊपर जीत प्राप्त कर ली ना, विजयी बन गये। अच्छी रिजल्ट है, बापदादा खुश हैं। समझा! चांसलर हैं। अच्छा, कितने नाम लेंगे, सभी को याद-प्यार तो मिलता ही है बाकी सभी के लिये, चाहे बड़े शहर हैं, चाहे छोटे हैं, छोटे और सिक्कीलधे हैं क्योंकि जहाँ छोटे होते हैं वहाँ खातिरी होती है और बहुत होते हैं तो बट जाता है। जैसे देखो डबल विदेशी थोड़े थे तो पर्सनल मिलते थे और बढ़ गये हैं तो बट गया। और छोटे सुहान अल्लाह हैं। सभी को बापदादा देखते हैं, ऐसे नहीं समझना सिर्फ अमेरिका अफ्रिका देखते हैं। सभी जगह चक्कर लगाते हैं। पहले छोटों को प्यार करते हैं फिर बड़ों को। तो सभी के लिये यही विशेष वरदान है कि बिन्दु और सिन्धु, जितना ही बिन्दु है उतना ही सिन्धु बने। ज्ञान, गुण और शक्तियों की धारणा में सिन्धु बने और स्मृति में बिन्दु बने। बिन्दु बने, बिन्दु को याद करो और बिन्दु लगाते चलो। तो बिन्दु स्मृति स्वरूप और धारणा में सिन्धु स्वरूप। यही लक्ष्य सब रखते चलो। अभी किसी भी प्रकार का वेस्ट खत्म करो। हर कर्म बेस्ट। हर सेकण्ड बेस्ट हो, बोल भी बेस्ट हो, सम्बन्ध-सम्पर्क सब बेस्ट हो। जितना बेस्ट करते जायेंगे तो वेस्ट स्वतः ही खत्म हो जायेगा। अभी वेस्ट का खाता कुछ दिखाई देता है, तो बापदादा को अच्छा नहीं लगता है। आपके सारे दिन की दिनचर्या चेक करते हैं, वहाँ चारों ओर सबकी टी.वी. लगी हुई है। एक-एक बच्चे की टी.वी. है, तो दिखाई तो देता है ना कि ये वेस्ट कर रहा है या बेस्ट कर रहा है। एक सेकण्ड में देख लेते हैं। तो अभी भी वेस्ट का खाता कुछ बेस्ट से ज्यादा लगता है। तो बापदादा को वेस्ट देखकर अच्छा लगेगा? तो इस वर्ष में यह प्रतिज्ञा करो कि **वेस्ट खत्म करेंगे, बेस्ट बनेंगे।** कितनी भी परीक्षा आये लेकिन परीक्षा परीक्षा है, प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा है। परीक्षा आये, प्रतिज्ञा याद करो। और जब सब बेस्ट बन जायेंगे तब ही प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेंगे। आपके लिये रुका हुआ है। ऐसे ही पर्दा खुल जाये और आप तैयार हो रहे हो तो अच्छा लगेगा! इसीलिये पर्दा बन्द है। कोई मन को ठीक कर रहा है, कोई तन को ठीक कर रहा है, कोई स्वभाव को, कोई संस्कार को और पर्दा खुल जाये तो ठीक लगेगा! इसीलिये जल्दी-जल्दी तैयार हो जाओ। डायमण्ड जुबली मनाने की तैयारी कर रहे हो ना। तो सब बेदाग डायमण्ड बन जायें। डायमण्ड जुबली का तो ये अर्थ है ना। मनाओ डायमण्ड जुबली और रहे फलो (ईर्; दाग) वाले डायमण्ड, तो अच्छा लगेगा! इसीलिये इस वर्ष में तैयार हो जाओ। टी.वी. खुले तो सब बेस्ट, बेस्ट, बेस्ट हो। वेस्ट का नाम निशान ही दिखाई न देवे। हो सकता है? कि होना ही है? बापदादा ने तो जानबूझ कर कहा कि हो सकता है। आप जवाब दो—होना ही है। अच्छा।

चारों ओर के सदा सर्व प्राप्त स्वरूप आत्मायें, सदा सन्तुष्ट, सदा प्रसन्नचित्त रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सदा स्वयं को श्रेष्ठ नाम, मान, शान के अधिकारी अनुभव करने वाली समीप आत्मायें, सदा सर्व को सन्तुष्टता के वायब्रेशन की लाइट-माइट देने वाले प्रसन्नचित्त आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

(बापदादा के साथ जब दादियां स्टेज पर बैठीं तो सभी फोटो निकाल रहे हैं) क्या करेंगे इतने फोटो? डबल विदेशी फोटो बहुत निकालते हैं। आप सब कहते हो दिल में बाबा है तो फोटो क्यों निकालते हो? दिल में तो है ना। ये भी एक मनोरंजन है। अभी डबल विदेशी भी पक्के हो गये। पहले जल्दी डिस्टर्ब होते थे, अभी कम होते हैं। फर्क आ गया ना। अच्छे हैं, परिवर्तन अच्छा किया है। अभी मूड ऑफ करते हो? मूड ऑफ होती है? नहीं। आपके बुद्धि का स्वीच ऑन है तो मूड ऑफ नहीं होगी। जब स्विच ऑफ हो जाता है ना तो मूड ऑफ होती है। तो आपका तो ऑटोमेटिक स्विच है ना! कि फ्युज होता है? जिसका फ्युज होता है वो कम्प्युज़ होता है। अभी फर्क है। अभी और भी फ्लाय करते-करते जो बाप चाहते हैं वो दिखायेंगे। लेकिन बापदादा का नाम प्रत्यक्ष

करने में आप सभी विशेष निमित्त आत्मायें हो।

अहमदाबाद (सुख-शान्ति भवन) के भाई-बहनों से:- अच्छे हैं, सेवा भी अच्छी करते हैं। सबको सन्तुष्ट करना यही बड़े ते बड़ी सेवा कर रहे हो। चाहे सीज़न में नहीं आये हो लेकिन बापदादा सदा ही याद करते हैं। तो सुख-शान्ति भवन वाले सदा सुख-शान्ति में रहने वाले हैं। अशान्ति का नाम-निशान नहीं। और बापदादा के पास सफलता की रिज़ल्ट है इसलिये मुबारक हो, मुबारक हो।

तलहटी में बापदादा के कार्यक्रम के लिये आये सेवाधारियों के प्रति-अच्छा है, गुजरात सेवा की जिम्मेदारी उठाने में नम्बर आगे लेते हैं। सारा गुजरात ही संगठन में सेवा के निमित्त बना है। जो निमित्त बनते हैं उन्हों को विशेष एक कदम पर पदम गुणा सहयोग मिलता है। इसीलिये हिम्मत भी अच्छी रखी है, मेहनत भी अच्छी कर रहे हैं। प्रकृति थोड़ा हिलाती है लेकिन ये अचल हैं। अच्छा है, एक संगठन की शक्ति, दूसरी हिम्मत है तो कार्य सफल हुआ ही पड़ा है।

निर्वैर भाई ने बापदादा को गुलदस्ता भेंट किया-अच्छा, ज्ञान सरोवर का क्या हो रहा है? अभी बाकी जो रहा हुआ काम है उसमें अभी किसी भी ढंग से कम खर्चा बाला नशीन करके दिखाओ।

आप सभी ज्ञान सरोवर देख करके खुश होते हो ना? ज्ञान सरोवर किसने बनाया? (बाबा ने) आप सबने। अगर आप सबकी अंगुली नहीं होती तो ज्ञान सरोवर का पहाड़ कैसे उठता! बना तो अच्छा है। फिर भी जिसने जो किया है वो बहुत अच्छा किया है और आगे भी अच्छे ते अच्छा करते ही रहेंगे। ठीक है ना! सभी ने ज्ञान सरोवर में अंगुली लगाई है या किसी ने नहीं भी लगाई है? जो भी सभी बैठे हो, सभी ने अपनी अंगुली लगाई है ना ? अच्छा।

ब्राह्मण जीवन का सबसे श्रेष्ठ खजाना – संकल्प का खजाना

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों के खजानों के खाते देख रहे थे। हर एक बच्चे को खजाने बहुत मिले हैं और अविनाशी अनगिनत खजाने मिले हैं। सिर्फ इस जन्म के लिये नहीं लेकिन अनेक जन्मों की गैरेन्टी है। अब भी साथ हैं और आगे भी साथ रहेंगे। तो आज विशेष जो सबसे श्रेष्ठ खजाना है और सर्व खजानों का विशेष आधार है वो ही विशेष देख रहे थे कि सबके खाते में जमा कितना है? मिला अनगिनत है लेकिन जमा कितना है? तो सबसे श्रेष्ठ खजाना संकल्प का खजाना है और आप सबका श्रेष्ठ संकल्प ही ब्राह्मण जीवन का आधार है। संकल्प का खजाना बहुत शक्तिशाली है। संकल्प द्वारा सेकण्ड से भी कम समय में परम-धाम तक पहुँच सकते हो। संकल्प शक्ति एक ऑटोमेटिक रॉकेट से भी तीव्र गति वाला रॉकेट है। जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। चाहे बैठे हो, चाहे कोई कर्म कर रहे हो लेकिन संकल्प के खजाने से वा शक्ति से जिस आत्मा के पास पहुँचना चाहो उसके समीप अपने को अनुभव कर सकते हो। जिस स्थान पर पहुँचना चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। जिस स्थिति को अपनाना चाहो, चाहे श्रेष्ठ हो, खुशी की हो, चाहे व्यर्थ हो, कमजोरी की हो, सेकण्ड के संकल्प से अपना सकते हो। संकल्प किया—मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ तो श्रेष्ठ स्थिति और श्रेष्ठ अनुभूति होगी और संकल्प किया मैं तो कमजोर आत्मा हूँ, मेरे में कोई शक्ति नहीं है, तो सेकण्ड के संकल्प से खुशी गायब हो जायेगी। परेशानी के चिन्ह स्थिति में अनुभव होंगे। लेकिन दोनों स्थिति का आधार संकल्प है। याद में भी बैठते हो तो संकल्प के आधार से ही स्थिति बनाते हो। मैं बिन्दु हूँ, मैं फरिश्ता हूँ... यह स्थिति संकल्प से ही बनी। तो संकल्प कितना शक्तिशाली है!

ज्ञान का आधार भी संकल्प ही है। मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ—ये संकल्प करते हो। सारा दिन मन-बुद्धि को शुद्ध संकल्प देते हो वा मनन में शुद्ध संकल्प करते हो तो मनन शक्ति का आधार भी संकल्प शक्ति है। धारणा करते हो, मन-बुद्धि को संकल्प देते हो कि आज मुझे सहनशक्ति धारण करनी है तो धारणा का भी आधार संकल्प है। सेवा करते हो, प्लैन बनाते हो तो भी शुद्ध संकल्प ही चलते हैं ना! शुद्ध संकल्प द्वारा ही प्लैन बनता है। अनुभव है ना! तो ब्राह्मण जीवन का विशेष श्रेष्ठ खजाना है संकल्प का खजाना। अगर आप संकल्प के खजाने को सफल करते हो तो आपकी स्थिति, कर्म सारा दिन बहुत अच्छा रहता है और संकल्प के खजाने को व्यर्थ गँवाते हो तो रिज़ल्ट क्या होती? जो स्थिति चाहते हो वो नहीं होती। और आप सब जानते हो कि व्यर्थ संकल्प बुद्धि को भी कमजोर करते हैं और स्थिति को भी कमजोर करते हैं। जिनका व्यर्थ चलता है उनकी बुद्धि कमजोर होती है, कन्स्युज्ड होती है। निर्णय ठीक नहीं होगा। सदा मूझा हुआ होगा। क्या करूँ, क्या न करूँ, स्पष्ट निर्णय नहीं होगा। और व्यर्थ संकल्प की गति बहुत फास्ट होती है। व्यर्थ संकल्प का तो सबको अनुभव होगा। विकल्प नहीं, व्यर्थ का अनुभव सभी को है। तो फास्ट गति होने के कारण उसको कन्ट्रोल नहीं कर पाते हैं। कन्ट्रोल खत्म हो जाता है। परेशानी या खुशी गायब होना या मन उदास रहना, अपने जीवन से मज़ा नहीं आना—ये व्यर्थ संकल्प की निशानियाँ हैं। कइयों को मालूम ही नहीं पड़ता कि मेरी स्थिति ऐसी हुई ही क्यों? वो मोटी-मोटी बातें देखते हैं कि कोई विकर्म तो किया ही नहीं, कोई गलती तो की नहीं फिर भी खुशी कम क्यों, उदासी क्यों, क्यों नहीं आज जीवन में मज़ा आ रहा है! मन नहीं लग रहा है। कारण? विकर्म को देखते, विकल्प को देखते, बड़ी गल-

तियों को चेक करते लेकिन ये सूक्ष्म गलती व्यर्थ खजाने गँवाने की होती है। जरूर वेस्ट का, व्यर्थ गँवाने का खाता बढ़ा हुआ है। जैसे शारीरिक रोग पहले बड़ा रूप नहीं होता, छोटा रूप होता है लेकिन छोटे से बढ़ते-बढ़ते बड़ा रूप हो जाता है और बड़ा रूप दिखाई देता है, छोटा रूप दिखाई नहीं देता है, वैसे ये व्यर्थ का खाता, गँवाने का खाता बढ़ता जाता, बढ़ता जाता। पाप का खाता अलग है, ये खजाने गँवाने का खाता है। पाप तो स्पष्ट दिखाई देता है तो महसूस कर लेते हो कि आज ये किया ना इसीलिए खुशी गुम हो गई। लेकिन व्यर्थ गँवाने का खाता, उसकी चेकिंग कम होती है। और आप समझते हो कि चलो, आज का दिन भी बीत गया, अच्छा हुआ, कोई ऐसी गलती नहीं की, लेकिन ये चेक किया कि अपने संकल्प के श्रेष्ठ खजाने को जमा किया या व्यर्थ गँवाया? यदि जमा नहीं होगा तो गँवाने का खाता होगा ना! अन्दर समझ में आता है कि बहुत कुछ कर रहे हैं, लेकिन खाता चेक करो—कि आज क्या-क्या खजाना जमा किया? चेक करना आता है? अपना चेकर बने हो या दूसरे का चेकर बने हो? क्योंकि अपने को अन्दर से देखना होता है, दूसरे को बाहर से देखना होता है, वो सहज हो जाता है। तो बापदादा देख रहे थे कि जो विशेष श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना है वह व्यर्थ बहुत जाता है। पता ही नहीं पड़ता है कि व्यर्थ गया या समर्थ है?

ब्रह्मा बाप को इकॉनॉमी का अवतार कहते हैं। आप सभी कौन हो? आप भी मास्टर हो या नहीं? इकॉनॉमी नहीं आती है? खर्च करना आता है! वैसे डबल फॉरेनर्स को लौकिक जीवन के हिसाब से जमा का खाता बनाना कम आता है। खाया और खर्चा, खत्म। बैंक बैलेन्स कम रखते हैं। लेकिन इसमें तो इकॉनॉमी का अवतार बनना पड़ेगा। तो बापदादा देख रहे थे कि जितना मिला है, जितना संकल्प का श्रेष्ठ खजाना जमा होना चाहिये उतना नहीं है, व्यर्थ का हिसाब ज्यादा देखा। अगर संकल्प व्यर्थ हुआ तो और खजाने व्यर्थ स्वतः ही हो जाते हैं। संकल्प व्यर्थ तो कर्म और बोल क्या होगा? व्यर्थ ही होगा ना! फाउण्डेशन है संकल्प। तो संकल्प को चेक करो। हल्का नहीं छोड़ो। ठीक है, सिर्फ दो मिनट ही तो हुआ, ज्यादा नहीं हुआ.... लेकिन दो मिनट में आप चेक करो कि कितने संकल्प चलते हैं? व्यर्थ संकल्प तो तेज होते हैं ना! एक सेकण्ड में आबू से अमेरिका पहुँच जायेंगे। वैसे पहुँचने में कितने घण्टे लगते हैं! तो इतनी फास्ट गति है, उस गति के प्रमाण चेक करो, अपने संकल्प शक्ति की बचत करो और फिर रात्रि को चेक करो। अगर अटेन्शन दे करके कोई भी चीज़ की बचत करते हैं तो चाहे बचत थोड़ी हो लेकिन बचत की खुशी एक्स्ट्रा होती है। अगर 10 पाउण्ड या डॉलर खर्च होना है और आपने एक पाउण्ड या डॉलर बचा लिया तो एक पाउण्ड की बड़ी खुशी होगी कि बचाकर आये हैं। तो अपने संकल्पों के ऊपर कन्ट्रोलिंग पॉवर रखो। ये नहीं कहो—चाहते तो नहीं थे, समझते तो हैं लेकिन क्या करें हो जाता है....। कौन कहता है हो जाता है? मालिक या गुलाम? मालिक के तो कन्ट्रोल में होते हैं ना। अगर मालिक को भी कोई धोखा दे दे तो वो मालिक है क्या? तो ये चेक करो—कन्ट्रोलिंग पॉवर है? एक तो बचत करो, वेस्ट के बजाय बेस्ट के खाते में जमा करो और दूसरा अगर बचत नहीं कर सकते हो तो व्यर्थ को समर्थ संकल्पों में परिवर्तन करो। यदि कन्ट्रोल नहीं हो सकता है तो परिवर्तन तो कर सकते हो ना? उसकी रफ्तार को जल्दी से चेंज करना। नहीं तो आदत पड़ जाती है। एक घण्टे को भी चेक करो तो एक घण्टे में भी देखेंगे कि 5-10 मिनट भी जो वेस्ट संकल्प जा रहे थे, वह 5 मिनट भी वेस्ट से बेस्ट में जमा हो गये तो 12 घण्टे में 5-5 मिनट भी कितने हो जायेंगे? और खुशी कितनी होगी? और जितना श्रेष्ठ संकल्पों का खाता जमा होगा तो समय पर जमा का खाता काम में आयेगा। नहीं तो जैसे स्थूल धन में अगर जमा नहीं होता तो समय पर धोखा खा लेते हैं। ऐसे यहाँ भी जब कोई बड़ी परीक्षा आ जाती है तो मन और बुद्धि खाली-खाली लगती है, शक्ति नहीं लगती है। तो क्या करना है? जमा करना सीखो। अगले वर्ष अगर देखें तो सबके श्रेष्ठ संकल्पों का खाता भरपूर हो। खाली-खाली नहीं हो। यही श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना श्रेष्ठ प्रालम्भ का आधार बनेगा। तो जमा करना आता है? राजयोगी अर्थात् चेक करना भी आता और जमा करना भी आता। जिसका खाता जमा होगा उसकी चलन और चेहरा सदा ही भरपूर दिखाई देगा। ऐसे नहीं, आज देखो तो चेहरा बड़ा चमक रहा है और कल देखो तो उदासी की लहर—ऐसा नहीं होगा। सारे दिन में चेक करो तो आपके पोज़ कितने बदलते हैं? कभी चेक किया है? बहुत पोज़ बदलते हैं। बापदादा तो सबके पोज़ देखते हैं ना! कभी-कभी देखते हैं कि कई बच्चे कर्म करने में इतना टाइम नहीं लगाते लेकिन किये हुए कर्म के पश्चाताप् में टाइम बहुत गँवाते हैं। फिर कहते हैं तीन दिन हो गये, खुशी गुम हो गई है। क्यों खुशी गुम हुई, कहाँ गई, कौन ले गया? खजाना तो आपका है लेकिन ले कौन गया? पश्चाताप् करना अच्छी चीज़ है, क्योंकि पश्चाताप् परिवर्तन कराता है लेकिन उसमें ज्यादा टाइम नहीं लगाओ। पश्चाताप् का रोना करेंगे तो सारा सप्ताह रोते रहेंगे। पश्चाताप् किया, बहुत अच्छा—लेकिन पश्चाताप् करना और प्राप्ति की खुशी लाना। आगे के लिये सेकण्ड में निर्णय करो कि ये करना है या ये नहीं करना है। पहले सुनाया है ना—नॉट और डॉट ये दोनों शब्द याद रखो। नॉट सोचा और डॉट लगाया। चार घण्टा रोते रहे, चलो पानी नहीं आया, अन्दर रोते रहे। आधा घण्टा पानी बहाया और चार घण्टा मन से रोया तो इतना पश्चाताप् नहीं करो। यह बहुत है। पश्चाताप् की भी कोई हद रखो।

बापदादा को डबल फॉरेनर्स की एक विशेषता बहुत अच्छी लगती है, रोना नहीं अच्छा लगता लेकिन एक विशेषता अच्छी लगती है। कौन सी? सच्ची दिल पर साहेब राजी। सच बताने में डरेंगे नहीं, छिपायेंगे नहीं। तो सच्ची दिल है इसके कारण बाप के डबल प्यार के भी पात्र हो। तो सच्ची दिल रखी, साहेब को तो राजी कर लिया लेकिन परिवर्तन भी फिर इतना जल्दी करना चाहिये।

उसको बार-बार अपने अन्दर में वर्णन नहीं करो—ये हो गया, ये हो गया....। हो गया, फिनिश। आगे के लिये अटेन्शन। लेकिन कभी-कभी अटेन्शन के बजाय टेन्शन कर लेते हो, वो नहीं करना है। बड़े ते बड़ा जस्टिस बनो। यहाँ भी चीफ जस्टिस होते हैं ना, आप तो चीफ जस्टिस के भी चीफ हो। अपने प्रति जल्दी से जल्दी जस्टिस करो—रॉग, राईट। रॉग है तो नॉट और डॉट। ऐसा नहीं होता तो ऐसे होता, ऐसे नहीं करते तो ऐसा होता.... ये गँवाने का खाता जमा करते हैं। कमाई खत्म हो जाती, जमा का खाता खत्म होता। सोचो लेकिन व्यर्थ नहीं। और बचाकर दिखाओ—एक घण्टे से इतना बचाया, ये रिजल्ट दिखाओ कि व्यर्थ चालू हुआ लेकिन हमने चेंज किया और जमा किया। वेस्ट को बचाओ। ये बचत का खाता बहुत खुशी दिलायेगा।

इस वर्ष बापदादा सभी के बचत का खाता भरपूर देखना चाहते हैं। कर सकते हो ना? तो अभी फास्ट गति से करना। क्योंकि टाइम भी तो फास्ट जा रहा है ना! फिर देखेंगे—इसमें नम्बरवन कौन जाता है? बचत का खाता किसका सबसे ज्यादा होता है? बचत के खाते में नम्बरवार कौन-कौन होते हैं, वो लिस्ट निकालेंगे। और अगर आपने संकल्प को कन्ट्रोल किया तो औरों को कन्ट्रोल करने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। कई कहते हैं बोलना नहीं चाहते हैं लेकिन पता नहीं मुख से निकल गया। लेकिन जब बोल निकलता है या कर्म भी होता है तो पहले तो संकल्प आता है। अगर किससे क्रोध भी करना है तो पहले संकल्प में प्लैन बनता है—ऐसे करूँगा, ऐसे बोलूँगा, ये क्या समझता है.... प्लैन चलता है। फिर समय को भी उसमें यूज करते हैं। समय देखते रहेंगे कब आता है, कौन आता है....। तो संकल्प के खजाने के पीछे समय का खजाना भी वेस्ट जाता है। सम्बन्ध है। तो संकल्प को बचाने से समय को, बोल को बचाना स्वतः ही हो जायेगा।

अभी डायमण्ड जुबली मनाने के प्लैन बना रहे हो ना। तो डायमण्ड जुबली में बापदादा एक बच्चों का दृश्य देखना चाहते हैं। जैसे दीपावली होती है ना या कोई भी ऐसा बड़ा उत्सव होता है तो जगह-जगह पर लाइट जगी हुई दिखाई देती है। देखा है ना? आप सबके देशों में बड़ा दिन तो होता होगा, तो कितने बल्ब या कुछ भी चीज़ जगमगाती है, यहाँ देखो तो जगमगा रहे हैं, वहाँ देखो तो जगमगा रहे हैं। ऐसे डायमण्ड जुबली में ये रीयल रुहानी डायमण्ड जगह-जगह पर ऐसे चमकते हुए दिखाई दें जो सब अनुभव करें कि ये कौन-सी चमक है। डायमण्ड तो चमकता है ना। चाहे मिट्टी में भी छिपाओ तो अपनी चमक नहीं गँवायेगा। तो जहाँ भी, जिस भी देश में, जिस भी स्थान पर रहते हो तो सभी को अनुभव हो कि ये जगमगाता हुआ डायमण्ड है। उन्हों को वायब्रेशन आये। जैसे लाइट कहाँ भी जगी हुई होती है, अच्छी सजावट होती है तो आप चाहो, नहीं चाहो लेकिन आपकी दृष्टि को आकर्षित जरूर करेगी। कितने डायमण्ड हैं और सारे वर्ल्ड में फैले हुए हैं। तो सारे वर्ल्ड के अन्दर जगमगाते हुए डायमण्ड अपनी चमक दिखायें—तो क्या दृश्य होगा! अच्छा लगेगा ना! इसका फोटो बापदादा निकालेंगे। क्योंकि आप तो सब जगह-जगह जा नहीं सकते, बापदादा तो जा सकते हैं। ये कैमरा लेकर कहाँ जायेंगे! तो ऐसे चमकते हुए डायमण्ड्स का दृश्य विश्व में दिखाई दे। आरम्भ तो हो जाये कि कुछ चमत्कार है। पहले 'कुछ है' तक पहुँचेंगे, फिर लास्ट में कहेंगे 'सब कुछ ये है'। तो उसका आधार है—ये संकल्प का खाता जमा करना। छोटी-छोटी बात में पुरुषार्थ करके थको नहीं। ईर्ष्या खत्म नहीं होती है, थोड़ा-सा क्रोध अभी भी आ जाता है, बोल निकल जाता है—एक-एक बात में मेहनत नहीं करो। बीज को ठीक कर दो तो झाड़ु आपेही ठीक हो जायेगा। इन सबका बीज तो संकल्प ही है ना। संकल्प श्रेष्ठ तो सब श्रेष्ठ हुआ ही पड़ा है। मेहनत करने की जरूरत ही नहीं है। नहीं तो मुश्किल लगता है ना—इतना अभी करना है! 10 साल हो गये, 20 साल हो गये, 40 साल, 50 साल हो गये, तो भी यह कमजोरी नहीं गई.... अगर फाउण्डेशन को चेक किया तो 4 सेकण्ड भी नहीं लगने चाहिये। फिर देखो आपकी मंसा सेवा कितनी फास्ट होती है! अभी मन्सा शक्ति वेस्ट जाती है, काम में नहीं लगती और जब बचत होगी तो काम में लगेगी ना। फिर मेहनत करने की भी जरूरत नहीं है। चलते-फिरते लाइट हाउस, माइट हाउस अनुभव होंगे। लाइट हाउस एक-एक के पास जाकर नहीं कहता, दूर से ही इशारा करता है—रास्ता ये है। तो आप सभी चमकते हुए डायमण्ड लाइट हाउस, माइट हाउस हो जायेंगे तो विश्व में अंध-कार रहेगा क्या? ये पसन्द है या सिर्फ डायमण्ड जुबली के प्रोग्राम करेंगे और डायमण्ड जुबली पूरी हो गई। ऐसे तो नहीं! पहले स्व, फिर विश्व। देखो अभी भी आप लोगों का कहना और दूसरे बड़े-बड़े मण्डलेश्वर भी कहते हैं लेकिन आप लोगों के कहने का प्रभाव पड़ता है, दिल से लगता है क्योंकि आप करके फिर कहते हो। वो सिर्फ कहते हैं, करते नहीं हैं। तो सभी को फर्क लगता है ना। तो जो स्वयं करके और फिर कहता है उसका प्रभाव अलग होता है। यहाँ भी कहते हो ना कि जो फलानी बहन या भाई कहता है उसका दिल में लगता है और कोई-कोई का सिर्फ भाषण सुन लिया, ठीक है। तो फर्क क्या है? सिर्फ कहना और करके कहना, उसका वाणी पर स्वतः ही प्रभाव हो जाता है। तो डायमण्ड तो सभी हो ना कि कोई सिल्वर है, कोई गोल्ड है, कोई डायमण्ड है? डायमण्ड तो हो ही सिर्फ थोड़ी चमक दिखाई दे। बापदादा को भी खुशी होती है कि बाप के खजाने में कितने डायमण्ड हैं और एक-एक डायमण्ड कितना वैल्युएबुल है। इतने रुहानी डायमण्ड कहाँ मिलेंगे, मिलेंगे किसी के पास? सारे अमेरिका, अफ्रिका में ढूँढकर आओ, मिलेंगे? और यहाँ देखो—कितने रीयल डायमण्ड बाप को मिले हैं। लेकिन ऐसे बनना जो वायब्रेशन की चमक फैले। ऐसे नहीं, अपने आपमें खुश रहो कि मैं तो डायमण्ड हूँ। जो सच्चा डायमण्ड होता है उसकी चमक कब छिप सकती है! कितना भी ऐसे-ऐसे करके दिखाओ तो भी चमक दिखाई देगी। आजकल तो बाहर के जो रीयल डायमण्ड कहते हैं ना वो

रीयल नहीं हैं। आपके स्वर्ग के डायमण्ड रीयल हैं, उसके आगे तो ये कुछ भी नहीं हैं। तो रीयल डायमण्ड की निशानी है कि उसकी चमक फैलेगी। जैसे ये लाइट जलती है तो फैलती है ना! जितनी पॉवरफुल उतना फैलती है। तो वायब्रेशन द्वारा आप रीयल डायमण्ड की चमक फैले। जैसे देखो मधुबन में जब बाप के कमरे में जाते हो तो विशेष अनुभव होता है ना। चाहे जाने, न जाने, निश्चय हो या नहीं हो लेकिन साइलेन्स के वायब्रेशन तो लगते हैं ना! तो आपके साथियों को वायब्रेशन आये कि हाँ ये तो चमक रहे हैं। ऐसे नहीं कहे कि ये तो वैसे के वैसे ही हैं। पहले साथियों को वायब्रेशन आयेंगे तो दूर तक भी जायेंगे।

परिवर्तन शक्ति अच्छी है ना या कम है? जिसको परिवर्तन करना है तो टाइम नहीं लगता है, कि सोचते हो-करेंगे, देखेंगे! करना ही है, चाहे कोई करे या न करे, मुझे करना है। बहानेबाजी सबको बहुत अच्छी आती है। ऐसा कोई नहीं होगा जिसको बहानेबाजी नहीं आती हो। होशियार हैं। बहाने क्या बनायेंगे-ऐसे हुआ तब ऐसा हुआ, इसने किया तब हुआ, वैसे मैं ठीक हूँ, इसने चलते हुए चोट मार दी तो गिर गई, चोट नहीं लगती तो नहीं गिरते लेकिन उसने चोट मार दी। आप अपने को क्यों नहीं बचा सकते! चोट लगाने वाले का काम है चोट लगाना, आपका काम है अपने को बचाना या ये बहाना बनाना कि इसने चोट लगाई तो गिर गये। बचाव करना अपना काम है या दूसरा करेगा? तो ये भी बहाने हैं। ये ठीक हो जायेगा ना तो देखना....। बहुत अच्छी मीठी-मीठी बातें सुनाते हो-कल से ये हो जायेगा ना तो तीव्र पुरुषार्थी बन जायेंगे। कल फिर दूसरी बात आ जाती है तो कहते हैं परसों हो जायेगा। तो बहाने नहीं लगाओ। उड़ती कला की बाजी में नम्बर लो। बहानेबाजी में नम्बर नहीं लो। आपके साथी, सहयोगी बहुत अन्धकार में हो, चारों ओर अंधकार हो तो आप ये नहीं कह सकते कि अंधकार है ना इसलिये मैं रोशनी नहीं दे सकता। अंधकार के लिये ही तो आप रोशनी हो ना! अंधकार था इसीलिये ठोकर खा ली! कहाँ गये लाइट हाउस! अपने को भी लाइट नहीं दे सकते! तो वर्ष बीतता जा रहा है। अभी संकल्प में साधारण संकल्प नहीं करो, प्रतिज्ञा करो। शरीर जाये लेकिन प्रतिज्ञा नहीं जाये। कितना भी सहन करना पड़े, परिवर्तन करना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा नहीं तोड़ो। इसको कहा जाता है दृढ़ संकल्प। सोचते बहुत अच्छा हो, बापदादा भी खुश हो जाते हैं। ये करेंगे, ये करेंगे, ये नहीं करेंगे-खुश तो कर देते हो लेकिन इसमें दृढ़ता द्वारा सदा शब्द एड करो। थोड़ा समय तो प्रभाव दिखाते हो। उसके लिये जैसे पहले सुनाया ना कि अपने को सदा इकॉनॉमी का अवतार समझो। साथ-साथ इकॉनॉमी, एकनामी और एकान्तवासी। ज्यादा बोल में नहीं आओ। एकान्तवासी बनो। देखा जाता है जो बोल में सारा दिन आते हैं उनके संकल्प, समय सब खजाने ज्यादा वेस्ट होते हैं। एकान्तवासी का डबल अर्थ है। सिर्फ बाहर की एकान्त नहीं लेकिन एक के अन्त में खो जाना, एकान्त। नहीं तो सिर्फ बाहर की एकान्त होगी तो बोर हो जायेंगे, कहेंगे-पता नहीं दिन कैसे बीतेगा! लेकिन एक बाप के अन्त में खो जाओ। जैसे सागर के तले में चले जाते हैं तो कितना खजाना मिलता है। अन्त में चले जाओ अर्थात् बाप से जो प्राप्ति हैं उसमें खो जाओ। सिर्फ ऊपर-ऊपर की लहरों में नहीं लहराओ, अन्त में चले जाओ, खो जाओ। फिर देखो कितना मजा आता है। तो सर्व खजानों में इकॉनॉमी करो, और एक बाप दूसरा न कोई, इसको कहते हैं एकनामी। ऐसे स्थिति में रहने वाले अपने सर्व खजानों को जमा कर सकेंगे, नहीं तो जमा नहीं होता है। तो इकॉनॉमी करना जानते हो ना? अच्छा! जिससे ज्यादा प्यार होता है तो प्यार की निशानी होती है अपने से भी आगे बढ़ाना। तो बापदादा भी यही चाहते हैं कि हर बच्चा मेरे से भी आगे हो। यही प्यार की निशानी है। कोई में कोई कमी नहीं रहे। सब सम्पूर्ण और सम्पन्न हों। अगर सम्पन्न हैं तो सम्पूर्ण होंगे। तो डबल विदेशियों से तो डबल प्यार है ना! क्योंकि स्थापना के पार्ट में आप डबल विदेशियों की विशेष एक शोभा है। स्थापना के पार्ट का विशेष श्रृंगार हो। अभी देखेंगे कि जमा के खाते में अभी विदेश नम्बरवन लेता है या भारत वाले नम्बरवन लेते हैं? क्योंकि डबल विदेशियों में नेचरल संस्कार हैं जिस लाइन में भी जायेंगे तो तीव्र गति से जायेंगे, गिरेंगे तो भी तीव्र, चढ़ेंगे तो भी तीव्र। तो इस संस्कार को अभी जमा के खाते में तीव्र गति से लगाओ। छोटे-छोटे जो स्थान हैं ना वो नम्बर और आगे लेना। अच्छा।

आफ्रिका:- आफ्रिका वाले क्या करेंगे? बापदादा को अमेरिका, आफ्रिका बोलना बहुत अच्छा लगता है। तो आफ्रिका वाले क्या कमाल करेंगे? कौन-सा नम्बर लेंगे? सारे आफ्रिका में जगमग हो जायेंगे। डायमण्ड्स चमकेंगे! तो संकल्प करो कि इस वर्ष विशेष दृढ़ता की विशेषता को हर संकल्प में प्रैक्टिकल में लायेंगे। तो आफ्रिका अर्थात् दृढ़ता की विशेषता। पसन्द है? करना पड़ेगा। ऐसे नहीं, पसन्द तो है....। लेकिन बाप को भी पसन्द आ जायेगा ना! तो आफ्रिका वाले इस विशेषता को सदा सामने रखना। चाहे साउथ है, चाहे कोई भी है, लेकिन दृढ़ता को नहीं छोड़ना।

अमेरिका:- अमेरिका वाले कौन-सी विशेषता को अपनायेंगे? (परिवर्तन करेंगे) बहुत अच्छा, इसमें एडीशन करना-फास्ट गति का परिवर्तन। कोई भी संकल्प में एकाग्रता की विशेषता श्रेष्ठ परिवर्तन में फास्ट गति लायेगी। अमेरिका में बाहर का टेन्शन बहुत है ना तो जितना बाहर का टेन्शन है उतना आप लोग एकाग्र, टेन्शन फ्री। एकाग्रता की विशेषता से फास्ट गति का परिवर्तन, ठीक है ना! अमेरिका वालों को पसन्द है! बापदादा के पास तो सबके फोटो हैं। देखेंगे अभी एकाग्र रहते हैं या सारे दिन में पोज बदलते हैं। बापदादा को भी निश्चय है कि होना तो इन्हीं को ही है। होना ही है। ये एकाग्रता की विशेषता सदा साथ रखना। अच्छा!

यू.के., यूरोप:- यू.के., यूरोप वाले क्या करेंगे? वायब्रेशन से सेवा करेंगे। वैसे लण्डन तो लाइट हाउस है ही। तो यूरोप से लाइट

कहाँ तक जायेगी? विश्व तक या सिर्फ यूरोप तक? विश्व तक जायेगी, अच्छा! तो इस विशेषता को और प्रैक्टिकल में लाने के लिये सदा यह स्मृति में रखना कि “सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है।” सफल करना अर्थात् सफलता पाना। तो सफलता की शक्ति है? है ही सफलता, होगी या नहीं होगी, नहीं। तो सफलता के निश्चय की विशेषता सदा साथ रखो। सब जगह होना तो है ही लेकिन हिम्मत रखकरके मदद के पात्र बन, सफलता के जन्म सिद्ध अधिकार को अनुभव करते रहेंगे। होना ही है। ठीक है ना! अफ्रिका, अमेरिका, सब ठीक है। अच्छा!

ऑस्ट्रेलिया:- ऑस्ट्रेलिया क्या करेगा? (इकॉनॉमी का अवतार बनेंगे) अच्छा, आस्ट्रेलिया अवतार बन जायेगा। बहुत अच्छा है। ऑस्ट्रेलिया में जो भी आयेंगे तो ऑस्ट्रेलिया की भूमि अवतारों की भूमि लगेगी। जब एक अवतार इतना कमाल करके दिखाता है तो ऑस्ट्रेलिया में इतने अवतार हैं तो क्या कमाल दिखायेंगे! अच्छी बात है, इसके लिये जो विशेषता धारण करनी है वो है दिव्यता। जितना-जितना दिव्यता की शक्ति या विशेषता हर संकल्प में लायेंगे तो सहज ही अवतार भूमि बन जायेगी। ऑस्ट्रेलिया का नाम ही बदली हो जायेगा—अवतार भूमि। इतने अवतार आ गये! इतनी सारी क्रिश्चियन डिनायस्टी के लिये एक क्राइस्ट अवतार आया। यहाँ तो कितने अवतार होंगे तो अवतार भूमि बन जायेगी। ऑस्ट्रेलिया का भविष्य बहुत ऊंचा है। ऑस्ट्रेलिया के सभी रत्न सदा बापदादा के सामने आते हैं। बीच-बीच में थोड़ी आंख मिचौनी का खेल खेलते हैं। खेल अच्छा लगता है, लेकिन खेल खत्म, तो क्या होगा? सफलता। तो सदा दिव्यता ही अवतार की विशेषता है। दिव्यता की विशेषता से इस संकल्प को स्वरूप में लायेंगे। लाना ही है। अच्छा!

एशिया:- जापान वालों ने तो परीक्षा पास कर लिया ना। जापान वाले भी आये हैं। हाथ उठाओ। तो एशिया वाले क्या करेंगे? (एकान्तवासी बनेंगे, बाबा को प्रत्यक्ष करेंगे) प्रत्यक्षता का सूर्य एशिया से प्रकट होगा, बहुत अच्छा संकल्प है। तो एशिया वाले प्रत्यक्षता का झण्डा वहाँ से पहले लहरायेंगे। अच्छी बात, छोटे सुहान अल्लाह होते हैं ना। देखो कितनी अच्छी हिम्मत रखी—एशिया से प्रत्यक्षता होगी। आपके मुंह में गुलाब जामुन। बहुत अच्छा संकल्प लिया है। तो इस संकल्प को सहज पूर्ण करने के लिये पहले पवित्रता की शमा चारों ओर जलानी पड़े। जैसे वो शमा ले करके चक्कर लगाते हैं ना तो आपको पवित्रता की शमा चारों ओर एशिया में जगमगानी पड़ेगी तभी सब बाप को देख सकेंगे, पहचान सकेंगे। तो पवित्रता की शमा सदा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ जलती रहे। ज़रा भी हलचल में नहीं आये, अचल। जितनी अचल पवित्रता की शमा होगी उतना सहज सभी बाप को पहचान सकेंगे और पवित्रता की जयजयकार होगी। समझा! अच्छा!

मॉरिशस:- मॉरिशियस भी छोटा है लेकिन कमाल करता है। तो मॉरिशियस वाले क्या करेंगे? मॉरिशियस की चमक इतनी होगी जो जल्दी भारत में पहुँचेंगी। नजदीक है ना। तो मॉरिशियस की चमक भारत के कुम्भकरण को जगा देगी ना। कोई नहीं जागता है तो लाइट जलाकर उसको जगा देते हैं ना। तो मॉरिशियस वाले पहले सदा एकरस चमक के लिए सत्यता की शक्ति का झण्डा लहराओ। बाप सत्य है, ज्ञान सत्य है, आत्मा भी सत्य है और ब्राह्मण जीवन भी सत्य है। तो सत्यता का झण्डा पहले लहराना पड़ेगा तब इस सत्यता की विशेषता से चमक बढ़ेगी और भारत क्या, सारे विश्व तक फैलेगी। ठीक है ना!

रशिया:- रशिया वाले भी रेस तो कर रहे हैं। रशिया वाले हाथ उठाओ। वो इकट्ठे ही बैठते हैं। इन्हों का आपस में बहुत प्यार है। एक जायेगा ना, तो सारी लाइन जायेगी। संगठन की शक्ति की प्रैक्टिस इन्हों की अच्छी है। तो रशिया वाले क्या कमाल दिखायेंगे? (अडोलता की शक्ति धारण करेंगे) फिर तो सारी रशिया को किनारा मिल जायेगा। बहुत अच्छा है। तो सारे विश्व में सच्चा सहारा कौन—यह झण्डा लहरायेंगे। क्योंकि सहारे तो समय प्रति समय बहुत आये हैं लेकिन सहारे ने किनारे में नहीं पहुँचाया है। तो सच्चा सहारा कौन है जिससे किनारा मिलना ही है, निश्चित है। तो जो सहारा स्वयं लिया है उस सहारेदाता बाप को प्रत्यक्ष करके सबको किनारे लगायेंगे। अच्छी बात है। तो सहारे दाता कौन—यह झण्डा लहराना।

मिडिल ईस्ट:- मिडिल ईस्ट वाले क्या करेंगे? (असम्भव को सम्भव करेंगे, राष्ट्रपति को लायेंगे) तो विदेश का पहला राष्ट्रपति यही आयेगा। हिम्मत तो अच्छी रखी। अभी पहले असम्भव से सम्भव ये करो कि खुले रूप से सेन्टर खुल जाये। है तो सम्भव ना! लेकिन असम्भव को सम्भव करने वाले युक्तियुक्त, युक्ति के बिना भी मुक्ति नहीं होनी है। इसीलिये युक्तियुक्त ऐसा प्रयत्न करो जो सभी आवाज़ निकालें कि अल्लाह आ गया। हिम्मत अच्छी रखी है। और हिम्मत वालों को मदद तो बाप की है। इसलिये युक्ति से आगे बढ़ते चलो। युक्ति को नहीं छोड़ना। जाकर प्रभातफेरी निकाल लो—ऐसे नहीं करना। अभी तो गुप्त है ना। पाण्डवों के लिए प्रसिद्ध है कि पराये राज्य में गुप्त में रह कार्य किया। तो अभी गुप्त का पार्ट धीरे-धीरे खुलता जा रहा है।

तो सब खुश हो? ज्ञान सरोवर पसन्द है। पसन्द है, ये तो नहीं सोचते हो कि मधुबन में सीट खाली हो तो आ जायें। अगले वर्ष डबल विदेशियों को ज्ञान सरोवर ही देंगे। ठीक है? पसन्द है? (दादियाँ भी रहेंगी) आपके साथ दादियाँ भी रहेंगी। बापदादा तो आ सकते हैं लेकिन हाल ही छोटा बनाया है। हाँ कोई युक्ति से हाल को बड़ा करो, कम से कम 3 हज़ार तो बैठ सकें। कोई इन्वेन्शन करो। बापदादा तो तलहटी में भी आ रहे हैं। हाल सुन्दर बहुत बनाया है लेकिन सिर्फ छोटा बना दिया। देखो दादियाँ अगर वहाँ रहें तो डबल विदेशी मधुबन वाले, मधुबन की टोटल सात भुजायें हैं, सभी वहाँ बैठ तो सकें, मुरली तो सुन सकें। अभी कितने बैठ

सकते हैं? (16-17 सौ) 16-17 सौ तो डबल विदेशी हो जाते हैं। कोई इन्वेन्शन करो, बापदादा आयेंगे। (लण्डन में भी बापदादा आयेंगे?) अभी लण्डन का टर्न पीछे है। पहले लण्डन में बापदादा आयें तो इतनी टिकट कटवायेंगे? कितने चार्टर करेंगे? जम्बो प्लेन करेंगे, वो भी कितने? इतने सारे इकट्ठे करके दिखाओ, मधुबन बनाकर दिखाओ। यहाँ इण्डिया में आते हैं तो दोनों (देश-विदेश) होते हैं। इसीलिये कहा ना कि उसमें थोड़ा टाइम पड़ा है। एयर इण्डिया के जो सारे डिपार्टमेंट हैं ना उनको आप समान बनाओ तो सब टिकट फ्री दें। आखिर तो आप लोगों के ही सब काम में आना है। थोड़ा झण्डा लहराओ तो सब खुद ही ऑफर करेंगे। अच्छा!

(आज बापदादा को ज्ञान सरोवर में आने की एप्लीकेशन दी गई थी लेकिन बापदादा मधुबन में ही आये)

मधुबन निवासियों प्रति:- विशेष मधुबन के कारण ही बापदादा यहाँ आये हैं। क्योंकि मधुबन वालों ने अपने तन-मन से, सम्बन्ध-सम्पर्क से अथक सेवा की है। सेवा में मधुबनवासियों को बहुत अच्छे नम्बर मिलते हैं। लेकिन जैसे सेवा की सब्जेक्ट में अच्छे मार्क हैं ऐसे डायमण्ड जुबली में मधुबनवासी ज्ञान-योग-धारणा इन तीन सब्जेक्ट में भी विशेष नम्बर लेवें। जैसे सेवा के गीत सब गाते हैं, सारा विश्व मधुबन निवासियों की सेवा के गीत गाता है, ऐसे धारणा में और सब्जेक्ट में नम्बर हैं, लेकिन और ज्यादा लेवें। मंजूर है? मधुबन वाले हाथ उठाओ। मधुबन वालों का खजानों के बचत का खाता नम्बरवन हो। होना है। बाकी अच्छे भाग्यवान आत्मायें हैं। मधुबन निवासी बनना भी एक्स्ट्रा भाग्य का मेडल है। क्यों? रहने की सिर्फ बात नहीं है। लेकिन अनेक प्रकार के चांस मधुबन में मिलते हैं। तो मधुबनवासी बनना अर्थात् अनेक गोल्डन चांस लेना। इसीलिये बापदादा मधुबन निवासियों का भाग्य देख हर्षित होते हैं—वाह भाग्यवान, वाह!

हॉस्पिटल:- हॉस्पिटल भी वृद्धि कर रही है और जितना-जितना दिल से सेवा करते हैं, तन से सेवा सभी करते हैं लेकिन यहाँ दिल से सेवा करना अर्थात् दिल की दुआयें देना। तो जो दिल से सेवा करते हैं वो बापदादा के दिल पर नम्बर आगे रहते हैं। रहते तो सभी हैं लेकिन नम्बर आगे और पीछे तो होगा ना! तो दिल से सेवा करने वाले हॉस्पिटल निवासियों को सदा ही नम्बर आगे लेना है। बढ़ रहे हैं, बढ़ते रहेंगे। क्योंकि आवश्यकता भी बढ़नी है। तो मधुबन की, माउण्ट आबू की हॉस्पिटल सबके लिए और आस-पास वालों के लिए भी एक सहारा अनुभव होगी कि अगर सहारा मिलना है तो यहीं मिलना है। तन और मन दोनों का। तो मधुबन की हॉस्पिटल भी अनेक आत्माओं के तन और मन का सहारा है और बनती रहेगी। इसलिये सेवा की मुबारक है। लेकिन और भी मुबारक लेने के लिये प्लैन बनाते चलो। समझा? अच्छा, जो भी हैं तलहटी वाले हैं, म्युजियम वाले हैं, आबू निवासी हैं, पीसपार्क वाले, संगम भवन वाले, ऐसे और भी हैं, देखो मधुबन की भुजायें कितनी हैं? अभी सात भुजायें हैं, ये जो ज्ञान सरोवर है आठवीं भुजा है। तो मधुबन अष्ट भुजा हो गया। तो अष्ट भुजाओं को विशेष याद-प्यार।

भारत तो है ही, अभी भारत का मेला लगना है। बापदादा को भारत ही पसन्द आया, लण्डन का रिट्रीट हाउस नहीं। जब रेस्ट करेंगे ना तो परमधाम के रिट्रीट हाउस में जायेंगे। तो भारतवासियों से विशेष बाप का प्यार है और भारतवासियों को भी विशेष नाज़ है, नशा है कि स्वर्ग भी विशेष तो भारत ही बनेगा और बनाने वाला बाप भी भारत में ही आते हैं। और स्टोरी भी विशेष तो आदि से अन्त तक भारत की है। तो भारत अविनाशी खण्ड है। इसीलिये भारतवासी सबसे नम्बरवन अखण्ड, अचल, अडोल स्थिति वाले बनने ही हैं। अच्छा।

(टीचर्स ट्रेनिंग का प्रोग्राम चल रहा है) प्रोग्राम अच्छा चला? प्रोग्राम तो अच्छा रहा और प्रोग्रेस क्या रही? क्योंकि टीचर्स निमित्त हैं। अगर निमित्त टीचर्स सदा शक्तिशाली हैं तो आने वाले भी सहज शक्तिशाली बनते हैं। अगर टीचर्स हलचल में आती हैं, तो चाहे कोई देखे, नहीं देखे, सुने, नहीं सुने, लेकिन टीचर्स का वायब्रेशन ऑटोमेटिक जाता है। आप देखेंगे जैसी टीचर होगी वैसी विशेषता स्टूडेन्ट में भी होगी। अगर कोई रमणीक टीचर है तो स्टूडेन्ट भी रमणीक होंगे, अगर टीचर ऑफिशल है तो स्टूडेन्ट भी ऑफिशल होंगे, योग की इन्ट्रेस्ट ज्यादा है तो स्टूडेन्ट भी ऐसे होंगे, अगर कल्चरल प्रोग्राम करने वाली है तो स्टूडेन्ट भी ऐसे होंगे। तो टीचर्स विशेष आधार है। तो टीचर्स के फीचर्स काम करते हैं। बोले, नहीं बोले, लेकिन उसके फीचर्स बोलते हैं, छिप नहीं सकते। तो टीचर्स को समझना है कि हम फाउन्डेशन हैं, निमित्त हैं। फाउण्डेशन वैसे तो बापदादा है लेकिन सेवा प्रति निमित्त हैं। तो निमित्त भाव, करनकरावनहार की स्मृति—ये टीचर्स को सदा ही सहज आगे बढ़ाती है। तो टीचर्स माना सिर्फ मुख से सेवा करने वाले नहीं, टीचर्स अर्थात् अपने फीचर्स से भी सेवा करें। ऐसे दिव्य फीचर्स, मुस्कराते हुए फीचर्स, अचल-अडोल के फीचर्स वो सेवा करते हैं। तो सिर्फ ये नहीं देखो—कोर्स तो अच्छा करा लिया, सप्ताह कोर्स भी करा लिया, पॉजिटिव का भी करा लिया और भी सारे पाठ पढ़ा लिये लेकिन फीचर्स से सेवा की? फीचर्स से सेवा अर्थात् प्रैक्टिकल लाइफ में बल देना। तो प्रैक्टिकल लाइफ का बल दिया या सिर्फ पाठ पढ़ाया? तो डबल सेवाधारी बनना अर्थात् नम्बरवन टीचर बनना।

अच्छा, जो भी जहाँ से आये हो, सबको बहुत-बहुत आने की मुबारक हो और याद-प्यार। क्योंकि सभी को मालूम है कि डबल विदेशियों की इस वर्ष की सीज़न का ये लास्ट चांस है। तो सभी ने अपने पत्र और कार्ड भी भेजे हैं। बापदादा के पास तो वहाँ लाइन लगी हुई है, आकर देखना। तो जो भी कार्ड या याद-प्यार भेजते हैं, अपने अवस्था के बारे में समाचार देते हैं, सुनाया ना कि डबल

विदेशी छिपाते नहीं हैं, छोटी-सी बात भी होगी ना तो सच सुना देंगे, छिपाते नहीं हैं। तो सच्ची दिल की विशेषता है। इसीलिये पत्रों में भी समाचार बहुत देते हैं। सेवा का भी देते हैं, अवस्था का भी देते हैं, खुशी का भी देते हैं और फिर ग्रीटिंग्स के कार्ड भी बहुत भेजते हैं। बापदादा के पास सबकी ग्रीटिंग्स बड़े दिल में समा जाती है। जिन्होंने भी अपने विशेष नाम से कार्ड भेजे हैं या पत्र भेजे हैं या सन्देश भेजे हैं, जो आते हैं वो भी सन्देश लेकर आते हैं—हमारे क्लास वालों ने बहुत-बहुत याद दी है, तो जिन्होंने सन्देश भेजा है उन सभी को बापदादा आने वाले डायमण्ड जुबली की विशेष डायमण्ड बनने की एडवांस मुबारक दे रहे हैं।

चारों ओर के रुहानी सच्चे डायमण्ड आत्माओं को, सदा इकॉनॉमी के अवतार विशेष आत्माओं को, सदा एकनामी, एकान्तप्रिय विशेष आत्माओं को अपने वायब्रेशन वृत्ति की चमक से विश्व में प्रकाश फैलाने वाले चमकती हुई आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादियों से – सब कार्य सफल हुए ही पड़े हैं। सफलता स्वरूप आत्मायें निमित्त हो। आप सभी निमित्त आत्मायें कौन-से सितारे हो? सफलता के सितारे हो ना! ये सारा संगठन सफलता के सितारे हैं। यह सारा संगठन ब्राह्मण परिवार के तारा मण्डल में सफलता के सितारे चमकते हुए हैं।

(बापदादा ने दादी जी को अपने पास बिठाया) सब आपको देखकर खुश होते हैं। मीठी-मीठी ईर्ष्या तो नहीं होती, हम भी बैठें! प्यार है, ईर्ष्या नहीं है। तो प्यार अच्छा लगता है ना! क्योंकि आप सबके आगे साकार में सेम्पल तो यही हैं ना तो सेम्पल को देख करके सौदा करना सहज होता है। बापदादा ये नहीं समझते हैं कि ये 10-12 बैठे हैं, बापदादा सभी के साथ हैं। निमित्त ये हैं लेकिन आप सभी साथ हो। साथ का वायदा अन्त तक है और साथ ही चलेंगे। नीचे बैठे हो या ऊपर बैठे हो, और ही सामने बैठे हो। अच्छा है डबल विदेशियों ने भी डबल विदेशियों की सेवा अच्छी की। जो निमित्त बने हैं उन्होंने अच्छी सेवा की। तो ऐसा बनाया है जो कभी कोई रोयेगा नहीं? मन में भी नहीं! कि छिपकर बाथरूम में रोकर आयेंगे? रोना बन्द हो गया ना! जब परीक्षा आती है ना फिर देखो थोड़ा-सा चेहरा बदलता है। फिर भी बहुत अच्छे हो। थोड़ा-थोड़ा रोते हो, खेल दिखाते हो फिर भी अच्छे हो। बाप को पहचान लिया—ये कमाल कम नहीं की! डायमण्ड तो हैं और भी जो कुछ कमी हो वह सम्मन्न करनी है। डायमण्ड जुबली मनाने का अर्थ सिर्फ ये नहीं है कि सिर्फ प्रोग्राम कर लिये। डायमण्ड बन डायमण्ड बनने का मैसेज देना है। अपने प्रत्यक्ष प्रमाण से सेवा करना—ये है डायमण्ड जुबली। नहीं तो दूसरे को डायमण्ड बनाया और स्वयं डायमण्ड नम्बरवन नहीं तो देखने वाले क्या कहेंगे? अच्छा।

विदेश मुख्य टीचर्स बापदादा के सामने आई तो बापदादा ने सभी से पूछा:-

ये तो नहीं सोचते हो कि इण्डियन को ही बुलाया जाता है। कभी ये सोचते हो कि इण्डियन बहनों को ही क्यों आगे किया गया है? संकल्प आता है? नहीं आता? थोड़ा-थोड़ा! देखो, आपके पालना के लिये भारत से ही भेजना पड़ा ना। और भारत से आये तब आप आगे आये। वैसे विदेश से भी जो विशेष टीचर्स निकली हैं वो भी बहुत अच्छी निकली हैं, और अच्छी सेवा कर रही हैं। ऐसे नहीं है जो स्टेज पर हैं वो बापदादा के सामने हैं। चाहे नीचे बैठे हैं चाहे अपने स्थान पर बैठे हैं लेकिन बापदादा के साथ हैं। इन्हों के साथी आप सभी हो। अगर आप अपनी भाषा से सेवा नहीं करते तो वृद्धि भी नहीं होती। इतने सेन्टर्स नहीं खुल सकते थे। यह तो गिनती वाले हैं। इतने सेवाकेन्द्र जो खोले हैं वो किसने खोले हैं? आप लोगों ने ही तो निमित्त बनकर खोले हैं, इसीलिये निमित्त और थोड़े ही बैठ सकते हैं तो सेम्पुल थोड़ों को बिठाया जाता है, लेकिन हो आप सभी। समझा! बापदादा ने देखा है कि जिस भी तरफ इण्डियन सिस्टर नहीं हैं तो मांगनी करते हैं इण्डियन दो। अच्छा, तो सभी ने अच्छी सेवा की है इसकी मुबारक। अच्छा सम्भालते हैं। इसीलिये अभी केसेस कम होते हैं। पहले होते थे। अभी सम्भल गये हैं और सम्भाल लेते हैं। दोनों ही बातें हैं। विदेश के सेवा-धारियों की भी बहुत अच्छी माला है। जैसे दादियों में प्यार है तो निमित्त बनने वाली आत्माओं में भी प्यार है। अच्छा, सब खुश है ना? तो बापदादा भी सभी बच्चों के लिये गीत गाते हैं—वाह बच्चे वाह! अच्छा।

परमात्म मिलन मेले की सौगात – ताज, तख्त और तिलक

आज बेहद का बाप बेहद में सभी बच्चों को देख रहे हैं। बेहद का बाप है और आप सभी भी बेहद के मालिक सो बालक हो। बापदादा सभी स्नेही सहयोगी बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं और बच्चे बाप को देखकर हर्षित हो रहे हैं। बाप को ज्यादा खुशी है वा बच्चों को ज्यादा खुशी है—क्या कहेंगे? दोनों को! इसको कहा जाता है परमात्म मिलन मेला। मेले तो बहुत होते ही हैं लेकिन परमात्म मिलन मेला एक ही संगमयुग पर होता है। सारे कल्प में नहीं हो सकता है। अब हो रहा है और होगा। आप सबको भी मेला अच्छा लग रहा है ना! बापदादा तो बच्चों के भाग्य को देख हर्षित होते हैं और दिल में गीत गाते हैं—वाह बच्चे वाह! जो भाग्य स्वप्न में भी न था, संकल्प में भी नहीं था लेकिन अब साकार में श्रेष्ठ भाग्य अनुभव कर रहे हैं। हर एक के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर चमक रही है। सभी चमकते हुए सितारे हो ना? अपना ये श्रेष्ठ भाग्य स्मृति में रहता है ना! क्यों श्रेष्ठ भाग्य है? क्योंकि भाग्य विधाता द्वारा आप भाग्यवान आत्माओं का दिव्य ब्राह्मण जन्म हुआ है। बाप को भी भाग्य विधाता कहते हैं और ब्रह्मा को भी

भाग्य विधाता कहते हैं। और आप सबका जन्म बापदादा द्वारा हुआ है। तो जिसका बाप स्वयं भाग्य विधाता है उसका भाग्य कितना श्रेष्ठ होगा! परमात्म मिलन मना रहे हो ना! (डबल फॉरेनर्स से) ये भी मना रहे हैं! बेहद के मेले में अगर डबल विदेशी नहीं होते तो बेहद का नहीं कहा जाता। तो आप लोगों का भी विशेष पार्ट है, जो बाप और सर्व बच्चे देख-देख हर्षित होते हैं। भाग्य विधाता द्वारा जन्म होना—ये सबसे नम्बरवन भाग्य है। साथ-साथ सारे कल्प में किसी भी जन्म में एक ही परमात्मा बाप भी बने, शिक्षक भी बने, सतगुरु भी बने और सर्व सम्बन्ध भी निभाये—ऐसा सतयुग से कलियुग तक किसको भाग्य मिला है? और अभी आपको मिला है! अभी आप निश्चय और नशे से कहते हो कि हमारा पालनहार परम आत्मा है। दुनिया वाले कहने मात्र कहते हैं कि परमात्मा ही पाल रहा है लेकिन आप प्रैक्टिकल अनुभव से कहते हो कि परमात्मा बाप है और बाप ही पालनहार है, पालना कर रहे हैं! नशा है ना या थोड़ा-थोड़ा भूल जाते हो? चलते-चलते अपने श्रेष्ठ भाग्य को साधारण समझ लेते हो, है श्रेष्ठ लेकिन समझ साधारण लेते हो। इसलिए जो नशा और खुशी की झलक सदा होनी चाहिये, वह नहीं रहती। वैसे एक सेकण्ड भी भूल नहीं सकते लेकिन कॉमन समझ लेते हो कि बाप मिल गया, हमारा हो गया, हम भी बाप के हो गये..... जब हमारा है तो नशा (फ़खुर) होना चाहिये ना? लेकिन कभी ऊंचा तो कभी मध्यम, कभी साधारण हो जाता है। सोचो, हमारा बाप परम आत्मा है! और फिर शिक्षक डायरेक्ट परम आत्मा है! क्या शिक्षा दी? आपको क्या बना दिया? त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ। ऐसी कोई पढ़ाई पढ़ता है! अभी तक ये डिग्री सुनी है? जज बैरिस्टर, डॉक्टर, इंजीनियर ये तो सब डिग्रीज देखी हैं लेकिन त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री, नॉलेजफुल....ऐसी डिग्री देखी है? द्वापर से कलियुग तक किसको मिली है? आपको मिली थी? आपने भी तो 63 जन्म लिये हैं। तो न किसको मिली है, न मिलनी है। ऐसा शिक्षक हमारा है। साइंस वाले साइंस की कितनी भी योजना करें तो भी त्रिलोक तक नहीं पहुँच सकते। तीनों लोको का नॉलेज प्राप्त हो नहीं सकता। और आपमें तो 5 वर्ष का बच्चा भी तीन लोको की नॉलेज देता है! वो भी फ़लक से कहेगा—हाँ, सूक्ष्म वतन है, मूल वतन है। तो परम आत्मा शिक्षक भी है। श्रेष्ठ शिक्षा से ये डिग्री तो प्राप्त कराई लेकिन दुनिया में सबसे बड़े ते बड़ा पद राज्य पद होता है। तो पढ़ाई से पद भी मिलता है ना! तो आपको राजा बनाया है? अभी राजा हो या बनना है? हो राजा और बैठे पट में हो! पक्का मकान भी नहीं, टेन्ट में बैठे हो! तो देखो श्रेष्ठ में श्रेष्ठ पद राज-पद है। अभी भी स्वराज्य अधिकारी हो और भविष्य में भी विश्व राज्य अधिकारी बनना ही है। ये पक्का है ना? किसको राज्य करना है? आप राज्य करेंगे कि आपके ऊपर कोई राजा राज्य करेगा? नहीं। ये सब इतने राजा बन जायेंगे! इतने सब राज्य करेंगे! प्रजा भी तैयार की है या अपने ऊपर ही राज्य करेंगे? तो अपना भाग्य देखो—परम आत्मा मेरा शिक्षक है, राज्य पद देने वाला। और फिर सतगुरु बन..... गुरु क्या करते हैं? मन्त्र देते हैं ना। तो सतगुरु ने क्या मन्त्र दिया? मनमनाभव। सतगुरु द्वारा महा-मन्त्र भी मिला और सर्व वरदान भी मिले। कितने वरदान मिले हैं? वरदानों की लिस्ट देखो कितनी लम्बी है! रोज़ वरदान मिलता है ना! कितने समय से मिल रहे हैं! इतने वरदान कोई भी फालोअर को कोई गुरु दे ही नहीं सकते। ऐसा सतगुरु जो रोज़ वरदान दे, ऐसा देखा? अभी नशा है ना! (हाँ जी) बहुत अच्छा। सदा रखना। ऐसे नहीं, यहाँ से बस में जाओ तो नशा उतरना शुरु हो जाये। सदा बढ़ता रहे।

बापदादा सभी बच्चों को सदा ही हर सब्जेक्ट में नम्बरवन देखना चाहते हैं। तो नम्बरवन हो कि अभी बनना है? नशे से कहो कि हम नहीं होंगे तो कौन होगा! विदेशियों को डबल नशा है ना! अच्छा है। बाप भी खुश होते हैं कि एक-एक मेरा बच्चा राजा बच्चा है। प्रजा नहीं है। प्रजा तो पीछे आने वाली है। आप तो फिर भी लक्की हो जो इतना भी मिलने का चांस मिला है। टेन्ट में रहना पड़ा तो क्या हुआ। मिट्टी पर तो नहीं सो रहे हो ना, गदले पर सो रहे हो। ब्रह्मा भोजन तो अच्छा मिलता है ना? मिट्टी वाला तो नहीं मिलता? प्यार से खाते हो ना? थोड़ा बहुत तो होता ही है, होना ही है। क्यों? माया और प्रभु का खेल साथ-साथ चल रहा है। अगर परमात्मा द्वारा मेला हुआ तो माया भी झमेला जरूर करती है। आपका काम है मेला करना, उसका काम है झमेला करना। तो झमेला भी हुआ और मेला भी हुआ। (किसी ने कहा आंधी चली) कोई बात नहीं। आपके पुरुषार्थ की आंधी है और ये हवा की आंधी है। घबराते तो नहीं हो ना कि क्या हो गया? नहीं, आंधी आये या बरसात आये, कितनी भी हलचल हो लेकिन आपका मन अचल है ना? मातायें घबरा तो नहीं गईं, टेन्ट उड़ गया, क्या करें? थोड़ा-थोड़ा घबराये, क्या होगा, तबियत अच्छी रहेगी, नहीं रहेगी? कुछ भी हो भक्ति से तो धक्के और मेहनत कम ही है ना। भक्ति के धक्के तो नहीं खाते हो ना, मजे में रहते हो ना! तो ये मेला अच्छा लगा या झमेला देखकर घबरा गये? नहीं, कोई नहीं घबराये? एक-दो तो घबराये होंगे? मजा आ रहा है? और भी दो दिन रखें? अच्छा। बापदादा भी माया का झमेला देख चक्कर लगाते रहते हैं। खेल देखते हैं—बच्चे क्या करते हैं और माया क्या करती है?

बापदादा को बच्चों का स्नेह देख खुशी है। स्नेह ने मेला रचाया है। बाप का भी स्नेह है तो बच्चों का भी स्नेह है, दोनों मिल गये तो क्या हो गया? मेला। दृश्य भी कितना अच्छा लग रहा है। ऐसा कभी सोचा था—इतना बड़ा परिवार मिलेगा और इतना परिवार किसको होगा? आपके घर कितने हैं? (एक है) और आपके सेवा के स्थान कितने हैं? (अनेक हैं) तो उसको भी तो बाबा का घर कहते हो ना! तो बाबा का घर आपका घर है। दुनिया कहती है घरबार छोड़ते हैं और आपने कितने घर बनाये हैं! गिनती नहीं कर

सकते हो, याद रखना पड़ता है। तो ये छोड़ना नहीं है, बनाना है। और परिवार को छोड़ा है या परिवार इतना बड़ा बनाया है जो मिलना ही मुश्किल होता है। सारे ब्राह्मण जितने भी जहाँ भी हैं, एक स्थान पर मिल सकते हैं? मुश्किल होगा ना। क्योंकि दूसरे का राज्य है ना, अपना राज्य तो नहीं है। लेकिन बाप मिला, बेहद का परिवार मिला। तो बेहद को याद करने से बेहद की खुशी, बेहद का नशा होगा। अगर हृद में समझते हैं—मैं तो फलाने देश में हूँ, फलाने देश का हूँ, फलाने ज़ोन का हूँ तो हृद होती है लेकिन ये तो निमित्त मात्र निशानी के लिये कहते हैं—ये फलाना ज़ोन, ये फलाना स्थान। बाकी अपने को बेहद का समझते हो ना। नियम भी रखने पड़ते हैं। कई ऐसे भी सोचते हैं कि ये क्या बैज लगाओ तभी खाना मिलेगा। आपको खाने पर तंग करते हैं ना? लेकिन ये करना ही पड़ता है। क्योंकि कायदे में फायदे हैं। ये बंधन नहीं है लेकिन विघ्नों से निर्बन्धन बनाने का साधन है। ये क्या नई बात निकाली—ये नहीं सोचना। संकल्प तो बाप के पास पहुँचते हैं ना। लेकिन मर्यादा पुरुषोत्तम आप ही हो ना। या सिर्फ बड़ी दादियां मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, आप फ्री हो? मर्यादा पुरुषोत्तम अर्थात् मर्यादा के अन्दर रहने वाले, चलने वाले। हाँ जी का पाठ पक्का है ना? अच्छा! और जब कोई बात हो जाती है तो हाँ जी होता है या ना जी भी होता है? जब कोई ऐसी बात करते हैं तो हाँ जी के बदले फिर ना जी में इतने पक्के हो जाते हैं जो बाप भी कहे तो भी नहीं सुनेंगे। जैसे स्थापना में जब छोटे-छोटे बच्चे आये तो बापदादा उन्हीं को पाठ पक्का कराने के लिये हमेशा कहते रहे कि ना करना माना नास्तिक, हाँ करना माना आस्तिक। तो आप सब कौन हो? आस्तिक हो। नास्तिक तो नहीं हो ना! कभी-कभी बन जाते हो। खेल करते हैं! माया के भी नॉलेजफुल हो गये! क्योंकि माया भी नॉलेजफुल है। गिराने में माया नॉलेजफुल है और उड़ने में आप नॉलेजफुल हो। तो माया भी देखती है कि इसकी उड़ान थोड़ी नीचे-ऊपर हो गई है तो देख करके वार करती है। और आप नॉलेजफुल होने के कारण जान जाते हो, तो हार नहीं खाते हो लेकिन विजय का हार गले में पड़ा। सबके गले में विजय की माला है या कभी-कभी उतार देते हो? अच्छा।

पीछे वाले मौज़ में हो? यह भी मधुबन की ही एरिया हुई ना, तो सिवाए मधुबन के और कहाँ इतना बड़ा मेला हो सकता है? नहीं हो सकता ना। तो मधुबन है बेहद का घर। यहाँ सब बेहद है और और जगह फिर भी सब देखना पड़ता है और यहाँ संकल्प किया और हो गया। तो सभी अपने भाग्य द्वारा परमात्म मेले में पहुँच गये। जो पहले बारी इस कल्प में आये हैं वो हाथ उठाओ। (करीब 13-14 हजार भाई बहिनों की सभा है, उसमें बहुत से नये भाई-बहिन हैं) अच्छा है, टी.वी. में देख रहे हो। ये भी देखो मैजारिटी साइन्स के साधन अभी-अभी निकले हैं। कुछ वर्ष पहले ये साइन्स के साधन भी नहीं थे। लेकिन किसके लिये निकले हैं? आपके लिये। बापदादा भी साइन्स वाले बच्चों को मुबारक देते हैं। क्योंकि बाप के बच्चे उससे सुख तो ले रहे हैं ना। तो कितना अच्छा लग रहा है। लेकिन बापदादा अब क्या चाहते हैं? स्थापना हुए कितने वर्ष हो गये? डायमण्ड जुबली मनाने की तैयारी कर रहे हो। तो बापदादा ने अभी सभी बच्चों को राजा बच्चे कहा ना, सब राजा हैं। राजा तख्त नशीन होता है ना? राज्य की निशानी ताज, तख्त और तिलक होता है। तो बापदादा इस वर्ष में चाहे नये हो, चाहे पुराने—अगर नये भी हो तो समाप्ति का समय तो नयों के लिये भी समीप है तो पुरानों के लिये भी समीप है। ऐसे नहीं समझना कि हमारे को भी 60 वर्ष शायद मिलने हैं। नहीं, आपको मेकप करना है। अगर लास्ट आये हो तो फास्ट जाना है। लेकिन सम्पन्न होने का, समाप्ति का समय सबका एक ही है इसलिये चाहे नये हो या पुराने हो लेकिन मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ—सदा स्मृति का तिलक लगा हुआ ही है। कभी मिट जाये, कभी लगा हुआ हो..... नहीं, राज्य अधिकारी अर्थात् तिलकधारी—इस स्मृति का तिलक अविनाशी रहे, साधारण नहीं। मैं तिलकधारी हूँ, मैं विश्व कल्याण के जिम्मेवारी का ताजधारी हूँ। कितना बड़ा विश्व है और आप सभी विश्व कल्याणकारी हो। अकेला बाप नहीं है। बाप के साथी आप सभी हो। तो विश्व कल्याण की जिम्मेवारी के ताजधारी और सदा बाप के दिलतख्तनशीन। नीचे नहीं आना। सदा तख्तनशीन। वैसे भी देखो जो बहुत प्यारे होते हैं, लाडले बच्चे होते हैं तो माँ-बाप उनको मिट्टी में जाने नहीं देते, धरनी पर पांव रखने नहीं देते। तो आप कितने लाडले हो! लाडले हो या और आने वाले हैं? आप हो। तो तख्त को छोड़ करके साधारण स्वरूप, साधारण संकल्प.... इस मिट्टी में या धरनी में पांव नहीं रखो। बुद्धि रूपी पांव सदा तख्तनशीन हो। परमात्म बाप के बच्चे हो। महात्मा, धर्मात्मा के नहीं हो, परम आत्मा के हो। अभी तो सब नशे में ठीक हो, वो तो दिखाई दे रहा है लेकिन सदा रहेगा ना? कि थोड़ा-थोड़ा रहेगा फिर युद्ध करेंगे, फिर विजय प्राप्त करेंगे—ऐसे तो नहीं? ब्राह्मण हो या क्षत्रिय हो? ब्राह्मण हो। क्षत्रिय नहीं हो, युद्ध नहीं करते हो? कि कभी ब्राह्मण बन जाते हो, कभी क्षत्रिय बन जाते हो? अगर माया से युद्ध करनी पड़ती है तो क्षत्रिय हुए। ब्राह्मण माना विजयी और क्षत्रिय माना युद्ध करने वाले। बापदादा को तो कभी-कभी बच्चों पर बहुत रहम आता है, बैठते योग में हैं और करते युद्ध हैं! कहेंगे एक घण्टे योग लगाया लेकिन एक घण्टे में युद्ध कितना समय चली और योग कितना समय रहा? अगर किसी भी कारण से अनुभूति नहीं होती है तो अवश्य ही युद्ध की स्टेज है। बापदादा कहते हैं—योगी बच्चे हैं और बन जाते हैं योद्धे बच्चे! कब तक युद्ध करेंगे? अन्त तक युद्ध करेंगे! लुट्टी दे दें—भले युद्ध करो। लुट्टी चाहिए? नहीं चाहिये? फिर करते क्यों हो? कमजोर हो जाते हो तो माया इतना अधीन बना देती है जो चाहते नहीं हो लेकिन कर लेते हो। जैसे कोई-कोई सर्वेन्ट बहुत भोले होते हैं तो मालिक उसे अधीन बना लेते हैं, सर्वेन्ट जो नहीं कर सकता उसके लिए भी मालिक कहता है करो, नहीं तो नौकरी क्यों करते हो। माया भी ऐसे करती है, आप चाहते नहीं हो लेकिन कमजोर होने के कारण माया के अधीन बनना पड़ता है। तो उस

समय योगी हो या योद्धे हो? योगी तो नहीं कहेंगे ना? तो बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा योगी बच्चा हो, युद्ध वाला नहीं। बापदादा को बच्चों के युद्ध की मेहनत अच्छी नहीं लगती। परमात्म बच्चे तो सदा मौज में रहने वाले हैं, मजे में रहने वाले हैं, युद्ध की मेहनत वाले नहीं। तो क्या बनेंगे? योगी बच्चे या योद्धे बच्चे? योगी बनेंगे या थोड़ा-थोड़ा युद्ध करना अच्छा है? कहने में तो हाँ-हाँ करते हो और जब करते हो तो उस समय फोटो निकलता है। तो इस वर्ष सभी का चार्ट हो-सदा राज्य अधिकारी। अधीनता समाप्त। 63 जन्म तो अधीन रहे ना, अभी एक जन्म अधिकारी बनने का मिला है, उसमें भी अधीन रहेंगे क्या? अधीन बनने का एक जन्म और एक्स्ट्रा दे दें, मज़ा ले लो। नहीं चाहिये! अधिकार तो मिला है सिर्फ अधिकार को सम्भालो। अलबेले नहीं बनो, कमजोर नहीं बनो। कहने में देखो क्या कहते हो कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ। कोई कहता है मैं मास्टर कमजोर हूँ? लेकिन बनते क्या हो? मास्टर सर्वशक्तिमान और कमजोर! तो अच्छा लगता है? सुनना भी अच्छा नहीं लगता!

तो इस वर्ष की रिजल्ट में क्या करेंगे? अभी तो डायमण्ड जुबली मनाने की तैयारी कर रहे हो ना! आप भी मनायेंगे या जिनको 60 वर्ष हुआ है वो मनायेंगे? क्योंकि ये स्थापना की डायमण्ड जुबली है। तो स्थापना में आप सभी हो या नहीं? क्योंकि अभी तो मिक्स आये हैं, कोई तो दो-चार वर्ष के हैं, कोई दो-चार मास के भी हैं, लेकिन डायमण्ड जुबली सभी की है क्योंकि स्थापना की डायमण्ड जुबली है। तो धूमधाम से मनायेंगे ना! मनाने का अर्थ क्या है? कान्फेन्स करना, प्रोग्राम करना कि बनना? मनाना अर्थात् बनना और बनाना। सिर्फ मनाना नहीं, बनना। देखो आप सभी इस सीज़न के समाप्ति में भोग डालने वाली आत्मायें हो। तो कितना अच्छा चांस मिला है। तो मेला अच्छा लगा? अभी आप सबके उलहने तो पूरे हो गये ना! चांस नहीं मिलता, चांस नहीं मिलता-ये उलहना तो पूरा हुआ ना। देखो, बच्चों के प्यार में जहाँ बच्चे वहाँ आना पड़ा। क्योंकि बाप जानते हैं कि आधा कल्प बच्चों ने याद किया-आओ-आओ। बाप तो अपने समय पर आये, आपके चिल्लाने पर नहीं आये लेकिन सुनते तो हैं ना। तो आपने आधाकल्प कहा आओ-आओ और बाप ने अभी कहा मेले में आओ-आओ। सभी खुश हो? सब तन्दुरुस्त भी हो या बीमार भी कोई टेन्ट में सोया हुआ है। आप तो यहाँ बैठे हुए हैं और आपके साथी? कोई नहीं। इससे सिद्ध है सब इतने तन्दुरुस्त हैं माना ब्रह्मा भोजन बहुत अच्छा मिला है। अभी तो फिर भी देखो नीचे सोने का प्रबन्ध मिला है आगे चलकर विनाश के समय हो सकता है बांहों को ही तकिया बनाना पड़े। मिट्टी पर आराम से सो जायेंगे, अगर पत्थर-कंकड़ लगेंगे तो साफ कर लेंगे, किनारे कर लेंगे। अभी तो बापदादा ने देखा, बापदादा ने चक्कर लगाया है, बहुत अच्छा प्रबन्ध किया है और उसमें भी गुजरात वालों को पद्म गुणा मुबारक। बहुत अच्छा किया है। दिल से मेहनत की है। तो जिन्होंने दिल से मेहनत की है उनको बापदादा मेहनत की पद्म गुणा मोहब्बत दे रहे हैं। हाथ उठाओ जिन्होंने सेवा में निमित्त बनकर सेवा की है? गुजरात वालों ने की है ना! गुजरात वाले हाथ उठाओ। बहुत अच्छी की है। देखो पतली-पतली रोटी तो मिलती हैं। जली हुई तो नहीं मिलती? बापदादा ने रिजल्ट सुनी है कि ब्रह्मा भोजन बहुत अच्छा बनता है। अभ्यास तो हो गया ना पट में सोने का! अच्छा है, गर्मी की सीज़न में अगर टेन्ट भी उड़ गया तो हवा के लिए छत खाली हो गई ना। नेचरल खिड़कियाँ बन गईं। लेकिन दूसरे गुप को ऐसा नहीं मिलेगा, उनके लिये प्रबन्ध अच्छा करेंगे। और मधुबन वालों ने, जिन्होंने बहुत अच्छा सहयोग दिया वो हाथ उठाओ। मेहनत अच्छी की। (दादी ने की) दादी तो निमित्त है ना। दादी को सारे दिन में कितनी मालायें पड़ती हैं! दुआओं की मालायें एक के पीछे एक पड़ती हैं जो उतारनी भी नहीं पड़ती। फूलों की 10 माला अगर गले में पड़ गई तो गला ही थक जायेगा और ये दुआओं की माला कितनी हल्की और कितनी प्यारी है! जो सेवा करते हैं, वैसे तो सभी ने सहयोग दिया है, बिना सहयोग के कोई कार्य नहीं होता। सबको हाँ जी करना ही है, करो, ये सहयोग का हाथ बढ़ाया तभी ये कार्य हुआ। अगर दो-चार भी सहयोगी ना ना करते तो मेला नहीं हो सकता। लेकिन मधुबन वालों ने, चाहे तलहटी वालों ने, चाहे हॉस्पिटल वालों ने वा चारों ओर के देश वालों ने, ज्ञान सरोवर वालों ने भी मदद की है। बलिहारी ज्ञान सरोवर की, जो आपको भोजन अच्छा मिला। (ज्ञान सरोवर का स्टीम सिस्टम तथा बड़े बर्तन आदि मेले में यूज़ हो रहे हैं) क्योंकि आप सबने ज्ञान सरोवर बनाया है ना, तो जो बीज डाला उसका फल खा रहे हैं। प्रत्यक्षफल है ना, तो प्रत्यक्षफल मिला है और बना भी प्यार से रहे हैं। ज़रा भी थकावट के चिन्ह चेहरे पर नहीं हैं। कमाल तो ये है ना! काम करे और प्यार से करें। घुटके खाकर काम करे तो वो काम, काम नहीं है। तो मेले में जब जाते हैं ना तो कोई न कोई चीज़ निशानी जरूर ले जाते हैं। इस परमात्म मेले से क्या निशानी ले जायेंगे? ताज, तख्त और अविनाशी तिलक की निशानी सभी साथ में ले जाना। ऐसे नहीं करना कि तीन चीज़ों में से एक चीज़ रह गई दो साथ चली। यहीं तो नहीं छोड़कर जायेंगे? ले जाना आता है? एनाउन्स करते हैं ना सीज़न में, लॉस्ट प्रापर्टी रोज़ इकट्ठी होती है, तो ऐसे नहीं छोड़कर जाना। मैं ब्राह्मण आत्मा हूँ, मैं सर्वश्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हूँ-इस निश्चय और नशे में सदा ही रहना। यह सिर्फ बुद्धि में नहीं हो लेकिन चलन और चेहरे में दिखाई दे, जो भी आपके सम्पर्क में आये वो अनुभव करे कि ये साधारण नहीं हैं लेकिन न्यारे हैं। और अलौकिक न्यारापन ही तो प्यारा लगता है ना! तो न्यारा बनना आता है?

भारत के चारों तरफ से पहुँचे हैं। सब तरफ से आये हैं या कोई रह गया है? सभी ज़ोन आ गये हैं। तो जैसे आने में एवररेडी होकर पहुँच गये, ऐसे ही अगर बापदादा ऑर्डर करे कि अभी एक सेकण्ड में वापस घर जाने की तैयारी करो तो कर सकते हो? कि याद आयेगा टेलीफोन कर दें कि हम जा रहे हैं, प्रवृत्ति वाले याद करेंगे? ऐसी प्रैक्टिस करो-एक सेकण्ड में आत्मा शरीर से परे होने के

लिये एवररेडी बन जाये। क्योंकि सबका वायदा है—साथ चलेंगे। वायदा है, कि नहीं? बाप चला जाये और हम देखते रहें! नहीं, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। तो चलने के लिये तैयारी भी चाहिये ना! कोई गोल्डन, सिल्वर, कॉपर की सूक्ष्म रस्सियाँ तो नहीं हैं, जो आप उड़ने की कोशिश करो और रस्सी आपको नीचे ले आये? तो चेक करो और अभ्यास करो कि सेकण्ड में अशरीरी बन सकते हैं? अशरीरी का अर्थ है कि शरीर की कोई भी आकर्षण आत्मा को अपने तरफ आकर्षित नहीं करे। चाहे जिन्दा भी हैं, लेकिन जैसे जीते जी मरजीवा। वैसे आप सबका अपना शरीर तो है ही नहीं। मेरा शरीर कहेंगे या बाप की अमानत है? जब है ही बाप की अमानत तो अशरीरी बनना क्या मुश्किल है? मुश्किल है या सहज है? (सहज है) कहने में तो सहज है। युद्ध नहीं करनी पड़े कि नहीं, मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ.....। युद्ध में ही एक सेकण्ड पूरा हो जायेगा तो कहाँ पहुँचेंगे! बाप ने कहा और किया। अगर ज़रा भी सोचा—ऐसा नहीं वैसा, अभी तो थोड़ा टाइम चाहिये, इतना अभ्यास तो हुआ नहीं है, हो जायेगा..... सोचा और गया। कहाँ गया? त्रेता में गया। हाँ जी किया तो ब्रह्मा बाप के साथी बनेंगे। अच्छा।

टीचर्स से:- टीचर्स सब आगे बैठी हैं, होशियार हैं। बहुत अच्छा। बापदादा निमित्त बन सेवा करने की मुबारक देते हैं। फिर भी देखो पुरुषार्थ करके सभी को यात्रा तो कराई है।

कुमारों से:- कुमार क्या करेंगे? कुमार सदा ही विश्व में कोई न कोई परिवर्तन के लिये एवररेडी रहते हैं। कोई भी क्रान्ति के निमित्त कुमार बनते हैं। तो ये है शान्ति की क्रान्ति। तो सभी कुमार सदा यह याद रखो कि हमारा हर कर्म परिवर्तन करने के निमित्त है। तो कुमार अर्थात् विश्व परिवर्तक। ऐसे है ना? सिर्फ तालियाँ तो नहीं बजा रहे हो। अच्छे-अच्छे कुमार हैं। देखो, बाप-दादा सदा कहते हैं कि सेवाकेन्द्र सेवा में आगे नम्बर पर जायें, उसके लिए कुमार भी जरूर चाहिये। जहाँ कुमार नहीं होंगे वहाँ सेवा के प्लैन कम बनेंगे। तो ऐसे निर्विघ्न सेवाधारी कुमार। खिटखिट करने वाले नहीं बनना। निर्विघ्न सेवाधारी कुमार। कुमार ही सेवा की शोभा हैं इसीलिये बापदादा को कुमार प्यारे लगते हैं। अच्छा है। इस वर्ष तो सभी को निर्विघ्न होना ही है, आपके पास कोई विघ्नों के पत्र नहीं आयेंगे—ये हो गया, ये हो गया.....। कुमारों को माया भी बहुत प्यार करती है। माया भी समझती है मेरा बनें, इसीलिये डबल अटेंशन। माया के नहीं बनना।

कुमारियों से:- कुमारियाँ क्या करेंगी? कुमारियों का तो बहुत-बहुत बड़ा भाग्य है। कुमार 25 वर्ष का होगा लेकिन उनको कोई दादा नहीं कहेगा, लेकिन कुमारियों को दादी कहेंगे, दीदी कहेंगे। कुमारियाँ अगर टीचर बन जाती हैं तो दादी, दीदी का टाइटल मिल जाता है। दीदी कहने वाले तो बहुत अच्छे हैं और बनने वाले भी अच्छे हैं। लेकिन दीदी माना बड़ी। तो दीदी बनना अर्थात् बड़े दिल से स्व का पुरुषार्थ और औरों को पुरुषार्थ कराना। सिर्फ दीदी नाम से नहीं खुश हो जाना। काम भी करना है। कुमार और कुमारियों से देखा जाता है कि माया का कुछ एक्स्ट्रा प्यार है। लेकिन ये प्यार नहीं है, धोखा है। पहले माया बहुत प्यार करती है लेकिन समाया हुआ धोखा होता है। अभी कोई कुमार और कुमारी की माया के प्रति रिपोर्ट नहीं आनी चाहिये। अभी रिपोर्ट आती है। कई खेल करते हैं कुमार भी, कुमारियाँ भी। अभी खेल नहीं करना। अभी विश्व परिवर्तक बन, सभी एक-दो के सहयोगी बन आगे उड़ना। ठीक है ना।

प्रवृत्ति वालों से:- प्रवृत्ति वाले क्या करेंगे? प्रवृत्ति वाले सदा ये वरदान याद रखना कि हम विश्व के शो केस में बहुत बढ़िया नम्बरवन शो पीस हैं। जितना आप शो पीस अर्थात् सेम्पल बढ़िया होंगे तो बाप से सौदा करने वाले बहुत आयेंगे। सेम्पल को देखकरके स्वयं भी खरीददार बन जायेंगे। प्रवृत्ति वाले अपना बहुत अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। अगर प्रवृत्ति वाले नहीं होते तो अभी तक भी बाप-दादा को गालियाँ खानी पड़ती। देखो पहले कितनी गाली खाई। लेकिन आप प्रवृत्ति वालों का सेम्पल देखकर हिम्मत आती है। तो प्रवृत्ति वालों की भी अपनी विशेषता है लेकिन प्रवृत्ति का अर्थ क्या है? पर वृत्ति में रहने वाले। प्रवृत्ति का अर्थ ये नहीं है—मेरा पोत्रा, मेरा धौत्रा। नहीं, पर वृत्ति में रहने वाले। लेकिन होता क्या है? बापदादा कहते हैं न्यारे और प्यारे रहो, तो प्यारे बनेंगे लेकिन न्यारे बनकर प्यारे नहीं बनते। ये गलती करते हैं। प्यारे तो बन जाते हैं लेकिन न्यारापन भूल जाता है। तो प्यारे भी और न्यारे भी—ये प्रवृत्ति वालों को आता है ना! प्यारे और न्यारे रहने में होशियार हैं ना? अभी ये नहीं लिखना कि माया आ गई क्या करें? माया को हमेशा के लिए भगा दिया—ऐसा पत्र लिखना। पत्र लिखने की भी जरूरत नहीं, बाबा के पास पहुँचता है। लिखते हैं तो 4-4 पेज पत्र लिखते हैं, इकॉनॉमी खत्म। खर्चा तो होता है ना, खर्चा किसका हुआ? आपका हुआ या बाप का हुआ? तो फालतू खर्चा किया ना और फिर पढ़ने वाले का कितना फालतू टाइम जाता है। अक्षर भी क्या लिखते हैं कोई ईस्ट में जाता है, कोई वेस्ट में जाता है। दो शब्दों में लिखो, डिटेल में नहीं लिखो। खुशखबरी के पत्र कभी भी लम्बे नहीं होते। उल्टे सुल्टे समाचार का पत्र चार पेज का होगा। तो अभी खुशखबरी के पत्र आने हैं ना कि लम्बे-चौड़े आने हैं? कोई कितना भी आपके पास ऐसे-ऐसे पत्र या समाचार सुनाये तो आपको क्या करना है? अचल-अडोल। वेस्ट पेपर बॉक्स में डाल दो। इन्टरेस्ट नहीं लो—ये क्या होता है, ये क्या हुआ.....। नहीं, कहने वाले कह रहे हैं। आप तो बाप का कहा हुआ सुन रहे हो, कि औरों का भी सुनना है? क्या वायदा है? आप से ही सुनेंगे कि औरों से भी थोड़ा-थोड़ा सुनेंगे? कोई कुछ भी कहे, कोई कहे—हम बाप हैं, कोई कहे हम ये हैं..... कहने दो, मौज मनाने दो। आप बाप के हैं और बाप के रहना है। मंजूर है ना कि थोड़ा-थोड़ा मज़ा लेना है? बाप के प्रभाव में रहने वाले किसी भी आत्मा के

प्रभाव में नहीं आ सकते। ये भी अच्छा बोलते हैं—सुन लिया तो क्या हुआ! लेकिन बाप ने क्या कहा है? एक से सुनो, एक का ही सुनो। तो ये पसन्द है ना कि थोड़ा-थोड़ा रामायण की कथा, महाभारत की कथा सुनना अच्छा है? बीच-बीच में थोड़ा मनोरंजन तो होना चाहिये! नहीं, आप अपनी मौज में रहो। अगर और कुछ भी करते हैं तो उनको भी मौज करने दो, शुभ भावना दो। आप सेफ रहो। सेफ रहना आता है कि थोड़ा सेक आ जाता है? सेक भी नहीं आये। सदा सेफ रहना।

अच्छा, सभी को वरदान मिल गये। कितना परमात्म प्यार है। गीत गाते हो ना—इतना प्यार करेगा कौन? परमात्म प्यार कोई और दे ही नहीं सकता। असम्भव है। तो आशाये सब पूरी हुई? जब तक जीना है तब तक मिलते रहना है। कभी भी माया के झमेले से घबराना नहीं। आओ, हम भी विजयी हैं। और ही चैलेन्ज करो—आओ, कोई हर्जा नहीं। आपका झमेला है तो हमारा मेला है।

अच्छा, ज्ञान सरोवर में इतना मेला हो सकता है? (हो सकता है) बापदादा को दिखाना, कहाँ करेंगे? अच्छा है, ज्ञान सरोवर एक विश्व के लिये सेम्पुल बना है। आखिर तो एशलम बनना ही है। अभी देख लिया ना, जब भी कोई बात नीचे-ऊपर हो तो आ जाना। स्थान तो देख लिया ना? ज्ञान सरोवर में सब तरफ के माइक्स का मेला होगा। सब तरफ के माइक आने हैं ना? ये ब्राह्मणों का मेला और वो है चारों ओर के माइक्स का मेला। क्योंकि ज्ञान सरोवर सभी के बूंद-बूंद से सरोवर बना है और सभी ने दिल वा जान से सिक व प्रेम से बूंद-बूंद डाली है। इसीलिये आप सबके सहयोग का सेम्पुल ज्ञान सरोवर है। यहाँ तलहटी वालों ने भी तपस्या बहुत समय से की, उन्हीं की भी तपस्या पूरी हुई।

अच्छा!

सर्व तरफ के देश-विदेश के सर्व सूक्ष्म स्वरूप से दृश्य देखने वाली आत्मायें, चारों ओर के सदा श्रेष्ठ पालना में पलने वाली, श्रेष्ठ पढ़ाई से राज्य पद पाने वाली आत्मायें, सद्गुरु द्वारा सर्व वरदान प्राप्त करने वाली आत्मायें, सदा मायाजीत विजयी रत्न, सदा युद्ध को छोड़ राजयोगी स्थिति में स्थित रहने वाली सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

अच्छा, डबल विदेशियों को भी मेला अच्छा लगा? आप लोग ऐसे सोयेंगे, टेन्ट में सोयेंगे? कि नींद नहीं आयेगी? सोने के लिये तैयार हैं? ये तो तैयार हैं आप नहीं सुलाते हो। बहुत बहादुर हैं, एवररेडी हैं। अगर डनलप मिलेगा तो भी ठीक, जमीन मिलेगी तो भी ठीक। अच्छा, डबल विदेशी भी इस सीज़न में अच्छे उमंग-उत्साह वाले देखे। वृद्धि भी देखी, संख्या में भी वृद्धि है तो स्थिति में भी वृद्धि है। अभी बचपन का खेल समाप्त हो गया, अभी बड़े हो गये। अच्छा, सब ठीक है? मेला पसन्द आया? ऐसे तो नहीं सोचते—ये झमेला क्या है? नहीं, बहुत अच्छा। जो ड्रामा में होता है वो अच्छा है और अच्छे ते अच्छा रहेगा।

(स्टेज बहुत ही सुन्दर सजाई गई है, सूक्ष्म वतन और सतयुग का दृश्य बनाया गया है, बापदादा ने पीछे मुड़कर सभी दृश्य देखे) बहुत अच्छा है, सभी ने मेहनत बहुत अच्छी की। गुजरात वालों की भी कमाल है। थक तो नहीं गये ना? सभी ने अच्छा किया।

अच्छा!
ओम् शान्ति।

प्योरिटी की रूहानी पर्सनालिटी की स्मृति स्वरूप द्वारा मायाजीत बनो

आज स्नेह के सागर बापदादा चारों ओर के सर्व स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। हर एक स्नेही बच्चों के मूरत में रुहानी पर्सनालिटी की झलक देख रहे हैं। बाहर के रूप में तो साधारण पर्सनालिटी वाले हैं लेकिन रुहानी पर्सनालिटी में सबसे नम्बरवन हैं। दुनिया में अनेक प्रकार की पर्सनालिटीज़ गाई जाती हैं। शरीर की भी पर्सनालिटी, कोई विशेषता की भी पर्सनालिटी और कोई विशेष पोजीशन की भी पर्सनालिटी, लेकिन आप सबके चेहरे पर, चलन में कौन-सी पर्सनालिटी है? प्योरिटी की पर्सनालिटी। प्योरिटी ही पर्सनालिटी है। जितना-जितना जो प्योर हैं उतनी उनकी पर्सनालिटी न सिर्फ दिखाई देती है लेकिन अनुभव होती है। सभी अपने रुहानी पर्सनालिटी को अनुभव करते हो? आप जैसी पर्सनालिटी सतयुग से अब तक कोई की है? सारे कल्प में चक्कर लगाओ तो आप जैसी पर्सनालिटी है? नहीं है ना! तो आपको अपने रुहानी पर्सनालिटी का नशा है! अनादि काल में तो परमधाम में भी आप विशेष आत्माओं की पर्सनालिटी सबसे ऊंची है। चाहे आत्मायें सब चमकती हुई ज्योति हैं लेकिन आप रुहानी पर्सनालिटी वाली आत्माओं की चमक अन्य सब आत्माओं से न्यारी और प्यारी है। अपने अनादि काल की पर्सनालिटी को स्मृति में लाओ। आई स्मृति में? देख रहे हो? बापदादा के साथ-साथ कैसे रुहानी पर्सनालिटी में दिखाई दे रहे हैं। अपने आपको देख सकते हो? तो चले जाओ अनादि काल में। कितने टाइम में जा सकते हो? जाने में कितना टाइम लगेगा? सेकण्ड से कम ना! कि एक दिन, एक घण्टा चाहिये? सेकण्ड से भी कम जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। तो अनादि काल की अपनी पर्सनालिटी देख ली? अभी अनादि काल से आदि काल में आ जाओ। आ गये या अभी चल रहे हो? पहुँच गये? तो अनादि काल से आदि काल में अपनी रुहानी पर्सनालिटी देखो—कितनी श्रेष्ठ पर्सनालिटी है! तन की भी तो मन की भी तो धन की भी और सम्बन्ध की भी। सब प्रकार की पर्सनालिटी कितनी श्रेष्ठ है! तो आदि काल की पर्सनालिटी देख रहे हो? कितने सुन्दर लगते हो, कितने सजे हुए हो, कितने सुख, शान्ति, प्रेम,

आनन्द स्वरूप हो तो आदि काल में भी अपनी पर्सनालिटी को देखो। स्पष्ट दिखाई देती है वा 5 हजार वर्ष हो गये तो थोड़ा स्पष्ट नहीं है? सभी को स्पष्ट है? होशियार हो सभी। तो आदि काल भी अपना देख लिया। अभी आओ मध्य काल में तो मध्य काल में भी आपकी पर्सनालिटी क्या रही? आपके जड़ चित्र कितने विधिपूर्वक पूजे और गाये जाते हैं। चाहे कितने भी धर्मात्मा, महात्मा, नेतायें पर्सनालिटी वाले गाये जाते हैं लेकिन आपके जड़ चित्रों की पर्सनालिटी के आगे उनकी पर्सनालिटी कुछ भी नहीं है। जैसे आप सबकी पूजा होती है वैसे कोई महात्मा या नेता की, धर्म आत्मा की विधिपूर्वक पूजा होती है? कभी देखी है? आपके जड़ चित्रों जैसे श्रृंगार किसका होता है? तो मध्य काल में भी आप आत्माओं के प्योरिटी की पर्सनालिटी की विशेषता कितनी श्रेष्ठ है! अपना चित्र देखा? आपकी पूजा होती है कि नहीं? सिर्फ बड़े-बड़ों की होती है, हमारी नहीं! डबल विदेशियों के मन्दिर हैं? देखा है, उसमें आपका चित्र है? कि सुना है तो कहते हो कि हाँ होंगे! स्मृति में है? तो मध्य काल भी आपका अति श्रेष्ठ है और अब लास्ट जन्म में जो मरजीवा ब्राह्मण जन्म है उसकी पर्सनालिटी देखो कितनी बड़ी है! गायन कितना है—कोई भी श्रेष्ठ कार्य अब तक भी आपके नामधारी ब्राह्मण ही करते हैं। चाहे ब्राह्मण अभी ब्राह्मण रहे नहीं हैं लेकिन नाम के तो ब्राह्मण है ना! आपके नाम से आपकी पर्सनालिटी के कारण वो भी श्रेष्ठ गाये जाते हैं। तो ब्राह्मण जन्म की पर्सनालिटी कितनी श्रेष्ठ है! आदि काल, अनादि काल, मध्य काल और अब अन्त काल—सारे कल्प में आपकी पर्सनालिटी सदा ही महान् रही है।

लौकिक पर्सनालिटी वालों का अगर नाम भी आता है तो कोई विशेष बुक में उन्हीं का नाम आता है—फलाने-फलाने हैं। लेकिन आपका नाम किसमें आता है? साधारण बुक में नहीं आता है, शास्त्रों में आता है। जो भी आदि काल से शास्त्र बने उसमें किसके चरित्र हैं? किसका गायन है? किसकी कहानियाँ हैं? तो लौकिक पर्सनालिटी वालों का गायन विशेष बुक में होता है और आपका गायन शास्त्रों में होता है और शास्त्रों को कितना रिगार्ड देते हैं। बड़े विधिपूर्वक शास्त्र को सम्भालते हैं, उसको भी बड़े पूज्य के रूप में देखते हैं। जो सच्चे भक्त हैं वो शास्त्र को विधिपूर्वक रखते भी हैं और पढ़ते भी हैं। ऐसे रिवाजी किताबों के माफिक नहीं रखते। तो अपनी पवित्रता की पर्सनालिटी को सदा ही इमर्ज रूप में स्मृति में रखो। जानते हैं.... या हैं तो हम ही.... ऐसे मर्ज नहीं। स्मृति स्वरूप में रखो। जिसके बुद्धि में ये इमर्ज रूप में स्मृति रहती है तो स्मृति ही समर्थी का आधार है। और जहाँ समर्थी है वहाँ माया आ सकती है? समर्थ आत्मा के पास माया का आना असम्भव है। मेहनत करने की आवश्यकता ही नहीं है। माया का काम है आना लेकिन आपका काम अभी समय प्रमाण भगाना नहीं है। माया आई और भगाया। नहीं, आपका काम है सदा मायाजीत रहना। तो मायाजीत हो वा माया को बार-बार भगाने वाले हो? अभी भगाना पड़ता है, थोड़ा-थोड़ा वो दर्शन देने के लिये आ जाती है! नहीं ना! डबल फारेनर्स ने माया को सदा के लिए भगा दिया? या भगाते ही रहते हैं? क्या हाल है? माया सदा के लिए भाग गई? अभी नहीं आयेगी ना? कि थोड़ा-थोड़ा आये, कोई हर्जा नहीं? फिर भी आधा कल्प की दोस्ती है, फ्रैण्ड है ना! उसको ऐसे ही छोड़ देंगे, आवे ही नहीं! सुनाया ना कि समय समाप्त होने के पहले बहुत काल का मायाजीत बनने का अभ्यास चाहिये। अन्त में नहीं हो सकेगा। अगर अन्त में मायाजीत बनने का पुरुषार्थ भी करेंगे तो क्या हाल होगा? बापदादा तोते की कहानी सुनाते हैं ना कि तोते को कहा नलके पर नहीं बैठना, पर नलके पर बैठकर ही बोल रहा था। ऐसे ही अन्त काल में अगर बहुत काल का अभ्यास नहीं होगा तो मन में सोचते रहेंगे कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, लेकिन माया का प्रभाव भी होता रहेगा, और कोशिश भी करेंगे मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ लेकिन होगा ही नहीं। इसीलिये क्या करना है? अभी से मायाजीत बनने का अभ्यास करो। और उसका सहज साधन है अपने रुहानी पर्सनालिटी को स्मृति स्वरूप में रखो। पर्सनालिटी वाले की निशानी क्या होती है? जो ऊंची पर्सनालिटी वाले होते हैं उसकी कहाँ भी, किसी में भी आंख नहीं जायेगी। ये ऐसा है, ये ऐसा है, ये ऐसा करता, ये ऐसे करती, मैं क्यों नहीं करूँ, मैं क्यों नहीं कर सकती हूँ/कर सकता हूँ..... दूसरे के प्राप्ति में आंख नहीं जायेगी। क्यों? रुहानी पर्सनालिटी वाला सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न है। स्वभाव में भी सम्पन्न, संस्कार में भी सम्पन्न और सम्बन्ध-सम्पर्क में भी सम्पन्न, भरपूर। वो कभी अपने प्राप्तियों के भण्डार में कोई अप्राप्ति अनुभव ही नहीं करेगा। क्यों? रुहानी पर्सनालिटी के कारण वो सदा ही मन से भरपूर होने के कारण सन्तुष्ट रहता है। आंख दूसरे की प्राप्ति में तब जाती है जब अपने में अप्राप्ति अनुभव करते हो। तो कोई अप्राप्ति है क्या? गीत क्या गाते हो—अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में। ये गीत मुख से नहीं, मन से गाते हो ना? जो गाते हैं वो हाथ उठाओ। अच्छा, डबल विदेशी भी गीत गाते हो? अच्छा!

बापदादा आज चारों ओर के बच्चों की प्योरिटी की पर्सनालिटी चेक कर रहे थे। प्योरिटी की परिभाषा को भी अच्छी तरह से जानते हो। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत नहीं, ब्रह्मचर्य व्रत में तो आजकल के सरकमस्टांस अनुसार कई अज्ञानी भी रहते हैं। ज्ञान से नहीं लेकिन हालातों को देखकर। कई भक्त भी रहते हैं। वो कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन प्योरिटी को सारे दिन में चेक करो—पवित्रता की निशानी है स्वच्छता, सत्यता। अगर सारे दिन में चाहे उठने में, चाहे बैठने में, चाहे बोलने में, चाहे सेवा करने में, चाहे स्थूल सेवा की वा सूक्ष्म सेवा की लेकिन अगर विधिपूर्वक नहीं की, विधि में भी अगर ज़रा-सा अन्तर रह गया तो वो भी स्वच्छता अर्थात् पवित्रता नहीं। व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता है। क्यों? आप सोचेंगे कि हमने पाप तो किया ही नहीं, किसको दुःख तो दिया ही नहीं लेकिन अगर व्यर्थ चला, समय गया, संकल्प गया, सन्तुष्टता गई तो आपके पवित्रता की फाइनल स्टेज के डिग्री में

फर्क पड़ जायेगा। 16 कला नहीं बन सकेंगे। 15 कला, 14 कला, साढ़े पन्द्रह कला..... नम्बरवार हो जायेगा। तो अपवित्रता सिर्फ किसको दुःख देना या पाप कर्म करना नहीं है लेकिन स्वयं में सत्यता, स्वच्छता विधिपूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो। निकल गया, बोलना नहीं था लेकिन बोल लिया, तो इसको क्या कहेंगे? मालिक हैं? इसीलिये अमृतवेले से लेकर रात तक अपने संकल्प, बोल, कर्म, सेवा-सबको चेक करो। मोटे रूप से नहीं चेक करो। अगर मोटे रूप से चेक करेंगे तो देखो चन्द्रवंशी को मोटी निशानी तीर-कमान दिया है और सूर्यवंशी को कितनी छोटी-सी मुरली दे दी है। मुरली कितनी हल्की है! और तीर कमान कितना मेहनत का है। पहले तो निशाना लगाते रहो, दूसरा बोझ उठाते रहो! और मुरली देखो-नाचो, गाओ, हंसो, खेलो। तो इसीलिये मोटे-मोटे रूप न पुरुषार्थ का रखो, न चेकिंग का रखो। अभी महीन बुद्धि बनो। क्योंकि समय समाप्त अचानक होना है, बताकर नहीं होना है। बापदादा ने तो पहले ही कह दिया है कि कोई उलहना नहीं देना-बाबा, आपने बताया क्यों नहीं? बाप कभी भी टाइम कॉन्सेस नहीं बनायेगा। अभी पूरा डायमण्ड बनना है ना! ये वायदा किया है ना? डायमण्ड जुबली मनानी है या डायमण्ड बनना है? क्या करना है? बनना भी है और मनाना भी है। दोनों साथ-साथ करना है। तो बापदादा अगले वर्ष में चेक करेंगे-वायदा निभाया या सिर्फ मुख मीठा किया? तो कौन हो? सिर्फ बोलने वाले हो या निभाने वाले हो? अच्छा! देखो, टी.वी. में आप सबका फोटो आ रहा है, फिर बदल नहीं जाना-मैं था ही नहीं, मैंने नहीं कहा था! बनना तो अच्छा है ना, तो जो अच्छी बात है उसको जल्दी करना चाहिये या देरी से? जल्दी करना चाहिये ना!

सेकण्ड में एवररेडी बन सकते हो? सेकण्ड में अशरीरी बन सकते हो? कि युद्ध करनी पड़ेगी कि नहीं, मैं शरीर नहीं हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ..... ऐसे तो नहीं ना! सोचा और हुआ। सोचना और स्थित होना। (बापदादा ने कुछ मिनटों तक ड्रिल कराई) अच्छा लगता है ना! तो सारे दिन में बीच-बीच में ये अभ्यास करो। कितने भी बिज़ी हो लेकिन बीच-बीच में एक सेकण्ड भी अशरीरी होने का अभ्यास अवश्य करो। इसके लिये कोई नहीं कह सकता-मैं बिज़ी हूँ। एक सेकण्ड निकालना ही है, अभ्यास करना ही है। अगर किसी से बातें भी कर रहे हो, किसके साथ कार्य कर रहे हो, तो उन्हीं को भी एक सेकण्ड ये ड्रिल कराओ, क्योंकि समय प्रमाण ये अशरीरीपन का अनुभव, यह अभ्यास जिसको ज्यादा होगा वो नम्बर आगे ले लेगा। क्योंकि सुनाया कि समय समाप्त अचानक होना है। अशरीरी होने का अभ्यास होगा तो फौरन ही समय की समाप्ति का वायब्रेशन आयेगा। इसलिये अभी से अभ्यास बढ़ाओ। ऐसे नहीं, अगले साल में डायमण्ड जुबली है तो अब नहीं करना है, पीछे करना है। जितना बहुत काल एड करेंगे उतना राज्य-भाग्य के प्राप्ति में भी नम्बर आगे लेंगे। अगर बीच-बीच में यह अभ्यास करेंगे तो स्वतः ही शक्तिशाली स्थिति सहज अनुभव करेंगे। ये छोटी-छोटी बातों में जो पुरुषार्थ करना पड़ता है वो सब सहज समाप्त हो जायेगा।

अच्छा सभी खुशराज़ी हैं ही या पूछना पड़ेगा? मातायें खुश हो? बहुत अच्छा। देखो, कहाँ-कहाँ से मेले में पहुँच गये हो। अच्छा चांस मिला ना, नहीं तो डेट का इन्तज़ार करते रहते हैं-हमारा नम्बर कब आयेगा, हमारा नम्बर कब आयेगा? अभी तो खुला निमन्त्रण था ना! सब ठीक अच्छी तरह से रह रहे हो? बेहद अनुभव हो रहा है ना? कि थोड़ी-थोड़ी तकलीफ है? बुजुर्ग माताओं को तकलीफ नहीं हुई है? लाइन में लगे तब ही खाना मिलेगा! लाइन में लगने में थकावट नहीं होती? मज़ा आता है? इतना बड़ा परिवार कब मिलेगा! तो परिवार को देखकर हर्षित होते हैं ना! भक्ति मार्ग के मेले से तो अच्छा मेला है ना? और दो दिन बढ़ा दें कि बस का खर्चा होगा? घर नहीं याद आयेगा? नौकरी नहीं याद आयेगी? ये भी कुछ नवीनता होनी चाहिये ना तो ये मेला भी एक नवीनता हुई। नवीनता का अनुभव कर लिया। अभी फिर पुरानी बातें थोड़ेही होगी, नई बातें होगी ना! नई बात पसन्द आती है या पुरानी? नई बात अच्छी लगती है ना! अच्छा।

कुमारियों से -कुमारियाँ क्या कमाल करेंगी! कुमारियाँ टीचर बनेंगी? कुमारियाँ सभी अपने चेहरे से, चलन से, पवित्रता की परिभाषा का भाषण करेंगी। मुख से भाषण तो सभी करते हैं लेकिन आपके सम्बन्ध में जो भी सामने आये वो चेहरे और चलन से अनुभव करे कि पवित्रता की श्रेष्ठता क्या है? कभी भी कोई कुमारी किसके भी सामने जाये तो साधारण कुमारी नहीं दिखाई दे। पवित्रता की देवी अनुभव हो। देखो शुरु-शुरु में जब तपस्या के बाद सेवा पर निकले तो आप सबको किस रूप में देखते थे? देवियाँ समझते थे ना! उन्हीं को साधारण स्वरूप नहीं दिखाई देता था, देवी रूप दिखाई देता था। देवियाँ आई हैं, कुमारियाँ नहीं। तो हर कुमारी अपने को देवी स्वरूप अनुभव करे और दूसरों को भी अनुभव कराये। देवी रूप के ऊपर कभी भी कोई की व्यर्थ नज़र नहीं जा सकती। औरों को भी बचा लेंगे और स्वयं भी बच जायेंगे। ऐसे नहीं कह सकते कि इसकी बुरी दृष्टि थी ना, मैं तो पवित्र हूँ लेकिन दूसरे की बुरी दृष्टि थी। अगर आपकी पाँवरफुल पवित्र दृष्टि है तो जैसे सूर्य अन्धकार को रहने नहीं देता, समाप्त हो जाता है, अन्धकार रोशनी में बदल जाता है, वैसे ही आपकी पवित्र दृष्टि, देवी स्वरूप आसुरी संस्कार को समाप्त कर देगी। तो कुमारियाँ क्या हैं? पवित्र देवियाँ। तो कुमारियाँ ऐसे समझती हैं? हाँ कहते हो तो हाथ उठाओ, अगर ना तो हाथ नहीं उठाओ। पवित्र कुमारियाँ हैं। **कुमार:-** कुमार भी पवित्र देव हैं। ऐसे नहीं, ये तो पवित्र देवियाँ हो गईं! कुमार भी पवित्र देव हैं। किसी भी तरफ, अपवित्र दृष्टि की बात तो छोड़ो लेकिन स्वप्न मात्र भी अपवित्र वृत्ति नहीं जा सकती। कुमार हाथ उठाओ। कुमार भी बहुत हैं। तो कुमार कौन हो? पवित्र देव। देव आत्मा हूँ। मैं फलाना हूँ, नहीं। देव आत्मा हूँ, पवित्र आत्मा हूँ।

माताओं से – मातायें बहुत हैं। मातायें क्या कमाल करेंगी? कमाल करना है ना? तो मातायें सदा ईश्वरीय स्नेह से सभी को अज्ञान की नींद से जगाओ। जैसे छोटे बच्चों को उठाती हो ना-उठो, तैयार हो, स्कूल में जाओ, तो ऐसे जगत मातायें बन अज्ञान के नींद में सोये हुए बच्चों को उठाओ। आत्माओं को जगाओ, क्योंकि जगत माता हो। जैसे अपने को हृद की माता समझने से जिम्मेवारी समझती हो ना। जो भी बच्चें होंगे, 8 हो कि 6, लेकिन जिम्मेवारी समझती हो ना ऐसे बेहद की जगत मातायें बन बच्चों (आत्माओं) पर रहम करो। बच्चा माना बाप का बच्चा। कई ऐसे भी कहानियाँ सुनते हैं, कहते हैं बुरी दृष्टि नहीं है लेकिन इसको माँ समझते हैं। लेकिन माँ सिवाए ब्रह्मा बाप के और कोई आत्मा हो नहीं सकती। तो अपना बच्चा नहीं बनाना, बाप का बच्चा बनाना। तो मातायें तैयार हैं? करनी है सेवा? अच्छा, हाथ हिला रही हैं। कई बच्चे खेल बहुत करते हैं, सारे दिन में कहाँ न कहाँ, कोई न कोई नया खेल जरूर होता है। और बातें भी बड़ी अच्छी बनाते हैं। ऐसी नई-नई अच्छी बातें बनाते हैं जो न शास्त्रों में हैं न मुरली में हैं, तो अभी ये बचपन के खेल कब तक करेंगे? ये बचपन के खेल हैं। जैसे गुड़िया बनाते भी हैं, उनको बड़ा भी करते हैं, परिवार वाले भी बना देते हैं, फिर खत्म कर देते हैं। तो बातें बनाने वाले भी ऐसे करते हैं-बात को पहले जन्म देते हैं, फिर उसको विस्तार करते हैं, फिर उसमें नमक-मिर्ची डालकर, मसाला डालकर बहुत टेस्टी करते हैं, फिर एक-दो को खिलाते हैं। अभी आप सबका बचपन है या वानप्रस्थ है? वानप्रस्थ तक पहुँच गये हो ना? अभी तो वाणी से परे जाने का समय है। तो वानप्रस्थ स्थिति वाले बचपन के खेल नहीं करते लेकिन कमाल करते हैं। जब खेल में लग जाते हैं ना तो ये खेल क्या कर रहा हूँ-ये महसूस भी कम करते हैं। खेल में इतने मस्त हो जाते हैं। तो अभी वानप्रस्थ स्थिति का अनुभव करो और कराओ। बचपन के खेल खेल लिये, बहुत खेले।

अच्छा, अभी इस वर्ष के सीज़न का समय समाप्त हो रहा है। तो बापदादा को एक संकल्प है। ब्रह्मचर्य व्रत तो सभी ने बहुत सहज धारण किया लेकिन अगले वर्ष सीज़न में वही आये जो क्रोध नहीं करे। ये हो सकता है कि फेल हो जायेंगे? बोलेंगे तो सच ना। तो ऑटोमेटिकली सीज़न कम हो जायेगी। ऐसा करें? फॉर्म में सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत का नहीं लिखना, कि 6 मास से या 6 वर्ष से ब्रह्मचर्य में रहे, लेकिन क्रोध कितने समय से नहीं किया? क्रोध पर कड़ी नज़र रखना। क्या समझते हैं? पसन्द है? पाण्डवों को पसन्द है? देखो नाम तो आउट हो जायेगा-क्यों नहीं सीज़न में आये! तो मातायें बोलो, टीचर्स बोलो-करें? हाँ जी बोलो। टीचर्स को भी आने को नहीं मिलेगा! कोई भी होगा, चाहे महारथी हो, चाहे प्यादा हो, चाहे घोड़े सवार हो-मधुबन वाले कहेंगे हम तो मधुबन में होंगे, लेकिन उन्हों को सामने नहीं बिठायेगे। टी.वी. में जाकर देखें, सुने। ये इन्सल्ट तो है ना। किसलिये सामने नहीं आये! तो मधुबन वालों को पक्का कंगन बांधना पड़ेगा। पहले मधुबन वाले हाँ करते हैं? पहले मधुबन करेगा। ऐसे नहीं, दूसरे कहें कि पहले मधुबन को तो देखो, ये अच्छा नहीं। अच्छा, सभी तैयार हो? जो सोचे कि नहीं, बहुत मुश्किल है तो वो खड़े हो जाओ। क्योंकि पीछे वालों का हाथ दिखाई नहीं देता। कहेंगे कि हमने तो हाथ उठाया ही नहीं था। तो दादियाँ बताओ-करें? अच्छा! देखो, सभी हाँ-हाँ कर रहे हो फिर कल से सोचना शुरू नहीं करना कि ये क्या हो गया! अन्तर्मुखता से मुख को बन्द कर देना। मुख खुलेगा तब तो क्रोध होगा ना। तो इस सीज़न में क्रोध-मुक्त आत्माओं का मेला होगा। पसन्द है ना? अच्छा फिर भी बापदादा समझते हैं कि कइयों के संस्कार बहुत पक्के हैं, रिवाजी बोल भी बोलेंगे तो लगता ऐसे है जैसे क्रोध करते हैं। बोल ऐसा है, आदत पड़ गई है। इसीलिये अभी जब तक सीज़न शुरू हो तब तक के लिये अगर कभी गलती से क्रोध हो भी गया ना तो तीन बारी माफ करेंगे। तीन बार छुट्टी है। (सभी ने तालियाँ बजाई) अच्छा तीन बार छुट्टियाँ चाहिये तभी तालियाँ बजाई। बापदादा ने तो ट्रायल की, फेल हो गये। कहो, हम करके दिखायेंगे, विजय प्राप्त करके दिखायेंगे, ये बोलो। कुछ तो नवीनता होनी चाहिये ना! वही फॉर्म आते हैं-खाना खाया, नहीं खाया? ब्रह्मचर्य में रहे, नहीं रहे? अभी फॉर्म चेंज करेंगे। नवीनता पसन्द है ना? टीचर्स को भी नियम में रहना पड़ेगा। टीचर्स को रियायत नहीं करेंगे। स्टूडेन्ट्स को तीन बार तो टीचर्स को दो बार।

पाण्डवों से – पाण्डव क्या कमाल करके दिखायेंगे? पाण्डव गाये जाते हैं – विजयी पाण्डव। कोई भी पाण्डव नाम लेंगे तो पाण्डवों की दो बातें सामने आती हैं एक बाप के साथी और दूसरा पाण्डव अर्थात् विजयी, तो जो भी पाण्डव हैं वो सभी ये संकल्प करो कि किसी भी बात में हार नहीं खानी है। सदा विजयी। और निश्चय रखो विजयी माला में मुझ पाण्डव का ही पार्ट है। विजयी रत्न हूँ। सदा अमृतवेले अपने मस्तक पर विजय का तिलक रोज रिफ्रेश करो और अमृतवेले से लेकर अपने मस्तक पर विजय का तिलक इमर्ज रूप में देखो। ऐसे नहीं, मैं तो हूँ ही। नहीं...। अगर हूँ तो सारे दिन में विजय प्राप्त की या नहीं की-ये चेक करो। तो पाण्डव अर्थात् विजयी।

टीचर्स से – टीचर्स क्या करेंगी? टीचर्स ने मेहनत तो की, बस भर-भर कर लाई। तो टीचर्स क्या कमाल करेंगी? टीचर्स को विशेष ये लक्ष्य रखना है कि सदा हर परिस्थिति में, परिस्थिति बदले लेकिन स्थिति नहीं बदले। स्थिति सदा खजानों से सम्पन्न हो और सन्तुष्ट रहे। परिस्थिति आयेगी और चली जायेगी। लेकिन परिस्थिति की क्या शक्ति है जो आपकी सन्तुष्टता को ले जाये। तो परिस्थिति का खेल भले देखो लेकिन साक्षीपन, सन्तुष्टता की सीट पर बैठकर देखो। तो टीचर्स अर्थात् सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट। टीचर्स का टाइटल है सन्तुष्टमणियाँ। ऐसे हैं ना? सदा सन्तुष्टमणि।

मधुबन निवासियों से – मधुबन वाले क्या करेंगे? मधुबन वालों को बापदादा सेवा की मुबारक सदा दिल से पद्मगुणा देते हैं,

अब भी दे रहे हैं। अब मधुबन वालों को आगे क्या करना है? विशेष ये पाठ पक्का करना है कि मधुबन निवासी हर कर्म में, हर संकल्प में विशेष हीरो पार्टधारी हैं। मधुबन की स्टेज पर नहीं, लेकिन विश्व की स्टेज पर संकल्प, बोल और कर्म में हीरो पार्ट-धारी। तो हीरो एक्टर के ऊपर न चाहते भी सबकी नज़र होती है और हीरो एक्टर थोड़ा भी नीचे ऊपर करता है तो हाहाकार हो जाता है। और अच्छा करता है तो वाह-वाह हो जाती है। तो मधुबन वाले ज़ीरो के साथ रहने वाले सदा हीरो पार्ट बजाने वाले। मधुबन में सब आ गये, हॉस्पिटल भी आ गई तो ज्ञान सरोवर भी आ गया, तलहटी भी आ गई, सब आ गये, जो भी आठ भुजायें हैं सब आ गये। समझा? मधुबन निवासी नाम सुनकर सब कितना आपको प्यार करते हैं, कहाँ भी चले जाओ, कहाँ से आये हैं? मधुबन वाले हैं। जैसे मधुबन वाला बाबा मशहूर है ऐसे मधुबन वाले भी मशहूर हैं। ऐसे समझते हो ना! अच्छा है, नशा तो है मधुबन वालों को।

अच्छा, मेला निर्विघ्न हो गया? कल तो चलाचली का मेला शुरू होगा। मिलन का मेला समाप्त हो गया, अभी चलाचली का मेला होगा। देखो, क्या नहीं आप कर सकते हो! जो चाहे वो कर सकते हो! देख लिया ना! जो सुन करके समझते थे पता नहीं क्या होगा, कैसे होगा....? और अभी क्या कहते हैं? ये तो कुछ भी नहीं है। अभी ये कॉमन हो गया ना! कि गुजरात वालों को बहुत मेहनत लगी? मेहनत करनी पड़ी? नहीं, अच्छा लगा। प्राइज़ मिलने योग्य कार्य किया है। बापदादा दिल के याद-प्यार की प्राइज़ गुजरात को दे रहे हैं। अच्छा, इसमें जो मातायें सवरे से लेकर रोटी बनाती हैं, हाथ थक जाते होंगे, तो बाप-दादा दोनों ऐसे सेवा-धारी माताओं के बाहों की मसाज़ कर रहे हैं। रोटी बनाने वाले खड़े हो जाओ। हाँ, बहुत ताली बजाओ। सब्जी काटने वाले भी हैं। सब्जी काटने वाले उठो। सबसे मुश्किल काम जो है वो है गर्मी में इतना समय गैस के आगे ठहरकर रोटी पकाना। तो मुबारक हो, मुबारक। खाने वाले नहीं होते तो ये क्या करते! देखो खाने वालों से ही तो रौनक है। जैसे मन्दिरों में घण्टे बजते हैं ना, जो जाता है घण्टे बजाता है तो इस मेले में बर्तनों के घण्टे बजते रहते हैं। अच्छी सीन होती है, जब बर्तन धुलाई करते हैं ना तो बहुत घण्टे बजते हैं बर्तनों के। तो कमाल तो खाने वालों की है ना!

मधुबन वालों ने भी बहुत मेहनत की। गुजरात को भी सहयोग देने वाले तो मधुबन वाले हैं। बहुत सहयोग दिया है ना। सबने प्यार से किया है। मेला निर्विघ्न समाप्त हो जाये-इस दृढ़ संकल्प से बहुत किया है। मधुबन वालों ने सहयोग दिया है ना या तंग किया है? मधुबन वाले तंग नहीं करते, सबको खुश करते हैं।

बापदादा तो टी. वी. में देखते हैं ना, तो ये देखा कि कोई की शक्ल के पोज़ इस बारी ज्यादा बदली नहीं हुए हैं। मैजारिटी ठीक रहे हैं, खुशी खुशी से सेवा की है। अगर थोड़ा बहुत हुआ भी है तो सहन शक्ति, समाने की शक्ति अच्छी यूज़ की है इसलिये मुबारक है। अच्छा, गर्मी लगी? कि पता ही नहीं पड़ा, आप बापदादा के याद की लहरों में लहरा रहे थे। टेन्ट में सोते हो या बापदादा की गोदी में सोते हो? टेन्ट में तो नहीं ना! टेन्ट उड़ जाये तो भी कोई हर्जा नहीं, गोदी तो है ना! लेकिन पहले थोड़ा डराया अभी प्रकृति भी समझ गई ये हटने वाले नहीं हैं। अगर छत उड़ जायेगी तो दूसरी छत आ जायेगी।

अच्छा, डबल विदेशी क्या करेंगे? अभी थोड़े हो, सिकीलधे हो। तो डबल विदेशी सदा अपने चेहरे को, सूरत को चलता फिरता म्युज़ियम बनायेंगे। आपके नयनों को कोई देखे तो नयनों द्वारा हर्षित रुहानी आकर्षित मूर्त का चित्र देखे। साधारण नयन नहीं देखे। दिव्य नयन। जिन दिव्य नयनों में सदा बाप बिन्दु दिखाई दे। तो आपके नयन चलता-फिरता म्युज़ियम बन जायें। आपका मस्तक आत्म साक्षात्कार कराये। आपके आँठ सर्व को मुस्कराना सिखा दें। ऐसे चारों ओर चैतन्य म्युज़ियम अपनी सेवा करते रहें। करने वाले हो ना? अच्छा है। उमंग-उत्साह तो अच्छा है ही और सदा उमंग-उत्साह में आगे बढ़ते रहेंगे।

डबल विदेशियों को मेले में मिलने में मज़ा आया? सिर्फ विदेश की सीज़न तो देखते ही रहते हो लेकिन इतना परिवार तो देखते नहीं हो तो डबल फायदा हो गया। बापदादा से मिलना हो गया और परिवार से भी मिलना हो गया। तो लक्की हो। अच्छा, फॉरेन के कोई भी सेन्टर्स पर रहने वाले टीचर्स हाथ उठाओ। जो भी चारों ओर सेवा में निमित्त रहते हैं उन सबको बापदादा श्रेष्ठ सेवा के भाग्यवान समझते हैं। सेवा का भाग्य प्राप्त होना ये बहुत बड़ा भाग्य है। सेवा में प्रत्यक्षफल प्राप्त होने का अनुभव बहुत सहज होता है। अभी-अभी सेवा की और अभी-अभी स्थिति में आगे बढ़ते रहे। अगर निःस्वार्थ सेवा की तो सेवा का फल मिलता है। स्वार्थ का फल नहीं मिलता है। लेकिन आप सभी सेवाधारी हो। इसलिये सेवा का फल अवश्य मिलता है। भविष्य तो कुछ नहीं है, अभी का प्रत्यक्षफल आत्मा को उड़ती कला का बल देता है। इसलिये बापदादा निमित्त सेवाधारियों को देख खुश होते हैं। तो श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मायें हैं और सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य द्वारा अनेकों के भाग्य को जगाते रहेंगे। अच्छे हैं, अथक सेवा करते हैं। बापदादा के पास सबका रिकॉर्ड है। ऐसे नहीं, बापदादा के पास तो हम जाते ही नहीं, आते ही नहीं, पता ही नहीं.... ये तो नहीं सोचते। जो गुप्त हैं वो सदा नयनों में हैं। गुप्त नहीं रह सकते हो, बाप के आगे प्रत्यक्ष हो। चाहे नाम हो, नहीं हो, सामने आओ, नहीं आओ, लेकिन सामने के बजाय नयनों में समाये हो। समझा?

चारों ओर के सर्व रुहानी प्योरिटी की पर्सनालिटी वाले विशेष आत्माओं को, सदा आदि से अन्त तक पर्सनालिटी की झलक दिखाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, सदा पवित्रता, स्वच्छता, सत्यता के शक्ति से स्व को और विश्व को परिवर्तन करने वाले विश्व परि-

वर्तक आत्मायें, सदा निमित्त भाव से सेवाधारी बन प्रत्यक्षफल अनुभव करने वाले अनुभवी आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादियों से – अच्छा रहा मेला? कोई तकलीफ तो नहीं हुई ना? सबके शुभ संकल्प और उमंग-उत्साह के संकल्प से सफलता है ही है। यह संगठन का संकल्प ऐसे होता है जो असफलता को मिटा देता है। जैसे किला होता है ना तो किला कमजोर तब होता है जब एक भी ईंट हिलती है। और सब ईंटे मजबूत हैं तो किला कभी हिल नहीं सकता। विजय है। तो ये भी संगठन से उमंग-उत्साह और श्रेष्ठ संकल्प से, सहयोग से सफलता हुई पड़ी है। अच्छा लगा और समय प्रति समय और अनुभव करते जाते हैं। पहले क्वेश्चन उठता था होगा? लेकिन जो सोचो उसमें सफलता है ही। तो सफलता मूर्त का वरदान संगठन की शक्ति को मिलता है। बापदादा सदा गुडमॉर्निंग, गुडनाइट करते हैं। अच्छा डबल विदेश उड़ रहा है ना। अच्छा है।
ओम् शान्ति।

‘‘बापदादा की विशेष पसन्दगी और ज्ञान का फाउण्डेशन – पवित्रता’’

07.11.95

आ ज प्यार के सागर बापदादा अपने प्यार के स्वरूप बच्चों से मिलने आये हैं। सभी बच्चों के अन्दर बाप का प्यार समाया हुआ है। प्यार सभी बच्चों को दूर से समीप ले आता है। भक्त आत्मा थे तो बाप से कितना दूर थे। इसलिए चारों ओर ढूँढते रहते थे और अभी इतना समीप हो जो हर एक बच्चा निश्चय और फ़लक से कहते हैं कि मेरा बाबा मेरे साथ है। साथ है या ढूँढना पड़ता है – इस तरफ है, उस तरफ है? तो कितना समीप हो गया! कोई भी पूछे परमात्मा कहाँ है? तो क्या कहेंगे? मेरे साथ है। फ़लक से कहेंगे कि अब तो बाप भी मेरे बिना रह नहीं सकता। तो इतने समीप, साथी बन गये हो। आप भी एक सेकण्ड भी बाप के बिना नहीं रह सकते हो। लेकिन जब माया आती है तब कौन साथ होता है? उस समय बाप अगर साथ है तो माया आ सकती है? लेकिन न चाहते भी बीच-बीच में बच्चे बाप से आंख मिचौनी का खेल कर देते हैं। बापदादा बच्चों का यह खेल भी देखते रहते हैं कि बच्चे एक तरफ कह रहे हैं मेरा बाबा, मेरा बाबा और दूसरे तरफ किनारा भी कर लेते हैं। अगर अभी यहाँ ऐसे किनारा करेंगे तो आपको देख नहीं सकेंगे ना। तो आप भी माया की तरफ़ ऐसे कर लेते हो। बाप को देखने की दृष्टि बन्द हो जाती है और माया को देखने की दृष्टि खुल जाती है। तो आंख मिचौनी खेल कभी-कभी खेलते हो? बाप फिर भी बच्चों के ऊपर रहमदिल बन माया से किसी भी ढंग से किनारा करा लेता है। वो बेहोश करती और बाप होश में लाता है कि तुम मेरे हो। बन्द आंख याद के जादू से खोल देते हैं।

बापदादा पूछते हैं कि सभी का प्यार कितने परसेन्ट में है? तो सभी कहते हैं – 100 परसेन्ट से भी ज्यादा है। पद्मगुणा प्यार है। ऐसा कहते हो ना? अच्छा जिसका पद्मगुणा से कम है, करोड़ है, लाख है, हजार है, सौ है, वो हाथ उठाओ। (कोई ने नहीं उठाया) अच्छा, सभी पक्के हैं! बापदादा फिर दूसरा क्वेश्चन करेंगे, फिर नहीं बदलना। अच्छा, ये तो बहुत खुशखबरी सुनाई कि

पद्मगुणा प्यार है।

अभी बाप पूछते हैं कि प्यार का सबूत क्या होता है? (समान बनना) तो समान बने हो? (नहीं) फिर पद्मगुणा से तो कम हो गया। आप सभी कहेंगे कि अभी सम्पूर्ण बनने में थोड़ा-सा टाइम पड़ा है इसलिए हो जायेंगे – ऐसे? लेकिन अगर प्यार वाला कहता है कि तुम प्यार के पीछे जान कुर्बान कर लो तो वो जान देने के लिए भी तैयार होते हैं। बापदादा जान तो लेते नहीं हैं क्योंकि जान से तो सेवा करनी है। लेकिन एक बात पर बापदादा को थोड़े समय के लिए आश्चर्य करना पड़ता है। आश्चर्य करना नहीं चाहिए, वो तो आपको भी कहते हैं, लेकिन बापदादा को आश्चर्य करना पड़ता है, पार्ट बजाते हैं। जान कुर्बान छोड़ो लेकिन प्यार की निशानी है न्योछावर होना, जो कहे वो करना। तो बाप सिर्फ एक बात में न्योछावर होना देखना चाहते हैं। बातें अनेक हैं, लेकिन बाप अनेक को नहीं लेते सिर्फ एक बात में न्योछावर होना है। उसके लिए हाथ उठा लेते हैं, प्रतिज्ञा भी कर लेते हैं लेकिन प्रतिज्ञा करने के बाद भी करते रहते हैं वो क्या? हर एक स्वयं समझते हैं कि मेरा बार-बार बाप से किनारा होने का मूल संस्कार या मूल कमजोरी क्या है। हर एक अपनी मूल कमजोरी को जानते हो ना? तो वो कमजोरी जानते हुए भी न्योछावर क्यों नहीं करते हो? 63 जन्म की साथी है इसीलिए उससे प्यार है?

प्यार का अर्थ ही है जो प्यार वाला पसन्द करे वो करना। अगर मानो प्यार करने वाला एक बात कहता है और वो दूसरा कुछ करते हैं तो क्या हो जाता है? प्यार होता है या झगड़ा होता है? उस समय प्यार कहेंगे कि अच्छी तरह से लाठी उठाकर एक-दो को लगायेंगे? तो बाप को क्या पसन्द है? बापदादा कहते हैं कि समान बनने में तो कई बातें हैं। ब्रह्मा बाप की विशेषताएं देखो और ब्रह्मा बाप समान ही बनना है तो कितनी बड़ी लिस्ट है! उसके लिए भी बापदादा कहते हैं चलो कोई बात नहीं। एक-दो बात कम है तो भी हर्जा नहीं। लेकिन जो मूल फाउण्डेशन है, जो ब्रह्मा बाप वा ज्ञान का आधार है वो क्या है? ब्रह्मा बाबा शिव बाप की विशेष पसन्दगी क्या है? (पवित्रता, अन्तर्मुखता, निश्चयबुद्धि, सच्चाई-सफाई)। वास्तव में फाउण्डेशन है – पवित्रता। लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है। पवित्रता जहाँ होगी वहाँ निश्चय, सच्चाई-

सफ़ाई, ये सब आ जाता है। लेकिन बापदादा देखते हैं कि पवित्रता की गुह्य भाषा, पवित्रता का गुह्य रहस्य अभी बुद्धि में पूरा स्पष्ट नहीं है। व्यर्थ संकल्प चलना या चलाना, अपने अन्दर भी चलता है और दूसरों को भी चलाने के निमित्त बनते हैं। तो व्यर्थ संकल्प – क्या ये पवित्रता है? तो फिर संकल्प की पवित्रता का रहस्य सभी को प्रैक्टिकल में लाना चाहिए ना। वैसे देखा जाये तो पांचों ही विकार, चाहे काम हो, चाहे मोह हो, सबसे नम्बरवन है काम और लास्ट में है मोह। लेकिन कोई भी विकार जब आता है तो पहले संकल्प में आता है। व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता है तो काम अर्थात् व्यर्थ दृष्टि, किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी। तो यह व्यर्थ संकल्प बाप के प्यार के पीछे न्योछावर क्यों नहीं करते? कर सकते हो? (हाँ जी) हाँ जी कहना बहुत सहज है। लेकिन बापदादा के पास तो सबका चार्ट रहता है ना। अभी तक पांच ही विकारों के व्यर्थ संकल्प मैजारिटी के चलते हैं। फिर चाहे कोई भी विकार हो। ये क्यों, ये क्या, ऐसा होना नहीं चाहिए, ऐसा होना चाहिए..... या कॉमन बात बापदादा सुनाते हैं कि ज्ञानी आत्माओं में या तो अपने गुण का, अपनी विशेषता का अभिमान आता है या तो जितना आगे बढ़ते हैं उतना अपनी किसी भी बात में कमी को देख करके, कमी अपने पुरुषार्थ की नहीं लेकिन नाम में, मान में, शान में, पूछने में, आगे आने में, सेन्टर इन्चार्ज बनाने में, सेवा में, विशेष पार्ट देने में – ये कमी, ये व्यर्थ संकल्प भी विशेष ज्ञानी आत्माओं के लिए बहुत नुकसान करता है। और आजकल ये दो ही विशेष व्यर्थ संकल्प का आधार है। तो आप जब सेवा पर जाओ तो एक दिन की दिनचर्या नोट करना और चेक करना कि एक दिन में इन दोनों में से चाहे अभिमान या दूसरे शब्दों में कहो अपमान – मेरे को कम क्यों, मेरा भी ये पद होना चाहिए, मेरे को भी आगे करना चाहिए, तो ये अपमान समझते हो ना। तो ये दो बातें अभिमान और अपमान – यही दो आजकल व्यर्थ संकल्पों का कारण है। इन दोनों को अगर न्योछावर कर दिया तो बाप समान बनना कोई मुश्किल नहीं है। तो क्या न्योछावर करने की शक्ति है? अच्छा, कितने समय में? अभी आज नवम्बर है ना, नया साल आयेगा तो दो मास हो जायेगा ना! नये साल में वैसे भी नया खाता रखा जाता है, तो हर

एक चाहे टीचर, चाहे विद्यार्थी हैं, चाहे महारथी हैं, चाहे प्यादा हैं। ऐसे नहीं कि ये तो महारथियों के लिए है, हम तो हैं ही छोटे! राज्य-भाग्य लेने के टाइम तो कोई नहीं कहेगा कि मैं छोटा हूँ, उस समय तो कहेंगे कि सेकण्ड नारायण मुझे ही बना दो। तो हर एक को सिर्फ दो शब्द अपना समाचार देना है और उस पोस्ट के ऊपर विशेष ये लिखना— “अवस्था का पोतामेल”। तो वो पोस्ट अलग हो जायेगी। और अन्दर लिखना कि व्यर्थ संकल्प किस परसेन्टेज में न्योछावर हुए? 50 परसेन्ट या 100 परसेन्ट न्योछावर हुए? बस एक लाइन लिखना, लम्बा-चौड़ा नहीं लिखना। जो लम्बा-चौड़ा लिखेंगे उसको पहले ही फाड़ देंगे। तो तैयार हो? ज़ोर से बोलो – हाँ जी या ना जी? जो समझते हैं कि इसमें हिम्मत चाहिए, टाइम भी चाहिए, तो अभी से हाथ उठा लो तो आपको पहले से ही छुट्टी है। कोई है या पीछे लिखेंगे - पुरुषार्थ तो बहुत किया लेकिन हुआ नहीं। ऐसे तो नहीं लिखेंगे? पक्के हैं? अच्छा।

बापदादा ने देखा कि प्यार मधुबन तक तो ले आता है। लेकिन इसी प्यार से पहुँचना कहाँ है? बाप समान बनना है ना! तो जैसे मधुबन में भागते-भागते आते हो ना, मेरा नाम ज़रूर लिखो, मेरा नाम ज़रूर लिखो। और नहीं लिखते तो टीचर को थोड़ी आंख भी दिखा देते हो। तो जैसे मधुबन के लिए प्यार में भागते हो, आते हो ऐसे ही पुरुषार्थ करो कि मेरा नाम बाप समान बनने में पहले हो। तो ये पवित्रता का फाउण्डेशन पक्का करो। ब्रह्मा बाप ने पवित्रता के कारण, एक नवीनता के कारण गालियाँ भी खाईं। तो पवित्रता फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन का ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना ये तो एक कॉमन बात है लेकिन अभी आगे बढ़े हो तो बचपन की स्टेज नहीं है, अभी तो वानप्रस्थ स्थिति में जाना है। मैं ब्रह्मचारी तो रहता हूँ, पवित्रता तो है ही, सिर्फ इसमें खुश नहीं हो जाओ। वैसे तो अभी दृष्टि-वृत्ति में पवित्रता को और भी अण्डरलाइन करो लेकिन मूल फाउण्डेशन है अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ। संकल्प में कमज़ोरी बहुत है। क्या करें, कर नहीं सकते हैं, पता नहीं क्या हो गया..... क्या ये पवित्रता की शक्ति है? पवित्र आत्मा कहेगी – क्या करें, हो गया, हो जाता है, चाहते तो नहीं हैं लेकिन.....? ये कौन-सी आत्मा है? पवित्र आत्मा बोलती है कि कमज़ोर

आत्मा बोलती है? त्रिकालदर्शी आत्मायें हो। जब क्यों, क्या कहते हो, तो बापदादा कहते हैं इन्हों को जिज्ञासु के आगे ले जाओ, उनको चित्र समझाते हैं कि 84 जन्मों को हम जानते हैं। समझाते हो 84 जन्म और करते हो अभी क्या और क्यों? जब जानते हो तो जानने वाला क्या, क्यों करेगा? वो जानता है कि ये इसलिए होता है। क्या का जवाब स्वयं ही बुद्धि में आयेगा कि माया के प्रभाव के परवश है। चाहे महारथी हो, चाहे प्यादा हो। अगर महारथी से भी ग़लती होती है तो उस समय वो महारथी नहीं है, परवश है। तो परवश वाला कहाँ भी लहर में लहरा जाता है लेकिन आप उस रूप में देखते हो कि ये महारथी होकर कर रहा है! उस समय महारथी नहीं, परवश है। समझा, नये साल में क्या करना है? व्यर्थ के समाप्ति का नया खाता। ठीक है? पक्का? कि कोई न कोई कारण बतायेंगे। अगर कारण होगा तो कोई नया प्लैन बतायेंगे। अभी नहीं बतायेंगे। अभी बतायेंगे तो आप कोई रीज़न निकाल लेंगे। कारण नहीं निवारण। समस्या स्वरूप नहीं, समाधान स्वरूप।

अभी प्रकृति भी थक गई है। प्रकृति की भी ताकत सारी खत्म हो गई है। तो प्रकृति भी आप प्रकृतिपति आत्माओं को अर्जी कर रही है कि अभी जल्दी करो। अभी देरी नहीं करो। अच्छा!

बापदादा को भी तन को चलाना पड़ता है। चले, नहीं चले, लेकिन चलाना तो पड़ता है। क्योंकि बाप का बच्चों से प्यार है। तो इतने प्यार वाली आत्मायें आवें और बाप रुहरिहान नहीं करे तो कैसे होगा! तो जबरदस्ती भी चलाना ही पड़ता है। अच्छा, सभी खुश हैं? बाप मिला – सन्तुष्ट हैं ना?

इस्टर्न

कितना अन्दाज़ आये हैं? (550) तो साढ़े पांच सौ आये हो ना तो साढ़े को निकाल देना बाकी रहा पांच, तो पांचों पर विजय पहला नम्बर इस्टर्न ज़ोन होना चाहिए। (सभी ने तालियां बजाईं) लिखने के टाइम भी ताली बजाना। नम्बरवन। वैसे तो इस्टर्न ब्रह्मा बाबा का प्रवेशता का भी पहला नम्बर है। तो बाप समान बनने में, बाप के प्यार के पीछे न्योछावर करने में भी इस्टर्न को पहला नम्बर लेना है। सभी टीचर्स हाँ कर रही हैं तो स्टूडेंट को भी करना

पड़ेगा। इस्टर्न की टीचर्स उठो। सभी टीचर्स वायदा करते हो कि समझते हो कि पता नहीं क्या होगा! देखना टी.वी. में आ रहा है। इस्टर्न तो नम्बरवन होना ही है।

बाम्बई, महाराष्ट्र

बाम्बे क्या करेगा? महाराष्ट्र क्या करेगा? सोलापुर भी है, जलगांव भी है। कोई भी पुर हो लेकिन बापदादा कहते हैं कि सोलापुर नहीं, सोला सम्पूर्ण। कोल्हापुर है, सोलापुर है, कई पुर हैं तो उन्हों को तो याद आना चाहिए कि हम पूर तो हैं सिर्फ सम्पूर्ण आगे एड करना। ठीक है सोलापुर। सोलापुर वाली टीचर्स हाथ उठाओ। अभी क्या होगा? सोलापुर या सोला सम्पूर्ण? हिम्मत है कि कहेंगे कि हम तो छोटी टीचर्स हैं। छोटी सुभान अल्लाह। समझा? अच्छा जलगांव और उदगीर। तो जलगांव क्या करेगा? अपने व्यर्थ विकल्पों को जल में खत्म कर देगा। एकदम खत्म। जल में हो गया खत्म। तो क्या करेंगे? विकल्पों को जलमय करना। कोई विकल्प रहे नहीं। जैसे कहाँ-कहाँ जलमय होता है ना तो एक भी निशानी नहीं रहती। ऐसे आप समाप्त कर लेना। ठीक है?

अच्छा, बाम्बे वाले क्या करेंगे? आजकल बहुत बड़े-बड़े बॉम्ब निकाले हैं। दीपावली में देखा होगा ना, इतने बॉम्ब इकट्टे जलाते हैं जो लाइन की लाइन खत्म। तो बाम्बे वाले अनेक विकल्पों की लाइन को एक तीली लगाना और सारे के सारे खत्म हो जायें। बॉम्बे वाली टीचर्स उठो। अच्छा! तीली तो है ना? अच्छी पॉवरफुल तीली है? कि तीली लगी फिर बुझ जायेगा। दृढ़ संकल्प की तीली से फटाफट। एक के पीछे एक, एक के पीछे एक खत्म। सभी खुश हो जायेंगे। अच्छा।

तामिलनाडु

तामिलनाडु क्या करेगा? तामिलनाडु में डांस बहुत अच्छी करते हैं। कोई भी दादियाँ जाती हैं तो अच्छी-अच्छी डांस दिखाते हैं। जैसे शास्त्रों में शंकर के लिए दिखाते हैं, नृत्य करते-करते सारा विनाश कर दिया। तो तामिलनाडु डांस करते-करते क्या करेंगे? भिन्न-भिन्न प्रकार से सभी विघ्नों का विनाश। जैसे डांस के भिन्न-भिन्न पोज रखते हो ना ऐसे एक-एक विकल्प को अच्छी

तरह से, ऐसे खत्म करना जो नाम-निशान भी नहीं रहे। ठीक है? तामिलनाडु की टीचर्स उठो। अच्छा। तामिलनाडु की टीचर्स बहुत आई हैं। टीचर्स को भी मिलने का चांस मिलता है। बापदादा को टीचर्स वैसे बहुत प्यारी लगती हैं। इसमें तो ताली बजा दी लेकिन वैसे के पीछे ऐसे भी है। वैसे तो टीचर्स को बापदादा एकदम समान दृष्टि से देखते हैं कि ये बाप समान हैं, निमित्त हैं लेकिन जब ऐसी-वैसी उल्टी डांस कर देती हैं, जो मन को नहीं भाती है, कभी-कभी ऐसी डांस करते हैं तो सब कहते हैं बन्द करो, बन्द करो। तो जब टीचर्स ऐसा कुछ करती हैं तो बापदादा की, खास ब्रह्मा बाबा की आंखे नीचे हो जाती हैं। इतना टीचर्स को अटेन्शन रखना चाहिए। टाइल तो टीचर्स को बहुत अच्छा है, बैज भी बहुत जल्दी पहन लेते हो। लेकिन टीचर का अर्थ ही है बाप समान। विशेष ब्रह्मा बाबा टीचर्स को दिल से प्यार करते हैं लेकिन कभी-कभी दृष्टि नीचे भी करनी पड़ती है। तो ऐसे नहीं करना। बाकी अच्छा है, तामिलनाडु ने विस्तार अच्छा किया है और एक विशेषता ये भी है कि हैण्ड्स भी अपने निकालते जाते और सेवा भी बढ़ाते जाते। तो ये भी अच्छी बात है। हैण्ड्स तैयार भी करना और सेवा भी बढ़ाना – दोनों ही करना।

आन्ध्र प्रदेश

आन्ध्र प्रदेश में एक विशेषता ब्राह्मण परिवार की है जो वहाँ से एक लाडला बच्चा निकला राजु, तो उस एक ने एक एग्जाम्पल बन अनेक वी.आई.पी., आई.पी. की सर्विस कर सैम्पल बनाया। सेवा बहुत होती है लेकिन इसने हिम्मत रख करके एक एग्जाम्पल स्थापन किया और वैसे भी आन्ध्र में वी.आई.पी., आई.पी. ज्यादा ही हैं। चाहे वो किसी भी देश में चले जाते हैं लेकिन आन्ध्र के आई.पी., वी.आई.पी. चारों ओर बहुत होते हैं। तो आन्ध्र ने जैसे एक एग्जाम्पल तैयार किया, ऐसे ये विकल्प विनाश का एग्जाम्पल भी आन्ध्र को दिखाना है। तैयार हैं? आन्ध्रा वाली टीचर्स उठो। अच्छा, टीचर्स तो बहुत हैं। अभी ये भी एग्जाम्पल दिखायेंगे। देखो कितना अच्छा रत्न निकला और एडवांस पार्टी में भी अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। तो करेंगे ना! खिटखिट नहीं होनी चाहिए। खिटखिट खत्म। विजय का झण्डा हर

सेवाकेन्द्र पर लहराये। ये नहीं बापदादा सुने कि फलाने सेन्टर पर खिटखिट है इसलिए फलानी दादी को भेजो। ये नहीं होना चाहिए। ऐसे थोड़ा-थोड़ा बीच-बीच में खेल करते हैं। अभी खत्म। पहले टीचर्स खत्म करेंगी तभी वायब्रेशन्स फैलेगा। ये सूक्ष्म वायब्रेशन्स है। आप समझेंगे एक ने किया ना, सभी को क्या पता? लेकिन वायब्रेशन ऐसी चीज़ है जो न पता होते भी...। मैंने सिर्फ किया, नहीं। मैंने सभी बाबा के सेवाकेन्द्रों का वायब्रेशन खराब किया। इतनी ज़िम्मेवारी हर एक टीचर के ऊपर है। बैज पहनना तो बहुत अच्छा है। अच्छा भी लगता है। सभी एक जैसा बैज पहन कर बैठती हैं तो अच्छा लगता है लेकिन बैज की लाज रखना। अच्छा!

कॉल्टिक

बैंगलोर आया है। बैंगलोर की विशेषता है कि जगदम्बा सरस्वती माँ ने बैंगलोर में बहुत-बहुत सेवा कर बीज डाला है। बाम्बे और बैंगलोर में किया है। तो बाम्बे को और बैंगलोर को जगदम्बा माँ के बीज का सदा फल देना है। और देखा जाये तो बैंगलोर के जो विशेष सेवाधारी हैं वो हैं भी जगदम्बा के पालना के फल। तो बैंगलोर वालों को, जैसे जगदम्बा सम्पूर्ण बन भिन्न नाम-रूप में सेवा के निमित्त है, ऐसे जगदम्बा का नाम बाला करना है। वैसे बैंगलोर का वायुमण्डल दुनिया के हिसाब से भी औरों से कुछ अच्छा है। सेवा भी है बहुत। अभी सेवा को निरव्यर्थ संकल्प बनाना—ये बैंगलोर का काम है। समझा? बैंगलोर की टीचर्स उठो। अच्छा है, निर्विघ्न बनाना है ना? कि थोड़ी-थोड़ी खिटखिट अच्छी लगती है? तो नम्बरवन जगदम्बा की पालना का फल बैंगलोर को अवश्य देना है। समझा?

राजस्थान

राजस्थान क्या करेगा? राजस्थान की एक सेवा बहुत काल से बापदादा ने कही है लेकिन हुई नहीं। राजस्थान की मिनिस्ट्री को बहुत समीप लाना चाहिए। चाहे मिनिस्टर हो, चाहे सेक्रेटरी, लेकिन एक बार राजस्थान को कमाल करके दिखानी चाहिए। चाहे किसकी भी मदद लो। सभी मदद देंगे। लेकिन

राजस्थान की गवर्नमेन्ट के विशेष ऑफिसर्स का एक कम से कम 20-25 का ग्रुप लाना चाहिए। क्योंकि राजस्थान का प्रभाव सारे इण्डिया पर पड़ता है। जैसे दिल्ली की सेवा वर्ल्ड में नाम बाला करती है। चाहे जिज्ञासु बने, नहीं बने, लेकिन राजस्थान के इतने लोग यहाँ इकट्ठे होकर आये, तो यहाँ के जो छोटे-मोटे ऑफिसर्स हैं उनका भी कुछ दिमाग खुले। अभी मॉरीशियस का आ गया, और राजस्थान? तो राजस्थान को यह सेवा किसी भी रीति से करनी चाहिए। चाहे किसी से भी मदद लो, ग्रुप बनाओ। जहाँ से कहेंगे वहाँ से मदद मिलेगी। लेकिन एक बारी आबू वालों की आँख खुलनी चाहिए और वो ही ऑफिसर्स यहाँ भाषण करें, अनुभव सुनायें तो आबू वाले देखो पीछे-पीछे.....। नहीं तो एक तरफ सेवा होती और दूसरे तरफ आबू वाले मज़ाक करते रहते हैं। तो राजस्थान को बापदादा की ये एक आशा पूर्ण करनी है। मुश्किल है क्या? फिर यहाँ लड्डु बांटेंगे। जो भी होंगे ना उनके मुख में लड्डु पड़ेगा। चाहे उदयपुर हो, चाहे जोधपुर, .. जहाँ कार्य बढ़ता है वहाँ के लोग बहुत सहयोगी होने चाहिए। अभी देखो दिल्ली के ऑफिसर राजस्थान के ऑफिसर को हिम्मत देकर ठीक कर रहे हैं और वहाँ के बिल्कुल हिलते नहीं हैं। तो करो कमाल। आबू वाले भी प्लैन बनाओ। बापदादा समझते हैं कि जब तक आबू वाले अच्छा नहीं कहते, चाहे अखबार में, चाहे मुख से नहीं बोलते तब तक सेवा की रिज़ल्ट पर्दे के अन्दर है। प्रत्यक्ष नहीं होती। तो राजस्थान के बड़े लोग छोटों को भी ठीक कर देंगे। परमात्म कार्य और इतने छोटे ऑफिसर परमात्म कार्य के बीच में विघ्न रूप बनें तो ये हैं तो चीटी ना। तो अभी कुछ हिलें। कमाल करके दिखाओ। प्लैन बनाओ। एक बार इन तीन-चार मुख्य स्थानों की सेवा लगकर करनी चाहिए। ऐसे नहीं, जब काम पड़ा तो काम के टाइम भागते हैं और काम पूरा हुआ तो खत्म। वैसे तो राजस्थान के ब्राह्मणों को बहुत नशा है ना कि राजस्थान में ही मुख्य केन्द्र है। ये राजस्थान का लक है लेकिन अभी इसी नशे से यह करके दिखाना। चारों ओर फैल जाये कि राजस्थान का सम्मेलन है। राजस्थान का योग शिविर है। फिर देखो आपके ये व्यापारी वगैरह सब आपेही कहेंगे हम भी बैठें। अच्छा, तो राजस्थान यह कमाल करेगा। क्यों, हेड क्वार्टर की ज़िम्मेवारी राजस्थान पर है। बहुत बड़ा ताज पड़ा है। अच्छा! पाण्डव भी

कुछ हिम्मत करेंगे ना, हिम्मत करके दिखाओ। अच्छा। राजस्थान की टीचर्स सामने बैठी हैं, ये तो बहुत टीचर्स हैं। ये एक-एक टीचर एक-एक आई.पी.जी. को ला सकती हैं। एक-एक को तो लाओ तो भी 20-25 का ग्रुप बन जायेगा। बहुत अच्छी-अच्छी टीचर्स हैं। अच्छा।

आगरा

आगरा वाले क्या कर रहे हैं? आगरा वालों ने भी कोई नई कमाल करके दिखाई नहीं है। होनी तो है ना! सारे विश्व में बाप का नाम बाला तो होना ही है। लेकिन जो निमित्त बनता है उसको एक्स्ट्रा मार्क मिल जाती हैं। उसका पद, जितनी सेवा की उस अनुसार एड होकर मार्क्स जमा होती जाती हैं। समझो साधारण है लेकिन सेवा निर्विघ्न है, तो सेवा की मार्क्स एडिशन होने से साधारण राजा से आगे नम्बर में आ जाते हैं। और आगे-आगे जाते आखिर विश्व महाराजा के रॉयल फैमिली में आ जाते हैं। तो ये करना है ना! आगरा भी कमाल करेगा। बापदादा को तो सदा ही सभी बच्चों में आशायें रहती हैं और वो भी आशाओं के दीपक जगे हुए। हर एक बच्चा जगे हुए आशाओं के दीपक हैं। तो कमाल करके दिखाना। देखेंगे, ये कितने समय में कमाल करते हैं। ठीक है ना? अच्छा।

डबल विदेशी

डबल विदेशी क्या करेंगे? डबल कमाल करेंगे। डबल विदेशियों की ये विशेषता अच्छी है कि सेवा के बिना उन्हीं को चैन नहीं आता, मज़ा नहीं आता। उनको सेवा बहुत चाहिए। और उमंग-उत्साह से चाहे टाइम कम मिलता है, थक भी जाते हैं, स्थूल काम करते हैं, लेकिन फिर भी सेवा के लिए एवररेडी रहते हैं, सेवा के लिए बुलावा हो तो बैठेंगे या भागेंगे? भागेंगे। तो सेवा का उमंग-उत्साह यही आप डबल विदेशी आत्माओं की सेफ्टी का साधन है। सेवा में लगे हुए हो तो माया से भी बचे हुए हो। माया भी देखती है कि इन्हीं को फुरसत नहीं है इसलिए वो भी वापस चली जाती है। और दूसरी बात अपने पुरुषार्थ में सच्चाई से अपनी चेकिंग अच्छी करते हैं, वो सच्चाई बापदादा

के पास पहुँचती है। और सच्चाई बापदादा को प्रिय है। इसलिए सच्चाई के फलस्वरूप बापदादा द्वारा विशेष मदद भी मिलती है। चाहे कोई कमजोरी आ भी जाती है लेकिन बाप और सेवा से प्यार होने के कारण वो भी एक्स्ट्रा हिम्मत की मदद दिलाते हैं। समझा? अच्छा! सभी तरफ के हैं। मौरिशियस ने तो कमाल की। क्योंकि कोई भी विदेशी वी.आई.पी. या आई.पी. इण्डिया में आकर अपने देश से यहाँ का प्रोग्राम सेट करे और कराये-ये एक एक्जैम्पुल मॉरिशियस ने दिखाया। दरवाजा खोल दिया, वी.आई.पी., आई.पी. का। तो मॉरिशियस वालों को मुबारक। कहते हैं, बड़े तो बड़े छोटे शुभान अल्लाह। तो मॉरिशियस ने शुभान अल्लाह करके दिखाया। बहुत अच्छा, मुबारक। अच्छा!

मधुबन, ज्ञान सरोवर, हॉस्पिटल, तलहटी

हर एक अपना नाम समझे। बापदादा अभी मधुबन में तो आते ही रहेंगे। तो हर एक चाहे मधुबन हो, चाहे डबल मधुबन, चाहे उपसेवाकेन्द्र हैं, चाहे गीता पाठशालायें हैं, सभी को बापदादा की याद-प्यार मिल रही है और मिलती रहेगी।

नेपाल

(नेपाल का नाम भूल गये) तो नेपाल भूलने का अर्थ है कि आप गुप्त महारथी हो। छिपे हुए रुस्तम हो। नेपाल तो बापदादा को सदा प्यारा है। क्योंकि नेपाल में गवर्नमेन्ट की सेवा सहज और अच्छी है भी और होती भी रहेगी। आखिर नेपाल का राजा भी आना ही है। अच्छा, सेवा अच्छी है। हिम्मत वाली टीचर्स हैं। इसने (राज बहन ने) नया जन्म लेकर सेवा का सबूत दिया। शीला को भी खास याद देना। अच्छा।

चारों ओर के पद्मगुणा प्रेम स्वरूप आत्माओं को, सदा स्वयं को निर्विकल्प बनाने वाले विशेष आत्माओं को, सदा बाप और निर्विघ्न सेवा के लगन में मग्न रहने वाली आत्माओं को, सदा बाप के स्नेह में न्योछावर होने वाले सभी आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

अच्छा! सब खुश! कोई नाराज तो नहीं हुआ – मैं नहीं मिला? राज को जानने वाले कभी नाराज नहीं होते।

दादियों से

देखो आप आदि रत्नों में सभी का प्यार के साथ-साथ शुद्ध मोह बढ़ता जाता है। सभी देखते हैं कि आदि रत्न ठीक हैं तो सब ठीक हैं। तो आप लोगों में सबका शुद्ध मोह बढ़ गया है। बापदादा इन दोनों (चन्द्रमणी दादी, रतनमोहनी दादी) के ऊपर भी खुश हैं। ज्ञान सरोवर की जिम्मेवारी सभाली है। जिम्मेवारी तो क्या, खेल है। भारीपन है क्या? खेल हल्का होता है ना? तो जिम्मेवारी क्या है? खेल है। तो बापदादा खुश है कि समय पर सहयोगी बने हैं और आदि से सहयोगी रहे हैं। आदि से हाँ जी करने वाले हैं – यही साकार बाप का आप सबको विशेष वरदान है। ब्रह्मा बाबा को 'ना' शब्द कभी अच्छा नहीं लगता। ये तो मालूम है, अनुभवी हैं।

(ईशू बहन से) इसने आदि से अब तक बहुत अच्छा पार्ट बजाया है। और आपकी (दादी की) तो विशेष सहयोगी है। कोई भी बात में सुनने-सुनाने वाली बहुत अच्छी है क्योंकि गम्भीर रहती है। ये गम्भीरता का गुण बहुत आगे बढ़ाता है। कोई भी बात बोल दी ना, समझो अच्छा किया और बोल दिया तो आधा खत्म हो जाता है, आधा फल खत्म हो गया, आधा जमा हो गया। और जो गम्भीर होता है उसका फुल जमा होता है। कहते हैं ना—देखो जगदम्बा गम्भीर रही, चाहे सेवा स्थूल में आप लोगों से कम की, आप लोग ज्यादा कर रहे हो लेकिन ये गम्भीरता के गुण ने फुल खाता जमा किया है। कट नहीं हुआ है। कई करते बहुत हैं लेकिन आधा, पौना कट हो जाता है। करते हैं, कोई बात हुई तो पूरा कट हो जाता है या थोड़ी बात भी हुई तो पौना कट हो जाता है। ऐसे ही अपना वर्णन किया तो आधा कट हो जाता है। बाकी बचा क्या? तो जब जगदम्बा की विशेषता – जमा का खाता ज्यादा है। गम्भीरता की देवी है। ऐसे और सभी को गम्भीर होना चाहिए, चाहे मधुबन में रहते हैं, चाहे सेवाकेन्द्र में रहते हैं लेकिन बापदादा सभी को कहते हैं कि गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो, वर्णन करने से खत्म हो जाती हैं। चाहे अच्छा वर्णन करते हो, चाहे बुरा। अच्छा अपना अभिमान और बुरा किसका अपमान कराता है। तो हर एक गम्भीरता की देवी और गम्भीरता का देवता दिखाई दे। अभी गम्भीरता की

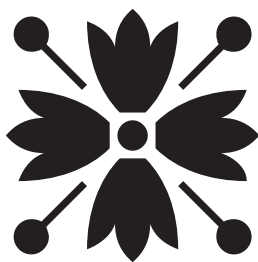
बहुत-बहुत आवश्यकता है। अभी बोलने की आदत बहुत हो गई है क्योंकि भाषण करते हैं ना तो जो भी आयेगा वो बोल देंगे। लेकिन प्रभाव जितना गम्भीरता का पड़ता है इतना वाणी का नहीं पड़ता। अच्छा।

(बापदादा को गुलदस्ते भेंट किये) -

ये गुलदस्ते तो क्या हैं, आप एक-एक रुहानी गुलाब सबसे प्यारे हो।

**(प्रसिद्ध गायक ओमव्यास जी ने नये गीतों की
कैसेट का विमोचन बाबा से कराया) -**

अच्छा है, ड्रामा ने निमित्त बनाया है और निमित्त बनना ही भाग्य की निशानी है। तो भाग्य बना रहे हो और बनाते ही रहेंगे। अच्छा-ओम् शान्ति।



“बापदादा की चाहना – डायमण्ड जुबली वर्ष को लगाव मुक्त वर्ष के रूप में मनाओ”

16.11.95

आ ज बापदादा सदा दिल से बाप की याद में रहने वाले अपने स्नेही, सहयोगी बच्चों से मिलने आये हैं। जितना बच्चों का स्नेह है उतना बाप का भी स्नेह बच्चों से है। बाप सभी बच्चों को एक जैसा अति स्नेह देते हैं। लेकिन बच्चे अपने-अपने शक्ति अनुसार स्नेह को धारण करते हैं। इसीलिए बाप को भी कहना पड़ता है नम्बरवार याद-प्यार। लेकिन बाप सभी बच्चों को नम्बरवन दिल का प्यार अमृतवेले से लेकर देते हैं। इसलिए अमृतवेला विशेष बच्चों के लिए ही रखा हुआ है। क्योंकि अमृतवेला सारे दिन का आदि समय है। तो जो बच्चे आदि समय पर बाप का स्नेह दिल में धारण कर लेते हैं तो दिल में परमात्म स्नेह समाया हुआ होने के कारण और कोई स्नेह आकर्षित नहीं करता है। अगर अपने स्थिति अनुसार पूरा दिल भर करके दिल में स्नेह नहीं धारण करते, थोड़ा भी खाली है, अधूरा लिया है तो दिल में जगह होने के कारण माया भिन्न-भिन्न रूप से अनेक स्नेह, चाहे व्यक्ति, चाहे वैभव-दोनों रूप में उन स्नेहों में आकर्षित कर लेती है।

कई बच्चे बापदादा से कहते हैं कि हमारे पास अभी तक भी माया क्यों आती है? जब मास्टर सर्वशक्तिमान् बन गये तो माया के आने का क्वेश्चन ही नहीं है। लेकिन कारण है कि आदिकाल अमृतवेले अपने दिल में परमात्म स्नेह सम्पूर्ण रूप से धारण नहीं करते। अगर कोई भी चीज़ अधूरी भरी हुई है, कहाँ भी खाली है तो हलचल तो होगी ना! बैठते भी हो, उठते भी हो, लक्ष्य भी है और कहते भी हो कि एक बाप, दूसरा न कोई..... यह दिल से कहते हो या मुख से? तो फिर दिल में और आकर्षण का कारण क्या है? ज़रूर कहाँ और व्यक्ति या वैभव की तरफ स्नेह जाता है तब वो आकर्षित करती है। दिल में सम्पूर्ण परमात्म प्यार पूरा भरा हुआ नहीं होता है। आप सोचो-अगर एक हाथ में आपको कोई हीरा देवे और दूसरे हाथ में मिट्टी का गोला देवे तो

आपकी आकर्षण कहाँ जायेगी? हीरे में जायेगी, मिट्टी में नहीं! मिट्टी से भी खेलना तो अच्छा होता है ना! तो व्यर्थ संकल्प ये भी क्या है? हीरा है या मिट्टी है? तो मिट्टी से खेलते तो हो ना! आदत पड़ी हुई है इसीलिए! व्यक्ति भी क्या है? मिट्टी है ना! मिट्टी-मिट्टी में मिल जाती है। देखने में आपको बहुत सुन्दर आता है, चाहे सूरत से, चाहे कोई विशेषता से, चाहे कोई गुण से, तो कहते हैं कि और मुझे कोई लगाव नहीं है, स्नेह नहीं है लेकिन इनका ये गुण बहुत अच्छा है। तो गुण का प्रभाव थोड़ा पड़ जाता है या कहते हैं कि इसमें सेवा की विशेषता बहुत है तो सेवा की विशेषता के कारण थोड़ा सा स्नेह है, शब्द नहीं कहेंगे लेकिन अगर विशेष किसी भी व्यक्ति के तरफ या वैभव के तरफ बार-बार संकल्प भी जाता है—ये होता तो बहुत अच्छा.... ये भी आकर्षण है। व्यक्ति के सेवा की विशेषता का दाता कौन? वो व्यक्ति या बाप देता है? कौन देता है? तो व्यक्ति बहुत अच्छा है, अच्छा है वो ठीक है लेकिन जब कोई भी विशेषता को देखते हैं, गुणों को देखते हैं, सेवा को देखते हैं तो दाता को नहीं भूलो। वह व्यक्ति भी लेवता है, दाता नहीं है। बिना बाप का बने उस व्यक्ति में ये सेवा का गुण या विशेषता आ सकती है? या वह विशेषता अज्ञान से ही ले आता है? ईश्वरीय सेवा की विशेषता अज्ञान में नहीं हो सकती। अगर अज्ञान में भी कोई विशेषता या गुण है भी लेकिन ज्ञान में आने के बाद उस गुण वा विशेषता में ज्ञान नहीं भरा तो वो विशेषता वा गुण ज्ञान मार्ग के बाद इतनी सेवा नहीं कर सकता। नेचरल गुण में भी ज्ञान भरना ही पड़ेगा। तो ज्ञान भरने वाला कौन? बाप। तो किसकी देन हुई, दाता कौन? तो आपको लेवता अच्छा लगता है या दाता अच्छा लगता है? तो लेवता के पीछे क्यों भागते हो?

बाप के आगे या दादियों के आगे बहुत मीठा-मीठा बोलते हैं, कहेंगे दादी मेरा कुछ लगाव नहीं, बिल्कुल नहीं, सिर्फ सेवा के कारण थोड़ा सा है। थोड़ा सा कहकर अपने को छुड़ा लेते हैं। लेकिन ये लगाव चाहे गुण का हो, चाहे सेवा का हो लेकिन लगाव आज नहीं तो कल कहाँ ले जायेगा? कोई को तो लगाव पुरानी दुनिया तक भी ले जाता है लेकिन मैजारिटी पुरानी दुनिया तक नहीं जाते हैं, थोड़े जाते हैं। मैजारिटी को लगाव पुरुषार्थ में अलबेलेपन की

तरफ ले जाता है। फिर सोचते हैं कि ये तो थोड़ा-बहुत होता ही है फिर बाप को भी समझाने लगते हैं—कहते हैं बाबा आप तो साकार में हो नहीं, ब्रह्मा बाबा भी अव्यक्त हो गया और आप तो हो ही बिन्दी, ज्योति। अभी हम तो साकार में हैं, इतना मोटा-ताजा शरीर है और शरीर से सब करना है, चलना है, तो हम हैं साकार और आप आकार और निराकार हो, अभी साकार में कोई तो चाहिए ना! अच्छा बहुत नहीं, एक तो चाहिए ना! एक भी नहीं चाहिए? देखना बापदादा तो कहते हैं एक चाहिए। नहीं चाहिए? (एक बाबा चाहिए) बाप तो है ही लेकिन कई बार मन में कई बातें आ जाती है और मन भारी हो जाता है, जब तक मन को हल्का नहीं करते हैं तो योग भी नहीं लगता। फिर क्या करें? बाप का भी क्वेश्चन है कि ऐसे टाइम पर क्या करें? मन भारी है और योग लगता नहीं है तो क्या करें? उल्टी नहीं करे, अन्दर ही मचलता रहे? डॉक्टर्स लोग क्या कहते हैं? अगर पेट भारी हो जाये तो उल्टी करके निकालनी चाहिए या अन्दर ही रखनी चाहिए? डॉक्टर्स क्या कहते हैं? उल्टी करनी चाहिए ना? तो डॉक्टर भी कहते हैं उल्टी करनी चाहिए। अच्छा।

ये तो हुआ तन का डॉक्टर और आप सभी मन के डॉक्टर हो। तो तन वाले ने अपना जवाब दिया, अभी मन के डॉक्टर बताओ—अगर मन में कोई उलझन हो तो कहाँ उल्टी करें? बाबा के सामने उल्टी करेंगे! (बाबा के कमरे में जाकर करें) कमरे में उल्टियाँ करके आवें! सोचो! बाप के आगे उल्टी करेंगे? नहीं तो कहाँ करे? कोई स्थान तो बताओ ना? बापदादा तो बच्चों का तरफ लेता है कि उस समय तो कोई चाहिए ज़रूर। (बाबा को सुनायें) अगर बाप सुनता ही नहीं, तो क्या करें? कई बच्चों की कम्प्लेन्ट है ना कि हमने तो बाबा को सुनाया, बाबा ने सुना ही नहीं, जवाब ही नहीं दिया। फिर क्या करें? वास्तव में अगर दिल में परमात्म प्यार, परमात्म शक्तियाँ, परमात्म ज्ञान फुल है, ज़रा भी खाली नहीं है तो कभी भी किसी भी तरफ लगाव या स्नेह जा नहीं सकता।

कई कहते हैं लगाव नहीं है लेकिन सिर्फ अच्छा लगता है तो इसको कौनसी लाइन कहेंगे? लगाव नहीं है, अच्छा लगता है तो ये क्या है? इतनी छुट्टी दें कि अच्छा भले लगे, लगाव नहीं है, उनसे बैठना, उनसे बात करना, उनसे सेवा कराना वो अच्छा लगता है, तो ये छुट्टी दें? जो समझते हैं थोड़ी-

थोड़ी देनी चाहिए, अभी सम्पूर्ण तो बने नहीं हैं, पुरुषार्थ कर रहे हैं, थोड़ी छुट्टी होनी चाहिए! वह हाथ उठाये। अभी हाथ तो उठायेगे नहीं, क्योंकि शर्म आयेगी ना! लेकिन अगर आप समझते हो कि थोड़ी सी छुट्टी होनी चाहिए तो दादी को प्रायवेट चिटकी लिखकर दे देना। ऐसे नहीं कहना कि दादी पांच मिनट बात करना है, इसमें तो फिर टाइम चाहिए। चिटकी में लिख दो तो बापदादा उनका अच्छा संगठन करेंगे। और ही अच्छा हो जायेगा ना! अच्छा, अभी सब ना कर रहे हैं और सभी का वीडियो निकल रहा है। यदि ना करके फिर करेंगे तो वो कैसेट भेजेंगे कि आपने ना किया था फिर क्यों किया? भेजनी पड़ेगी या सेफ रहेंगे? पक्का या थोड़ा-थोड़ा कच्चा, थोड़ा-थोड़ा पक्का!

उस दिन भी सुनाया कि ये सीज़न डायमण्ड जुबली का आरम्भ करने वाली है तो इस सीज़न में आप लोगों ने तो कान्फ्रेंस का, भाषणों का, मेलों का बहुत प्रोग्राम बनाया है लेकिन बापदादा विशेष इस डायमण्ड जुबली में एक प्रोग्राम बनाना चाहते हैं, तैयार हो?

बापदादा चाहते हैं कि डायमण्ड जुबली में जिस बच्चे को देखें—चाहे दो वर्ष का है, चाहे साठ वर्ष का है, चाहे दो मास का है, चाहे टीचर है, चाहे स्टूडेंट है, चाहे समर्पण है, चाहे प्रवृत्ति में है लेकिन डायमण्ड जुबली के वर्ष में, ये जो बाप के साथ आप सबने भी पान का बीड़ा उठाया है कि पवित्रता द्वारा हम प्रकृति को भी पावन करेंगे। तो ये संकल्प है या बाप को करना है? बाप के साथी हैं? थोड़ा सा हाथ ऐसे रख देते हैं, चतुराई करते हैं। ऐसे नहीं करना। तो बापदादा चाहते हैं कि सारे विश्व में हर एक बच्चा लगाव मुक्त बने — चाहे साधनों से, चाहे व्यक्ति से। साधनों से भी लगाव नहीं। यूज करना और चीज़ है और लगाव अलग चीज़ है। तो बापदादा लगाव-मुक्त वर्ष मनाने चाहते हैं। ये फंक्शन करना चाहते हैं। तो इस फंक्शन में आप लोग साथी बनेंगे? फिर ये तो नहीं कहेंगे कि यह कारण हो गया! कोई भी कारण हो, चाहे हिमालय का पहाड़ भी गिर जाये, लेकिन आप उस हिमालय के पहाड़ से भी किनारे निकल आओ। इतनी हिम्मत है? पहले टीचर्स बोलो। स्टूडेंट खुश होते हैं कि हमारी टीचर्स को बापदादा कहता है। और टीचर्स तो सहयोग के लिए सदा साथी हैं ही ना। क्योंकि आगे चलकर आजकल की दुनिया में ये सभी जो भी

अपने को धर्म आत्मा, महान आत्मा कहलाते हैं उन्होंने की भी पवित्रता के फाउण्डेशन हिलेंगे। और ऐसे टाइम पर आदि में जब ब्रह्मा बाप निमित्त बने तो गाली किस बात के कारण खाई? पवित्रता के कारण ना। नहीं तो कोई बड़े आयु वाले की भी हिम्मत नहीं थी जो ब्रह्मा बाप के पास्ट लाइफ में भी कोई अंगुली उठाए। ऐसी पर्सनालिटी थी। लेकिन पवित्रता के कारण गाली खानी पड़ी। और इस परमात्म ज्ञान की नवीनता ही पवित्रता है। फलक से कहते हैं ना कि आग-कपूस इकट्ठा रहते भी आग नहीं लग सकती। चैलेन्ज है ना! जो युगल हैं वो हाथ उठाओ। तो आप सभी युगलों की ये चैलेन्ज है या थोड़ी-थोड़ी आग लगेगी फिर बुझा देंगे? वर्ल्ड को चैलेन्ज है ना! सारे विश्व को आप लोग भाषणों में कहते हो कि पवित्रता के बिना योगी तू आत्मा, ज्ञानी तू आत्मा बन ही नहीं सकते। ये आप सबकी चैलेन्ज है ना? जो युगल समझते हैं कि मेरी ये चैलेन्ज है वो हाथ उठाओ। अच्छा है – एक ही ग्रुप में साथी तो बहुत हैं। तो डायमण्ड जुबली में क्या करेंगे? लगाव मुक्त। क्रोधमुक्त का किया ना। थोड़ा-थोड़ा क्रोध तो बापदादा ने भी कइयों में देखा, लेकिन इस बारी थोड़ा का छोड़ दिया। फिर भी चाहे देश, चाहे विदेश में जिन्होंने अटेन्शन रखा और सम्पूर्ण रूप से क्रोध मुक्त जीवन का प्रैक्टिकल में अनुभव किया, करके दिखाया, उन सबको बापदादा पद्मगुणा से भी ज्यादा मुबारक देते हैं। क्योंकि इस समय चाहे विदेश वाले, चाहे देश वाले, सबके बुद्धि रूपी टेलीफोन यहाँ मधुबन में लगे हुए हैं। अभी सबका कनेक्शन मधुबन में है। तो सभी ने यह अनुभव तो किया ही होगा कि जिन्होंने अच्छी तरह से दृढ़ संकल्प किया – उन्होंने को बापदादा की तरफ से विशेष एक्स्ट्रा मदद भी मिली है। तो ऐसे नहीं समझना कि एक साल तो क्रोध को खत्म किया, अभी तो फ्री हैं। नहीं। अगर सम्पूर्ण लगाव मुक्त अनुभव करेंगे तो क्रोध मुक्त ऑटोमेटिकली हो जायेंगे। क्यों? क्रोध भी क्यों होता है? जिस बात को, जिस चीज़ को आप चाहते हो और वो पूर्ण नहीं होता है या प्राप्त नहीं होता है तो क्रोध आता है ना! क्रोध का कारण – आपके जो संकल्प हैं वो चाहे उल्टे हों, चाहे सुल्टे हों लेकिन पूर्ण नहीं होंगे – तो क्रोध आयेगा। मानो आप चाहते हो कि कान्फ्रेन्स होती है, फंक्शन होते हैं तो उसमें हमारा भी पार्ट होना चाहिए। आखिर भी हम लोगों

को कब चांस मिलेगा? आपकी इच्छा है और आप इशारा भी करते हैं लेकिन आपको चांस नहीं मिलता है तो उस समय चिड़चिड़ापन आता है कि नहीं आता है? चलो, महाक्रोध नहीं भी करो, लेकिन जिसने ना की उनके प्रति व्यर्थ संकल्प भी चलेंगे ना? तो वह पवित्रता तो नहीं हुई। ऑफर करना, विचार देना इसके लिए छुट्टी है लेकिन विचार के पीछे उस विचार को इच्छा के रूप में बदली नहीं करो। जब संकल्प इच्छा के रूप में बदलता है तब चिड़चिड़ापन भी आता है, मुख से भी क्रोध होता है वा हाथ पांव भी चलता है। हाथ पांव चलाना—वह हुआ महाक्रोध। लेकिन निस्वार्थ होकर विचार दो, स्वार्थ रखकर नहीं कि मैंने कहा तो होना ही चाहिए—ये नहीं सोचो। ऑफर भले करो, ये रांग नहीं है। लेकिन क्यों-क्या में नहीं जाओ। नहीं तो ईर्ष्या, घृणा – ये एक-एक साथी आता है। इसलिए अगर पवित्रता का नियम पक्का किया, लगाव मुक्त हो गये तो यह भी लगाव नहीं रखेंगे कि होना ही चाहिए। होना ही चाहिए, नहीं। ऑफर किया ठीक, आपकी निस्वार्थ ऑफर जल्दी पहुँचेगी। स्वार्थ या ईर्ष्या के वश ऑफर और क्रोध पैदा करेगी। तो टीचर्स क्या करेंगी? 100 परसेन्ट लगाव मुक्त। बोलो हाँ या ना? फॉरेनर्स बोलो, हाँ जी।

बापदादा को तो अपने टी.वी. में बहुत नई-नई बातें दिखाई देती हैं। अभी 60 वर्ष पूरे हो रहे हैं तो अब तक जो बातें नहीं हुई थी वो नये-नये खेल भी बहुत दिखाई देते हैं। इस सीज़न में एक-एक करके वर्णन करेंगे। लेकिन याद रखना अगर किसी के प्रति भी स्वप्न मात्र भी लगाव हो, स्वार्थ हो तो स्वप्न में भी समाप्त कर देना। कई कहते हैं कि हम कर्म में नहीं आते लेकिन स्वप्न आते हैं। लेकिन अगर कोई व्यर्थ वा विकारी स्वप्न, लगाव का स्वप्न आता है तो अवश्य सोने के समय आप अलबेलेपन में सोये। कई कहते हैं कि सारे दिन में मेरा कोई संकल्प तो चला ही नहीं, कुछ हुआ ही नहीं फिर भी स्वप्न आ गया। तो चेक करो—सोने समय बापदादा को सारे दिन का पोतामेल देकर, खाली बुद्धि हो करके नींद की? ऐसे नहीं कि थके हुए आये और बिस्तर पर गये और गये—ये अलबेलापन है। चाहे विकर्म नहीं किया और संकल्प भी नहीं किया लेकिन ये अलबेलेपन की सज़ा है। क्योंकि बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपने बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा, सब बाप के

हवाले करो और अपने बुद्धि को खाली करो। दे दिया बाप को और बाप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं। अकेले सोते हो ना तभी स्वप्न आते हैं। अगर बाप के साथ सोओ तो कभी ऐसे स्वप्न भी नहीं आ सकते। लेकिन फरमान को नहीं मानते हो तो फरमान के बदले अरमान मिलता है। सुबह को उठकर के दिल में अरमान होता है ना कि मेरी पवित्रता स्वप्न में खत्म हो गई। ये कितना अरमान है! कारण है अलबेलापन। तो अलबेले नहीं बनो। जैसे आया वैसे यहाँ वहाँ की बातें करते-करते सो जाओ, क्योंकि समाचार तो बहुत होते हैं और दिलचस्प समाचार तो व्यर्थ ही होते हैं। कई कहते हैं—और तो टाइम मिलता ही नहीं, जब साथ में एक कमरे में जाते हैं तो लेन-देन करते हैं। लेकिन कभी भी व्यर्थ बातों का वर्णन करते-करते सोना नहीं, ये अलबेलापन है। ये फरमान को उल्लंघन करना है। अगर और टाइम नहीं है और जरूरी बात है तो सोने वाले कमरे में नहीं, लेकिन कमरे के बाहर दो सेकण्ड में एक-दो को सुनाओ, सोते-सोते नहीं सुनाओ। कई बच्चों की तो आदत है, बापदादा तो सभी को देखते हैं ना कि सोते कैसे हैं? एक सेकण्ड में बापदादा सारे विश्व का चक्कर लगाते हैं, और टी.वी. से देखते हैं कि सो कैसे रहे हैं, बात कैसे कर रहे हैं ... सब बापदादा देखते हैं। बापदादा को तो एक सेकण्ड लगता है, ज्यादा टाइम नहीं लगता। हर एक सेन्टर, हर एक प्रवृत्ति वाले सबका चक्कर लगाते हैं। ऐसे नहीं सिर्फ सेन्टर का, आपके घरों का भी टी.वी. में आता है। तो जब आदि अर्थात् अमृतवेला और अन्त अर्थात् सोने का समय अच्छा होगा तो मध्य स्वतः ही ठीक होगा। समझा? और बातें करते-करते कई तो बारह साढ़े बारह भी बजा देते हैं। मस्त होते हैं, उनको टाइम का पता ही नहीं। और फिर अमृतवेले उठकर बैठते हैं तो आधा समय निद्रालोक में और आधा समय योग में। क्योंकि जो अलबेले होकर सोये तो अमृतवेला भी तो अलबेला होगा ना! ऐसे नहीं समझना कि हमको तो कोई देखता ही नहीं है। बापदादा देखता है। यह निद्रा भी बहुत शान्ति वा सुख देती है, इसीलिए मिक्स हो जाता है। अगर पूछेंगे तो कहेंगे—नहीं, मैं बहुत शान्ति का अनुभव कर रहा था। देखो, नींद को भी आराम कहा जाता है। अगर कोई बीमार भी होता है तो डॉक्टर लोग कहते हैं – आराम करो। आराम क्या करो? नींद करो टाइम पर। तो निद्रा भी आराम

देने वाली है। फ्रेश तो करती है ना। तो नींद से फ्रेश होकर उठते हैं ना तो कहते हैं आज (योग में) बहुत फ्रेश हो गये। अच्छा!

सभी दूर-दूर से आये हैं। जो इस ग्रुप में पहली बारी आये हैं वो हाथ उठाओ। जो छोटे बच्चे होते हैं ना वो बड़ों से और ही प्यारे होते हैं। लेकिन जो नये-नये आये हो वो मेकप करना। जो बड़ों ने 10 साल में किया वो आप 10 दिन में करना। और कर सकते हो क्योंकि बापदादा समझते हैं कि जब नये-नये आते हैं ना तो उमंग-उत्साह बहुत होता है और जितने पुराने होते हैं तो..... समझ गये पुराने! इसलिए कहने की जरूरत क्या है! सभी नये, चाहे कुमारियाँ हैं, चाहे कुमार हैं, चाहे प्रवृत्ति वाले हैं, प्रवृत्ति वालों को तो इन सभी महात्माओं को चरणों में झुकाना है। सब आपके गुण गायेंगे कि ये प्रवृत्ति में रहते भी निर्विघ्न पवित्रता के बल से आगे बढ़ रहे हैं। एक दिन आयेगा जो आप सबके आगे ये महात्मायें झुवेंगे। लेकिन अपना वायदा याद रखना-लगाव मुक्त रहना। अच्छा।

टीचर्स से

टीचर्स तो हर बात के निमित्त है। हो ना निमित्त-ये बात पक्की है ना! टीचर्स का अर्थ ही है निमित्त। तो अभी भी इस वर्ष - लगाव मुक्त बनने में टीचर्स नम्बरवन निमित्त बनें। ठीक है! पक्का! ताली बजाओ। बापदादा भी आप टीचर्स के प्रति विशेष ताली बजाता है। अच्छा।

कुमारियाँ

कुमारियाँ हाथ उठाओ। कुमारियाँ क्या करेंगी? कुमारियों को अपने जीवन का स्वयं, स्वयं का मित्र बन निर्बन्धन बनाने में नम्बरवन जाना चाहिए। इन कुमारियों की लिस्ट इकट्ठी करो फिर देखेंगे कि सचमुच कितनी निर्बन्धन बनती हैं? कुमारियाँ अगर समझती हो कि हम निर्बन्धन होकर सेवा में निमित्त बनेंगी तो हाथ उठाओ। इन्हों की ट्रेनिंग रखेंगे। अभी तो ज्ञान सरोवर में भी रखते हैं। तो कुमारियाँ क्या बनेंगी? निर्बन्धन। न मन का बन्धन, न सम्बन्ध का बन्धन। डबल बन्धन से मुक्त। अच्छा।

कुमार

कुमार हाथ उठाओ। कुमार तो बहुत हैं। तो कुमार क्या विशेषता दिखायेंगे? कुमार ऐसे अपने को तैयार करो—चाहे अपने-अपने स्थान पर हो लेकिन जहाँ भी हो वहाँ अपने को ऐसा तैयार करो जो आपका 400-500 का ग्रुप बना करके गवर्नमेन्ट के इन बड़े लोगों से मिलायें कि देखो कि ये इतने यूथ विश्व की सेवा के लिए या भारत की सेवा के लिए डिस्ट्रिक्शन का काम न कर, कन्स्ट्रक्शन का काम कर रहे हैं। तो ऐसा ग्रुप बनाओ। तो कितने टाइम में अपने को तैयार करेंगे? क्योंकि गवर्नमेन्ट यूथ को आगे रखना चाहती है लेकिन उनको ऐसे यूथ मिलते नहीं हैं और बाप के पास तो हैं ना! तो ऑलमाइटी गवर्नमेन्ट इस हलचल वाली गवर्नमेन्ट के आगे एक प्रैक्टिकल मिसाल दिखा सकती है। लेकिन कच्चे नहीं होने चाहिए। ऐसा नहीं, आप कहो हम तो बहुत अच्छे चलते हैं और आपके साथी जो हैं वो रिपोर्ट करें कि नहीं, ये तो ऐसे ही कहता है। ऐसे नहीं। पवित्रता के लिए बिगड़ते हैं वो बात अलग है लेकिन दिव्यगुणों की धारणा में आपका प्रभाव घर वालों के ऊपर पड़ना चाहिए। समझा? तो जो समझते हैं हम डायमण्ड जुबली तक तैयार हो जायेंगे वो हाथ उठाओ। अभी थोड़े कम हो गये। अच्छा, टीचर्स रिपोर्ट देना इस डायमण्ड जुबली के बीच में, एण्ड में नहीं। गवर्नमेन्ट को यूथ दिखायें। अभी तो 8 मास हैं। तो आठ मास ठीक है।

अधरकुमार-कुमारियाँ

अधरकुमार-कुमारियाँ क्या करेंगे? वैसे प्रवृत्ति वालों को एक नया सबूत देना चाहिए। जो घर में हैं, आपकी फैमली है, किसके चार बच्चे होंगे, किसके आठ होंगे, किसके दो होंगे, जो भी हैं लेकिन हर प्रवृत्ति वाले अपने बच्चों को ऐसे मूल्य सिखाकर तैयार करें जो बच्चों का ऐसा धारणा वाला ग्रुप सैम्पुल हो, जो कॉलेज-स्कूल के पढ़े हैं, उनके आगे उन बच्चों को दिखायें। प्रवृत्ति वालों को अपने बच्चों के ग्रुप को तैयार करना चाहिए। जो किसी से भी रिपोर्ट पूछें चाहे उसके टीचर्स से पूछें, चाहे उसके मोहल्ले के दोस्तों से पूछें, सब उसकी रिपोर्ट अच्छी दें। ऐसे नहीं – आप कहो बहुत अच्छे हैं और टीचर कहे कि

ये तो पढ़ते ही नहीं हैं। ऐसे नहीं। तो प्रवृत्ति वालों को ऐसे बच्चे तैयार करने चाहिए। ज्ञान में आते हैं, अच्छे भी हैं लेकिन उन्हीं को थोड़ा और अटेन्शन दिलाकर ऐसा ग्रुप तैयार करो। तो एज्युकेशन का सर्टीफिकेट वो बच्चे हो जायेंगे। नहीं तो एज्युकेशन वाले कहते हैं ना आप सर्टीफिकेट नहीं देते हो। तो आप कहो सर्टीफिकेट देखो ये चैतन्य है। आप कागज का सर्टीफिकेट देते हो, हम आपको चैतन्य का सर्टीफिकेट दिखाते हैं। समझा ?

ऐसे ही डायमण्ड जुबली नहीं मनानी है। डायमण्ड जुबली में कुछ नवीनता दिखानी है। जो गवर्नमेन्ट की आँख खुले कि ये क्या है! किसी कार्य में वो ना कर नहीं सके। और ही ऑफर करें, जैसे यहाँ जब महामण्डलेश्वर आये थे तो उन्हीं ने क्या ऑफर की ? कि हमारे आश्रम ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ चलायें। ऐसे मांगनी की थी ना! तो सभी डिपार्टमेन्ट ऑफर करें कि हमारे डिपार्टमेन्ट में आप लोग ही कर सकते हैं। ऐसा प्रैक्टिकल स्वरूप करना – ये है डायमण्ड जुबली। लेकिन पहला वायदा याद है? क्या बनना है? (लगाव मुक्त) तभी ये सभी हो सकता है। अभी भी बच्चे को मारते रहेंगे तो बच्चा कैसे अच्छा होगा। और आपस में कमज़ोर होते रहेंगे तो महात्मा कैसे चरणों में आयेंगे। जितना-जितना पवित्रता के पिल्लर को पक्का करेंगे उतना-उतना ये पवित्रता का पिल्लर लाइट हाउस का काम करेगा। अच्छा।

डबल विदेशी

डबल विदेशियों में बापदादा को उसमें भी विशेष ब्रह्मा बाप को डबल प्यार है। क्यों डबल प्यार है बताओ ? समझते हो डबल प्यार है? क्यों डबल प्यार है? (लौकिक-अलौकिक डबल काम करते हैं) अच्छा जवाब दिया। लेकिन और भी है, ब्रह्मा बाबा को डबल विदेशियों से विशेष प्यार इसलिए है कि ब्रह्मा बाप हर कार्य में क्विक एक्ज़ाम्पल स्वयं भी रहे और बच्चों को भी बनाया तो डबल विदेशी आते ही कोर्स किया, थोड़ा-सा पक्के हुए और सेन्टर खोल देते हैं। ऐसे करते हो ना ? इन्हीं की तो बहुत ट्रेनिंग होती है, लेकिन डबल विदेशी सेवा में क्विक एक्ज़ाम्पल हैं। तो ब्रह्मा बाबा को ऐसे बच्चों का बहुत समय से आवाहन था कि ऐसे बच्चे निकलें। तो डबल विदेशी सेवा में

ज्यादा टाइम नहीं लगाते। जल्दी लग जाते हैं। कितना भी बिज़ी होते हुए भी सेवा का शौक अच्छा रहता है। अभी भी ये म्यूज़ियम बनाने के लिए आये हैं। (ज्ञान सरोवर में 5 डबल विदेशी भाई-बहिनें म्यूज़ियम बना रहे हैं) देखो डबल विदेशियों की विशेषता है तब तो विदेश से खास आप लोगों को बुलाया है। विशेषता तो है ना! ये पूरा ग्रुप अच्छा है। देखो, विशेष आत्मायें हो गये ना, विशेष कार्य के लिए आपको बुलाया गया तो विशेष आत्मायें हो गये। वैसे बापदादा को तो अच्छे लगते ही हो। शिव बाबा को भी अच्छे लगते हो लेकिन ब्राह्मण परिवार को भी अच्छे लगते हो। आप लोगों को देखते हैं ना तो यहाँ भारत वालों को भी नशा रहता है कि देखो हमारा सिर्फ भारत में नहीं, विश्व में है। तो सभी के सिकीलधे हो। अच्छा।

म्यूज़ियम बनाने वाले ग्रुप को बापदादा ने सम्मुख बुलाया

ये भी ड्रामानुसार विशेष वरदाता का वरदान मिलता है। कोई भी आर्ट है तो आर्ट वरदान समझकर कार्य में लगाओ। ये बाप का वरदान ड्रामानुसार विशेष निमित्त बना है तो उससे कार्य सहज और सफल हुआ ही पड़ा है। ऐसे है ना? तो विशेष वरदानी आत्मायें हैं, उसको उसी विशेषता से कार्य में लगाते रहो। बाप का वरदान है – यह सदा स्मृति में रहे। तो आपके सिर्फ हाथ काम नहीं करेंगे लेकिन बाप की शक्ति आपके हाथों के साथ काम करेगी। बहुत अच्छा है। अच्छा।

अहमदाबाद - महादेव नगर, सेवाकेन्द्र के उद्घाटन के अवसर पर जिन 19 कुमारियों का समर्पण समारोह मनाया गया, वे सब बापदादा से मिलने मधुबन में आई हैं, उन्हें बापदादा ने सम्मुख बुलाया:- देखो, कुमारियों की वैसे भी महिमा है। भक्ति मार्ग में आप सभी ने कुमारियों के चरण भी धोये होंगे। पूजा भी की होगी और अभी यही कुमारियाँ आप सभी को परमात्म मिलन और परमात्म वर्से के अधिकारी बना रही हैं। सभी कुमारियाँ पक्की हो? फोटो तो निकला हुआ है। कोई कच्चा तो नहीं? कोई पुरानी दुनिया में तो नहीं चले जायेंगे। पक्के हैं! अच्छा।

चारों ओर के दिल में समाये हुए बापदादा के सिकीलधे श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के हर एक फरमान मानने से, स्वयं का और औरों का भी अरमान समर्पित कराने वाले, सदा पवित्रता के पिल्लर को मज़बूत बनाने वाले और पवित्रता की लाइट, लाइट हाउस बन फैलाने वाले विशेष आत्माओं को, सदा स्वयं को लगाव-मुक्त बनाने वाले बाप के समीप आने वाले, रहने वाले सभी बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

विदेश में रहने वाले चारों ओर के बच्चों को बापदादा का विशेष याद-प्यार क्योंकि वो यादप्यार के पत्र सदा ही भेजते रहते हैं। जिन्होंने ने पत्र भेजा है उन्होंने को भी विशेष याद और जिन्होंने ने दिल से याद प्यार भेजा है उन्होंने को भी विशेष याद-प्यार।



सोते समय आपदादा को आरे दिन का पोतामेल देखकर, खाली खुद्वि हो करके नींद क्वी? ऐसे नहीं कि थके हुए आये और थिक्तर पत्र गये और गये -ये अलछेलापन है। चाहे थिक्तर नहीं किया और अंकल्प भी नहीं किया लेकिन ये अलछेलेपन क्वी अज्ञा है। क्योंकि आप का फरमान है कि सोते समय अदा अपने खुद्वि को क्वीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे खुरा, अथ आप के हथाले करो और अपने खुद्वि को खाली करो। दे दिया आप को और आप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं।



“परमत, परचिंतन और परदर्शन से मुक्त बनो और पर-उपकार करो”

25.11.95

आ ज बापदादा अपने चारों ओर जो बाप के बच्चे हैं, विशेष हैं, उन सर्व विशेष आत्माओं को देख रहे हैं। चाहे भारत के वा विदेश के किसी भी कोने में हैं, लेकिन बापदादा सर्व विशेष आत्माओं को समीप देख रहे हैं। बापदादा को अपने विशेष बच्चों को देख हर्ष होता है। जैसे आप बच्चों को बाप को देखकर खुशी होती है ना! खुशी होती है तब तो भाग करके आये हो ना। तो बाप को भी खुशी होती है कि मेरा एक-एक बच्चा विशेष आत्मा है। चाहे बुजुर्ग हैं, अनपढ़ हैं, छोटे बच्चे हैं, युवा हैं, प्रवृत्ति वाले हैं लेकिन सारे विश्व के आगे विशेष हैं। चाहे कितने भी बड़े-बड़े वैज्ञानिक चमत्कार दिखाने वाले भी हैं, चन्द्रमा तक पहुँचने वाले भी हैं लेकिन बाप के विशेष बच्चों के आगे वो भी अन्जान हैं। पांचों ही तत्वों को जान लिया, उन्हीं पर विजय भी प्राप्त कर ली लेकिन छोटी सी बिन्दु आत्मा को नहीं जाना। यहाँ छोटे बच्चे से भी पूछेंगे—तुम कौन हो, तो क्या कहेगा? आत्मा हूँ कहेगा ना। आत्मा कहाँ रहती है, वो भी बतायेगा। और वैज्ञानिक से पूछो आत्मा क्या है? आत्मा के ज्ञान को अभी तक जान नहीं सके। तो कितने भी बड़े हिस्ट्री के हिसाब से, इस दुनिया के हिसाब से विशेष हों लेकिन जिसने अपने को नहीं जाना, उससे तो यहाँ का पांच वर्ष वाला बच्चा विशेष हो गया। आप लोगों का शुरु-शुरु का बहुत फ़लक का गीत है, याद है कौन सा गीत है? एक गीत था—कितना भी बड़ा सेठ, स्वामी हो लेकिन अलफ़ को नहीं जाना....। तो कितने भी बड़े हो, चाहे नेता हो, चाहे अभिनेता हो लेकिन अपने आपको नहीं जाना तो क्या जाना? तो ऐसी विशेष आत्मायें हो। यहाँ की अनपढ़ बुजुर्ग माता है और दूसरी तरफ अच्छा महात्मा है लेकिन बुजुर्ग माता फलक से कहेगी कि हमने परमात्मा को पा लिया। और महात्मा कहेगा—परमात्मा को पाना बहुत मुश्किल है, लेकिन यहाँ 100 वर्ष के आयु वाली भी निश्चयबुद्धि होगी तो वो क्या कहेगी? तुम ढूँढते रहो, हमने तो पा लिया। तो महात्मा भी आपके आगे क्या है! प्रवृत्ति वाले फलक से कहेंगे कि हम डबल पलंग पर सोते, इकट्ठे रहते भी पवित्र हैं,

क्योंकि हमारे बीच में बाप है। और महात्मायें क्या कहेंगे? कहेंगे – आग-कपूस इकट्ठा रहना, यह तो असम्भव लगता है। और आपके लिये क्या है? प्रवृत्ति वाले बताओ—पवित्र रहना मुश्किल है या सहज है? सहज है या कभी-कभी मुश्किल हो जाता है? जो पक्के हैं वो तो बड़ी सभा हो या कुछ भी हो फ़लक से कह सकते हैं कि पवित्रता तो हमारा स्वधर्म है। परधर्म नहीं है, स्वधर्म है। तो स्व सहज होता है, पर मुश्किल होता है। अपवित्रता परधर्म है लेकिन पवित्रता स्वधर्म है। तो ऐसे अपनी विशेषता को जानते हो ना? क्योंकि नये-नये भी बहुत आये हैं ना? लेकिन कितने भी नये हैं पवित्रता का पाठ तो पक्का है ना? कई बच्चे ऐसा भी करते हैं – जब तक बाप से मिलने का एक साल पूरा नहीं होता, सबको पता है कि यह नियम पक्का है, तो मधुबन में आने तक तो ठीक रहते हैं लेकिन देख लिया, पहुँच गये, तो कई वापस जाकर अलबेले भी हो जाते हैं लेकिन सोचो कि पवित्रता की प्रतिज्ञा किससे की? बाप से की ना? बाप का फरमान है ना? तो बाप से प्रतिज्ञा कर और फिर अगर अलबेले होते हैं तो नुकसान किसको होगा? ब्राह्मण परिवार में तो एक जाते, 10 आते हैं। लेकिन नुकसान कमज़ोर होने का, उन आत्माओं को होता है इसलिए जो भी नये-नये पहली बार आये हैं वो बाप के घर में तो पहुँच गये—यह तो भाग्य की बात है ही लेकिन तकदीर की लकीर को कभी भी कम नहीं करना। तकदीर को बड़ा करना।

अच्छा, जितने भी आये हैं, सबका नाम रजिस्टर में तो है ही। रजिस्टर में अपना नाम पक्का कराया है या थोड़ा-थोड़ा कच्चा है? अच्छा, जो भी नये जहाँ से भी आये हैं, टीचर्स के पास तो लिस्ट है ही और प्रेजेन्ट मार्क भी डालते हैं या नहीं डालते? कौन-सा सेन्टर है जहाँ प्रेजेन्ट मार्क नहीं पड़ती हो, कोई सेन्टर है? टीचर सच बताओ। कभी नींद आ जाती होगी, कभी बीमार हो गये, कभी क्लास में पहुँच नहीं सके, तो रोज़ की प्रेजेन्ट मार्क पड़ती है? जो टीचर्स कहती हैं रोज़ का रजिस्टर और प्रेजेन्ट मार्क है वो हाथ उठाओ। अच्छा, रेग्युलर है या कभी-कभी? कि दो-तीन दिन मिस हो जाता है? सब टीचर्स पास हैं तो ताली बजाओ। तो अभी क्या करना – जो भी आप नये लाये हैं, चाहे भाई, चाहे बहनें, उनका तीन-चार मास के बाद, क्योंकि पहले थोड़ा नशा रहता

है, पीछे धीरे-धीरे कम होता है, तो चार मास के बाद जितने नये आये, उतने कायम हैं या चक्कर लगाने गये हैं कहाँ? यह रिज़ल्ट लिखना। क्योंकि कई चक्कर लगाने भी जाते हैं। दो साल की माया की यात्रा करके फिर यहाँ पहुँचते हैं। तो रिज़ल्ट में सिर्फ यह दो शब्द लिखना कि 60 आये और 60 ही हैं। या 60 आये 40 हैं। सिर्फ ये दो अक्षर विशेष रतनमोहिनी के नाम से अलग लिखना। बाहर में (लिफाफे पर) ब्रह्माकुमारीज़ तो लिखेंगे लेकिन बड़े अक्षरों में रतनमोहिनी लिखना, अन्दर नहीं। तो समझेंगे इसका है, नहीं तो उसके पास (ईशू के पास) पोस्ट बहुत आ जाती है। देखेंगे, कितनी विशेष आत्मायें अपनी विशेषता दिखाती हैं?

देखो, कोई भी बच्चा लौकिक में भी पैदा होता है तो सभी क्या कहते हैं? सदा ज़िन्दा रहे, बड़ी आयु रहे। तो बापदादा भी विशेष आत्माओं की अविनाशी विशेषता देखना चाहते हैं। थोड़े टाइम की नहीं। एक साल चले, दो साल चले—ये नहीं। अविनाशी रहने वाले को ही अविनाशी प्रालब्ध प्राप्त होती है। तो मातायें भी पक्की हैं? क्योंकि चाहे आप एक साल के हो या दो साल के हो, चार के हो लेकिन समाप्त तो एक ही समय होनी है ना! विनाश तो इकट्ठा ही होगा ना! कि आप कहेंगे कि हम तो दो साल के हैं हमारी सिल्वर जुबली हो जावे, पीछे विनाश होवे! यह तो नहीं होगा ना। इसलिए पीछे आने वाले को और आगे जाना है। थोड़े समय में बहुत कमाई कर सकते हो। फिर भी आप लोगों को पुरुषार्थ का समय मिला है। आगे चल करके तो इतना समय भी नहीं मिलेगा। सुनाया था ना कि अभी लेट का बोर्ड तो लग गया है लेकिन टू लेट का नहीं लगा है। तो आप सभी लक्की हो। सिर्फ अपने भाग्य को स्मृति में रखते हुए बढ़ते चलना। कोई बातों में नहीं जाना।

आज बापदादा देख रहे थे कि बच्चों के पुरुषार्थ का समय वेस्ट क्यों जाता है? चाहता कोई नहीं है, सब चाहते हैं कि हमारा समय सफल हो लेकिन बीच-बीच में कहाँ आधा घण्टा, कहाँ 15 मिनट, कहाँ 5 मिनट वेस्ट चला जाता है। तो उसका कारण क्या? आज बापदादा ने देखा कि मैजारिटी का विशेष पुरुषार्थ जो कम या ढीला होता है उसके तीन कारण हैं। पहले भी सुनाया है, नई बात नहीं है लेकिन डायमण्ड जुबली में विशेष क्या अटेन्शन दो वो

बापदादा शुरू से सुना रहे हैं तो तीन कारण -

पहला, चलते-चलते श्रीमत के साथ-साथ आत्माओं की परमत मिक्स कर देते हैं। कोई ने कोई बात सुना दी और आप समझते हो कि सुनाने वाला तो अच्छा, सच्चा महारथी है और आपका उस पर फ़ेथ भी है, जब ऐसी कोई आत्मा आपको कोई ऐसी बातें सुनाती है जिसमें इन्टरेस्ट भी आता है, समाचार तो अच्छा है.... जैसे संसार समाचार अच्छा लगता है ना तो ब्राह्मण संसार समाचार भी अच्छा लगता है, तो आपने उस पर फ़ेथ रख करके वो बात सुन ली मानो अपने अन्दर समा ली, कट नहीं किया, तो बात सच्ची भी है, समाचार सच्चा भी होता है, सब झूठा नहीं होता, कोई सच्चा भी होता है लेकिन बाप का फ़रमान क्या है? कि ऐसे समाचार भले सुनो - ये है फ़रमान? नहीं, जिससे आपका कोई कनेक्शन नहीं है, सिर्फ़ दिलचस्प समाचार है, आप कर कुछ नहीं सकते, सिर्फ़ सुन लिया तो वह समाचार बुद्धि में तो गया, टाइम वेस्ट तो हुआ या नहीं? और बाप की श्रीमत में परमत मिक्स कर दी। क्योंकि बाप की आज्ञा है - सुनते हुए नहीं सुनो। तो आपने सुना क्यों? उसकी आदत डाली। मानो एक बारी आपको समाचार सुनाया, आपको भी बहुत अच्छा लगा, नई बात है, ऐसा भी होता है-ये पता तो पड़ गया, लेकिन अगर एक बारी आपने उनकी बात सुनी तो दूसरे बारी वो कहाँ जायेगा? आपके पास आयेगा। आप उसके लिए कूड़े का डिब्बा बन गये ना! जो भी ऐसा समाचार होगा वो आपके पास ही आकर सुनायेगा। क्योंकि आपने सुना! इसलिए या तो उसको समझाओ, ऐसी बातों से उसको भी मुक्त करो। सुन करके इन्टरेस्ट नहीं बढ़ाओ लेकिन अगर सुनते हो तो आपमें इतनी ताकत हो जो उसको भी सदा के लिए फुल स्टॉप लगा दो। अपने अन्दर भी फुल स्टॉप लगाओ। जिस व्यक्ति का समाचार सुना उसके प्रति दृष्टि में वा संकल्प में भी घृणा भाव बिल्कुल नहीं हो। इतनी पॉवर आपमें है तो यह सुनना नहीं हुआ, उसका कल्याण करना हुआ। लेकिन रिज़ल्ट में देखा जाता है मैजारिटी थोड़ा-थोड़ा किचड़ा इकट्ठा होते-होते ये घृणा भाव या चाल-चलन में अन्तर आ जाता है। और कुछ भी नहीं होगा तो भी उस आत्मा के प्रति सेवा करने की भावना नहीं होगी, भारीपन होगा। इसको कहा जाता है-श्रीमत में परमत मिलाना। समाचार तो बापदादा भी सुनते

हैं, लेकिन होता क्या है? मैजारिटी का भाव बदल जाता है। सुनाने में भी भाव बदल जाता है। एक आकर कहता है मैंने देखा कि ये दो बात कर रहे थे और एक का सुना हुआ दूसरा फिर कहते हैं नहीं-नहीं खड़े भी थे और बहुत अच्छी तरह से नहीं खड़े थे, दूसरा एडीशन हुआ। फिर तीसरा कहेगा इन्हीं का तो होता ही है। कितना भाव बदल गया। उन्हीं की भावना क्या और बातों में भाव कितना बदल जाता है। तो ये परमत वायुमण्डल को खराब कर देता है। तो जो टाइम वेस्ट जाता है उसका एक कारण परमत और दूसरा कारण है परचिन्तन। एक से बात सुनी तो आठ-दस को नहीं सुनावे, यह नहीं हो सकता। अगर कोई दूरदेश में भी होगा ना तो भी उसको पत्र में भी लिख देंगे—यहाँ बहुत नई बात हुई है, आप आयेंगे ना तो जरूर सुनायेंगे। तो ये क्या हो गया? परचिन्तन। समझो आपने चार को सुनाया, उन चार की भावना उस आत्मा के प्रति आपने खराब तो की ना और परचिन्तन शुरु हुआ तो इसकी गति बड़ी फास्ट और लम्बी होती है।

परचिन्तन एक-दो सेकण्ड में पूरा नहीं होता। जैसे बापदादा सुनाते हैं कि जब किसको भी ज्ञान सुनाओ तो इन्टरेस्ट दिलाने के लिए उसको कहानी के रीति से सुनाओ। पहले ये हुआ, फिर क्या हुआ, फिर क्या हुआ, फिर क्या हुआ.....। तो इन्टरेस्ट बढ़ता है ना। ऐसे जो परचिन्तन होता है वो भी एक इन्ट्रेस्टेड होता है। उसमें दूसरा जरूर सोचेगा, फिर क्या हुआ, फिर ऐसे हुआ, हाँ ऐसे हुआ होगा.... तो ये भी कहानी बड़ी लम्बी है। बापदादा तो सबकी दिल की बातें सुनते भी हैं, देखते भी हैं। कोई कितना भी छिपाने की कोशिश करे सिर्फ बापदादा कहाँ-कहाँ लोक संग्रह के अर्थ खुला इशारा नहीं देते, बाकी जानते सब हैं, देखते सब हैं। कोई कितना भी कहे कि नहीं, मैं तो कभी नहीं करता, बापदादा के पास रजिस्टर है, कितने बार किया, क्या-क्या किया, किस समय किया, कितनों से किया — यह सब रजिस्टर है। सिर्फ कहाँ-कहाँ चुप रहना पड़ता है। तो दूसरी बात सुनाई—परचिन्तन। उसका स्वचिन्तन कभी नहीं चलेगा। कोई भी बात होगी, परचिन्तन वाला अपनी गलती भी दूसरे पर लगायेगा। और परचिन्तन वाले बात बनाने में नम्बरवन होते हैं। पूरी अपनी गलती दूसरे के प्रति ऐसे सिद्ध करेंगे जो सुनने वाले बड़ों को भी चुप रहना

पड़ता है। तो स्वचिन्तन इसको नहीं कहा जाता है कि सिर्फ ज्ञान की पॉइन्ट्स रिपीट कर दीं या ज्ञान की पॉइन्ट्स सुन लीं, सुना दीं—सिर्फ यही स्वचिन्तन नहीं है। लेकिन स्वचिन्तन अर्थात् अपनी सूक्ष्म कमज़ोरियों को, अपनी छोटी-छोटी ग़लतियों को चिन्तन करके मिटाना, परिवर्तन करना, ये स्वचिन्तन है। बाकी ज्ञान सुनना और सुनाना उसमें तो सभी होशियार हो। वो ज्ञान का चिन्तन है, मनन है लेकिन स्वचिन्तन का महीन अर्थ अपने प्रति है। क्योंकि जब रिज़ल्ट निकलेगी तो रिज़ल्ट में यह नहीं देखा जायेगा कि इसने ज्ञान का मनन अच्छा किया या सेवा में ज्ञान को अच्छा यूज़ किया। इस रिज़ल्ट के पहले स्वचिन्तन और परिवर्तन, स्वचिन्तन करने का अर्थ ही है परिवर्तन करना। तो जब फाइनल रिज़ल्ट होगी, उसमें पहली मार्क्स प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप को मिलेगी। जो धारणा स्वरूप होगा वो नैचरल योगी तो होगा ही। अगर मार्क्स ज्यादा लेनी है तो पहले जो दूसरों को सुनाते हो, आजकल वैल्यूज़ पर जो भाषण करते हो, उसकी पहले स्वयं में चेकिंग करो। क्योंकि सेवा की एक मार्क तो धारणा स्वरूप की 10 मार्क्स होती हैं, अगर आप ज्ञान नहीं दे सकते हो लेकिन अपनी धारणा से प्रभाव डालते हो तो आपके सेवा की मार्क्स जमा हो गई ना।

आजकल कई समझते हैं कि हमको सेवा का चांस बहुत कम मिलता है, हमको चांस मिलना चाहिए, दूसरे को मिलता है, मेरे को क्यों नहीं? सेवा करना बहुत अच्छा है क्योंकि अगर बुद्धि फ़ी रहती है तो व्यर्थ बहुत चलता है। इसीलिए सेवा में बुद्धि बिज़ी रहे यह साधन अच्छा है। सेवा का उमंग तो अच्छा ही है लेकिन ड्रामानुसार या सरकमस्टांस अनुसार मानों आपको चांस नहीं मिला और आपकी अवस्था दूसरों की सेवा करने की बजाय अपनी भी गिरावट में आ जाये या वो सेवा आपको हलचल में लाये तो वो सेवा क्या हुई? उस सेवा का प्रत्यक्षफल क्या मिलेगा? सच्ची सेवा, प्यार से सेवा, सभी की दुआओं से सेवा, उसका प्रत्यक्षफल खुशी होती है और अगर सेवा में फीलिंग आ गई तो यहाँ ब्राह्मण फीलिंग को क्या कहते हैं? फ्लु। फ्लु वाला क्या करता है? सो जाता है। खाना नहीं खायेगा, सो जायेगा। यहाँ भी फीलिंग आती है तो या खाना छोड़ेगा या रुस करके बैठ जायेगा। तो यह फ्लु हुआ ना। अगर आप धारणा स्वरूप हो, सच्चे सेवाधारी हो, स्वार्थी सेवा नहीं। एक होती

है कल्याण के भावना की सेवा और दूसरी होती है स्वार्थ से। मेरा नाम आ जायेगा, मेरा अखबार में फोटो आ जायेगा, मेरा टी.वी. में आ जायेगा, मेरा ब्राह्मणों में नाम हो जायेगा, ब्राह्मणी बहुत आगे रखेगी, पूछेगी..... यह सब भाव स्वार्थी-सेवा के हैं। क्योंकि आजकल के हिसाब से, प्रत्यक्षता के हिसाब से, अभी सेवा आपके पास आयेगी, शुरू में स्थापना की बात दूसरी थी लेकिन अभी आप सेवा के पिछाड़ी नहीं जायेंगे। आपके पास सेवा खुद चलकर आयेगी। तो जो सच्चा सेवाधारी है उस सेवाधारी को चलो और कोई सेवा नहीं मिली लेकिन बापदादा कहते हैं अपने चेहरे से, अपने चलन से सेवा करो। आपका चेहरा बाप का साक्षात्कार कराये। आपका चेहरा, आपकी चलन बाप की याद दिलावे। ये सेवा नम्बरवन है। ऐसे सेवाधारी जिनमें स्वार्थ भाव नहीं हो। ऐसे नहीं मुझे ही चांस मिले, मेरे को ही मिलना चाहिए। क्यों नहीं मिलता, मिलना चाहिए – ऐसे संकल्प को भी स्वार्थ कहा जाता है। चाहे ब्राह्मण परिवार में आपका नाम नामीग्रामी नहीं है, सेवाधारी अच्छे हो फिर भी आपका नाम नहीं है, लेकिन बाप के पास तो नाम है ना, जब बाप के दिल पर नाम है तो और क्या चाहिए! और सिर्फ बाप के दिल पर नहीं लेकिन जब फाइनल में नम्बर मिलेंगे तो आपका नम्बर आगे होगा। क्योंकि बापदादा हिसाब रखते हैं। आपको चांस नहीं मिला, आप राइट हो लेकिन चांस नहीं मिला तो वो भी नोट होता है। और मांग कर चांस लिया, वो किया तो सही लेकिन वो भी मार्कस कट होते हैं। ये धर्मराज का खाता कोई कम नहीं है। बहुत सूक्ष्म हिसाब-किताब है। इसलिए निःस्वार्थ सेवाधारी बनो, अपना स्वार्थ नहीं हो। कल्याण का स्वार्थ हो। यदि आपको चांस है और दूसरा समझता है कि हमको भी मिले तो बहुत अच्छा और योग्य भी है तो अगर मानो आप अपना चांस उसको देते हो तो भी आपका शेयर उसमें जमा हो जाता है। चाहे आपने नहीं किया, लेकिन किसको चांस दिया तो उसमें भी आपका शेयर जमा होता है। क्योंकि सच्चा डायमण्ड बनना है ना। तो हिसाब-किताब भी समझ लो, ऐसे अलबेले नहीं चलो, ठीक है, हो गया..... बहुत सूक्ष्म में हिसाब-किताब का चौपड़ा है। बाप को कुछ करना नहीं पड़ता है, ऑटोमेटिक है। कभी-कभी बापदादा बच्चों का चौपड़ा देखते भी हैं। तो पहली बात परमत और दूसरी बात परचिन्तन।

तीसरी बात है परदर्शन। दूसरे को देखने में मैजारिटी बहुत होशियार हैं। **परदर्शन** – जो देखेंगे तो देखने के बाद वह बात कहाँ जायेगी? बुद्धि में ही तो जायेगी। और जो दूसरे को देखने में समय लगायेगा उसको अपने को देखने का समय कहाँ मिलेगा? बातें तो बहुत होती हैं ना, और जो बातें होती हैं वो देखने में भी आती हैं, सुनने में भी आती हैं, जितना बड़ा संगठन उतनी बड़ी बातें होती हैं। ये बातें क्यों होती हैं? कई सोचते हैं यह बातें होनी नहीं चाहिए। नहीं होनी चाहिये वो ठीक है लेकिन जिसके लिए आप समझ रहे हो नहीं होनी चाहिए, उसमें समय क्यों दिया? और ये बातें ही तो पेपर हैं। जितनी बड़ी पढ़ाई उतने बड़े पेपर भी होते हैं। यह वायुमण्डल बनना – यह सबके लिए पेपर भी है कि परमत या परदर्शन या परचिन्तन में कहाँ तक अपने को सेफ़ रखते हैं? दो बातें अलग हैं। एक है ज़िम्मेवारी, जिसके कारण सुनना भी पड़ता है, देखना भी पड़ता है। तो उसमें कल्याण की भावना से सुनना और देखना। ज़िम्मेवारी है, कल्याण की भावना है, वो ठीक है। लेकिन अपनी अवस्था को हलचल में लाकर देखना, सुनना या सोचना – यह रांग है। अगर आप अपने को ज़िम्मेवार समझते हो तो ज़िम्मेवारी के पहले अपनी ब्रेक को पॉवरफुल बनाओ। जैसे पहाड़ी पर चढ़ते हैं तो पहले से ही सूचना देते हैं कि अपनी ब्रेक को ठीक चेक करो। तो ज़िम्मेवारी भी एक ऊंची स्थिति है, ज़िम्मेवारी भले उठाओ लेकिन पहले यह चेक करो कि सेकण्ड में बिन्दी लगती है? कि लगाते हो बिन्दी और लग जाता है क्वेश्चनमार्क? वो रांग है। उसमें समय और इनर्जी वेस्ट जायेगी। इसलिए पहले अपना ब्रेक पॉवरफुल करो। चलो – देखा, सुना, जहाँ तक हो सका कल्याण किया और फुलस्टॉप। अगर ऐसी स्थिति है तो ज़िम्मेवारी लो, नहीं तो देखते नहीं देखो, सुनते नहीं सुनो, स्वचिन्तन में रहो। फ़ायदा इसमें है।

तो आज का पाठ क्या हुआ? परमत, परचिन्तन और परदर्शन इन तीन बातों से मुक्त बनो और एक बात धारण करो, वो एक बात है पर-उपकारी बनो। तीन प्रकार की पर को खत्म करो और एक पर – पर-उपकारी बनो। बनना आयेगा? तो किन बातों से मुक्त बनेंगे? मातायें क्या करेंगी? बच्चों के उपकारी या पर-उपकारी? सर्व उपकारी। सहज है या कठिन है? जो नये-नये आये हैं वो

समझते हैं यह सहज है कि मुश्किल है? टीचर्स बोलो—सहज है? (हाँ जी) नहीं, बापदादा समझते हैं मुश्किल है। बातें इतनी होती हैं, बड़ा मुश्किल है! अभी यहाँ बैठे हो तो सहज-सहज कह रहे हैं। फिर जब ट्रेन से उतरेंगे और कोई छोटी-मोटी बात हुई तो कहेंगे मुश्किल है। और घर गये, सेन्टर पर गये तो कोई न कोई बात पेपर लेने आयेगी ज़रूर। अच्छा—डबल विदेशियों को सहज लगता है या मुश्किल लगता है? अगर सहज लगता है तो हाथ उठाओ। टीचर्स तो नम्बरवन लेंगी ना? उस समय नहीं कहना कि हमको तो पता ही नहीं था, हमको यह ज्ञान ही नहीं था। इसीलिए बापदादा पहले से ही सुना रहे हैं – किसमें मार्क्स जमा होती है और किसमें मार्क्स कट होती हैं। अगर नम्बर लेना है तो मेकप करो। अभी कोई भी कर सकते हैं। सीट फिक्स कोई नहीं हुई है। सिवाए ब्रह्मा बाप और जगदम्बा के और सब सीट खाली हैं। कोई भी ले सकता है। एक साल वाला भी ले सकता है।

तो सदा क्या याद रखेंगे? अपनी विशेषताओं को याद रखो। विशेष समझेंगे तो यह खेल की बातें होंगी नहीं। तो विशेष हैं और सदा सारे कल्प में विशेष होंगे। और किसी भी धर्म नेता या महात्माओं की ऐसे विधिपूर्वक पूजा नहीं होती। जैसे देवताओं की पूजा होती है, वैसे किसी की भी नहीं होती। नेताओं को तो बिचारों को धूप में लटका देते हैं। अच्छा!

(फिर सभी ज़ोन के भाई बहिनों से बापदादा ने हाथ उठवाये)

अच्छा है, सभी को टर्न मिल जाता है। अभी ज्ञान सरोवर में अच्छे रहे पड़े हो। ज्ञान सरोवर में अच्छे हैं या यहाँ आना चाहते हो? पसन्द है ना? पंजाब को पसन्द है? भोपाल भी वहाँ है। भोपाल को अच्छा लगा? (बहुत अच्छा लगा) अच्छा, तो इन्हों को हमेशा वहीं भेजना। संगम पर इतना अच्छा प्रबन्ध मिला है। सतयुग में तो एक-एक महल ज्ञान सरोवर से भी बड़ा होगा लेकिन अभी संगम पर तो तीन पैर पृथ्वी भी अच्छी। और बापदादा ने तो देखा है। साकार में भी देखा है और वैसे तो देखते ही हैं। दूर भी नहीं है और प्रबन्ध भी अच्छा है। इसीलिए टर्न बाई टर्न किसको देना। दूसरे बारी पंजाब यहाँ आ जायेगा। अच्छा।

कुमारियों से

कुमारियाँ क्या कमाल करेंगी? कमाल करनी चाहिए ना! जो सब करते हैं अगर वही किया तो कमाल क्या हुई? तो ये कुमारियों का ग्रुप क्या करेगा? अगर आप नहीं बतायेंगे तो जो बापदादा बतायेगा वो करना पड़ेगा। नहीं तो आप लोग बता दो। इस डायमण्ड जुबली में कुमारियाँ क्या करेंगी? क्योंकि आप लोगों को तो अभी डायमण्ड जुबली का चांस है। फिर बाद में तो मिलेगा नहीं। तो कुमारियाँ क्या करेंगी, डायमण्ड जुबली को सामने रख करके फिर सोचो। पहले तो वे हाथ उठाओ जिनका लक्ष्य है कि हम सेवा में लगेगी। खड़ी हो जाओ। अच्छा, इन्हों का फोटो निकालो। ये तो बहुत हैं। तो कुमारियों को क्या करना है? आप लोगों ने तो हाथ उठाया, खड़े भी हो गये और फोटो भी आपका निकल गया तो आप सभी को तो सेवा में लगना चाहिये, ये तो पक्का है ना? कि घर जाकर टीचर को कहेंगी कि नहीं, मैं तो नौकरी करूँगी। ऐसी तो नहीं हो? जिन्हों ने हाथ उठाया वो पक्की हो ना कि नौकरी करने वाली? सेवा करेंगी ना? अच्छा, जो निर्बन्धन है, सिर्फ पढ़ाई का एक साल है या थोड़ा सा है वो हाथ उठाओ, जो निर्बन्धन हो सकती हैं? अच्छा। क्योंकि बापदादा ने कहा है कि अभी समाप्ति का समय समीप आ रहा है। डेट नहीं बतायेंगे। लेकिन समीप आ रहा है उसी प्रमाण सेवा में वृद्धि तो होनी है ना। तो जो भी कुमारियाँ उठी थीं, वो अगर खुद निर्बन्धन नहीं हो सकतीं, कोई कारण है तो अपने कोई न कोई हमजिन्स कुमारी को तैयार ज़रूर करो। मानो आपको घर का बन्धन है। स्वयं अगर निर्बन्धन नहीं हो सकती तो कोई एक को तैयार ज़रूर करो। यह कर सकती हो? एक साल है, एक साल में एक को आप समान नहीं बना सकते? बनाना पड़ेगा ना। तो हर एक कुमारी जो स्वयं सेवा में लगनी है वो लगेगी लेकिन अगर कोई स्वयं नहीं लग सकती है तो अपने हमजिन्स को तैयार करो। पसन्द है कुमारियों को? हाँ या ना बोलो? सोच रही हैं। अच्छा, पंजाब की कुमारियाँ हाथ उठाओ। पंजाब वाले सब मिलकर बोलो कि ये सेवा करेंगी? पंजाब का शेर कहाँ गया? क्यों आंतकवादियों से घबरा गये क्या? पंजाब को शेर कहते हैं तो शेर तो आगे आना चाहिये ना, घर में थोड़ेही बैठना चाहिए। तो कुमारियों को अपने हमजिन्स को तैयार करना है। क्योंकि देखो भाई

सभी हंसते हैं कि कुमारियाँ तीन साल की ट्रायल वाली भी होंगी, और कुमार 40 साल के पुराने होंगे, तो सेन्टर पर रहने वाली कुमारी को दीदी-दादी कहना शुरू कर देते और कुमारों को दादा कोई नहीं कहते। कुमारों की ये रिपोर्ट है ना, उलहना है। अच्छा, कुमार हाथ उठाओ।

कुमारों से

कुमार दादा तो नहीं बनेंगे, दादा तो कोई नहीं कहेगा लेकिन राजा बन सकते हैं। डायमण्ड जुबली में कुमार कम से कम आठ मोतियों का एक-एक कंगन वा माला तैयार करो। अष्ट का गायन है ना। तो आपकी प्रजा बन जायेगी और प्रजा बनाने से आप राजा बन जायेंगे। कुमारियों को दादी-दीदियाँ बनने दो। आप और ही राजा बन जाओ। कुमार तो बहुत हैं, अगर एक-एक आठ भी लावे तो प्रजा बन जायेगी। और प्रजा तैयार हो गई तो आपको राजतिलक ज़रूर मिलेगा। क्योंकि बहुत करके अभी वारिस क्वालिटी कम निकलती है। अगर कुमारों ने एक भी वारिस क्वालिटी निकाल दिया तो महाराजा बन जायेंगे। कुमार तैयार हैं? समझते हो वारिस किसको कहते हैं? साधारण तो आते ही रहते हैं ना लेकिन वारिस जो होगा उस एक को देख करके और अनेक भी आयेंगे। उसको कहते हैं वारिस क्वालिटी, छोटे-छोटे माइक। तो कुमार राजा बनेंगे ना! (हाँ जी) अच्छा, यहाँ मधुबन में हाँ जी है या पंजाब और बाम्बे या जहाँ भी जायेंगे वहाँ भी हाँ जी होंगे?

कुमारों को देख करके बापदादा खुश होते हैं। सिर्फ कुमार, कुमारियों से बाप को एक बात का डर भी लगता है। खुशी भी होती है तो डर भी लगता है। समझदार हो ना कुमार, बोलने की आवश्यकता नहीं। बस इसमें सदा एक बाप दूसरा न कोई, थोड़ा-थोड़ा भी नहीं। क्या करूँ.. थोड़ा सा तो चाहिए...ऐसा नहीं। ये ऐसी माया है जो देखा है ना, गज और ग्राह की कहानी सुनी है ना, वो क्या करता है? पहले थोड़ा अन्दर करेगा, फिर पूरा अन्दर कर लेता है। पता नहीं पड़ेगा। तो डायमण्ड जुबली में यह डर तो निकाल लेना। ऐसा एक भी पत्र नहीं आना चाहिए। डायमण्ड जुबली अर्थात् कुछ कमी नहीं है। तो बापदादा देखेंगे कि हाथ तो सभी ने उठाया लेकिन राजा कितने बने वो भी लिस्ट आ जायेगी ना! अच्छा।

प्रवृत्ति वालों से

प्रवृत्ति वालों को बापदादा एक बात के लिए मुबारक देते हैं कि जब से प्रवृत्ति मार्ग वाले सेवा साथी बने हैं तो सेवा में नाम बाला करने में एग़ाम्पल बने हैं। पहले लोग समझते थे कि ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी बनना माना घरबार छोड़ना.... यह डर था ना। और अभी समझते हैं कि इन्हों का तो घर भी बहुत अच्छा चलता, धन्धा भी बहुत अच्छा चलता, खुद भी खुश रहते, तो यह देख करके समझते हैं कि हम भी बन सकते हैं। तो एग़ाम्पल बन गये ना। पहले कहते थे हमारा बनना मुश्किल है और अभी कहते हैं कि पवित्र प्रवृत्ति में रहना अच्छा है। तो सेवा में वृद्धि के लिए निमित्त बन गये ना – इसकी मुबारक हो। अभी प्रवृत्ति वाले क्या करेंगे? मुबारक में तो खुश हो गये। अभी कुछ करना भी तो हैं ना।

बापदादा का डायमण्ड जुबली के प्रति एक शुभ संकल्प है कि जो प्रवृत्ति में रहते हैं, एग़ाम्पल हैं, लौकिक और अलौकिक सेवा भी करते हैं, डबल सेवाधारी हैं, तो हर एक प्रवृत्ति वाले ऐसी माला तैयार करो जो हर सेवाकेन्द्र पर हर वर्ग का कोई न कोई ज़रूर हो। जो भी हमारे 13 भिन्न-भिन्न वर्ग बने हुए हैं, उस हर वर्ग का गुप हो जिसमें सब वर्ग हों, कोई भी वर्ग नहीं रह जाये, बड़ा ज़मीनदार भी हो, साइंसदान भी हो, सब वर्ग के हों, ऐसी वर्गों की भिन्न-भिन्न माला प्रवृत्ति वाले हर सेवाकेन्द्र पर तैयार करें। कम से कम सब वर्गों का एक-एक तो होना ही चाहिए लेकिन हर सेन्टर पर हर वर्ग का हो। तो सभी वर्गों के तैयार करो फिर सभी सेन्टर के सभी वर्गों की डायमण्ड जुबली मनायेंगे। समझा? प्रवृत्ति वालों को पसन्द है। हर सेवाकेन्द्र पर हर वर्ग का होना चाहिए, कम से कम एक। बाकी ज़्यादा होंगे तो महाराजा बन जायेंगे। माताओं को पसन्द है? कि महिलायें सिर्फ महिलायें ले आयेंगी, महिलाओं में भी कोई वकील है, कोई डॉक्टर है। अच्छा!

डबल विदेशियों से

डबल विदेशी क्या करेंगे? लण्डन वाले बताओ क्या करेंगे? माइक तैयार करेंगे। तो कान्फ्रेंस तक माइक आयेंगे या अभी तैयार हो रहे हैं? अच्छी बात

है, अगर डबल विदेशी हर एक स्टेट से एक-एक माइक भी लायें तो कितने माइक हो जायेंगे? फिर माइक की सेरीमनी करेंगे। ठीक है? अच्छा, सभी को याद-प्यार मिल गया?

कर्नाटक वाले खुश है? पंजाब खुश है? बाम्बे खुश है? भोपाल खुश है? आन्ध्रा वाले खुश हैं? यू.पी. नेपाल खुश है? नेपाल की टोपियाँ होती हैं, अच्छे लगते हैं। ये कलियुग के ताज हैं।

अच्छा, टीचर्स सभी खुश हैं? देखो, मुरली तो नयों के हिसाब से गुह्य है लेकिन बापदादा को डायमण्ड जुबली में सभी से मुक्त कराना ही है। नहीं करेंगे तो धर्मराज बनेंगे। अभी तो प्यार से कह रहे हैं, फिर धर्मराज का साथ लेना पड़ेगा ना। लेकिन क्यों लें? क्यों नहीं बाप के रूप से ही सब मुक्त हो जायें। पुराने-पुराने सोचते हैं कि बापदादा ऐसा कुछ करें ना तो सब ठीक हो जायें। लेकिन बाप नहीं चाहते। बाप को धर्मराज का साथ लेना पसन्द नहीं है। कर क्या नहीं सकता है! एक सेकण्ड में किसी को भी अन्दर ही अन्दर सज़ा दे सकते हैं और वो सेकण्ड की सज़ा बहुत-बहुत तेज़ होती है। लेकिन बापदादा नहीं चाहते। बाप का रूप प्यारा है, धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा। इसलिए बापदादा को डायमण्ड जुबली में सभी को सब बातों से मुक्त करना ही है। समझा?

चारों तरफ के सर्व विश्व के विशेष आत्माओं को सदा स्वचिन्तन, ज्ञान चिन्तन करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के श्रेष्ठ मत पर हर संकल्प, बोल और कर्म करने वाले समीप आत्माओं को, चारों ओर के डायमण्ड जुबली के लिए स्वयं को और सेवा को आगे बढ़ाने वाले—ऐसे विशेष आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादियों से

दैवी परिवार का विशेष श्रृंगार है ना। तो श्रृंगार को देख करके क्या होता है? खुशी होती है कि ये होता है कि हम भी ऊपर चलें? लोक संग्रह करने वाले हो ना।

वैसे बापदादा का एक-एक बच्चे से एक-दो से ज्यादा प्यार है। ऐसे नहीं,

दादियों से बहुत है, टीचर्स से बहुत है, स्टूडेंट से कम। नहीं, सभी से प्यार है और सदा ही रहेगा। अगर प्यार नहीं होता तो शिक्षा क्यों देते? ये शिक्षा भी प्यार है। क्योंकि बाप बच्चों को किसी भी बात में कम नहीं देखना चाहते। हर एक को आगे देखना चाहते हैं। ऐसे नहीं, दादियाँ तो ठीक हो गईं, आप लोग होवे या नहीं..... पहले आप। इसीलिए ही आते हैं। चाहे गला चले या नहीं चले लेकिन चलाते हैं। जब बच्चे दूर-दूर से, बुजुर्ग भी आते हैं, छोटे भी आते हैं, सब आते हैं तो बाप कैसे नहीं आयेंगे! ज़रूर आयेंगे। तो दादियों से प्यार ज्यादा है वा टीचर्स से ज्यादा है वा स्टूडेंट्स से ज्यादा है? किससे है? सभी से। चाहे बापदादा सभी को नज़दीक भी नहीं बिठा सकते, नाम भी नहीं ले सकते लेकिन दिल पर नाम सबका है। दिल के नज़दीक सभी हो। समझा? अच्छा! तो यह ब्राह्मण संसार का श्रृंगार अच्छा लगता है ना। देखो फाउण्डेशन से कितने थोड़े बचे हैं। जब आदि में आये और अभी देखो तो कितने थोड़े बचे। डायमण्ड जुबली वाले तो कितने चले गये।

मीटिंग के मुख्य भाइयों से

अच्छी मेहनत कर रहे हो। बापदादा के पास तो सब समाचार पहुँचता है। जब सभी मिलकर किसी भी कार्य को करते हैं तो आप भी अनुभव करते होंगे वो कार्य सहज भी और सफल भी होता है। और यह आपस में मिलना जल्दी-जल्दी होना चाहिये। क्योंकि यज्ञ के जो स्थूल कारोबार है, खाना-पीना छोड़ो, वो तो इन्हीं का काम है, लेकिन जो ऑफिशियल कारोबार है वो तो आप लोग ही समझ सकते हो। इसीलिए कार्य बढ़ता जाता है और जब 9 लाख बनाना है तो कार्य कितना बढ़ेगा! बहुत बढ़ेगा ना! तो आप लोगों को आपस में जल्दी-जल्दी मिलना चाहिये। फोन और फैक्स का मिलना और है, और सम्मुख मिलने से एक-दो के विचार क्लीयर कर सकते हैं। अगर नहीं भी हुआ तो करा भी सकते हैं। इसीलिए आपस में राय करना। जब एक मीटिंग पूरी करते हो ना तो दूसरे की डेट पहले से ही फिक्स करो। अच्छा।

आप लोगों से पूछने की आवश्यकता नहीं कि खुशराजी हो? बस निमित्त हैं, तो निमित्त समझने से नेचरली जिम्मेवारी भी है और हल्कापन तो रहेगा ही। अच्छा।

‘‘यथार्थ निश्चय के फाउण्डेशन द्वारा सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करो’’

04.12.95

आ ज बापदादा देश-विदेश चारों ओर के नये-नये बच्चों को देख रहे थे। चाहे मधुबन में साकार रूप में आये हैं, चाहे आकार रूप में अपने-अपने सेवा-स्थान में आये हुए हैं, तो नयों-नयों को देख बापदादा सभी के निश्चय को देख रहे थे। क्योंकि निश्चय इस ब्राह्मण जीवन के सम्पन्नता का फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन मज़बूत है तो सहज और तीव्र गति से सम्पूर्णता तक पहुँचना निश्चित है। तो बापदादा देख रहे थे कि निश्चय भी भिन्न-भिन्न प्रकार का है। जो यथार्थ निश्चय है कि मैं परमात्मा बाप का बन गया, स्वयं को भी आत्म-स्वरूप में जानना, मानना, चलना और बाप को भी जो है वैसे जानना – ये है यथार्थ निश्चय।

दूसरा निश्चय है –योग द्वारा थोड़े समय के लिए अशान्ति से शान्ति का अनुभव करते हैं और स्थान का शक्तिशाली शान्त वायुमण्डल आकर्षित करता है वा ब्राह्मण परिवार, ब्राह्मण आत्माओं का आत्मिक प्यार और पवित्रता की जीवन का प्रभाव पड़ता है, कम्पनी अच्छी लगती है, दुनिया के वायुमण्डल के कान्स्ट्रास्ट में ये संग अच्छा लगता है, ज्ञान भी अच्छा, परिवार भी अच्छा, वायुमण्डल भी अच्छा तो वो अच्छा लगना, उस फाउण्डेशन के आधार पर चलते रहते हैं। ये है दूसरा नम्बर। पहला नम्बर सुनाया ‘यथार्थ निश्चय’ और दूसरा नम्बर ‘अच्छा लगता है’ और तीसरा नम्बर – दुनिया के सम्बन्धियों के दुःखमय वातावरण से बचकर जितना समय भी सेवाकेन्द्र पर आते हैं उतना समय दुःख से किनारा होकर शान्ति का अनुभव करते हैं। ज्ञान की गुह्यता में नहीं जायेंगे लेकिन शान्ति की प्राप्ति के कारण कभी आते हैं और कभी नहीं भी आते हैं। लेकिन यथार्थ निश्चय बुद्धि विजयी होते हैं। और देखा जाता है कि जब शुरु-शुरु में आते हैं तो अशान्ति से तंग होते हैं, शान्ति के इच्छुक होते हैं। तो जैसे प्यासे को एक बूंद भी अगर पानी की मिल जाये तो वो बहुत बड़ी बात अनुभव करता है। तो अप्राप्ति से प्राप्ति होती है, परिवार में, ज्ञान में, योग में, वायुमण्डल में अन्तर दिखाई देता है। तो पहला समय बहुत अच्छे उमंग-

उत्साह से चलते हैं, बहुत नशा रहता है, खुशी भी होती है। लेकिन अगर पहले नम्बर के यथार्थ निश्चय का फाउण्डेशन पक्का नहीं है, दूसरे या तीसरे नम्बर का निश्चय है तो धीरे-धीरे जो शुरू की खुशी, शुरू का जोश है, उसमें फर्क आ जाता है।

इस सीज़न में नये-नये बहुत आये हैं और चांस भी मिला है, यह तो बहुत अच्छा है। बापदादा को भी नये-नये बच्चों को देख खुशी होती है कि ये फिर से अपने परिवार में पहुँच गये। लेकिन ये चेक करो कि निश्चय का फाउण्डेशन पक्का है? हमारा निश्चय नम्बरवन है वा नम्बर टू है? अगर नम्बरवन निश्चय है तो चलते-चलते मुख्य पवित्रता धारण करने में मुश्किल नहीं लगेगा। अगर पवित्रता स्वप्न मात्र भी हिलाती है, हलचल में आती है, तो समझो नम्बरवन फाउण्डेशन कच्चा है। क्योंकि आत्मा का स्वधर्म पवित्रता है। अपवित्रता परधर्म है और पवित्रता स्वधर्म है। तो जब स्वधर्म का निश्चय हो गया तो परधर्म हिला नहीं सकता। कई बच्चे कहते हैं कि पहले तो बहुत अच्छे आते थे, अभी पता नहीं क्या हो गया? तो क्या हो जाता है कि बाप जो है, जैसा है, वैसे अनुभव में नहीं लाते। अगर पूछेंगे कि बाप साथ है? तो हाथ सब उठायेंगे। हाथ उठाना तो बहुत सहज है। लेकिन बाप साथ है तो बाप की पहली-पहली जो महिमा करते हो कि वो सर्वशक्तिमान् है – ये मानते हो या सिर्फ जानते हो? तो जब सर्वशक्तिमान् बाप साथ है तो सर्वशक्तिमान् के आगे अपवित्रता आ सकती है? नहीं आ सकती। लेकिन आती तो है, तो आती फिर कहाँ से है? कोई और जगह है? चोर लोग जो होते हैं वो अपना स्पेशल गेट बना लेते हैं। चोर गेट होता है। तो आपके पास भी छिपा हुआ चोर गेट तो नहीं है? चेक करो। नहीं तो माया आई कहाँ से? ऊपर से आ गई? अगर ऊपर से भी आ गई तो ऊपर ही खत्म हो जानी चाहिये। कोई छिपे हुए गेट से आती है जो आपको पता नहीं पड़ता है तो चेक करो कि माया ने कोई चोर गेट तो नहीं बनाकर रखा है? और गेट बनाती भी कैसे है, मालूम है? आपके जो विशेष स्वभाव या संस्कार कमज़ोर होंगे तो वहीं माया अपना गेट बना देती है। क्योंकि जब कोई भी स्वभाव या संस्कार कमज़ोर है तो आप कितना भी गेट बन्द करो, लेकिन कमज़ोर गेट है, तो माया तो जानीजाननहार है, उसको पता पड़ जाता है कि

ये गेट कमज़ोर है, इससे रास्ता मिल सकता है और मिलता भी है। चलते-चलते अपवित्रता के संकल्प भी आते हैं, बोल भी होता, कर्म भी हो जाता है। तो गेट खुला हुआ है ना, तभी तो माया आई। फिर साथ कैसे हुआ? कहने में तो कहते हो कि सर्वशक्तिमान् साथ है तो ये कमज़ोरी फिर कहाँ से आई? कमज़ोरी रह सकती है? नहीं ना? तो क्यों रह जाती है? चाहे पवित्रता में कोई भी विकार हो, मानो लोभ है, लोभ सिर्फ खाने-पीने का नहीं होता। कई समझते हैं हमारे में पहनने, खाने या रहने का ऐसा तो कोई आकर्षण नहीं है, जो मिलता है, जो बनता है, उसमें चलते हैं। लेकिन जैसे आगे बढ़ते हैं तो माया लोभ भी रॉयल और सूक्ष्म रूप में लाती है। वो रॉयल लोभ क्या है? चाहे स्टूडेंट हो, चाहे टीचर हो, माया दोनों में रॉयल लोभ लाने का फ़ुल पुरुषार्थ करती है। मानो स्टूडेंट है, बहुत अच्छा निश्चयबुद्धि, सेवाधारी है, सबमें अच्छा है लेकिन जब आगे बढ़ते हैं तो ये रॉयल लोभ आता है कि मैं इतना कुछ करता हूँ, सब रूप (तरह) से मददगार हूँ, तन से, मन से, धन से और जिस समय चाहिये उस समय सेवा में हाज़िर हो जाता हूँ फिर भी मेरा नाम कभी भी टीचर वर्णन नहीं करती कि ये जिज्ञासु बहुत अच्छा है। अगर मानों ये भी नहीं आवे तो फिर दूसरा रूप क्या होता है? अच्छा, नाम ले भी लिया तो नाम सुनते-सुनते—मैं ही हूँ, मैं ही करता हूँ, मैं ही कर सकता हूँ, वो अभिमान के रूप में आ जायेगा। या बहुत काम करके आये और किसी ने आपको पूछा भी नहीं, एक गिलास पानी भी नहीं पिलाया, देखा ही नहीं, अपने आराम में या अपने काम में बिज़ी रहे, तो ये भी आता है कि करो भी और पूछे भी कोई नहीं। तो करना ही क्या है, करना या ना करना एक ही बात है। पूछने वाला तो कोई है नहीं, इससे आराम से घर में बैठो, जब होगा तब सेवा करेंगे। तो ये भिन्न-भिन्न प्रकार का विकारों का रॉयल रूप आता है। और एक भी विकार आ गया ना, मानो लोभ नहीं आया लेकिन अभिमान आ गया या अपने मानने तक का, हमारी मान्यता हो – उसका भान आ गया तो जहाँ एक विकार होता है वहाँ उनके चार साथी छिपे हुए रूप में होते हैं। और एक को आपने चांस दे दिया तो वो छिपे हुए जो हैं वो भी समय प्रमाण अपना चांस लेते रहते हैं। फिर कहते हैं कि पहले जैसा नशा अभी नहीं है, पहले बहुत अच्छा था, पहले अवस्था

बड़ी अच्छी थी, अभी पता नहीं क्या हो गया है। माया चोर गेट से आ गई – ये है पता, ये नहीं कहो पता नहीं।

और टीचर को भी आता है। टीचर को क्या चाहिये? सेन्टर अच्छा हो, कपड़े भले कैसे भी हो लेकिन सेन्टर थोड़ा रहने लायक तो अच्छा हो। और जो साथी हो वो अच्छे हो, स्टूडेंट अच्छे हो, बाबा की भण्डारी अच्छी हो। अगर अच्छा स्टूडेंट चेंज हो जाये तो दिल थोड़ा धड़कता है। फिर समझते हैं कि क्या करें, ये मददगार था ना, अभी वो चला गया। मददगार जिज्ञासु था वा बाप है? तो उस समय कौन दिखाई देता है? जिज्ञासु या बाप? तो ये रॉयल माया फाउण्डेशन को हिलाने की कोशिश करती है। अगर आपको निश्चय है—सर्वशक्तिमान साथ है तो बाप किसी न किसी को निमित्त बना ही देता है। कई फिर सोचते हैं हमें कम से कम एक बार आबू की कान्फ्रेन्स में या किसी बड़ी कान्फ्रेन्स में चांस मिलना चाहिए, चलो और नहीं, योग शिविर तो करा लें, ये भी तो चांस होना चाहिये ना, चलो भाषण नहीं करे, स्टेज पर तो आवें, आखिर विनाश हो जायेगा, क्या विनाश तक भी हमारा नम्बर नहीं आयेगा, नम्बर तो आना चाहिये ना! लेकिन पहले भी बापदादा ने सुनाया कि अगर योग्य हैं, चांस मिलता है तो खुशी से करो लेकिन ये संकल्प करना कि हमें चांस मिलना चाहिए..... यह भी मांगना है। चाहिये-चाहिये ये है रॉयल मांगना। ये होना चाहिये..... ये हमें पहचानते नहीं हैं, दादी-दीदियाँ भी सभी को पहचानती नहीं हैं, जो आगे आते हैं उसको आगे कर लेते हैं—तो ये संकल्प आना यह भी एक सूक्ष्म मांगना है। लेकिन बापदादा ने सुना दिया है कि मानों आप स्टेज पर आ गई या आपकी कोई भी विशेषता के कारण, योग नहीं भी है, अवस्था इतनी अच्छी नहीं है लेकिन बोल में, कैचिंग पावर में विशेषता है तो चांस मिल जाता है, क्योंकि किसी की वाणी में मिठास होता है, स्पष्टता होती है और कैचिंग पावर होती है तो यहाँ के वहाँ के मिसाल वगैरह कैच करके सुनाते हैं इसीलिए उन्हीं का नाम भी हो जाता है। कौन चाहिये? फलानी चाहिये। कौन आवे? फलानी आवे, चाहे योग में कच्ची भी हो.... तो इस पर नम्बर फाइनल नहीं होने हैं। जो फाइनल नम्बर मिलेंगे वो ये नहीं होगा कि इसने कितने भाषण किये या इसने कितने स्टूडेंट वा सेन्टर बनाये हैं, लेकिन योग्य कितनों को बनाया है? सेन्टर

बनाना बड़ी बात नहीं है लेकिन योग्य कितनी आत्माओं को बनाया? नाम हो गया—30 सेन्टर की इंचार्ज है और 30 में से 15 हिल रहे हैं, 15 ठीक हैं तो फायदा हुआ या सिर्फ नाम हुआ? सिर्फ नाम होता है कि फलानी के 30 सेवाकेन्द्र हैं। लेकिन नम्बर इससे नहीं मिलेगा। फाइनल नम्बर जितनों को सुख दिया, जितना स्वयं शक्तिशाली रहे, उसी प्रमाण मिलेंगे। इसीलिये ये भी चाहिये-चाहिये खत्म कर दो। नहीं तो योग नहीं लगेगा। रोज़ यही देखते रहेंगे कि फलानी जगह प्रोग्राम हुआ मेरे को फिर भी नहीं बुलाया, अभी परसों यहाँ हुआ, कल वहाँ हुआ, आज यहाँ हुआ! तो योग लगेगा या गिनती होती रहेगी?

तो मुख्य बात – जो यथार्थ निश्चय है उसको पक्का करो। कहने में तो कह देते हो मैं आत्मा हूँ और बाप सर्वशक्तिमान् है लेकिन प्रैक्टिकल में, कर्म में आना चाहिये। बाप सर्वशक्तिमान् है लेकिन मेरे को माया हिला रही है तो कौन मानेगा आपका बाप सर्वशक्तिमान् है! क्योंकि उससे ऊपर तो कोई है नहीं। तो बापदादा आज निश्चय के फाउण्डेशन को देख रहे हैं। चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं लेकिन इस निश्चय के फाउण्डेशन को प्रैक्टिकल में लाओ और समय पर यूज करो। समय बीत जाता है फिर बाप के आगे पश्चाताप के रूप में आते हो—क्या करें, बाबा हो गया, आप तो रहमदिल हो, रहम कर दो.....तो ये क्या हुआ? ये भी रॉयल पश्चाताप है। साथ है तो किसी की हिम्मत नहीं है, निश्चयबुद्धि का अर्थ ही है विजयी। अगर कोई हिसाब-किताब आता भी है तो मन को नहीं हिलाओ। स्थिति को नीचे-ऊपर नहीं करो। चलो आया और फट से उसको दूर से ही खत्म कर दो। अभी योद्धे नहीं बनो। कई अभी निरन्तर योगी नहीं हैं। कुछ समय योगी हैं और कुछ समय युद्ध करने वाले योद्धे हैं। लेकिन अपने को कहलाते क्या हो? योद्धे कि योगी? कहलाते तो सहजयोगी हो। तो नये जो भी आये हैं उनको बापदादा फिर से भाग्य प्राप्त करने की मुबारक देते हैं। लेकिन मुबारक के साथ ये चेक भी करना कि फाउण्डेशन नम्बरवन है या नम्बर दो का है?

कई कहते हैं ज्ञान-योग बहुत अच्छा लगता है, अच्छा है वो तो ठीक है लेकिन कर्म में लाते हो? ज्ञान माना आत्मा, परमात्मा, ड्रामा....यह कहना नहीं।

ज्ञान का अर्थ है समझ। समझदार जैसा समय होता है वैसे समझदारी से सदा सफल होता है। कभी भी देखो जीवन में दुःख आते हैं तो क्या सोचते हो? पता नहीं, मुझे यह क्यों नहीं समझ में आया – यहीं कहेंगे। तो समझदार हो? ज्ञानी हो? बोलो हाँ या ना? (हाँ जी) हाँ तो बहुत अच्छी बोलते हैं। समझदार की निशानी है कभी धोखा नहीं खाना – ये है ज्ञानी की निशानी, और योगी की निशानी है – सदा क्लीन और क्लियर बुद्धि। क्लीन भी हो और क्लियर भी हो। योगी कभी नहीं कहेगा—पता नहीं, पता नहीं। उनकी बुद्धि सदा ही क्लियर है। और धारणा स्वरूप की निशानी है सदा स्वयं भी डबल लाइट। कितनी भी ज़िम्मेवारी हो लेकिन धारणामूर्त, सदा डबल लाइट। चाहे मेला हो, चाहे झमेला हो—दोनों में डबल लाइट। और सेवाधारी की निशानी है—सदा निमित्त और निर्माण भाव। तो ये सभी अपने में चेक करो। कहने में तो सभी कहते हो ना कि चारों ही सब्जेक्ट के गॉडली स्टूडेंट हैं। तो निशानी दिखाई देनी चाहिये।

तो नये-नये क्या करेंगे? अपने निश्चय को और पक्का करना। नहीं तो फिर क्या होता है दो साल चलेंगे, तीन साल चलेंगे फिर वापस पुरानी दुनिया में चले जायेंगे। और फिर जो वापस जाते हैं वो उस दुनिया में भी सेट नहीं हो सकते हैं। न इस दुनिया के रहते, न उस दुनिया के। इसलिए अपना फाउण्डेशन बहुत पक्का करो। अनुभव करो—सर्वशक्तिमान् बाप साथ है। बस एक बात भी अनुभव किया तो सबमें पास हो जायेंगे। रिवाज़ी प्राइम मिनिस्टर है, मिनिस्टर है उसके साथ का भी नशा रहता है। ये तो सर्वशक्तिमान् है! अच्छा!

जो इस कल्प में पहले बारी आये हैं वो हाथ उठाओ। जो पहली बार आये हैं वो सदा खुश रहना और सदा आबाद रहना। अच्छा—टीचर्स भी बहुत आती हैं। एक साल में कितने चांस मिलते हैं? एक ही मिलता है। 12 मास को 13 मास तो कर नहीं सकते। बापदादा को तो दिल होती है टीचर्स ऐसे रिफ्रेश हो जायें, शक्तिशाली बन जायें जो किसी भी सेन्टर पर कोई भी जाये तो एक आत्मा भी कमज़ोर नहीं दिखाई दे। निर्विघ्न सेवाकेन्द्र, उसको ही मार्क्स मिलती हैं। बापदादा इसमें खुश नहीं होते कि इस ज़ोन में हजार सेन्टर हैं, हजार गीता पाठशालायें हैं। बापदादा खुश होते हैं जिस ज़ोन में कोई खिटाखिट नहीं हो, कोई कम्पलेन्ट नहीं हो। क्योंकि वास्तव में मानो टीचर मेहनत कर रही है और

खिटखिट भी हो रही है, वातावरण वैसे का वैसा है तो क्या वो सेवा है? कि झमेला है? तो आये किसलिए? ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारियां किसलिए बनें? झमेले के लिए? अगर झमेले ही चाहियें तो दुनिया में बहुत जगह हैं। बापदादा वहाँ का एड्रेस भी दे सकते हैं। लेकिन ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ बनना माना मिलन मेला मनाना, न कि झमेला। देखो अभी आये हो तो किस लक्ष्य से आये हो? झमेले के लिए आये हो? मिलन मनाने आये हो तो अच्छा लगता है ना! तो कभी भी, कोई भी स्टूडेंट हो वा टीचर हो, हैं तो सभी स्टूडेंट-कभी भी झमेला नहीं करो। झमेला करना अर्थात् क्या कहें! बापदादा को कहना भी अच्छा नहीं लगता। इसलिए चाहे टीचर, चाहे मधुबन, चाहे मधुबन के उप सेवाकेन्द्र, गीतापाठशालायें या आपके ज़ोन के उपसेवाकेन्द्र या केन्द्र, जो भी अपने को ब्राह्मण आत्मा कहलाते हैं, नहीं तो अपने को ब्राह्मण नहीं कहलाओ, क्षत्रिय कहलाओ, ब्राह्मण नाम को खराब नहीं करो। ब्राह्मण माना विजयी। अगर झमेला करते हैं तो क्षत्रिय हैं, न कि ब्राह्मण।

तो आज का पाठ क्या पक्का करेंगे? कौन सा संकल्प करेंगे? हर एक को मन, वाणी, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क में झमेला मुक्त बनना है। झमेला नहीं होना चाहिये। रोज़ चेक करो। ये व्यर्थ संकल्प का भी झमेला है। दूसरे के साथ नहीं है लेकिन अपने मन में तो झमेला है। तो सभी क्या संकल्प करेंगे? क्या बनेंगे? बोलो, झमेला मुक्त। क्योंकि डायमण्ड जुबली आ रही है तो डायमण्ड जुबली में झमेला वाला डायमण्ड चाहिये क्या? आप लोग पसन्द करेंगे? या बहुत सुन्दर डायमण्ड के बीच में दो-चार झमेले वाले डायमण्ड हों तो पसन्द करेंगे? नहीं करेंगे। लेकिन इसकी बहुत सहज विधि है, मेहनत करने की भी ज़रूरत नहीं। झमेला मुक्त होने की विधि सबसे सहज है कि पहले स्वयं को झमेले मुक्त करो। दूसरे के पीछे नहीं पड़ो। ये स्टूडेंट ऐसा है, ये साथी ऐसा है, ये सरकमस्टांस ऐसे हैं-उसको नहीं देखो लेकिन अपने को झमेला मुक्त करो। जहाँ झमेला हो वहाँ अपने मन को, बुद्धि को किनारे कर लो। आप सोचते हो-ये झमेला पूरा होगा तो बहुत अच्छा हो जायेगा, हमारी सेवा भी अच्छी, हमारी अवस्था भी अच्छी हो जायेगी। लेकिन झमेले पहाड़ के समान हैं। क्या पहाड़ से माथा टकराना है? पहाड़ हटेगा क्या? स्वयं किनारा कर लो या उड़ती

कला से झमेले के पहाड़ के भी ऊपर चले जाओ। तो पहाड़ भी आपको एकदम सहज अनुभव होगा। मुझे बनना है। अमृतवेले से ये स्वयं से संकल्प करो कि मुझे झमेला मुक्त बनना है। बाकी तो है ही झमेलों की दुनिया, झमेले तो आयेंगे ही। आपकी दुनिया आपका सेवाकेन्द्र है तो आपकी दुनिया ही वो है, तो वहाँ ही आयेंगे ना। आप पेपर देने के लिए अमेरिका, लण्डन जायेंगी क्या? सेन्टर पर ही देंगी ना! तो झमेला नहीं आवे—यह नहीं सोचो। झमेला मुक्त बनना है—ये सोचो। हो सकता है? कि वहाँ सेन्टर पर या घर में जायेंगे तो कहेंगे कि ये झमेला तो मेरे से नहीं होगा। ऐसे तो नहीं? जब बाप ने कहा है कि पुरानी दुनिया से, पुरानी दुनिया के प्राप्तियों से अभी अपने मन और बुद्धि को ऊंचा करो। पुरानी दुनिया से लंगर उठा लिया कि अभी लगा हुआ है? बंधा हुआ तो नहीं है? वो कहानी सुनाते हैं ना तो अन्जान रहना ये भी अन्धकार है। वो अन्धकार नहीं लेकिन अन्जान रहना भी अन्धकार है। तो अन्धकार में नहीं रह जाना। अच्छी तरह से चेक करो। देखेंगे, ये झमेला मुक्त नम्बरवन कौन सा सेवाकेन्द्र या मधुबन बनता है?

मधुबन वालों को भी बनना है। ऐसे नहीं जो ग्रुप आया है उनको ही बनना है। मधुबन वाले नीचे बैठे हैं ना। (ओम् शान्ति भवन का हाल फुल होने के कारण सभी पाण्डव भवन में मुरली सुन रहे हैं) चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे नीचे बैठे हैं, लेकिन बापदादा के तो सामने हैं। आप टी.वी. के सामने हो, बापदादा आपके सामने है। तो मधुबन वाले या जो भी देश-विदेश सभी इसमें नम्बरवन बनो फिर डायमण्ड जुबली बहुत धूमधाम से मनायेंगे। अभी बापदादा को थोड़ा-थोड़ा होता है कि क्या सभी मुक्त हो जायेंगे! लेकिन ये बापदादा का संकल्प ठीक नहीं है, ऐसे ना? बाप को तो बच्चों पर निश्चय है ना! लेकिन थोड़ा-थोड़ा आता है – क्या करेंगे! बाकी है ही क्या? एक मास। डायमण्ड जुबली तो जनवरी से शुरू है। डायमण्ड जुबली के बीच में करेंगे, आरम्भ में करेंगे, क्या करेंगे? बताओ, राय बताओ कि डायमण्ड जुबली के आरम्भ में मुक्त हो जायेंगे या समाप्ति में मुक्त होंगे? जो समझते हैं थोड़ा समय तो चाहिये, इतने में कैसे हो जायेंगे, 63 जन्म के संस्कार हैं, एक मास में खत्म हो जायेंगे—मुश्किल लगता है....! टाइम चाहिये? 2 मास, 6 मास, क्या समझते हो? जो समझते

हैं कुछ टाइम चाहिये वो हाथ उठाओ। अच्छा, जिन्होंने हाथ उठाया वो खड़े हो जाओ। सच्चे तो हैं ना। इन्हों का फोटो निकालो, इन्हों को टाइम देंगे। घबराओ नहीं। जिन्होंने भी हाथ उठाया है वो अपनी चिटकी में सेन्टर और अपना नाम ये परिचय लिख करके शान्तामणि को देना। कोई हर्जा नहीं है, आप लोगों ने सच बोला – तो जल्दी हो जायेंगे। बाकी इतने सभी अगर मुक्त हो गये तो ये थोड़े तो आपकी पूँछ पकड़कर भी मुक्त हो जायेंगे। अच्छा, पोस्ट वाली इशू कहाँ है? इसके पास पोस्ट आती है। तो एक मास के बाद कोई ऐसी झमेले की पोस्ट नहीं आनी चाहिये। अगर आवे तो आप बापदादा को बताना। ठीक है ना। पक्का काम करना चाहिये। इनको पहचानते हो ना। इससे सबका काम पड़ता है। भविष्य बनाने के निमित्त तो रखा हुआ है ना! सभी जमा यहीं आ करके करते हैं।

अच्छा, डबल विदेशियों ने क्या कहा? ज़ोन तो बहुत आये हैं। (सभी ज़ोन वालों से बापदादा ने हाथ उठवाये)

अच्छा, सभी ज़ोन, चाहे दिल्ली, चाहे गुजरात, चाहे तामिलनाडु जो भी हैं बापदादा ने देखा कि सभी के मन में डायमण्ड जुबली का उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। और सभी समझते हैं कि ये डायमण्ड जुबली, यज्ञ की स्थापना निर्विघ्न 60 साल चली है और आगे भी चलती रहेगी। तो 60 साल वृद्धि होती रही है, खत्म नहीं हो जाये संस्था या खिटखिट में बिगड़ नहीं जाये... यह इस विश्वविद्यालय की दुनिया के लिए बहुत बड़ी शान है। तो डायमण्ड जुबली मनाना अर्थात् हर ब्राह्मण का ये शान है कि हम ऐसे विश्वविद्यालय के या ऐसे श्रेष्ठ कार्य के साथी हैं। 60 साल कोई कम नहीं हैं, दुनिया के लिए तो असम्भव बात है। लेकिन आप जानते हो कि परमात्म कार्य सदा अचल, अविनाशी है। तो संस्था की शान अर्थात् हर ब्राह्मण आत्मा की शान है। फलक से कह सकते हो कि हमारे कार्य की डायमण्ड जुबली है। दुनिया वाले तो समझते हैं कि कोई भी बड़ा गुरु गया तो संस्था भी गई। इन्हों का ब्रह्मा बाबा गया तो सब कुछ गया.... लेकिन आप जानते हो कि ब्रह्मा बाप द्वारा भी चलाने वाला अविनाशी बाप है। तो ये डायमण्ड जुबली – एक कार्य के सफलता की निशानी है। इसमें चाहे युवा हो चाहे प्रवृत्ति वाले हो, सभी को डायमण्ड बन

और अन्य डायमण्ड की माला बनानी है। अगर स्वयं निर्विघ्न श्रेष्ठ डायमण्ड हैं तो औरों को भी ऐसे ही बनायेंगे।

युवकों से

युवा हाथ उठाओ। मैजारिटी देश-विदेश में देखा जाता है कि जो नये-नये आते हैं वो मैजारिटी युवा आते हैं, युवा वर्ग का आना ये संस्था की शान है। क्योंकि गवर्नमेन्ट तो हार गई, वो तो साफ कहती है हमारी हिम्मत नहीं। तो आप युवा वर्ग ऐसी कमाल करके दिखाओ जो बाप का नाम हर युवा के चलन से, परिवर्तन से दिखाई दे। इसके लिए हर एक युवा को अपने को क्या बनाना है? दिव्य दर्पण। दर्पण में शकल दिखाई देती है ना। तो आपके चेहरे से औरों को फरिश्ता या दिव्य गुणधारीमूर्त्त दिखाई दे।

(एजुकेशन विंग की ओर से गुजरात में चले अभियान का समाचार बापदादा को सुनाया) अच्छा है, कितनी आत्माओं को परिचय मिल गया ना! तो सेवा किया अर्थात् अपने पुण्य का खाता जमा किया। अभी एजुकेशन डिपार्टमेन्ट या वर्ग वालों ने चक्कर तो लगाया, बहुत अच्छा किया लेकिन एजुकेशन डिपार्टमेन्ट या वर्ग गवर्नमेन्ट को यह सिद्ध करके दिखावे कि सचमुच जो नाम है विश्वविद्यालय वो रीयल विश्वविद्यालय यही है। अभी मान्यता नहीं दिलाई है। तो ये काम अभी रहा हुआ है, अधूरा है अभी। तो ऐसा प्लैन बनाओ जो गवर्नमेन्ट स्वयं बोले कि हमारे विश्वविद्यालय इस विद्यालय के आगे कुछ नहीं हैं। अगर है तो ये है। यही है, यही है – ये बोले, तब एजुकेशन वालों को इनाम देंगे। अभी तो युद्ध चल रही है – एजुकेशन है या नहीं है? तो जो रीयल है, जो सत्य है वो सिद्ध तो होना है ना। तो थोड़ी और मेहनत करो। होना तो है लेकिन वो बिचारे इतने भटक रहे हैं, जल्दी से बच जावें। अच्छा, युवा अर्थात् दिव्य दर्पण। समझा ?

प्रवृत्ति वालों से

प्रवृत्ति वाले क्या करेंगे? बापदादा प्रवृत्ति वालों की सदा किस पुष्प से तुलना करते हैं? (कमलपुष्प से)

अच्छा तो आप प्रवृत्ति वाले कमल पुष्प हो? कभी-कभी कोई बूंद तो नहीं लग जाती? कोई मिट्टी का प्रभाव तो नहीं पड़ जाता? तो प्रवृत्ति वाले इस सारी पुरानी दुनिया को, कमल पुष्प का तालाब बना दो। तालाब के बीच में कमल पुष्प बहुत अच्छे लगते हैं। तो इस पुरानी दुनिया को कमल पुष्प का बड़े से बड़ा तालाब बनाओ, जो जहाँ भी देखे ना तो कमल ही कमल दिखाई दें। इतनी हिम्मत है? डायमण्ड जुबली तक बनायेंगे? एक मास में नहीं कहते लेकिन एक वर्ष में तो बनाओ। बिचारे आत्माओं की हालतें देखो तो सचमुच रहम आता है। दुनिया की हालत देखो और अपने को देखो—कितना अन्तर है! कितनी बातों से, दुःखों से, दर्दों से छूट गये हो। समझते हो – दुनिया की ऐसी हालत है? किसी से भी पूछो क्या हालचाल है तो कहेंगे कि दुनिया का तो बेहाल है। और आपसे पूछे क्या हाल है? खुशहाल है। तो दुनिया बेहाल और आप सभी खुशहाल। पक्का है या कभी-कभी खुशी कम होती है? कम नहीं होने देना। तो सभी प्रवृत्ति वाले कमल हो ना! पक्का याद रखो कि हम कमल हैं। न्यारे और बाप के प्यारे। अच्छा!

कुमारियों से

कुमारियों की तो महिमा सदा बापदादा करते हैं। क्योंकि कुमारी साधारण कुमारी से विश्व की सेवाधारी कुमारी बन गई। कहाँ घर की चार दीवारों में रहने वाली और कहाँ विश्व के सेवाधारी बन गये या बन रहे हैं। तो कुमारियाँ अपने को ऐसे योग्य समझती हो? ऐसे योग्य हो या टोकरी उठाने वाली हो? टोकरी उठाते-उठाते तो सिरदर्द करता है। अभी कुमारियों को टोकरी वाली बनना है या ताज वाली बनना है? टोकरी छोड़ देंगी? कि टोकरी उठाना ज़रूरी है? कुमारियाँ क्या समझती हैं? जो समझती हैं कि नौकरी करनी ही पड़ेगी, मजबूरी है, वो हाथ उठाओ। मजबूरी वाली कोई नहीं है। तो घरों में क्यों बैठे हो? जब नौकरी की आवश्यकता नहीं तो क्यों बैठे हो? क्यों नहीं आते हो मैदान में? घर अच्छा लगता है? छोटा सा घर है, कोई खिंटखिंट नहीं है, माँ-बाप का प्यार मिल रहा है, ठीक है। सेवाकेन्द्र पर पता नहीं क्या-क्या होगा, कैसे चलेंगे, चल सकेंगे या नहीं सकेंगे, इसीलिए चार दीवारी ठीक है... ऐसे समझती हो?

कुमारियों पर तो सब युगों में से संगमयुग पर विशेष परमात्म-कृपा है। अगर संगम पर परमात्म कृपा के अधिकारी नहीं बने तो सारे कल्प में नहीं बनेंगे। तो कुमारियों को परमात्म वरदान है या परमात्म-कृपा है, वो कभी भी छोड़नी नहीं चाहिये, लेनी चाहिये। समझा कुमारियों ने? डरो नहीं। आजकल समाचार सुना है, कई कुमारियाँ डरती हैं—पता नहीं, पता नहीं, पता नहीं! लेकिन सभी सेवाकेन्द्र एक जैसे नहीं होते हैं। अगर कोई बात है भी तो बड़ों को दे सकते हैं। उसके लिए कोई को मना नहीं है। अगर टीचर मना भी करती है तो बापदादा की छुट्टी है कि कहाँ से भी पत्र डाल सकते हो। सिर्फ क्या होता है—बापदादा पत्र के लिए तो कहते हैं लेकिन लम्बा बहुत लिख देते हैं। थोड़े में ही समझ में आ जाता है, लेकिन लम्बी कहानी होगी तो जो चार्ज वाली देखेगी ना, वो भी किनारे रख देगी। जब टाइम मिलेगा तब पढ़ेगी। और बड़ों तक भी नहीं जायेगा। उन्हीं को भी टाइम मिले ना, तब तो आपका रामायण पढ़ेंगे। इसलिए लम्बा नहीं लिखो। शॉर्टकट में लिखो कि ये तकलीफ है और इसकी ये सैलवेशन चाहिये। फिर स्पष्टीकरण लेना होगा तो बड़े आपको आपेही बुलायेंगे। और ही मधुबन में आने का चांस मिलेगा। तो लम्बा नहीं लिखना। बाकी सबको छुट्टी है, अगर कोई ऐसी अयथार्थ बात है तो सुना सकते हैं। डरो नहीं। डरने के कारण अपनी परमात्म-कृपा का भाग्य नहीं गँवाओ। समझा कुमारियों ने? न अपने को तंग करो, न दूसरे को तंग करो। भाग्य अच्छा है। कुमारियाँ हिम्मत रखती हैं तभी सेन्टर खुल सकते हैं। अगर कुमारियाँ हिम्मत नहीं रखती तो सेन्टर भी नहीं खुलते। तो लक्की तो हो ना। सभी दीदी जी, दादी जी तो कहते हैं। यहीं टाइटल मिल जाता है। अच्छा।

बाकी मधुबन वाले या जो भी सम्पर्क में गीता पाठशालायें कहो, उपसेवाकेन्द्र कहो, जो भी हैं सभी को बापदादा अभी अपने समान सम्पन्न और मास्टर सर्वशक्तिमान् देखना चाहते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा मॉडल मधुबन है। मधुबन कौन सा मॉडल बनाता है, वह देखेंगे। जो सच्ची दिल से सेवा करते हैं उसको बापदादा भी पद्मगुणा मुबारक देते हैं। मधुबन वाले खातिरी तो करते हैं ना। चाहे ज्ञान सरोवर में, चाहे यहाँ पाण्डव भवन में, खातिरी तो करते हैं। तो खातिरी करने वालों को आप सभी भी मुबारक दे रहे हो ना। तो सारी सभा की

तरफ से मुबारक।

अच्छा, चारों ओर के सदा श्रेष्ठ भाग्यवान भाग्य विधाता को अपना बनाने वाले ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बापदादा के श्रीमत को सुना और किया ऐसे सर्व सपूत बच्चों को, सदा सेवा में अचल रहने वाले झमेला मुक्त और परमात्म-मिलन मेला मनाने वाले सभी बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

अच्छा—डबल विदेशियों को डबल नशा है ना? डबल विदेशी अर्थात् डबल लाइट, डबल नशा और डबल बापदादा और परिवार के प्यारे। समझा?

अच्छा! हेल्थ मेला करने वालों को भी मुबारक। वैसे रिज़ल्ट अच्छी है और रहेगी।

(दादियां बापदादा के सामने बैठी हैं) टीचर्स को अच्छा चांस मिल जाता है। मेहनत भी करती हैं, यहाँ थकावट उतर जाती है। यहाँ रिफ्रेश होते हो या यहाँ भी पार्टी की चिन्ता रहती है? वैसे तो मधुबन की दिनचर्या ऐसी सेट है जो टाइम भी नहीं है। बिज़ी रहने चाहे, क्लासेस का लाभ उठाना चाहे तो स्टूडेंट को फुर्सत मिलती है? मधुबन में फ्री होते हो? पाण्डवों से पूछते हैं कि क्लासेस में बिज़ी रहते हो, क्या होता है? मधुबन में यहाँ वहाँ की बातें करने का फ्री टाइम मिलता है? क्लासेस में बिज़ी रहते हो? सभी क्लासेस अटेण्ड करते हो? क्लासेस ज़रूर अटेण्ड करना चाहिये क्योंकि हर एक रत्न में बापदादा वा इमानुसार कोई न कोई विशेषता भरी हुई है। तो क्लास कोई भी करावे। ऐसे नहीं फलाने का क्लास है तो सभी भागो और कोई दूसरे का है तो आधा घूमना...। कोई भी क्लास कराता है उसमें विशेषता होती है। और आप लोगों के पास सभी तो पहुँच भी नहीं सकते। यहीं मिलते हैं। तो जिन्होंने सभी क्लास अटेण्ड किये हैं, एक भी मिस नहीं किया है, वह हाथ उठाओ। अच्छा, टीचर्स अपने काम उतारती हैं। आप एक तो ऑफिशल राउण्ड लगाने जाते हो वो तो अच्छी बात है, लेकिन क्लास के टाइम जो क्लास छोड़ करके और कहाँ घूमने गये हैं वो हाथ उठाओ। तो अभी ऐसे नहीं करना। क्लास की कई बातें समय पर बरोबर काम में आयेंगी। अभी सुनते हो, तो समझते हो बहुत सुन लिया। लेकिन कोई-कोई पॉइन्ट ऐसे टाइम में काम पर आती हैं जो आप अन्दर ही अन्दर शुक्रिया मानेंगे, इसलिए बिजी रहो। मधुबन माना पढ़ाई

में बिज़ी। बाकी खाओ पियो मौज करो, वो भले करो लेकिन टाइम पर। अच्छा है, नयों-नयों को तो नई बातें मिलती हैं। पढ़ाई में अटेन्शन बहुत ज़रूरी है। पढ़ाई माना सिर्फ सुनना नहीं। पढ़ाई का अर्थ है सुनना और करना। अच्छा, सब खुशहाल तो हैं ही। बेहाल नहीं, खुशहाल हो। अच्छा। (एजुकेशन अभियान के भाई-बहनें बापदादा के सामने खड़े हुए) अच्छा है, सेवा का फल, मधुबन में आने की छुट्टी मिल गई। लेकिन इनाम तभी देंगे जब गवर्नमेन्ट से कहलवायेंगे। कहने से भी कुछ नहीं होता। ये तो ऑफिशल लिखा-पढ़ी हो। कहने में तो प्राइम मिनिस्टर भी कहकर गया—बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है।

तो चाहे डॉक्टर्स, एजुकेशन वाले वा इन्जीनियर्स आदि, जो भी सेवा अर्थ रैली निकालते हैं वो अच्छा है। तो मुबारक हो। अच्छा! ओम् शान्ति।

जब कहते हो अर्थशक्तिमान् आप हमारे साथ है, तो फिर अपवित्रता आ नहीं सकती। लेकिन यदि आती है तो चेक करो कि - माया ने कोई चोर-गोट तो नहीं बनाकर रखा है? आपके जो विशेष अभाव या अंकार कमजोर होंगे उन्हे ही माया अपना गोट बना देगी तो गोट खुला हुआ है तभी माया आती है। लेकिन यदि अर्थशक्तिमान् साथ है तो ये कमजोरी रह नहीं सकती।

“व्यर्थ बोल, डिस्टर्ब करने वाले बोल से स्वयं को मुक्त कर बोल की इकॉनॉमी करो”

13.12.95

आ ज बापदादा चारों ओर की आत्माओं को आप सभी के साथ देख रहे हैं। चारों ओर के बच्चे आकार रूप से बापदादा के सामने हैं। डबल सभा, साकारी और आकारी दोनों कितनी बड़ी सभा है। बापदादा दोनों सभा के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। क्योंकि बापदादा हर बच्चे को विशेष दो रूपों से देख रहे हैं। एक – हर एक बच्चा इस सर्व मनुष्यात्माओं के पूर्वज, सारे वृक्ष का फाउण्डेशन है। क्योंकि जड़ से सारा वृक्ष निकलता है और दूसरे रूप में पूर्वज बड़े को भी कहते हैं। तो सृष्टि के आदि में आप आत्माओं का ही पार्ट है। इसलिए बड़े ते बड़े हो, इस कारण सर्व आत्माओं के पूर्वज हो। साथ-साथ ऊंचे ते ऊंचे बाप की पहली रचना आप ब्राह्मण आत्मायें हो। तो जैसे ऊंचे ते ऊंचा भगवन है वैसे बड़े ते बड़े पूर्वज आप हो। तो इतने सारे पूर्वज बच्चों को देख बाप हर्षित होते हैं। आप भी हर्षित होते हो कि हम पूर्वज हैं – उसी निश्चय और नशे में रहते हो? तो बापदादा आज पूर्वजों की सभा देख रहे हैं।

आप सभी जो भी बाप के बच्चे हो, माया से बचे हुए हो। बच्चे का अर्थ ही है बाप का बनना अर्थात् बच्चे बनना। तो माया से बचे हुए बाप के बच्चे बनते हैं। आप सभी माया से बचे हुए हो ना? कि कभी चक्कर में आ जाते हो? कहते हैं ना ऐसा भी चक्रव्युह होता है जो बहुत तरीके से निकलना होता है। तो कोई भी माया के चक्रव्युह में फंसने वाले तो नहीं हो? क्या कोई चक्कर है? बचे हुए हो? (हाँ जी) ऐसे नहीं करना कि यहाँ हाँ जी करके जाओ और वहाँ जाकर कहो ना जी। जब एक बार चक्कर से निकलने का रास्ता या विधि आ गई, तो फिर फंसने की तो बात ही नहीं है। माया को भी अच्छी तरह से जान गये हो ना कि कभी अनजान बन जाते हो? फिर कहते हैं हमको तो पता ही नहीं पड़ा कि ये माया है। क्योंकि जैसे आजकल का फैशन है भिन्न-भिन्न पेन्स बहुत पहन लेते हैं। अभी-अभी क्या बनेंगे, अभी-अभी क्या बनेंगे। तो

माया के पास भी ये फंसाने के फेस बहुत हैं। उसके पास अच्छा बड़ा दुकान है। जिस समय जो रूप धारण करना चाहे उस समय कर लेती है। और अगर जाने-अनजाने फंस गये तो निकलने में बहुत टाइम लगता है। और संगम का एक सेकण्ड व्यर्थ जाना अर्थात् एक वर्ष गँवाना है, सेकण्ड नहीं। आप सोचो संगमयुग कितना छोटा है। अभी तो डायमण्ड जुबली मना रहे हो और इस थोड़े से समय में जो बनना है, जो जमा करना है वो अभी बन सकते हैं। तो बापदादा देख रहे थे कि बनने का समय कितना थोड़ा है और बनते हो सारा कल्प। तो कहाँ 5 हज़ार और कहाँ अभी 60 वर्ष, चलो आगे कितना भी समय होगा लेकिन हज़ारों के गिनती में तो नहीं होगा ना!

तो इस थोड़े से समय में राज्य अधिकारी बनने वा रॉयल फैमिली में आने के लिए क्या करना होगा? वैसे संख्या के हिसाब से सतयुग में विश्व का तख्त सभी को तो मिल भी नहीं सकता। मानों पहले लक्ष्मी-नारायण तो तख्त पर बैठेंगे लेकिन जो पहले लक्ष्मी-नारायण की रॉयल फैमिली है, उन्हीं को भी इतना ही सभी द्वारा स्नेह और सम्मान मिलता है। तो अगर पहली राजधानी के रॉयल फैमिली में भी आते हैं तो वो पहला नम्बर हैं। चाहे बड़े तख्त पर नहीं बैठते लेकिन प्रालब्ध नम्बरवन के हिसाब से ही है। नहीं तो आप सभी लोगों को त्रेता तक भी तख्त थोड़ेही मिलेगा। लेकिन विश्व राज्य अधिकारी का लक्ष्य सभी का है ना? कि वहाँ भी एक स्टेट के राजा बन जायेंगे? तो पहले नम्बर के रॉयल फैमिली में आना ये भी श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। कोई को तख्त मिलता और किसको रॉयल फैमिली मिलती है। इसके भी गुह्य रहस्य हैं।

जो सदा संगम पर बाप के दिल तख्तनशीन स्वतः और सदा रहता है, कभी-कभी नहीं, जो सदा आदि से अन्त तक स्वप्न मात्र भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता के व्रत में सदा रहा है, स्वप्न तक भी अवित्रता को टच नहीं किया है, ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें तख्तनशीन हो सकती हैं। जिसने चारों ही सब्जेक्ट में अच्छे मार्क्स लिये हैं, आदि से अन्त तक अच्छे नम्बर से पास हुए हैं, उसी को ही पास विद् ऑनर कहा जाता है। बीच-बीच में मार्क्स कम हुई हैं फिर मेकप किया है, मेकप वाला नहीं लेकिन आदि से चारों ही सब्जेक्ट में बाप के दिल पसन्द हैं वो तख्त ले सकता है। साथ-साथ जो ब्राह्मण संसार में सर्व के प्यारे, सर्व

के सहयोगी रहे हैं, ब्राह्मण परिवार हर एक दिल से सम्मान करता है, ऐसा सम्मानधारी तख्त नशीन बन सकता है। अगर इन बातों में किसी न किसी में कमी है तो वो नम्बरवार रॉयल फैमिली में आ सकता है। चाहे पहली में आवे, चाहे आठवीं में आए, चाहे त्रेता में आए। तो अगर तख्तनशीन बनना है तो इन सभी बातों को चेक करो। अगर सेवा में 100 मार्क्स जमा हैं और धारणा में 25 परसेन्ट तो क्या होगा? वो अधिकारी बनेगा? कई बच्चे और सब्जेक्ट में आगे चले जाते हैं लेकिन प्रैक्टिकल धारणा में जैसा समय है वैसा अपने को मोल्ड करना वो है रीयल गोल्ड। कहाँ-कहाँ माया बच्चों से भी होशियार हो जाती है। वो फट से समय प्रमाण स्वरूप धारण कर लेती है और बच्चे क्या कहते हैं? बाप के पास तो सबकी बातें आती हैं ना! मानो एक रांग है और दूसरा राइट है। ऐसे भी होता है कि दोनों तरफ की कोई ना कोई कमी होती है लेकिन मानों आप बिल्कुल ही अपने को राइट समझते हो और दूसरा बिल्कुल ही रांग है, तो आप राइट हो और वो रांग है फिर भी जैसा समय, जैसा वायुमण्डल देखा जाता है वैसे अपने को ही, चाहे समाना पड़ता है, चाहे मिटाना पड़ता है, चाहे किनारा करना पड़ता है, लेकिन बच्चे क्या कहते हैं कि क्या हर बात में हर समय हमको ही मरना है क्या! मरने के लिये हम हैं और मौज मनाने के लिए ये हैं! सदा ही मरना है, ये मरना तो बहुत मुश्किल है, मरजीवा तो बन गये वो तो सहज है। ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी बन गये ये भी तो मरजीवा बने ना! ये मरना तो बहुत सहज हो गया। मर गये, ब्रह्माकुमारी बन गये। लेकिन ये बार-बार का मरना ये बहुत मुश्किल है! मुश्किल है ना? छोटियाँ कहती हैं कि हमको ही ज्यादा मरना पड़ता है और बड़े कहते हैं कि हमको ही ज्यादा सुनना पड़ता है। तो आपको सहन करना पड़ता, उन्हीं को सुनना पड़ता, तो मरना किसको है? कौन मरें? एक मरे, दोनों मरें? दोनों ही मर गये तो बात खत्म, खेल खत्म। तो मरना आता है या थोड़ा मुश्किल लगता है? थोड़ा सांस हांफता है, मुश्किल सांस निकलता है। तकलीफ होती है? उस समय जब कहते हो ना कि क्या हमें ही मरना है, हमें ही बदलना है, क्या मेरी ही जिम्मेवारी है बदलने की? दूसरे की भी तो है! आधा-आधा बांट लो—तुम इतना मरो, मैं इतना मरूँ। बापदादा को तो उस समय रहम भी बहुत आता है लेकिन ये मरना, मरना नहीं

है। ये मरना सदा के लिये जीना है। लोग कहते हैं ना कि बिना मरे स्वर्ग नहीं मिलेगा। तो उस मरने से तो स्वर्ग मिलता नहीं लेकिन इस मरने से स्वर्ग का अधिकार ज़रूर मिलेगा। इसलिए ये मरना अर्थात् स्वर्ग का अधिकारी बनना। डर जाते हो ना-मरना पड़ेगा, मरना पड़ेगा, सहन करना पड़ेगा तो छोटी बात बड़ी हो जाती है। आप सोचो कोई भी डाकू या चोर है नहीं लेकिन आपको डर बैठ गया कि डाकू है, चोर है तो भय से क्या होता है? भय से या तो हार्ट नीचे-ऊपर होगी या ब्लड प्रेशर नीचे-ऊपर होगी। डर से होता है ना? तो डर जाते हो। मरना बड़ी बात नहीं है लेकिन आपका डर बड़ी बात बना देता है फिर कहते हैं पता नहीं हमको क्या होता है, पता नहीं! लेकिन जैसे हिम्मत से मरजीवा बनने में भय नहीं किया, खुशी-खुशी से किया, ऐसे खुशी-खुशी से परिवर्तन करना है। मरना शब्द नहीं है लेकिन आपने मरना-मरना शब्द कह दिया है इसलिए डर जाते हैं। वास्तव में ये मरना नहीं है लेकिन अपने धारणा की सब्जेक्ट में नम्बर लेना है। सहन करने में घबराओ मत। क्यों घबराते हो? क्योंकि समझते हो कि झूठी बात में हम सहन क्यों करें? लेकिन सहन करने की आज्ञा किसने दी है? झूठ बोलने वाले ने दी है? कई बच्चे सहन करते भी हैं लेकिन मजबूरी से सहन करना और मोहब्बत में सहन करना, इसमें अन्तर है। बात के कारण सहन नहीं करते हो लेकिन बाप की आज्ञा है सहनशील बनो। तो बाप की आज्ञा मानते हो तो परमात्मा की आज्ञा मानना ये खुशी की बात है ना कि मजबूरी है? तो कई बार सहन करते भी हो लेकिन थोड़ा मिक्स होता है, मोहब्बत भी होती है, मजबूरी भी होती है। सहन कर ही रहे हो तो क्यों नहीं खुशी से ही करो। मजबूरी से क्यों करो! वो व्यक्ति सामने आता है ना तो मजबूरी लगती है और बाप सामने आवे, कि बाप की आज्ञा पालन कर रहे हैं तो मोहब्बत लगेगी, मजबूरी नहीं। तो ये शब्द नहीं सोचो। आजकल ये थोड़ा कॉमन हो गया है – मरना पड़ेगा, मरना पड़ेगा, कब तक मरना पड़ेगा, अन्त तक या दो साल, एक साल, 6 मास, फिर तो अच्छा मर जायें... लेकिन कब तक मरना है? लेकिन यह मरना नहीं है अधिकार पाना है। तो क्या करेंगे? मरेंगे? यह मरना शब्द खत्म कर दो। मरना सोचते हो ना तो मरने से तो डर लगता है ना। देखो अपनी मृत्यु तो छोड़ो, कोई-कोई तो दूसरे की मृत्यु देखकर

भी डर जाते हैं। तो ये शब्द परिवर्तन करो, ऐसे-ऐसे बोल नहीं बोलो। शुद्ध भाषा बोलो। ब्राह्मणों की डिक्शनरी में यह शब्द है ही नहीं। पता नहीं किसने शुरु किया है। किया तो आप लोगों में से ही है ना! आप माना जो सामने बैठे हैं, वह नहीं। ब्राह्मणों ने ही किया है। बापदादा ने ये तो एक मिसाल सुनाया लेकिन सारे दिन में ऐसे व्यर्थ बोल या मज़ाक के बोल बहुत बोलते हैं, अच्छे शब्द नहीं बोलेंगे, लेकिन कहेंगे मेरा भाव नहीं था, यह तो मज़ाक में कह दिया। तो ऐसा मज़ाक क्या ब्राह्मण जीवन में आपके नियमों में है? लिखा हुआ तो नहीं है? कभी पढ़ा है कि मज़ाक कर सकते हैं? मज़ाक करो लेकिन ज्ञानयुक्त, योगयुक्त। बाकी व्यर्थ मज़ाक जिसको आप मज़ाक समझते हो लेकिन दूसरे की स्थिति डगमग हो जाती है, तो वह मज़ाक हुआ या दुःख देना हुआ?

तो आज बापदादा ने देखा कि एक तो सभी पूर्वज हैं और दूसरा सबसे बड़े ते बड़े पूज्य आत्मायें भी आप हो। आप जैसी पूजा सारे कल्प में किसकी नहीं होती। तो पूर्वज भी हो और पूज्य भी। लेकिन पूज्य भी नम्बरवार हैं। जो भी ब्राह्मण बनते हैं उनकी पूजा होती ज़रूर है लेकिन किसकी विधिपूर्वक होती है और किसकी काम चलाऊ होती है। तो जो ब्राह्मण यहाँ भी योग में बैठते हैं लेकिन काम चलाऊ, कुछ नींद किया, कुछ योग किया, कुछ व्यर्थ सोचा और कुछ शुभ सोचा। तो यह काम चलाऊ हुआ ना! सफेद बत्ती जल गई, काम पूरा हो गया। ऐसे धारणा में भी काम चलाऊ बहुत होते हैं। कोई भी सरकमस्टांस आयेगा तो कहेंगे अभी तो ऐसे करके चलाओ, पीछे देखा जायेगा। तो ऐसों की पूजा काम चलाऊ होती है। देखो लाखों सालिग्राम बनाते हैं लेकिन क्या होता है? विधिपूर्वक पूजा होती है? काम चलाऊ होती है ना! पाइप से नहला दिया और तिलक भी कटोरी भरके पण्डित लोग ऐसे-ऐसे कर देते हैं। (छिड़क देते हैं) तिलक लग गया। तो ये क्या हुआ? काम चलाऊ हुआ ना। पूज्य सभी बनते हो लेकिन कैसे पूज्य बनते हो वो नम्बरवार है। किसकी हर कर्म की पूजा होती है। दातन (दतून) का भी दर्शन होता है, दातन हो रहा है। मथुरा में जाओ तो दातन का भी दर्शन कराते हैं, इस समय दातन का समय है। तो काम चलाऊ नहीं बनना। नहीं तो पूजा भी ऐसी होगी।

टीचर्स क्या समझती हो? आगे बैठती हो तो नम्बर भी आगे लेना है ना! कम नहीं रह जाना। नशा रखो कि हम पूर्वज भी हैं और पूज्य भी हैं। तो जितने बड़े, उतनी बड़ी जिम्मेवारी है। बड़ा बनना सिर्फ खुश होने वाली बात नहीं है। नाम बड़ा तो काम भी बड़ा। सभी टीचर्स खुश हो? या कोई-कोई इच्छा अभी भी मन में है? कोई भी इच्छा होगी तो अच्छा बनने नहीं देगी। या इच्छा पूर्ण करो या अच्छा बनो। आपके हाथ में है। और देखा जाता है कि ये इच्छा ऐसी चीज़ है जैसे धूप में आप चलते हो तो आपकी परछाई आगे जाती है और आप उसको पकड़ने की कोशिश करो, तो पकड़ी जायेगी? और आप पीठ करके आ जाओ तो वो परछाई कहाँ जायेगी? आपके पीछे-पीछे आयेगी। तो इच्छा अपने तरफ आकर्षित कर रुलाने वाली है और इच्छा को छोड़ दो तो इच्छा आपके पीछे-पीछे आयेगी। मांगने वाला कभी भी सम्पन्न नहीं बन सकता। और कुछ नहीं मांगते हो लेकिन रॉयल मांग तो बहुत है। जानते हो ना-रॉयल मांग क्या है? अल्पकाल का कुछ नाम मिल जाये, कुछ शान मिल जाये, कभी हमारा भी नाम विशेष आत्माओं में आ जाये, हम भी बड़े भाइयों में गिने जायें, हम भी बड़ी बहनों में गिने जायें, आखिर हमको भी तो चांस मिलना चाहिए। लेकिन जब तक मंगता हो तब तक कभी खुशी के खज़ाने से सम्पन्न नहीं हो सकते। ये मांग के पीछे या कोई भी हद की इच्छाओं के पीछे भागना ऐसे ही समझो जैसे मृगतृष्णा है। इससे सदा ही बचकर रहो। छोटा रहना कोई खराब बात नहीं है। छोटे सुभान अल्लाह हैं। क्योंकि बापदादा के दिल पर नम्बर आगे हैं। अल्पकाल की इच्छा का अनुभव करके देखा होगा, तो रुलाती है या हंसाती है? रुलाती है ना! तो रावण की आज्ञा है रुलाओ, आप तो बाप के हो ना तो बाप हंसाने वाला है या रुलाने वाला?

आज बापदादा विशेष इस पर अटेन्शन दिला रहे हैं कि व्यर्थ बोल जो किसको भी अच्छे नहीं लगते, आपको अच्छा लगता है लेकिन दूसरे को अच्छा नहीं लगता, तो सदा के लिए उस शब्द को समाप्त कर दो। ऐसे सारे दिन में अगर बापदादा अपने पास बच्चों के शब्द नोट करे तो काफी फाइल बन सकती है। यह अपशब्द, व्यर्थ शब्द, ज़ोर से बोलना..... ये ज़ोर से बोलना भी वास्तव में अनेकों को डिस्टर्ब करना है। ये नहीं बोलो-मेरा तो आवाज़ ही बड़ा

है। मायाजीत बन सकते हो और आवाज़ जीत नहीं बन सकते! तो ऐसे किसी को भी डिस्टर्ब करने वाले बोल और व्यर्थ बोल नहीं बोलो। बात होती है दो शब्दों की लेकिन आधा घण्टा उस बात को बोलते रहेंगे, बोलते रहेंगे। तो ये जो लम्बा बोल बोलते हो, जो चार शब्दों में काम हो सकता है वो 12-15 शब्द में नहीं बोलो। आप लोगों का स्लोगन है “कम बोलो, धीरे बोलो”। तो जो कहते हैं ना हमारा आवाज़ बहुत बड़ा है, हम चाहते नहीं हैं लेकिन आवाज़ ही बड़ा है, तो वो गले में एक स्लोगन लगाकर डाल लेवें। होता क्या है? आप लोग तो अपनी धुन में ज़ोर से बोल रहे हो लेकिन आने-जाने वाले सुन करके ये नहीं समझते हैं कि इसका आवाज़ बड़ा है। वो समझते हैं पता नहीं झगड़ा हो रहा है। तो ये भी डिससर्विस हुई। इसलिए आज का पाठ दे रहे हैं – व्यर्थ बोल या किसी को भी डिस्टर्ब करने वाले बोल से अपने को मुक्त करो। व्यर्थ बोल मुक्त। फिर देखो अव्यक्त फरिश्ता बनने में आपको बहुत मदद मिलेगी। बोल, बोल, बोल, बोलते ही रहते हो। अगर बापदादा टेप भरकर आपको सुनाये ना तो आपको भी हंसी आयेगी। तो क्या पाठ पक्का किया है? बोल की इकॉनॉमी करो, अपने बोल की वैल्यु रखो। जैसे महात्माओं को कहते हैं ना—सत्य वचन महाराज तो आपके बोल सदा सत वचन अर्थात् कोई न कोई प्राप्त कराने वाले वचन हों। किसको चलते-फिरते हंसी में कह देते हो – ये तो पागल है, ये तो बेसमझ है, ऐसे कई शब्द बापदादा अभी भूल गये हैं लेकिन सुनते हैं। तो ब्राह्मणों के मुख से ऐसे शब्द निकलना ये मानों आप सतवचन महाराज वाले, किसी को श्राप देते हो। किसको श्रापित नहीं करो, सुख दो। युक्तियुक्त बोल बोलो और काम का बोलो, व्यर्थ नहीं बोलो। तो जब बोलना शुरू करते हो तो एक घण्टे में चेक करो कि कितने बोल व्यर्थ हुए और कितने सत वचन हुए? आपको अपने बोल की वैल्यु का पता नहीं, तो बोल की वैल्यु समझो। अपशब्द नहीं बोलो, शुभ शब्द बोलो। क्योंकि अभी लास्ट मास है और आदि का मास डायमण्ड जुबली है, तो सारा साल डायमण्ड बनेंगे या 6 मास बनेंगे? सारा साल बनेंगे ना! इसलिए बापदादा डायमण्ड जुबली के पहले बच्चों को विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं। बापदादा चारों ओर के दृश्य तो देखते ही रहते हैं। सारा दिन नहीं देखते रहते हैं, सेकण्ड में सब देख सकते

हैं। तो पाठ पक्का किया – मुक्त बनना है? या थोड़ा-थोड़ा युक्त और थोड़ा-थोड़ा मुक्त? हर एक अपने को देखो। ये नहीं शुरू करना कि बाबा ने वाणी चलाई फिर भी बोल रहा है, दूसरे को नहीं देखना। अपने को देखो—मैंने बाप की श्रीमत को कितना अपनाया है? अभी तो एक-दो को देखते हैं—ये कर रहा है... लेकिन जब अधिकार मिलने में वो नीचे पद में जायेगा तो उस समय आप साथ देंगे? उस समय देखेंगे? उस समय नहीं देखेंगे। फिर अभी क्यों देखते हो।

अच्छा—सभी मुक्त बनेंगे ना? जो समझते हैं कि मुक्त होना मुश्किल है वो हाथ उठाओ। अगले बार जब चिटकी लिखने के लिए कहा था तो बापदादा के पास रिज़ल्ट आई, अभी तो वो चले गये लेकिन बापदादा उन बच्चों को मुबारक के साथ-साथ हिम्मत और देते हैं कि जैसे सोचा है, कोई ने लिखा है 6 मास चाहिये, किसी ने लिखा है 2 मास चाहिये, जितना भी लिखा है तो बाप की मत से अवश्य पूरा होगा। बाकी अच्छा है, सच तो बोला ना।

अच्छा, अभी एक मास में भी तो आधा मास चला गया। बाकी हैं थोड़े से दिन। तो मुक्त बनना ज़रूर। कम से कम पहले-दूसरे नम्बर के रॉयल फैमिली में तो आ जाओ। अच्छा।

इस कल्प में जो अभी पहली बार आये हैं वो हाथ उठाओ। जो भी आये हैं वो हिम्मत रखते हो कि हम तीव्र पुरुषार्थी बन डायमण्ड जुबली अपने जीवन और सेवा से मनायें, ऐसी हिम्मत अपने में समझते हो? जो समझते हैं कि हम बाप को करके ही दिखायेंगे, वो हाथ उठाओ। जो पहली बार नये आये हैं लेकिन समझते हैं कि डायमण्ड जुबली के अन्त तक कर लेंगे वो हाथ उठाओ। शर्म नहीं करो। हाथ उठाने में थोड़ा संकोच हो रहा है। लेकिन बापदादा उन्हीं को भी कहते हैं कि हिम्मत से क्या नहीं हो सकता! हिम्मत रखो। हिम्मत लेने के पात्र बनो तो थोड़े समय में भी आगे जा सकते हैं। इसलिए दिलशिकस्त नहीं बनो कि पता नहीं हो सकेगा या नहीं हो सकेगा।

अच्छा, अभी कौन से ज़ोन आये हैं? (बापदादा सभी ज़ोन से हाथ उठवा कर मिल रहे हैं)

बापदादा को खुशी है भले आये। डबल विदेशी जो इस बार आये हैं वो हाथ उठाओ। अच्छा।

युवाओं से

सब तरफ वाले युवा हाथ उठाओ। डायमण्ड जुबली में युवा क्या करेंगे? युवा में डबल शक्ति है। शारीरिक शक्ति भी है तो आत्मिक शक्ति भी है। तो डबल शक्ति से डायमण्ड जुबली में क्या विशेषता दिखायेंगे? रैली निकालना, फंक्शन करना ये तो करते ही रहते हो। कितने बारी किया है, बहुत बार किया है। अभी क्या करेंगे? हर एक युवा जो आजकल के अज्ञानी युवा एसोसिएशन्स हैं या ग्रुप हैं, जो और भी देश में नुकसान करते हैं, गवर्नमेन्ट को भी तंग करते हैं, ऐसे कोई एसोसिएशन तैयार करना, उनमें से जो ऐसे नुकसान करने वाले हैं उन्हीं को परिवर्तन करके दिखाओ। प्रैक्टिकल में हर एक युवा अपने-अपने सेवास्थान पर ऐसा परिवर्तन किया हुआ ग्रुप तैयार करो। जो भी ज़ोन आये हैं हरेक ज़ोन में कहाँ 100 हैं, कहाँ 50 सेवाकेन्द्र हैं, गीता पाठशालायें तो बहुत हैं लेकिन हर एक ज़ोन अपने एरिया में जहाँ-जहाँ सेवाकेन्द्र हैं, वहाँ से ऐसे परिवर्तन किया हुआ सेम्पुल तैयार करो। आप लोगों को मालूम है, जब डाकुओं का हुआ था तो एक डाकू परिवर्तित हुआ, एक एग्जाम्पल निकला और देखा गया कि एक डाकू कहाँ भी अपना अनुभव सुनाता था तो सभी को बहुत रुचि होती थी। तो आप लोग फिर ऐसे एसोसिएशन्स जहाँ संगठन होता है, वहाँ से जितने तैयार कर सको उतने निकालो। एग्जाम्पल तैयार करो। फिर सभी ज़ोन के जो निकलेंगे उनका विशेष सभी का मिल करके फंक्शन रखेंगे और उसमें गवर्नमेन्ट के डिपार्टमेन्ट को दिखायेंगे कि ये युवा क्या करते हैं और वो युवा क्या करते हैं। तो युवा तैयार हैं? नम्बर लेना है? हाँ या ना? कितना टाइम चाहिये? डायमण्ड जुबली के 6 मास चाहिए, 4 मास चाहिए, कितना टाइम चाहिए? महाराष्ट्र के युवा क्या करेंगे? जवाब दो। मुश्किल लगता है क्या? तो जो हाँ कहते हैं, करेंगे, वो हाथ उठाओ। अच्छा। यू.पी. वाले करेंगे? हाँ बोलो या ना बोलो। कितने टाइम में करेंगे? डायमण्ड जुबली के 6 मास चाहिए? 6 मास के बाद ऐसे नहीं कहना, तो कोई मानता नहीं, दुबारा मार्क्स दे दो। चाहे कोई ज्यादा एग्जाम्पल तैयार करे, चाहे कम करे, लेकिन ना शब्द नहीं आना चाहिए। तो इसमें पहला नम्बर कौन लेगा? टीचर्स समझती हैं हो जायेगा? होना ही है। गवर्नमेन्ट को प्रैक्टिकल मिसाल चाहिए। आप लोग कहते हो ना

कि हम सोशल वर्क बहुत करते हैं। तो वो मिसाल चाहती है। तो ऐसा ग्रुप तैयार करना और टीचर्स का काम है कराना। अच्छा।

कुमारियों से

सबसे ज्यादा कुमारियाँ कहाँ से आई हैं? कुमारियाँ तो हल्की हैं ना, उठकर खड़ी हो जाओ। अच्छा, जहाँ से भी आयी हो लेकिन कुमारियों के लिए गाय़ा हुआ है कि कुमारी वो जो अपने दो परिवार का कल्याण करे। तो आपको तो एक ही परिवार है। दूसरा तो है नहीं। तो कुमारियाँ अपने ग्रुप में से, जैसे युवा को कहा वैसे फीमेल्स की भी ऐसी एसोसिएशन्स हैं, और जहाँ-तहाँ हैं, तो जहाँ भी रहते हो वहाँ बिगड़ी हुई आत्माओं को परिवर्तन करके दिखाओ। आप भी ग्रुप बनाओ। तो डायमण्ड जुबली में गवर्नमेन्ट को दिखायें कि देखो मातायें भी बदल सकती और युवा भी बदल सकते हैं।

माताओं से

प्रवृत्ति वाली मातायें क्या करेंगी? बहुत ऐसी दुःखी आत्मायें हैं जो खराब संग के कारण फंस गई हैं। ऐसी एसोसिएशन्स में नियम प्रमाण जाना, ऐसे नहीं चले जाना जो इन्सल्ट करे और लौटकर आओ, कायदे प्रमाण जाना और टीचर्स देखें तो इसका बोल, चाल, चलन प्रभावशाली है, ऐसा ग्रुप माताओं का, चाहे कुमारियों का, चाहे यूथ का हो। अभी ये माला तैयार करो, तो आप माला में आ जायेंगे। बिगड़े हुए को सुधारो। मातायें कर सकती हैं? बिना छुट्टी के कोई नहीं करना। टीचर्स की छुट्टी से नियम प्रमाण 2-3 का ग्रुप बनाकर जाना। ऐसे नहीं कि सभी चल पड़ो। ऐसे नहीं करना। नियम प्रमाण चलना। समझा। तो मातायें और प्रवृत्ति वाले पाण्डव क्या करेंगे?

प्रवृत्ति वालों से

प्रवृत्ति वाले पाण्डव क्या करेंगे? पाण्डव, जो भी जिस डिपार्टमेन्ट में काम करते हो, हरेक का अपना-अपना क्षेत्र है, तो जहाँ भी लौकिक काम करते हो तो लौकिक कार्य करते हुए भी अलौकिक चाल-चलन से अपना प्रभाव डाल सकते हैं। तो पाण्डवों को कोई न कोई अपने जैसे दो-तीन को तैयार करना है

क्योंकि डायमण्ड जुबली में नम्बर बढ़ाना है। इसलिए पाण्डवों को इस कार्य में सहयोग देना है। समझा।

अच्छा, सभी को पाठ याद है? कौन सा पाठ? व्यर्थ बोल मुक्त... याद है? भूल तो नहीं गया? अच्छा।

चारों ओर के पूर्वज आत्माओं को, सदा इस निश्चय और नशे में रहने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के श्रीमत प्रमाण हर कर्म करने वाले कर्मयोगी आत्माओं को, सदा दृढ़ संकल्प से बाप के हर कदम पर कदम रखने वाले फालो फादर बच्चों को बहुत-बहुत याद-प्यार और नमस्ते। डबल विदेशियों को डबल नमस्ते।

कोई भी हद की इच्छाओं के पीछे भागना ऐसे ही है – जैसे मृगतृष्णा। अल्पकाल का कुछ नाम मिल जाये, कुछ शान मिल जाये, कभी हमारा भी नाम विशेष आत्माओं में आ जाये, हम भी बड़े भाई-बहनों में गिने जायें, आखिर हमको भी तो चान्स मिलना चाहिए – इस मांगने से सदा बचकर रहो। छोटा रहना कोई खराब बात नहीं है। छोटे शुभान अल्लाह हैं।

“सर्व प्राप्ति सम्पन्न जीवन की विशेषता है – अप्रसन्नता मुक्त और प्रसन्नता युक्त”

22.12.95

आ ज प्यार के सागर बापदादा अपने प्रेम स्वरूप आत्माओं को देख रहे हैं। हर एक के दिल में परमात्म प्यार समाया हुआ है। ये परमात्म प्यार प्राप्त भी एक ही जन्म में होता है। 83 जन्म देव आत्मायें वा साधारण आत्माओं द्वारा मिला। सोचो, याद करो, सारे कल्प का चक्कर लगाओ—स्वदर्शन चक्रधारी हो ना! तो एक सेकण्ड में सारे कल्प का चक्कर लगाया? 83 जन्मों में परमात्म-प्यार मिला था? नहीं मिला। सिर्फ इस संगम पर एक जन्म में परमात्म प्यार प्राप्त हुआ। तो अन्तर को जान लिया ना! आत्माओं का प्यार और परमात्म प्यार—कितना अन्तर है! साधारण आत्माओं का प्यार कहाँ ले गया? क्या प्राप्त कराया – अनुभव है ना? और परमात्म-प्यार कहाँ ले जाता? अपने स्वीट होम और स्वीट राजधानी में। आत्म-प्यार राज्य-भाग्य गँवाता है और परमात्म-प्यार राज्य-भाग्य दिलाता है, और इसी जन्म में। ऐसे नहीं कि सिर्फ भविष्य के आधार पर चल रहे हो। नहीं। डायरेक्ट परमात्म प्राप्ति तो अब है। वर्तमान के आगे भविष्य भी कुछ नहीं है। आप लोग गीत गाते हो ना कि स्वर्ग में क्या होगा और क्या नहीं होगा। और अभी का गीत क्या है? जो पाना था वो पा लिया.... वा पाना है? पा लिया। पाण्डवों ने पा लिया? गोपियों का तो गायन है ही। इस समय का गायन है कि अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खज़ाने में। देवताओं के खज़ाने में नहीं, ब्राह्मणों के खज़ाने में। तो अभी ब्राह्मण हो ना? तो अनुभव करते हो कि अप्राप्त नहीं कोई वस्तु? और ये प्राप्तियाँ अविनाशी हैं, अल्पकाल की नहीं हैं। तो जिसको सर्व प्राप्तियाँ हैं उसके जीवन में क्या विशेषता होगी? सब प्राप्तियाँ हैं, एक भी कम नहीं है तो उसकी चलन और चेहरे में क्या विशेषता दिखाई देगी? सदा प्रसन्नता। कुछ भी हो जाये लेकिन सर्व प्राप्तिवान अपनी प्रसन्नता छोड़ नहीं सकता। अप्रसन्नता कभी भी होती है तो चेक करो कि अप्राप्ति का अनुभव होता है या सर्व प्राप्ति का?

आज बापदादा ने बहुत ही, सेवाकेन्द्र और उप-सेवाकेन्द्र देखे, विदेश में नहीं, देश में सेवाकेन्द्र देखे। सेवाकेन्द्र में विशेष तो सेवाधारी हैं, तो आज चक्कर लगाते हुए सेवाधारी और सेवास्थान, दोनों देखे। हर एक स्थान में, चाहे छोटे, चाहे बड़े, सभी में चेक किया कि सेवाधारी तन से, मन से, धन से और सेवा के सम्बन्ध-सम्पर्क से कितने प्रसन्न हैं? क्योंकि विशेष तो यही बातें हैं ना! तो क्या देखा?

तन तो सबके पुराने हैं ही, चाहे जवान हैं, चाहे बड़े हैं, छोटे और ही बड़ों से भी कहाँ-कहाँ कमज़ोर हैं, चाहे बीमारी बड़ी है लेकिन बीमारी की महसूसता कि मैं कमज़ोर हूँ, मैं बीमार हूँ – ये बीमारी को बढ़ा देती है। क्योंकि तन का प्रभाव मन पर आ गया तो डबल बीमार हो गये। तन और मन दोनों से डबल बीमार होने के कारण बार-बार सोल कान्सेस के बजाय बीमारी कान्सेस हो जाते हैं। तो क्या देखा? कि तन से तो मैजारिटी, बीमार कहो या हिसाब-किताब चुक्तु करना कहो, कर रहे हैं, लेकिन 50 परसेन्ट डबल बीमार और 50 परसेन्ट सिंगल बीमार हैं। बाकी होना क्या चाहिए? कभी भी मन में बीमारी का संकल्प नहीं लाना चाहिये—मैं बीमार हूँ, मैं बीमार हूँ..... लेकिन होता क्या है? ये पाठ पक्का हो जाता है कि मैं बीमार हूँ.... कभी-कभी किसी समय बीमार होते नहीं हैं लेकिन मन में खुशी नहीं है तो बहाना करेंगे कि मेरे कमर में दर्द है। क्योंकि मैजारिटी को या तो टांग दर्द, या कमर का दर्द होता है, कई बार दर्द होता नहीं है फिर भी कहेंगे मेरे को कमर में दर्द है। अभी उसकी चेकिंग कैसे हो? डॉक्टर्स के पास इसका कोई थर्मामीटर है, जो कमर दर्द है या नहीं वो चेक कर सके? एक्सरे कराओ, ये कराओ, वो तो और ही खर्चा लगाओ। तो क्या देखा, तन के बारे में सुनाया। कई सेवाधारी ऐसे दिखाई दिये। सेवाधारी आप सभी हो। ऐसे नहीं समझना सिर्फ टीचर्स की बात है। सेवाधारी आप प्रवृत्ति वाले भी हो ना? कि जो सेन्टर्स पर रहते हैं वो सेवाधारी हैं? आप लोग प्रवृत्ति में रहने वाले भी सेवाधारी हो। कभी आपके घरों का भी चक्कर लगायेंगे। देखेंगे कि कैसे सोते हो, कैसे उठते हो? डबल बेड है, सिंगल बेड है? अच्छा ये तो आज के चक्कर की बात है।

आजकल के हिसाब से दवाइयाँ खाना ये बड़ी बात नहीं समझो। क्योंकि

कलियुग का वर्तमान समय सबसे शक्तिशाली फ्रूट ये दवाइयाँ हैं। देखो कोई रंग-बिरंगी तो हैं ना। कलियुग के लास्ट का यही एक फ्रूट है तो खा लो प्यार से। दवाई खाना ये बीमारी याद नहीं दिलाता। अगर दवाई को मज़बूरी से खाते हो तो मज़बूरी की दवाई बीमारी याद दिलाती है और शरीर को चलाने के लिये एक शक्ति भर रहे हैं, उस स्मृति में खायेंगे तो दवाई बीमारी याद नहीं दिलायेगी, खुशी दिलायेगी तो बस दो-तीन दिन में दवाई से ठीक हो जायेंगे। आजकल के तो बहुत नये पैशन हैं, कलियुग में सबसे ज्यादा इन्वेन्शन आजकल दवाइयाँ या अलग-अलग थेरापी निकाली है, आज फलानी थेरापी है, आज फलानी, तो ये कलियुग के सीजन का शक्तिशाली फल है। इसलिए घबराओ नहीं। लेकिन दवाई कांसेस, बीमारी कांसेस होकर नहीं खाओ। तो तन की बीमारी होनी ही है, नई बात नहीं है। इसलिए बीमारी से कभी घबराना नहीं। बीमारी आई और उसको फ्रूट थोड़ा खिला दो और विदाई दे दो। अच्छा ये हुआ तन की रिज़ल्ट। फिर और क्या देखा?

मन, मन में क्या देखा? एक बात खुशखबरी की ये देखी कि मैजारिटी हर एक सेवाधारी के मन में बाप का प्यार और सेवा का उमंग दोनों हैं। बाकी 25 परसेन्ट कोई मज़बूरी से चल रहा है, वो छोड़ो। लेकिन मैजारिटी के मन में ये दोनों बातें देखी। और ये भी देखा कि बाप से प्यार होने के कारण याद में भी शक्तिशाली हो बैठने का, चलने का, सेवा करने का अटेन्शन बहुत देते हैं लेकिन खेल क्या होता है कि चाहते हैं कि याद की सीट पर अच्छी तरह से सेट होकर बैठ जायें लेकिन थोड़ा टाइम तो सेट होते हैं फिर हिलना-डुलना शुरू होता है। जैसे बच्चा होता है, उसको ज्यादा टाइम सीट पर बिठाओ तो हिलेगा ज़रूर। तो मन भी अगर कन्ट्रोल में, ऑर्डर में नहीं है तो थोड़ा टाइम तो बहुत अच्छे बैठते हैं, चलते हैं, सेवा भी करते हैं लेकिन कभी सेट होते हैं, कभी अपसेट भी हो जाते हैं। कारण क्या है? होना सेट चाहते हैं लेकिन अपसेट क्यों होते हैं? कारण क्या है? एकाग्रता की शक्ति, दृढ़ता की शक्ति, उसकी कमी है। प्लैन बहुत अच्छा सोचते हैं, ऐसे बैठेंगे, ये अनुभव करेंगे फिर ये सेवा करेंगे, फिर ऐसे चलेंगे, लेकिन कर्म करने में या बैठे-बैठे भी दृढ़ता की शक्ति कम हो जाती है। और बातों में मन-बुद्धि बट जाते हैं। चाहे काम में

बिज़ी नहीं है लेकिन व्यर्थ संकल्प ये सबसे बड़ा काम है जो अपने तरफ खींच लेता है। तो स्थूल काम नहीं भी हो लेकिन दृढ़ता की शक्ति बंटने के कारण मन और बुद्धि सीट पर सेट होने के बजाए हलचल में आ जाते हैं।

बापदादा ने आप सबको जो काम दिया था वो देखा। बापदादा के पास सब चिटकियाँ पहुँची। लेकिन कई बच्चे बड़े चालाक हैं। चालाकी क्या करते हैं? चिटकी लिखते हैं लेकिन नाम नहीं लिखते। ऐसे समझकर करते हैं बाबा तो जानता है। जानता है, फिर भी अगर काम दिया है तो काम तो पूरा करो ना। टीचर अगर कहे ये लिखकर आओ और टीचर को कहो कि आप तो जानते हो ना – मुझे ये लिखना आता है, तो टीचर मानेगा? तो कई तो नाम ही नहीं लिखते। लेकिन जो भी जिस ग्रुप में काम दिया है, मैजारिटी सबकी ये खुशी की बात देखी, कि सबने लिखा है कि हम डायमण्ड जुबली तक करके दिखायेंगे। ये मैजारिटी का है। आप सबका भी है? जीवनमुक्त हो जायेंगे? अगर सभी बातों से मुक्त हो गये तो क्या हो जायेंगे? जीवनमुक्त हो जायेंगे ना। तो सभी ने अपनी हिम्मत, उमंग अच्छा दिखाया है, चाहे फॉरेन वालों ने, चाहे भारत वालों ने, उमंग-उत्साह सभी का अच्छा है। कोई-कोई ने, बहुत थोड़ों ने लिखा है, कि हमको टाइम लगेगा। लगने दो उन्हीं को। आप लोग तो जीवनमुक्त हो जाओ। तो रिज़ल्ट में देखा कि सभी को उमंग है कि डायमण्ड जुबली में कुछ करके दिखायें। लेकिन बापदादा ने देखा कि जितना अपने आपको डायमण्ड बनाने का उमंग-उत्साह है, उतना ही डायमण्ड जुबली वर्ष में सेवाओं के प्लैन भी बहुत फास्ट बनाये हैं। फास्ट बनाये हैं इसमें बापदादा खुश है लेकिन ऐसा नहीं कहना कि बहुत सेवा का बोझ था ना इसीलिए थोड़ा नीचे-ऊपर हो गया। ये बापदादा नहीं चाहते। सेवा जो स्वयं को वा दूसरे को डिस्टर्ब करे वो सेवा नहीं है, स्वार्थ है। और निमित्त कोई न कोई स्वार्थ ही होता है इसलिए नीचे-ऊपर होते हैं। चाहे अपना, चाहे दूसरे का स्वार्थ जब पूरा नहीं होता है तब सेवा में डिस्टर्बेन्स होती है। इसलिए स्वार्थ से न्यारे और सर्व के सम्बन्ध में प्यारे बनकर सेवा करो, तब जो संकल्प किया है वा लक्ष्य रखा है कि डायमण्ड जुबली में डायमण्ड बन डायमण्ड जुबली मनायेंगे, वह पूरा हो सकेगा। आधा नहीं याद करना। कई ऐसे जवाब देते हैं, कहते हैं डायमण्ड

जुबली तो मनाने की थी तो मनाया, उसमें बिज़ी हो गये। लेकिन बापदादा के दोनों शब्द याद रखना। आधा नहीं। डायमण्ड बन, डायमण्ड जुबली मनानी है। सिर्फ मनानी है नहीं, बनकर मनानी है। तो मतलब का अर्थ नहीं लेना – मना लिया ना। लेकिन बनकर मनाया? बनकरके मनाना – ये है डायमण्ड जुबली का लक्ष्य। तो आधा लक्ष्य नहीं पूरा करना। डबल है – बनना और मनाना। सिर्फ बनना नहीं, सिर्फ मनाना नहीं। दोनों साथ-साथ हो। और आप सबको मालूम है कि जब आप डायमण्ड जुबली के वा डायमण्ड बनने के प्लैन बना रहे हो तो आप सबसे पहले माया भी अपना प्लैन बना रही है। इसलिए ये नहीं कहना – क्या करें बाबा, हिम्मत कम हो गई, माया बहुत तेज है, माया को अपने पास रखो। राज्य आप करेंगे और माया को बाबा सम्भालेंगे! राज्य तो आपको करना है ना। मायाजीत जगतजीत बनता है, तो माया को जीतने के बिना जगतजीत कैसे बनेंगे? इसीलिये चारों ओर अटेन्शन प्लीज़। समझा? अच्छा।

चक्कर का आधा सुनाया, आधा फिर सुनायेंगे। सेन्टर कोई-कोई तो बहुत अच्छे सजे-सजाये और कोई सिम्पल तो कोई बहुत रॉयल, कोई बीच के भी थे। ज्यादा हैं जो समझते हैं कि रॉयल लगे, कोई वी.आई.पी. आवे तो उसको लगे कि सेन्टर अच्छा है, लेकिन अपना (ब्राह्मणों का) आदि से अब तक का नियम है कि न बिल्कुल सादा हो, न बहुत रॉयल हो। बीच का होना चाहिये। ब्रह्मा ने तो बहुत साधारण देखा और रहा। लेकिन अभी साधन हैं, साधन देने वाले भी हैं फिर भी कोई भी कार्य करो तो बीच का करो। ऐसा भी कोई न कहे कि यह क्या लगा दिया है - पता नहीं, और न कोई कहे कि ये तो अभी राजाई ठाठ हो गया है। तो आज का पाठ क्या है? मुक्त तो सबसे हो गये ना! सबसे मुक्त होने की प्रतिज्ञा हो गई है ना! पक्की है या घर जायेंगे तो कहेंगे कि मुश्किल है! पक्का रहना। माया को डायमण्ड जुबली में मज़ा चखाकर दिखाओ। मास्टर सर्वशक्तिमान् हो, कम तो नहीं हो!

अच्छा, डबल फॉरेनर्स भी बहुत आये हैं। स्थापना के कार्य की डबल शोभा-डबल विदेशी हैं। बापदादा जानते हैं कि कितने मेहनत से, युक्ति से यहाँ पहुँचते हैं। अगर लगन कम हो तो पहुँचना भी मुश्किल लगे। एक तरफ बापदादा सुनते हैं कि मनी डाउन हो गई है और दूसरे साल देखते हैं तो और

भी विदेशी ज्यादा आ गये हैं। तो ये हिम्मत है। रशिया का गुप भी आया है ना! रशिया वालों ने टिकेट कहाँ से लाई? इन्हीं की कहानियाँ बहुत अच्छी सुनने वाली हैं। टिकेट कैसे इकट्ठी करते हैं, उसकी कहानी बहुत अच्छी है। ये तो सब होना ही है। जब है ही कागज़, पेपर ही तो है, चाहे डालर कहो, चाहे पौण्ड कहो, है तो पेपर ही, तो पेपर कहाँ तक चलेगा! सोने का मूल्य है, हीरे का मूल्य है, पेपर का क्या है? मनी डाउन तो होनी ही है। और आपकी मनी सबसे ज्यादा मूल्यवान है। जैसे शुरू में अखबार में डलवाया था ना कि ओम् मण्डली रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड। कमाई का साधन कुछ नहीं था। ब्रह्मा बाप के साथ एक-दो समर्पण हुए और अखबार में डाला रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड। तो अभी भी जब चारों ओर ये स्थूल हलचल होगी फिर आपको अखबार में नहीं डालना पड़ेगा। आपके पास अखबार वाले आयेंगे और खुद ही डालेंगे, टी.वी. में दिखायेंगे कि ब्रह्माकुमारीज़ रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड। क्योंकि आपके चेहरे चमकते रहेंगे, कुछ भी हो जाये। दिन में खाने की रोटी भी नहीं मिले तो भी आपके चेहरे चमकते रहेंगे। तो चारों ओर होगा दुःख और आप खुशी में नाचते रहेंगे। इसी को ही कहते हैं मिरुआ मौत मलू का शिकार। इसलिए बापदादा ने आज कहा कि ब्राह्मण जो सच्चे हैं, ब्राह्मण जीवन में श्रेष्ठ जीवन के लक्ष्य वाले हैं उसकी विशेषता है प्रसन्नता। चाहे कोई गाली भी दे रहे हो तो भी आपके चेहरे पर दुःख की लहर नहीं आनी चाहिये। प्रसन्नचित्त। गाली देने वाला भी थक जायेगा..., हो सकता है? यह नहीं कि उसने एक घण्टा बोला, मैंने सिर्फ एक सेकण्ड बोला। सेकण्ड भी बोला या सोचा, शकल पर अप्रसन्नता आई तो फेल हो गये। इतना सहन किया ना, एक घण्टा सहन किया, फिर गुब्बारे से गैस निकल गई। तो गैस वाले गुब्बारे नहीं बनना। और चाहिये ही क्या? बाप मिला, सब कुछ मिला – गीत तो यही गाते हो ना। तो ऐसे टाइम पर ऐसी-ऐसी बातें याद करो तो चेहरा नहीं बदलेगा। ऐसे नहीं उसके आगे जोर-जोर से हंसने लग जाओ, तो वो और ही गर्म हो जाये। प्रसन्नता अर्थात् आत्मिक मुस्कराहट। बाहर की नहीं, आत्मिक। तो आज का पाठ क्या रहा? सदा अप्रसन्नता मुक्त और प्रसन्नता युक्त, डबल – समझा? अच्छा।

पंजाब

पंजाब ने कोई शेर मधुबन तक लाया है? चीता लाये हैं या शेर लाये हैं? कि अभी शेर को अच्छी तरह से सजाते हो! छोटे-छोटे तो आये हैं। फिर भी पंजाब की सेवा में फर्क तो है। तो वो भी हो जायेगा।

इन्दौर

इन्दौर क्या तैयार कर रहे हैं? क्या नया प्लैन बनाया है जो मधुबन तक बड़े ते बड़े पहुँचे? डायमण्ड जुबली में लास्ट में एक ऐसा प्रोग्राम करो जो सब तरफ के विशेष वी.आई.पी. पहुँचे। आई.पी. नहीं, वी.आई.पी.। चाहे विदेश, चाहे देश – दोनों तरफ से वी.आई.पी. ग्रुप पहुँचे। चाहे थोड़ी संख्या हो लेकिन हो सारा ग्रुप वी.आई.पी. का। ऐसे नहीं बापदादा कहते हैं कि हज़ारों ले आओ, वो तो हो नहीं सकता। थोड़े लाओ लेकिन क्वालिटी लाओ जो एक-एक स्वयं सेवा करे। तैयार कर रहे हो ना? सेवा तो वृद्धि को प्राप्त हो रही है और होती रहेगी। होनी ही है। सिर्फ आप डायमण्ड बन जाओ तो चारों ओर आपकी चमक खींच करके लायेगी।

आसाम, गोहाटी

गोहाटी वाले क्या विशेषता कर रहे हैं? नया प्लैन क्या बनाया है? गोहाटी का कोई मिनिस्टर आया है? (नहीं) तो लाओ ना। गोहाटी का मिनिस्टर रह जावे तो उलहना मिलेगा।

बम्बई

बाम्बे वाले क्या कर रहे हैं? क्या नया प्लैन बनाया है? देखो भाषण किया, मिनिस्टर आया, प्रेज़ीडेन्ट आया, वो तो आये और गये लेकिन ऐसा समीप लाओ जैसे मॉरीशियस वालों ने समीप लाकर खुद अपनी हिम्मत से प्रोग्राम बनाया और इण्डिया गवर्नमेन्ट ने पूरी मदद दी। ये पहला हिम्मत वाला है। नहीं तो विदेश वाले कहते हैं आना तो चाहते हैं, आप लोग करो। वो नहीं होना है लेकिन जैसे उसने हिम्मत रखा, अपना प्रोग्राम दिया, ऐसे विदेश से अपना प्रोग्राम बनाकर यहाँ के मिनिस्ट्री की आँख खोले कि दूर-दूर से आते हैं और हम यहीं रहे हुए हैं। तो मॉरीशियस को, चाहे छोटा है मॉरीशियस लेकिन हिम्मत में छोटे ने ही तो कमाल

की। मॉरीशियस को इस सेवा की मुबारक हो। अच्छा है, देखो ये किसी को भी दृष्टान्त तो दे सकते हो ना! एकजाम्पल दे सकते हो कि जैसे ये आया वैसे बड़े को तो और ही ज्यादा मदद मिलेगी। तो मॉरीशियस ने आई.पी. के आने का दरवाजा खोला – ये अच्छा किया।

अच्छा, बाम्बे वाले क्या करेंगे? (पीस पार्क बनायेंगे) पीस पार्क बनायेंगे, वो भी अच्छा है। कोई कमाल करके दिखाओ। पीस पार्क बनाना ये भी अच्छी हिम्मत रखी। लेकिन डायमण्ड जुबली में कोई नवीनता करो। सेवा करके कोई शेर को ले आओ..... बॉम्बे के शेर हैं बड़े-बड़े नामीग्रामी इण्डस्ट्रियलिस्ट। ऐसे कोई लाओ जो एक अनेकों को जगाये और सेवा में निमित्त बने। तो बाम्बे वाले ऐसे नामीग्रामी को लाना। ऐसा लाओ जो आगे भी सम्पर्क में आये और लाये। जैसे हैदराबाद में राजू का छोटा मिसाल देखा ना, था तो बहुत छोटा लेकिन आया भी और लाया भी। ऐसा कोई लाओ। नाम तो बाला करके गया ना।

अच्छा, इसी की ट्रेनिंग हो रही है। (ज्ञान सरोवर में सेल्फ मैनेजमेंट लीडरशिप ट्रेनिंग का कार्यक्रम चल रहा है) देखेंगे, ट्रेनिंग तो की, ट्रेनिंग का फल बापदादा के आगे कौन सा लाते हो? ट्रेनिंग कराने वाले डायमण्ड जुबली में बापदादा के आगे फल लाओ। समझा? सेवा बहुत अच्छी है लेकिन अब सम्बन्ध-सम्पर्क में लाओ, ज्ञान-योग में लाओ। सिर्फ अच्छा है, अच्छा है – यहाँ तक ये फल नहीं हो। ये तो छोटा सा एक अंगूर है। बड़ा फल लाओ। कहाँ भी जायेंगे, किसको फल देंगे तो क्या एक अंगूर ले जायेंगे? अगर गिफ्ट देंगे तो कुछ बड़ा फल लायेंगे ना। अच्छा है, कर रहे हो लेकिन इसी लक्ष्य से करो कि डायमण्ड बन और डायमण्ड जुबली में नवीनता करके दिखायेंगे। इसको कहा जाता है ट्रेनिंग की सफलता। चांस तो अच्छा मिला है। अभी देखेंगे कितने फ्रुट थाली भरकर आते हैं या एक फ्रुट आता है या एक अंगूर आता है? अच्छा।

केरला, कर्नाटक

केरला क्या करेगा? केरला की विशेषता क्या होती है? (पढ़े-लिखे बहुत होते हैं) तो इस पढ़ाई में नहीं? सेन्टर तो होने ही हैं। कृष्णा अय्यर जैसा, वो केरला ने नहीं निकाला वो दिल्ली ने निकाला। ऐसा कोई तैयार करो। ऐसे ही चार-पांच का ग्रुप तैयार करो। अच्छा, केरला में नारियल के पेड़ बहुत होते हैं ना! तो आई.पी.का

पेड़ पूरा ले आओ। कृष्णा अय्यर छोटा माइक तो है ही, आदि से अन्त तक सेवा में सहयोगी है और रहेगा। अच्छा है। जैसे कृष्णा अय्यर है, मद्रास का गवर्नर है ऐसे निकालो। और ऐसों का संगठन करो फिर देखो आप आराम से बैठे रहेंगे और वो आवाज़ फैलाते रहेंगे। जैसे आजकल की जो नई-नई टीचर्स आती हैं ना वो देखती हैं कि पुरानी दादियाँ तो बड़े आराम से रहती हैं और हम लोगों को भाग-दौड़ कराती हैं। तो आप लोगों को तैयार किया ना तो वो आराम से बैठी हैं। तो आप भी ऐसे तैयार करो जो आप आराम से बैठो। अच्छा।

आन्ध्र प्रदेश

आन्ध्र प्रदेश से एक राजू तो निकला लेकिन वो जल्दी चला गया। अभी आन्ध्र प्रदेश को और ग्रुप तैयार करना चाहिये। क्योंकि आन्ध्र प्रदेश में आई.पी. बहुत हैं। चाहे कहाँ भी मिनिस्टर बन जाते हैं लेकिन फिर भी अपने देश को वैल्यु देते हैं। आन्ध्र प्रदेश का कोई मिलेगा ना तो उसको रिगार्ड से मिलते हैं। देश का नशा होता है ना। तो आन्ध्रा को भी ग्रुप तैयार करना चाहिये। सेन्टर बढ़ रहे हैं, गीता पाठशालायें बढ़ रहीं हैं, ये तो होना ही है, ये अभी बड़ी बात नहीं है। कोई नवीनता करो। बढ़ाओ, और भी गीता पाठशालायें, सेन्टर बढ़ाओ, लेकिन साथ-साथ माइक भी तैयार करो जो प्रत्यक्षता करें। अच्छा।

बेलगाम

बेलगाम क्या कर रहा है? कितने आई.पी. तैयार किये हैं? कम से कम एक कंगन तो तैयार करो। माला छोड़ो। अच्छा।

डबल विदेशी

(यू.के., जर्मनी, सभी से हाथ उठवा कर बापदादा मिल रहे हैं।) प्रैंकफर्ट ने अपना वायदा तो पूरा कर लिया। बापदादा प्रैंकफर्ट वालों की हिम्मत पर खुश है और सुदेश बच्ची भी सेवा मन से कर रही है इसीलिए उसको भी मुबारक। सेवा साधारण करना ये कोई बड़ी बात नहीं है, बिगड़ी को बनाना, अनेकता में एकता लाना ये है बड़ी बात। तो जर्मनी वालों प्रति आप सभी भी मुबारक की ताली बजाओ। (स्पेन, .. फ्रांस, हालैण्ड) हॉलैण्ड भी अच्छा चल रहा है। (साउथ आफ्रिका,

मलेशिया, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड) अच्छा, ऑस्ट्रेलिया वाले खुश हैं, सन्तुष्ट हैं? यस या नो बोलो। (यस)

देखो कहाँ से भी आये हो लेकिन डबल विदेशी सदा अपने मस्तक पर विजय का तिलक (विक्ट्री का) लगा हुआ देखो। क्योंकि आप लोग बाप के और सर्व ब्राह्मणों के प्यारे हो। तो हम विजयी हैं, विजयी थे और विजयी रहेंगे। ये विजय का तिलक सदा अपने मस्तक में देखो। बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो जो कोने-कोने से बापदादा ने आप सबको निकाला है। प्यार से ढूँढ़ कर आपको अपना बनाया है। देखो कितने कोने-कोने में हो लेकिन बाप ने तो पहचान लिया ना! इसलिए सदा विजयी हैं – ये नशा प्रैक्टिकल में अनुभव करो। सिर्फ मुख से नहीं कहना, मुख से कहो विजय और हार खा रहे हो, ऐसे नहीं। हार हो ही नहीं सकती, हैं ही विजयी। तो विजयी का नशा डबल विदेशियों को सहज और सदा रहे। समझा?

भारत वालों से

आप सभी ने देखा, आपका परिवार कितना बड़ा है! पंजाब वालों ने देखा... बाम्बे वालों ने देखा.... सभी भारत वालों को ये खुशी होती है कि हमारा बाबा का स्थान कोने-कोने में है। जहाँ जाओ वहाँ फलक से कह सकते हो कि हमारा घर यहाँ भी है, यहाँ भी है। जहाँ जाओ अपना घर है। तो भारत वालों को डबल विदेशियों को देखकर खुशी होती है? अच्छा!

चारों ओर के बापदादा के प्रेम स्वरूप आत्माओं को, सदा स्वयं को अग्रसन्नता से मुक्त करने वाले तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा सेवा की सफलता पाने वाले भाग्यवान आत्माओं को, सदा बाप को प्रत्यक्ष करने के उमंग-उत्साह में रहने वाले देश-विदेश दोनों के सर्व बच्चों को, बाप को अपनी खुशखबरी लिखने वाले, अपनी सेवा का उमंग रखने वाले ऐसे बाप के सदा स्नेही और समीप बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

(विदेश के 4 भाई फिल्म निकाल रहे हैं)

अच्छा, ये गुप भी सेवा के लिए आये हैं। सभी सेवा से खुश हैं? हिम्मत है ना! क्या होगा, कैसे होगा, ये नहीं सोचो। अच्छा है, अच्छा होना ही है। जो श्रेष्ठ स्मृति से कार्य करते हो वो सदा ही अच्छा है। तो ये कभी नहीं सोचो पता नहीं क्या होगा, पता है अच्छा होगा। समझा? अच्छा है हिम्मत बहुत अच्छी रखी। जहाँ हिम्मत है

वहाँ मदद है। अच्छा।

दादियों से

जब आप और ये (दादी और दादी जानकी) मिलते हो तो आपको क्या लगता है? (दादियों ने कहा—बाबा आपको क्या लगता है?) बाप को तो अच्छा लगता है। आपको क्या लगता है? (बाबा ने अच्छी जोड़ी तैयार की है, देश-विदेश अलग होते भी साथ हैं) ये भी ड्रामा में पार्ट है। फिर भी ब्राह्मण परिवार के फाउण्डेशन हो ना। तो आप लोगों को भी अच्छा लगता है ना। बापदादा अपने निमित्त फाउण्डेशन वाली आत्माओं को अपने से भी आगे रखता है। क्योंकि अभी देखो बाप तो है ही निराकार, ब्रह्मा बाप भी आकारी हो गया, अभी साकार में सुनना पड़े, सुनाना पड़े, देखना पड़े, देना पड़े – इसके लिए निमित्त तो ये लोग हैं ना। और सहज चल रहे हैं ये देख आप सभी भी खुश होते हो ना? देखो आप द्वारा (दादी जानकी) ये विदेश सेवा नूँधी हुई थी तो ड्रामा को कोई बदल नहीं सकता। आपको जाना पड़ा और निमित्त बनना पड़ा। विदेश के लिए जरूरी है ना? (बाबा की सकाश है) बापदादा तो अलग हो ही नहीं सकता, ऐसा चिपका हुआ है। क्योंकि आप लोगों को सारा दिन यही कहना पड़ता कि बाबा यह करते, बाबा यह कहते.... बाबा-बाबा ही निकलता रहता है ना। याद कराने के लिए भी कहना पड़ता कि शिवबाबा याद है? कोई रो करके आये और आप बाबा-बाबा कहकर उसको हँसा देते हो। ठीक है? देखो बहुत छोटा सा गुप है लेकिन बहुत काम का है। कितने थोड़े गिनती के हैं।

अभी डायमण्ड जुबली तो है ही। लेकिन इस बारी बापदादा नम्बर देंगे कि रीयल में डायमण्ड कितने बनें? देखेंगे विदेश जीतता है या देश? और इसमें भी युवा ज्यादा नम्बर लेते हैं, प्रवृत्ति वाले लेते हैं वा युवा कुमारियाँ लेती हैं? बापदादा को तो खुशी है जो भी नम्बर लेवे। लेकिन इसमें साथियों का भी सर्टीफिकेट चाहिए। ऐसे नहीं अपने आप सिर्फ कहो मैं तो ठीक हूँ। नहीं, सर्टीफिकेट चाहिये। देखेंगे कितने निकलते हैं? वृद्धि तो होनी ही है। अच्छा। ओम् शान्ति।



“डायमण्ड वर्ष में फ़रिश्ता बनकर बापदादा की छत्रछाया और प्यार की अनुभूति करो”

31.12.95

आ ज विश्व को सच्चे डायमण्ड समान चमकाने वाले, प्रवृत्ति को भी डायमण्ड समान चमकाने वाले, विश्व की आत्माओं में से अपने डायरेक्ट बच्चों को डायमण्ड बनाने वाले, साथ-साथ नये वर्ष के साथ नव-युग, नये-विश्व स्थापन करने वाले बाप डायमण्ड बनने वाले बच्चों को देख रहे हैं। साकार स्वरूप में भी बापदादा के सामने कितने डायमण्ड चमक रहे हैं और विश्व के कोने-कोने में चारों ओर चमकते हुए डायमण्ड देख रहे हैं। आत्मा सभी वेक मस्तक में चमकती हुई डायमण्ड कितनी अच्छी लगती है! सामने से चमकती हुई आत्मा डायमण्ड और इतने संगठित रूप में चारों ओर डायमण्ड ही डायमण्ड देखने में दृश्य कितना प्यारा लगता है! तो ये संगठन किसका है? डायमण्ड्स का है ना? चाहे नम्बरवार हैं फिर भी चमक रहे हैं। चमकते हुए डायमण्ड की सभा बाप के सामने है। आप भी क्या देख रहे हो? डायमण्ड देख रहे हो ना कि शरीर देख रहे हो? 63 जन्म शरीर को ही देखा लेकिन अभी शरीर में चमकता हुआ डायमण्ड दिखाई देता है? कि छिपा हुआ है इसलिए कभी दिखाई देता है, कभी छिप जाता है?

डायमण्ड जुबली है, तो जुबली में क्या होता है? क्या सजाते हैं? आजकल वेरायटी लाइट्स की सजावट ज्यादा होती है। आप लोग भी वृक्ष में यहाँ-वहाँ लाइट लगाते हो ना? वो तो एक दिन के लिए जुबली मनायेंगे या क्रिसमस मनायेंगे या कोई भी उत्सव मनायेंगे लेकिन आप क्या मना रहे हो? डायमण्ड दिवस कहते हो या डायमण्ड वर्ष कहते हो? (डायमण्ड वर्ष) डायमण्ड वर्ष मना रहे हो – पक्का? अगर यही सभी का दृढ़ संकल्प है कि डायमण्ड वर्ष मना रहे हैं, तो आपके मुख में गुलाब-जामुन हो। तो मनाना अर्थात् बनना। तो सारा वर्ष डायमण्ड बनेंगे कि थोड़ा-थोड़ा दाग लगेगा? बापदादा तो बच्चों का उमंग-उत्साह देख पद्मगुणा डबल मुबारक देते हैं।

आज डबल है ना, एक नया वर्ष और दूसरा डायमण्ड जुबली – दोनों का संगठन है। तो डायमण्ड वर्ष में बापदादा यही विशेषता देखना चाहते हैं कि हर बच्चे को जब देखो, जिसे देखो तो चमकता हुआ डायमण्ड ही दिखाई दे। मिट्टी के अन्दर वाला डायमण्ड नहीं, चमकता हुआ डायमण्ड। तो सारे वर्ष के लिए ऐसे डायमण्ड बन गये? क्योंकि संकल्प तो आज करना है ना कि डायमण्ड बनेंगे भी और देखेंगे भी। चाहे वो दूसरी आत्मा काला कोयला भी हो, एकदम तमोगुणी आत्मा हो लेकिन आप क्या देखेंगे? कोयला देखेंगे या डायमण्ड? डायमण्ड देखेंगे, अच्छा। तो आपकी दृष्टि पड़ने से उसका भी कालापन कम होता जायेगा। डायमण्ड जुबली में यही सेवा करनी है ना? अमृतवेले से लेकर रात तक जितनों के भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ तो डायमण्ड बन डायमण्ड देखना है। ये पक्का किया है या डायमण्ड जुबली मनाना है तो हर स्थान पर सिर्फ दो तीन फंक्शन किया और डायमण्ड जुबली हो गई? फंक्शन करो, निमन्त्रण दो, जगाओ, ये तो करना ही है और कर भी रहे हैं लेकिन सिर्फ फंक्शन नहीं करने हैं, इस डायमण्ड जुबली में डायमण्ड बन डायमण्ड देखना, डायमण्ड बनाना, ये रोज का फंक्शन है। तो रोज फंक्शन करेंगे या दो-चार दिन, सप्ताह करेंगे?

इस वर्ष में बापदादा की विशेष यही सभी बच्चों के प्रति शुभ आशा कहो वा श्रेष्ठ श्रीमत कहो कि डायमण्ड के बिना और कुछ नहीं बनना है। कुछ भी हो जाये डायमण्ड में दाग नहीं लगाना। अगर किसी भी विघ्न वश हो गये या स्वभाव के वश हो गये तो दाग लग गया। विघ्न तो आने चाहिए ना? विघ्न विनाशक टाइटल है तो विघ्न आयेंगे तब तो विनाश होंगे? अगर कोई विजयी कहे कि दुश्मन नहीं आवे लेकिन मैं विजयी हूँ तो कोई मानेगा? नहीं। तो विघ्न तो आयेंगे, चाहे प्रवृत्ति के, चाहे आत्माओं के, चाहे अनेक प्रकार की परिस्थितियों के विघ्न आये लेकिन आप डायमण्ड ऐसे पावरफुल हो जो दाग का प्रभाव नहीं पड़े। ये हो सकता है?

यह डायमण्ड जुबली वर्ष महान् वर्ष है। जैसे कोई विशेष मास मनाते हैं ना तो ये डायमण्ड जुबली वर्ष महान् वर्ष है। बापदादा इस वर्ष में सभी को चलता-फिरता फरिश्ता देखना चाहते हैं। कई कहते हैं कि आत्मा को देखने की

कोशिश तो करते हैं लेकिन आत्मा बहुत छोटी बिन्दी है ना तो शरीर दिखाई दे देता है। तो बापदादा कहते हैं चलो बिन्दी खिसक जाती है लेकिन फरिश्ता रूप तो लम्बा-चौड़ा शरीर है, वो तो बिन्दी नहीं है ना, फरिश्ता माना लाइट का आकार। तो फरिश्ते स्वरूप में स्थित होकर हर कर्म करो। ऐसा नहीं है कि फरिश्ता रूप में कर्म नहीं कर सकते हो। कर सकते हो कि साकार चाहिये? क्योंकि साकार शरीर से बहुत जन्मों का प्यार है। तो भूलना चाहते हैं लेकिन भूल नहीं पाते। तो बाप कहते हैं अच्छा अगर आपको शरीर को ही देखने की आदत पड़ गई है तो कोई हर्जा नहीं, अभी लाइट का शरीर देखो। शरीर ही चाहिए तो फरिश्ता भी शरीरधारी है। और आप सभी कहते भी हो कि शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा से बहुत प्यार है। तो प्यार का अर्थ है समान बनना। तो जैसे ब्रह्मा बाबा फरिश्ता रूप है ऐसे ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता स्वरूप में स्थित होकर हर कर्म करो। क्योंकि जब डायमण्ड जुबली मना रहे हो, स्थापना के 60 वर्ष सम्पन्न हुए, तो विशेष स्थापना के निमित्त शिव बाप तो है लेकिन निमित्त ब्रह्मा बाबा बना। आप भी अपने को शिव कुमार और शिव कुमारी नहीं कहते हो। ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहते हो। तो ब्रह्मा बाप के स्थापना के कार्य की जुबली मना रहे हो। तो जिसकी जुबली मनाई जाती है उसको क्या दिया जाता है? (गिफ्ट) तो आप सभी गिफ्ट देंगे? कि ये गुलाब का पुष्प ले आकर देंगे और कहेंगे कि गिफ्ट हो गई। कोई हाथी ले आयेगा, कोई घोड़ा ले आयेगा, ये गिफ्ट तो है मनोरंजन। ये मनोरंजन भी अच्छा है। सभी देखकरके खुश होते हैं। आज घोड़ा नाच रहा है, आज कोई मनुष्य नाच रहा है, खिलौने देखकर खुश होते हैं। वो भले लाना लेकिन ब्रह्मा बाप को दिल पसन्द गिफ्ट कौन-सी देंगे? देखो, किसी को भी गिफ्ट दी जाती है तो देखा जाता है इसको क्या पसन्द है? देखते हैं कि यह ये पसन्द करेगा या नहीं करेगा? तो ब्रह्मा बाप को क्या प्रिय है? कौन-सी गिफ्ट उसको अच्छी लगती है? बाप के दिल पसन्द गिफ्ट है चलता-फिरता फरिश्ता स्वरूप। तो फरिश्ता समान बन जाओ। फरिश्ते रूप में कोई भी विघ्न आपको प्रभाव नहीं डालेगा। आपके संकल्प, वृत्ति, दृष्टि – सब डबल लाइट हो जायेंगे। तो गिफ्ट देने के लिए तैयार हो? (हाँ जी) देखना आपका टेप भी हो रहा है। अच्छी बात है गोल्डन दुनिया को लाने के

लिए फरिश्ते बनेंगे तो जैसे हीरा चमकता है ऐसे आपका फरिश्ता रूप चमकेगा। ये अभ्यास अच्छी तरह से करते रहो।

अमृतवेले उठते स्मृति में लाओ – मैं कौन? फरिश्ता हूँ। संकल्प तो करते हो और चाहते भी हो, फिर भी जब अपनी रिजल्ट देखते हो वा लिख करके भी देते हो, तो मैजारिटी कहते हो कि जितना चाहते हैं उतना नहीं हुआ। 50 परसेन्ट हुआ, 60 परसेन्ट हुआ। तो डायमण्ड जुबली में भी ऐसे परसेन्टेज में होंगे या फुल में होंगे? क्या होगा? डबल फॉरेनर्स बोलो परसेन्टेज होगी? हाँ या ना? थोड़ा-थोड़ा छुट्टी दें! शक्तियों में परसेन्टेज होगी? हाँ उमंग से नहीं करते, सोच के करते हैं। डबल विदेशी या भारत वाले अगर परसेन्टेज के बिना फुल पास हो गये तो ब्रह्मा बाबा पता है क्या करेगा? (शाबास देंगे) बस, सिर्फ शाबास दे देगा! और क्या करेगा? रोज़ आपको अमृतवेले अपनी बाहों में समा लेगा। आपको महसूसता होगी कि ब्रह्मा बाबा की बाहों में, अतीन्द्रिय सुख में झूल रहे हैं। बड़ी-बड़ी भाकी मिलेगी। ब्रह्मा बाबा का बच्चों के साथ बहुत प्यार है ना तो अमृतवेले भाकी मिलेगी और सारा दिन क्या मिलेगा? जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना, कि जब तूफान आया, पानी बढ़ गया तो सांप छत्रछाया बन गया। उन्होंने तो श्रीकृष्ण के लिए स्थूल बात दिखा दी है लेकिन वास्तव में ये है रूहानी बात। तो जो फरिश्ता बनेगा उसके सामने अगर कोई भी परिस्थिति आई या कोई भी विघ्न आया तो बाप स्वयं आपकी छत्रछाया बन जायेंगे। करके देखो। क्योंकि ऐसे ही बापदादा नहीं कहते हैं। अच्छा।

जिन बच्चों की डायमण्ड जुबली है वो हाथ उठाओ। अभी डायमण्ड जुबली वालों से बापदादा बात करते हैं, आप लोगों ने 14 वर्ष में योग तपस्या की तो विघ्न कितने आये लेकिन आपको कुछ हुआ? तो बापदादा छत्रछाया बना ना, कितनी बड़ी-बड़ी बातें हुई। सारी दुनिया, मुखी, नेतायें, गुरु लोग सब एन्टी हो गये, एक ब्रह्माकुमारियाँ अटल रही, प्रैक्टिकल में बेगरी लाइफ भी देखी, तपस्या के समय भिन्न-भिन्न विघ्न भी देखे। बन्दूक भी आई तो तलवारें भी आई, सब आया लेकिन छत्रछाया रही ना। कोई नुकसान हुआ? जब पाकिस्तान हुआ तो लोग हंगामें में डरकर सब छोड़कर भाग गये। और आपका टेनिस कोर्ट सामान से भर गया। क्योंकि जो अच्छी चीज़ लगती थी, वो छोड़ें

कैसे, उससे प्यार होता है ना, तो जो सिन्धी लोग उस समय एन्टी थे वो गाली भी देते थे और सामान भी दिया। जो बढ़िया-बढ़िया चीज़ें थीं वो हाथ जोड़कर देकर गये कि आप ही यूज़ करो। तो दुनिया वालों के लिए हंगामा था और ब्रह्माकुमारियों के लिए पांच रुपये में सब्जियों की सारी बैलगाड़ी थी। पांच रुपये में सब्जियाँ। आप कितने मज़े से सब्जियाँ खाते थे। तो दुनिया वाले डरते थे और आप लोग नाचते थे। तो प्रैक्टिकल में देखा कि ब्रह्मा बाप, दादा – दोनों ही छत्रछाया बन कितना सेफ्टी से स्थापना का कार्य किया। तो जब इन्हें को अनुभव है तो क्या आप अनुभव नहीं कर सकते? पहले आप। जो चाहे, जितना चाहे इस डायमण्ड वर्ष में छत्रछाया का और ब्रह्मा बाप के प्यार का प्रैक्टिकल अनुभव कर सकते हो। ये इस वर्ष को वरदान अर्थात् सहज प्राप्ति है। ज्यादा पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा। पुरुषार्थ से थक जाते हो ना। जब कोई पुरुषार्थ करके थक जाता है तो उस समय बापदादा उसका चेहरा देखते हैं, रहम भी बहुत आता है। तो अभी क्या करेंगे? क्या बनेंगे? फरिश्ता। फरिश्ता रूप में चलना-फिरना यही डायमण्ड बनना है। क्योंकि जो बहुत कीमती, मूल्यवान, बेदाग डायमण्ड होता है उसकी निशानी क्या होती है? उसे लाइट के आगे रखो तो चमकेगा और जब चमकता है तो उससे किरणें निकलती हैं, उसमें भिन्न-भिन्न रंग दिखाई देते हैं। तो जब आप रीयल डायमण्ड बनेंगे, फरिश्ता बन जायेंगे तो आपके फरिश्ते स्वरूप से ये अष्ट शक्तियाँ दिखाई देंगी। जैसे वो रंग किरणों के रूप में दिखाई देते हैं, ऐसे आप डायमण्ड अर्थात् फरिश्ता रूप बनो तो चलते-फिरते आप द्वारा अष्ट शक्तियों के किरणों की अनुभूति होगी। कोई को आपसे सहनशक्ति की फीलिंग आयेगी, कोई को आपसे निर्णय करने के शक्ति की फीलिंग आयेगी, कोई से क्या, कोई से क्या शक्तियों की फीलिंग आयेगी। आप जितना ज्यादा अभ्यास करेंगे, मानो अभी कल से नया वर्ष भी शुरू होगा और डायमण्ड जुबली भी शुरू होगी तो कल से अर्थात् पहला मास जो जनवरी है उस एक मास में आप फरिश्ता रूप में अभ्यास करेंगे और दूसरा मास आयेगा उसमें आपका अभ्यास और बढ़ेगा, तीसरे मास में और बढ़ेगा और जितना-जितना बढ़ता जायेगा ना उतना-उतना आप द्वारा औरों को महसूसता होगी। समझा? तो ये है ब्रह्मा बाप की गिफ्ट। सभी देंगे या कोई-कोई

देगा ?

अच्छा, मधुबन वाले भी गिफ्ट देंगे ना! मधुबन वाले तो हाँ जी में होशियार हैं। (ज्ञान सरोवर में भी मुरली सुन रहे हैं) ज्ञान सरोवर वाले फरिश्ते बन जायेंगे और ये जो ट्रांसलेट कर रहे हैं, माइक वाले, लाइट वाले, सभी को डबल लाइट, फरिश्ता बनना है। मुश्किल तो नहीं लगता है? 63 जन्म इस शरीर से प्यार है, तो मुश्किल नहीं होगा? जो दृढ़ निश्चय रखते हैं तो निश्चय की विजय कभी टल नहीं सकती। चाहे पांच ही तत्व या आत्मायें कितना भी सामना करें लेकिन वो सामना करेंगे और आप समाने की शक्ति से उस सामना को समा लेंगे। क्योंकि अटल निश्चय है। ये 60 वर्ष जो स्थापना के चले इसमें भी आदि से कमाल ब्रह्मा बाप और अनन्य बच्चों का रहा। कभी निश्चय में हलचल नहीं हुई। विजय हुई पड़ी है, यही बोल सदा ब्रह्मा बाप के रहे।

तो आज विशेष ब्रह्मा बाप ने सभी बच्चों को विशेष मुबारक और बहुत-बहुत प्यार दिया। जितने भी हो, चाहे चार लाख हो, चाहे 14 लाख हो, लेकिन ब्रह्मा बाप की भुजायें इतनी बड़ी हैं जो 14 लाख भी एक साथ भुजाओं में समा सकते हैं। इसीलिये परमात्मा का भक्ति मार्ग में विराट रूप दिखाते हैं, जिसमें सब समाये हुए हैं। तो सभी ब्रह्मा बाप की भुजाओं में समाये हुए हो। कुछ भी हो, जैसे छोटा बच्चा क्या करता है, अगर कोई उसको कुछ भी कहता है या कुछ भी होता है तो वह माँ या बाप की बाहों में समा जायेगा। ऐसे होता है ना! तो आप भी ऐसे करो। बच्चे हो ना कि अभी बड़े हो गये हो? 100 साल का भी बाप के आगे तो छोटा बच्चा ही है। तो आपको भी कुछ भी हो ना, बस ब्रह्मा बाप की बाहों में समा जाओ, बस। ये तो सहज है ना?

अच्छा, ये तो है डायमण्ड जुबली की बातें। अभी साथ में आज नया वर्ष भी मनायेंगे ना? तो 12 बजे ये साल पूरा होगा। अभी है थोड़ा टाइम। अभी पुराने साल में बैठे हैं लेकिन नया साल मना रहे हैं। इसके लिये आये हैं ना? डबल विदेशी ज्यादा क्यों आये हो? वैसे तो इण्डिया का टर्न है, डबल विदेशी क्यों आये हो? न्यू इयर मनाने के लिये, क्रिसमस मनाने के लिए। बापदादा को अच्छा लगता है डबल विदेशियों से चिटचैट करने में। तो नया वर्ष भी मनाना है तो पुराने वर्ष को क्या करेंगे? विदाई देंगे। बस सिर्फ मुख से

कह दिया विदाई देंगे। या चित्र बनायेंगे वो जा रहा है, वो आ रहा है? पुराने वर्ष को विदाई कैसे देंगे? सिर्फ गीत गायेंगे, नाचेंगे, कूदेंगे! काम क्या करेंगे? देखो साल समाप्त हो रहा है वो विदाई ले रहा है फिर ये वर्ष कब आयेगा? (5 हजार वर्ष के बाद) तो ये पांच हजार वर्ष के लिये आपसे विदाई लेगा! जो विदाई लेता है उसको भी कुछ दिया जाता है। देखो आप लोग भी जाने वाले होते हो तो आपको विदाई की गिफ्ट मिलती है, तो आप इस पुराने वर्ष को क्या देंगे? कुछ देंगे या खाली भेज देंगे—जाओ, जाओ। क्या देंगे? पुराने को क्या अच्छा लगेगा? पुरानी चीज़। (कमज़ोरी देंगे) बापदादा ने देखा कि कमज़ोरी देते तो हो लेकिन फिर वापस ले लेते हो। देखो, वो (वर्ष) अक्ल वाला है जो पांच हजार वर्ष के पहले वापस नहीं आयेगा और आप पुरानी चीज़ें वापस क्यों लेते हो? चिटकी लिखकर देंगे—हाँ.. बाबा, बस, क्रोध मुक्त हो जायेंगे.... बहुत अच्छा लिखते हैं और रूहरिहान भी करते हैं तो बहुत अच्छा कांध हिलाते हैं, हाँ, हाँ करते हैं। फिर पता नहीं क्यों वापस ले लेते हैं। पुरानी चीज़ों से प्रीत रखते हैं। फिर कहते हैं हमने तो छोड़ दिया वो हमको नहीं छोड़ती हैं। बाप कहते हैं आप चल रहे हो और चलते हुए कोई कांटा या ऐसी चीज़ आपके पीछे चिपक जाती है तो आप क्या करेंगे? ये सोचेंगे कि ये मुझे छोड़े या मैं छोड़ूँ? कौन छोड़ेगा? अच्छा, अगर फिर भी वो हवा में उड़ती हुई आपके पास आ जाये तो फिर क्या करेंगे? फिर रख देंगे या फेंक देंगे? फेंकेंगे ना? तो ये चीज़ क्यों नहीं फेंकते? अगर गलती से आ भी गई तो जब आपको पसन्द नहीं है और वो चीज़ आपके पास फिर से आती है तो क्या आप वो चीज़ सम्भाल कर रखेंगे? कोई भी किसको ग़लती से भी अगर कोई खराब चीज़ दे देवे तो क्या उसे आलमारी में सजाकर रखेंगे? फेंक देंगे ना? उसकी फिर से शकल भी नहीं दिखाई दे, ऐसे फेंकेंगे। तो ये फिर क्यों वापस लेते हो? बापदादा की ये श्रीमत है क्या कि वापस लो? फिर क्यों लेते हो? वो तो वापस आयेगी क्योंकि उसका आपसे प्यार है लेकिन आपका प्यार नहीं है। उसको आप अच्छे लगते हो और आपको वो अच्छा नहीं लगता है तो क्या करना पड़े? तो बापदादा सभी बच्चों को कहते हैं पुराने वर्ष को विदाई देना अर्थात् जो बातें दिल में सोची है ना, कितनी बातों का इशारा दिया? कितनी बातें हैं,

ज्यादा है क्या? (8 बातें हैं) तो विदाई के साथ इन आठ को ही अच्छी तरह से सजाधजा कर विदाई दे दो। समझा? दे सकते हो? हिम्मत है देने की? (हाँ जी) बापदादा को सबसे अच्छा लगता है कि हाँ जी बहुत जल्दी करते हैं।

तो अभी जब वर्ष, पांच हज़ार वर्ष के लिये विदाई लेता है तो आप कम से कम ये छोटा सा ब्राह्मण जन्म एक ही जन्म है, ज्यादा नहीं है, एक ही है और उसमें भी कल का भरोसा नहीं तो वो पांच हज़ार की विदाई लेता है तो आप कम से कम एक जन्म के लिए तो विदाई दो। दे सकते हो? हाँ जी तो करते हो। लेकिन जिस समय वो वापस आती है तो सोचते हो – बड़ा मुश्किल लगता है, छूटता ही नहीं है, क्या करें! छोड़ो तो छूटे। वो नहीं छूटेगा, आप छोड़ो तो छूटेगा। क्योंकि आपने उनसे प्यार बहुत कर लिया है तो वो नहीं छोड़ेगा, आपको छोड़ना पड़ेगा। तो पुराने वर्ष को इस विधि से दृढ़ संकल्प और सम्पूर्ण निश्चय, इस ट्रे में ये आठ ही बातें सजा कर उसको दे दो तो फिर वापस नहीं आयेंगी, निश्चय को हिलाओ नहीं। निश्चय हिल जाता है – क्या हुआ, हो जायेगा, अभी दो हज़ार वर्ष पूरे हुए नहीं, दो हज़ार तक ठीक हो जायेगा.... ये है निश्चय में अलबेलापन। बापदादा को भी बहुत अच्छी-अच्छी बातें कहते हैं—बाबा आप फिक्र नहीं करो, दो हज़ार में पूरा हो जायेगा। अभी थोड़ा-थोड़ा....। लेकिन दो हज़ार की डेट तो बाप ने दी नहीं है, तो ऐसे न हो कि आप दो हज़ार का इन्तज़ार करते रहो और नई दुनिया का इन्तज़ाम पहले से हो जाये। इसीलिये अलबेले मत बनना। रिवाइज़ करो, बार-बार रिवाइज़ करो। क्यों भूल जाते हो? जब कोई काम शुरू करते हो ना तो बहुत अच्छा सोचते हो – मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, ये भी आत्मा है, आत्मा शरीर से ये काम करा रही है, शुरू ऐसे करते हो। लेकिन काम करते-करते आत्मा मर्ज हो जाती है। आप जो काम करते हो, उसमें हाथ तो चलता ही है लेकिन मन-बुद्धि सहित अपने को बिज़ी कर देते हो। भल बॉडी कान्सेस कम होते हो लेकिन एक्शन कान्सेस ज्यादा हो जाते हो। फिर कहते हो बाबा मेरे से कुछ गलती नहीं हुई, मैंने किसको कुछ नहीं कहा, लेकिन बापदादा कहते हैं कि मानो आप बॉडी कान्सेस नहीं हो, एक्शन कान्सेस हो और उसी समय कुछ हो जाये तो रिज़ल्ट क्या होगी? सोल कान्सेस जितना तो नहीं मिलेगा। तो इसकी विधि है

बार-बार रिवाइज़ करो, बार-बार चेक करो। जब काम पूरा होता है फिर आप सोचते हो, लेकिन नहीं, जब तक नेचरल सोल कान्सेस हो जाओ तब तक ये सहज विधि है बार-बार रिवाइज़ करना। रिवाइज़ करेंगे तो जो पीछे सोचना पड़ता है वो नहीं होगा। तो रिवाइज़ करने का टाइम है कि बहुत बिज़ी रहते हो? कभी भी अपना चार्ट चेक करते हो तो दो बातें चेक करो। एक बात नहीं। मैंने बुरा नहीं किया अर्थात् कुछ गँवाया नहीं, वो तो ठीक हुआ लेकिन जमा कितना किया? गँवाया नहीं इसकी तो मुबारक हो। लेकिन गँवाया भी नहीं और कमाया भी नहीं तो वो किस लिस्ट में जायेगा? तो चेक करो कि मैंने जमा कितना किया? जमा का खाता चेक करो। क्योंकि सारा कल्प चाहे राज्य करेंगे, चाहे पूजे जायेंगे लेकिन जमा अभी करना है या द्वापर में या सतयुग में करेंगे? तो ये चेक करो कि मैंने जमा कितना किया? कम से कम इतना तो जमा करो जो 21 जन्म रॉयल फैमिली में प्रालब्ध भोगते रहो। अगर कम जमा होगा तो त्रेता में आयेंगे, सतयुग मिस करेंगे। त्रेता में आना पसन्द है? सारा पहला-पहला सुख तो सूर्यवंशी ले लेंगे, चन्द्रवंशियों को बाद में बचा हुआ मिलेगा। तो जमा का खाता चेक करो। सारे दिन में ज्यादा से ज्यादा जमा हो तो सहज ही आप निर्विघ्न हो ही जायेंगे और फरिश्ते रूप में स्थित हो जायेंगे। तो विधि क्या हुई? हर घण्टे रिवाइज़ करो। कौन-सी कान्सेस रहे? कर सकते हो? हो सकता है?

बापदादा ने सबका चार्ट चेक किया तो टोटल 50 परसेन्ट बच्चे दूसरों को देख स्वयं अलबेले रहते हैं। कहाँ-कहाँ अच्छे-अच्छे बच्चे भी अलबेलेपन में बहुत आते हैं। ये तो होता ही है..... ये तो चलता ही है.... चलने दो... सभी चलते हैं.... बापदादा को हंसी आती है कि क्या अगर एक ने ठोकर खाई तो उसको देखकर आप अलबेलेपन में आकर ठोकर खाते हो, ये समझदारी है? तो इस अलबेलेपन का पश्चाताप् बहुत-बहुत-बहुत बड़ा है। अभी बड़ी बात नहीं लगती है, हाँ चलो... लेकिन बापदादा सब देखते हैं कि कितने अलबेले होते हैं, कितने औरों को नीचे जाने में फालो करते हैं? तो बापदादा को बहुत रहम आता है कि पश्चाताप् की घड़ियाँ कितनी कठिन होगी। इसलिए अलबेलेपन की लहर को, दूसरों को देखने की लहर को इस पुराने वर्ष में मन से विदाई दो। जब थोड़ा उमंग-उत्साह आता है ना तो थोड़े समय के लिए वैराग्य

आता है लेकिन वो अल्पकाल का वैराग्य होता है। इसलिए जो बापदादा ने मुक्त होने की बातें सुनाई हैं, उसके ऊपर बहुत अटेन्शन देना। जितने पुराने होते हैं ना तो देखा गया है कि पुरानों में अलबेलापन ज्यादा आता है। जो पहले-पहले का जोश, उमंग होता है, वो नहीं होता है। पढ़ाई का भी अलबेलापन आ जाता है, सब सुन लिया, समझ लिया। सोचो, अगर समझ लिया, सोच लिया तो बापदादा पढ़ाई पूरी कर देते। जब स्टूडेंट पढ़ चुके तो फिर क्यों पढ़ाई पढ़ाये? फिर तो समाप्त कर दें ना! लेकिन इस अलबेलेपन को अच्छी तरह से विदाई दो। औरों को नहीं देखो। बाप को देखो। ब्रह्मा बाप को देखो। अगर कोई ठोकर खाता है तो महारथी का काम है ठोकर से बचाना, न कि खुद फालो करना। तो पुराने वर्ष को अच्छी तरह से विदाई देंगे ना? अभी कितना बजा है? पौने दस। अच्छा! तो अभी दो घण्टे हैं, दो घण्टे में विदाई का सामान तैयार कर दो। बापदादा देखेंगे कि बाप को गिफ्ट देने में ज्यादा नम्बर डबल विदेशी लेते हैं या भारत वाले लेते हैं? दोनों लेंगे ना? हाँ या ना बोलो।

अच्छा, डबल विदेशी कितने देशों से आये हैं? (36) और भारत के कितने ज़ोन आये? (पांच) भारत के पांच ज़ोन से आये हैं और वो 36 देशों से आये हैं। डबल विदेशी सदा बापदादा को अपना साथी समझकर साथ रहते हैं ना। जितना नाम है विदेश, उतना ही साथ भी बाप का नज़दीक अनुभव करते हो? क्योंकि जब तक बाप साथ है तो माया भी बाप का साथ देखकर दूर से ही भाग जाती है। अकेले होते हो तो माया को चांस मिलता है। अकेले नहीं हो तो माया को चांस मिल नहीं सकता। और जब बाप स्वयं ऑफर करता है कि मैं बच्चों का साथी हूँ तो भगवान की ऑफर सारे कल्प में फिर मिलेगी? तो स्वयं बाप की ऑफर है – साथ रहो। कोई भी मुश्किल बात साथ से सहज हो जाती है। तो साथ का अनुभव होता है? डबल विदेशी ब्राह्मण परिवार का विशेष श्रृंगार हैं। जैसे आज विशेष श्रृंगार किया है ना। (पूरी स्टेज सुगन्धित फूल मालाओं से सजाई गई है) अच्छा लगता है ना! तो आप लोग भी एक-एक रत्न ब्राह्मण परिवार का श्रृंगार हो। तो श्रृंगार कभी गिर नहीं जाये, श्रृंगार गिर गया तो कैसे लगेगा? अभी श्रृंगार किया है और गिर जाये तो क्या अच्छा लगेगा? सदैव समझो कि हम ब्राह्मण परिवार के ताज के हीरे हैं। तो ताज से

एक भी हीरा गिर जाये तो अच्छा लगेगा? तो इतना अपना महत्व समझो। साधारण नहीं समझो, महान् हो।

अच्छा है, चारों ओर से सेवा के समाचार भी बहुत अच्छे आते रहते हैं। भारत के अपने प्रोग्राम हैं, विदेश के अपने हैं। तो सेवा में अपने को बिज़ी रखते हैं और सदा रखना भी है। सेवा सेफ्टी का साधन है। जितना अपने को बिज़ी रखेंगे उतना सेफ रहेंगे। समझा?

(विदेश से सिन्धी भाई-बहिनों का गुप आया है, बापदादा ने सभी को आगे बुलाकर बिठाया) इतना बड़ा ब्राह्मण परिवार देख खुशी होती है? देखो कितने हैं आपके परिवार में! और सारा परिवार चुने हुए श्रेष्ठ आत्माओं का है। तो भारत वाले आप लोगों को देखकर खुश होते हैं क्योंकि खास जो बरखिलाफ थे वो फेवर में हो गये। सिन्ध में काके, चाचे, मामे, गायन भी है मामा, काका, चाचा ... तो उन्हीं परिवार से निकल आये। तो कितने लक्की हो। सिन्धी लोग बहुत बरखिलाफ थे ना और अभी नज़दीक आये हैं इसीलिये इस गुप को नज़दीक बिठाया है। आपका गुप सब खुश है? अच्छा।

सभी डबल विदेशी सदा बाप के साथी हैं इसीलिये साथी का स्थान कौन सा है? साथी कहाँ रहते हैं? दिलतख्त पर। तो रहते हो या कभी-कभी उतर आते हो? सदा बाप के साथी हैं, इसीलिये तख्त नशीन हैं, अधिकार है तख्त पर। जो साथी होता है, मानो राजा है, अभी राजा तख्त पर बैठेगा तो रानी अधिकारी है ना। क्योंकि साथी है। तो आप सभी डबल विदेशी साथी हो ना? तो आपका दिलतख्त संगमयुग का अधिकार है। इसका मतलब ये नहीं है कि भारतवासी नहीं हैं। अभी डबल विदेशियों से बात कर रहे हैं इसलिये डबल विदेशी कह रहे हैं, बाकी जो भी साथी हैं वो सब अधिकारी हैं। फिर भी दौड़-धूप करके पहुँच तो जाते हो ना! तो क्या याद रखेंगे? कौन हो? साथी हैं और तख्तनशीन हैं। समझा?

भारत वासियों प्रति

भारतवासी ठीक हैं? भारतवासियों को तो नशा है कि अगर भारत में बाप नहीं आते तो विदेशी कहाँ से आते? क्योंकि बापदादा को ड्रामा में गरीब

निवाज़ कहा जाता है तो विदेश गरीब नहीं है, भारत गरीब है और बाप को गरीब पसन्द हैं। इसीलिये गरीब से गरीब भारत में आया, लण्डन में नहीं आया। अमेरिका में भी नहीं आया। भारत अविनाशी है। अविनाशी खण्ड फिर भी भारत ही होगा। ये अमेरिका तो अभी निकली है, अभी खत्म हो जायेगी। बाप अविनाशी है तो अविनाशी खण्ड में ही आता है। भारत को नशा भी बहुत है। भारत को सबसे बड़ा नशा है कि हमने भगवान को भी अपने प्यार के रस्सी में बांध लिया है। देखो अभी भी भारत में आते हैं ना। आप सबको भी भारत में मिलने आना है। तो भारत भी कम नहीं और विदेश भी कम नहीं। दोनों लाडले हैं। अच्छा।

(सिन्धी भाई-बहनों से) कितने आये हैं? 70 आये हैं। अभी फिर माला पूरी करके आयेंगे। दो प्रकार के आये हैं। लेकिन आते-आते आखिर जायेंगे कहाँ? कितना भी कोशिश करें किनारे करने की, लेकिन नहीं हो सकता। बाप को छोड़ सकते हो? बाप कहे आप नहीं आओ फिर क्या करेंगे? (आयेंगे) क्यों आयेंगे? बाप कहे नहीं आओ फिर भी आयेंगे क्यों? कहो अधिकार है मेरा। मेरा घर है, मेरा बाप है। तो अधिकार है। सोचते हैं बाबा मिलेगा, नहीं मिलेगा, देखेगा, नहीं देखेगा...। देख लिया ना! अभी इन्हीं को सभी सिन्धियों को जगाना है। सब ओर जग रहे हैं। जितना बड़ा करना चाहो करो। ऐसी सीज़न में करो जो सब होटल पहले से बुक कर लें। जिस होटल में भी जायें तो ब्रह्माकुमारियों का हो। जगाना तो सबको है और भारत में तो जगाने के बहुत अच्छे-अच्छे प्रोग्राम रखे हैं। बापदादा के पास सब समाचार आये हैं कि भारत जम्प लगा रहा है कि भारत में कोने-कोने में सन्देश मिल जाये। कोई रह नहीं जाये। तो ये बहुत अच्छी बात है। उलहना पूरा हो जायेगा।

यूथ से

यूथ की रिट्रीट चल रही है। देश-विदेश का मिलकर प्रोग्राम हो रहा है। इनका टीचर कौन है? तो अच्छा लगता है यूथ को? स्टूडेंट भी राजी और टीचर भी राजी, दोनों राजी। अच्छा। बहुत अच्छा प्रॉमिस किया है, पक्का रखना। सभी ने मिलकर जो प्रॉमिस किया है वो मुख से बोलो। (सभी ने

बोलकर प्रॉमिस की) बहुत अच्छा, ताली बजाओ। अच्छा। देखो ऐसे देश-विदेश के यूथ इकट्ठे होकर कमाल करके दिखायें तो गवर्नमेन्ट क्या करेगी? जब देखेगी कि देश-विदेश के सब मिलकर दृढ़ संकल्प किया है तो आप यूथ के संकल्प के आगे आपेही सरेण्डर हो जायेंगे। कभी प्रोग्राम बनायेंगे तो देश-विदेश के यूथ इण्डिया की गवर्नमेन्ट को जगायेंगे। वो भी खुश होंगे। अच्छा!

चारों ओर के चमकते हुए सच्चे डायमण्डस को, सदा निश्चय और दृढ़ संकल्प द्वारा स्वयं को सच्चा डायमण्ड बनाए औरों को बनाने वाले, सदा बापदादा के समान डबल लाइट फरिश्ता स्वरूप में स्थित होने वाले श्रेष्ठ आत्मायें, सदा बाप और सेवा दोनों में बिज़ी रहने वाले मायाजीत सो विश्व के राज्य-भाग्य जीत, ऐसे संगमयुगी डायमण्ड्स को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

देखो, यह यहाँ का रिवाज़ है 12 बजे बेल बजेगा, तो बापदादा को बच्चों की बात रखनी पड़ती है। वैसे तो 11 बजे बेल लगाओ या 12 बजे। ब्राह्मण नहीं मनायेंगे तो कौन मनायेंगे!

(डायमण्ड जुबली के उपलक्ष्य में बच्चों ने गीत गाये, नये वर्ष की बधाइयाँ दी, कार्ड आदि बापदादा को दिये, तत्पश्चात् नये वर्ष का शुभारम्भ होते ही बापदादा ने सभी को बधाइयाँ दी)

आज के दिन डबल मुबारक है। एक नये वर्ष की और दूसरी डायमण्ड जुबली वर्ष की। तो सदा इस वर्ष को अपने दोनों स्वरूप एक डबल लाइट फरिश्ता और दूसरा सच्चा डायमण्ड, बेदाग डायमण्ड, अमूल्य डायमण्ड। तो डायमण्ड बनकर अनेक आत्माओं को डायमण्ड बनाना – यही इस वर्ष का लक्ष्य है। और बापदादा जानते हैं कि ब्राह्मण बच्चे लक्ष्य और लक्षण को साथ-साथ करके दिखाते हैं। तो ये डायमण्ड जुबली वर्ष अनेक आत्माओं के, बाप के समीप आने का वर्ष है। और साथ-साथ यह वर्ष सहज बाप के साथ रहने से सहज ही प्राप्ति का वर्ष है। इसलिए चारों ओर के बच्चे इस सहज वरदान का पूरा-पूरा लाभ लेंगे और औरों को दिलायेंगे। डायमण्ड गुडनाइट और गुडमार्निंग दोनों।

चारों ओर के बच्चों के बहुत खुशी और उमंग-उत्साह के कार्ड मिले, पत्र भी मिले और सभी को रिटर्न में डबल प्यार और मुबारक हो।

(4 जनवरी को तलहटी में बहुत बड़े हाल का फाउण्डेशन स्टोन लगा रहे हैं, यह समाचार बापदादा को सुनाया गया)

जब डायमण्ड जुबली में सेवा करेंगे तो उन्हीं को बैठने के लिए जगह बनाई है कि आप बाहर बैठेंगे उन्हीं को अन्दर बिठायेंगे, क्या करेंगे? आप अन्दर ही बैठेंगे, बाहर नहीं। अगर बाहर माइक में सुनने आये तो अन्दर बैठेंगे? तो क्या करना पड़े? इसी शुभ संकल्प से अभी नीचे ज्यादा में ज्यादा मिल सके, बैठ सके, उसके लिए पहले स्टेज का फाउण्डेशन डाल रहे हैं और सभी डालेंगे ना। चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों के अंगुली से जब ज्ञान सरोवर बन गया तो ये तो उसके आगे कुछ भी नहीं है। वो तो सभी के संकल्प और सहयोग से सहज से सहज बनना ही है। आपको पसन्द है? डबल विदेशियों को ज्यादा अच्छा लगता है कि भारतवासियों को अच्छा लगता है? दोनों को अच्छा लगता। तो फिर फाउण्डेशन डालना अर्थात् अंगुली देना। पहाड़ तो उठा ही पड़ा है। ठीक है ना? देश और विदेश का संगठन का मेला है तो देश और विदेश दोनों मिलकर जो फाउण्डेशन डालेंगे वो कितना अच्छा होगा! तो जो भी होंगे उन सबके तरफ से उस धरनी पर स्नेह से फाउण्डेशन डालेंगे। अच्छा!

